दृष्टिदात्री

लेखक

मॉरिस फ्रैंक

तथा

ब्लेक क्लार्क

अनुवादक

मांयाप्रसाद त्रिपाठी एम० ए०

प्रकाशक

इंडियन प्रेस (पब्लिकेशंस), प्राइवेट लिमिटेड

इलाहाबाद

१९५९ मूल्य ४.रु० २५ नये पैसे

Hindi Translation
First Lady of the Seeing Eye
By Morris Frank
and
Blake Clark

Copyright 1957 by Blake Clark
and Morris S. Frank

Price Rs. 4·25

Published by B. N. Mathur
at The Indian Press (Pub.) Private Ltd., Allahabad
Printed by P. L. Yadava
at The Indian Press Private Ltd., Allahabad

आभार-प्रदर्शन

लेखकगण, न्यूजरसी स्थित मॉरिसटाउन की 'सीइंग आई' को उसके सहयोग तथा डीना क्लार्क को संगठन, संपादन एवं पुस्तक की रचना तथा व्यावसायिक योगदान के लिए, धन्यवाद देते है।

जनवरी, १९५

मॉरिस फ्रैंक
ब्लेक क्लार्क

दृष्टिदात्री

अध्याय १

कदाचित् मृत्यु से मेरी सबसे गहरी मुठभेड़ ओहिओ के डेटन नामक स्थान के एक होटल के बरामदे में हुई थी। यह प्राण-संकटकारी घटना इसलिए हुई थी कि मैं नेत्रहीन हूँ। वैसे इस घटना को होना ही नहीं चाहिए था और उसमें सारा दोष मेरा ही था।

उस दिन संध्या समय मुझे डेटन में एक बृहत् सभा में भाषण करना था। पर गाड़ी देर से पहुँची थी, अतएव समयाभाव के कारण मैं शीघ्रता में था। जीवन-ज्योति की पथ-प्रदर्शक कुतिया 'बडी' मेरे साथ थी और वही मेरी आँखों का काम कर रही थी। उसे लेकर मैं चौदहवें तल्ले पर अपने कमरे में झटपट पहुँचा। विश्राम कर लेने के अनन्तर जब मुझमें कुछ स्फूर्ति आई तो मैंने देखा कि मुझे सभा-भवन में पहुँचने के लिए केवल पन्द्रह मिनट रह गये थे। अब बड़ी शीघ्रता से नीचे उतरकर मुझे टैक्सी करनी थी।

अपनी सदा साथ रहने वाली जर्मन प्रहरी सहचरी के साथ मैं धक्के से बरामदे में होता हुआ लिफ्ट (ऊपर ले जानेवाले यंत्र) के कमरे में पहुँचा। वहाँ पहुँचते ही बडी एकदम रुक गई और रुष्ट हो गई। पहले वह सदैव लिफ्ट के पास पहुँच जाती थी और मेरी सुविधा के लिए उसके बटन के पास अपनी नाक कर देती थी, परन्तु आज वह आगे बढ़ती ही न थी। मेरे "आगे" बढ़ने के आदेश की उसने एकदम अवहेलना की। तब मैंने अत्यधिक शीघ्रता होने के कारण वह कार्य किया जो दृष्टि-दात्री संस्था के पथप्रदर्शक के साथ चलनेवाले किसी व्यक्ति को कभी न करना चाहिए। मैंने उसके गले में बँधी रस्सी छोड़ दी और अकेले ही आगे बढ़ने की चेष्टा की।

'बडी' तुरन्त मेरे पाँवों के आगे आ गई और मुझे इस प्रकार पीछे

की ओर धकेलने लगी कि मैं आगे न बढ़ सकता था। तत्क्षण एक कमरे से एक तरुणी निकली और वह घबड़ाकर चिल्ला उठी।

"सावधान! आगे न बढ़िए!" वह चिल्लाई। "एलीवेटर का द्वार खुला है किन्तु लिफ़्ट वहाँ नहीं है। वहाँ केवल एक खड्ड है!"

मेरे पाँवों में जैसे बेड़ी पड़ गई हो। यदि बडी ने मुझे केवल दो डग आगे बढ़ने दिया होता तो मैं उस गड्ढे से न जाने कहाँ पहुँच गया होता।

मेरे सामने से जैसे कोई परदा हट गया हो और उस क्षण मेरा हृदय कृतज्ञता से भर उठा। तभी मेरे मस्तिष्क ने अकस्मात् इस बात का पूर्ण अनुभव किया कि उस सुन्दर जर्मन प्रहरी 'महिला' की स्वामिभक्ति और बुद्धिमत्ता ने मेरा कितना बड़ा उपकार किया था। इस प्रकार केवल मेरा ही उपकार नहीं हुआ था प्रत्युत ऐसे प्रशिक्षित पथ-प्रदर्शक कुत्तों से उनके रखनेवाले अमेरिका के सभी अन्धों को स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता प्राप्त हुई थी। बडी अमेरिका की दृष्टिदात्री संस्था की प्रथम कुतिया थी। उसने अन्य सभी के लिए इस क्षेत्र में द्वार खोलकर अग्रगामी का काम किया। उसकी सभी कार्यवाहियों का वृत्तान्त लोगों में चारों ओर खूब फैल जाता और लोग बड़ी उत्सुकता से उसकी गतिविधि पर आँख लगाये हुए थे। लोगों को उसकी सफलता में पूर्णतया संदेह था। यदि बडी के क्रिया-कलाप एकदम ठीक और श्लाघनीय न रहे होते तो यह प्रायः सर्वथा निश्चित था कि दृष्टिदात्री संस्था का कार्यक्रम अमेरिका में कभी आगे न बढ़ पाया होता।

कुछ वर्ष पहले अन्धे व्यक्तियों के लिए ऐसे प्रशिक्षित पथ-प्रदर्शक कुत्तों का मैंने कहीं नाम भी न सुना था। एक दिन की बात है—मुझे भली भाँति स्मरण है कि ५ नवम्बर १६२७ का दिन था—मैं टीनेसी के नैशविले नगर गया हुआ था जहाँ मेरा जन्म और पालन-पोषण हुआ था।

जब मैं यूनियन स्ट्रीट के अपने स्थान से अपने परिचारक के साथ आगे बढ़ा तो आर्द्र और अत्यन्त शीतल वेगवान समीर से मेरे अंग ठंडे से पड़ने लगे। मैंने अपने सबसे ऊपर के कोट के कालर को ठुड्डी के ऊपर सरकाया और कुछ रुकते हुए अपने बेंत के सहारे सड़क के किनारे का मार्ग टटोलने लगा। मुझे विदित हुआ कि मैं कोने के संवादपत्रों के अड्डे के पास था। विकलांग पत्र-विक्रेता चार्ली मुझे देखकर पुकार उठा,

"अरे फ्रैंक महोदय! इस सप्ताह के 'पोस्ट' में एक ऐसा लेख है जिसे आपको पढ़ना चाहिए। वह आपकी ही भाँति ज्योतिहीन व्यक्तियों के लिए है।"

मैंने अपनी जेब से एक निकिल का सिक्का निकाला और उसके हवाले किया। उस पाँच सेंट से मुझे एक ऐसा लेख प्राप्त हुआ जिसका मूल्य लाखों डालर में भी नहीं आँका जा सकता। उसने मेरा सारा जीवन ही बदल दिया।

५ नवम्बर १९२७ की उस रात को मैं रिचलैंड एवेन्यू के अपने घर के एक कमरे में बैठा हुआ था। मेरे पिता उन महत्त्वपूर्ण शब्दों को जोर से पढ़ने लगे। भावावेषपूर्ण स्वर से उन्होंने कहना आरम्भ किया; "इसका नाम है दृष्टिदात्री संस्था।"

उस लेख में उसकी लेखिका डोरोथी हेरीसन युस्टिस ने यह वर्णन किया था कि किस प्रकार जर्मनों ने ऐसे प्रहरी कुत्तों को प्रशिक्षित किया है जो अंधे व्यक्तियों के लिए आँखों का काम दे सकते हैं। मैं अधीर होकर भावुक हृदय से सुन रहा था और पिता जी पढ़ रहे थे कि ये विलक्षण कुत्ते क्रीकेट-खेल के डंडे के आकारवाली एक चमड़े की कड़ी मुठिया—एक विशिष्ट लगाम—से सुसज्जित थे, जिन्हें पकड़कर उन कुत्तों के स्वामी चल सकते थे। चमड़े का वह छोटा टुकड़ा वस्तुतः जीवन-ज्योति था। उसके माध्यम से पथ-प्रदर्शक कुत्ता स्पष्टतया और बिना किसी हिचकिचाहट के जैसे बोलकर कहता था: "सीधे चलो, कोई खटका नहीं;" "धीरे-धीरे चलो, बगल में भीड़ है;" या "रुक जाओ, खतरनाक चौराहा है।"

कुत्ता तीव्र गति से आगे आगे चलता था जिससे उसकी गति तनिक भी मंद होते ही, उसके स्वामी को, कड़े मुठिये से, तुरन्त उसका पता चल जाता था। एक विस्मय की बात यह थी कि वह चौपाया केवल यही चेतावनी नहीं देता था कि आगे मार्ग प्रशस्त नहीं है, अपितु वह यह भी सूचित कर देता था कि मार्ग में कौन-सी बाधा है। सड़क के मोड़ आने पर वह पीछे हटकर एकदम रुक जाता था जिससे उसका स्वामी अपने पाँवों से किनारे का पता लगा लेता था, सीढ़ियों के पड़ने पर वह बैठ जाता था; अत्यधिक जन-संकुल चतुष्पथों आदि पर 'ठिठुरा' सा हो जाता था और जब तक पार करने में जोखिम की आशंका होती, वैसे ही पड़ा रहता। चिट्ठी के बक्सों तथा बल्लियों जैसी स्थिर वस्तुओं के आगे पड़ने पर

वह दाहिने या बायें मुड़ जाता था, और आगे आते हुए पैदल व्यक्तियों के संमुख विद्युत्-वेग से कतरिया जाता था।

जिस समय मैं यह वृत्तान्त सुन रहा था उस समय मेरे हृदय में ऐसी उद्दाम आशा उत्पन्न हुई कि उस पर नियंत्रण रखना कठिन था। इन चमत्कारिक कुत्तों के बारे में हम जो कुछ पढ़ रहे हैं यदि वह सत्य है तो ये ज्योतिहीन व्यक्तियों को सतत असहाय रूप से परावलंबी होने से बचा सकते हैं, जो ज्योतिहीनता के अभिशाप की सबसे करुण और खलने-वाली बात होती है। एक सहचर कुत्ता बड़ी सरलता से असंतुष्ट रहनेवाले मानव-परिचारक या सदैव दया दिखानेवाले साथी का, जो बहुत खलता है, स्थान ले सकता है।

कुत्ते के मृदुल उन्नयन में मैं पनाले के गड्ढों, बगल में खड़ी की हुई बच्चों की गाड़ियों या इधर-उधर से अकस्मात् आ पड़नेवाली ट्राईसाइकिलों के पास से, जो घर से बाहर तनिक भी निकलने पर मेरे लिए सतत उपस्थित बीहड़ जाल सी रहती थीं, निरापद जा सकता था। वह मेरे लिए संकटकारी चतुष्पथों पर लाल और हरे प्रकाश का काम दे सकता था और बड़ी सहानुभूति से गाड़ियों के मनों काँच और पहियों के लोहे से मेरी रक्षा कर सकता था जो मेरा प्राणान्त करने के लिए पर्याप्त होते।

मेरे पिताजी पढ़ते पढ़ते रुक गये। मेरी माता ने भी इस बात का अनुभव कर लिया कि इस संवाद का हम सबके लिए क्या अर्थ हो सकता था। वह अवाक् होकर मेरी बगल में बैठ गई। संवाद इतना आशापूर्ण था कि उसकी सत्यता में सन्देह होना अनिवार्य था।

लेखिका ने स्वयं लिखा था कि उसे भी वह बात पहले संदेहास्पद जान पड़ती थी। जितनी सारी बातों की तालिका दी गई थी उतनी भला किसी कुत्ते को प्रशिक्षित कर कैसे करवाई जा सकती थीं? परन्तु पोट्सडैम प्रशिक्षण पाठशाला के अनुभव के कारण उसे उन बातों पर विश्वास करना पड़ा।

वह एक मील से कुछ अधिक दूर स्थित सार्वजनिक उपवनों के लिए अपने पथ-प्रदर्शक कुत्ते के साथ जानेवाले एक ज्योतिहीन व्यक्ति के साथ चली। वे पैदल आने जाने वालों से भरी हुई नगर की सड़कों पर बड़े निरापद रूप से चलते रहे। उन्होंने शीघ्रता से भागती हुई छोटी-छोटी मोटरों, तिपहिये कुत्तेवाली गाड़ियों और भर्राती हुई मोटर साइकिलों से भरे चतुष्पथों को पार कर लिया। यहाँ तक तो सब बात ठीक हुई, परन्तु

अभी तक कुत्ते ने केवल साधारण प्रकार की बाधाओं को ही सफलता से पार किया था। अब वह पथ-प्रदर्शक चौपाया और उसका स्वामी कमर भर एक ऊँचे लोहे के घेरे के पास पहुँचे जो साइकिलवालों को पटरी से दूर रखने के लिए बनाया गया था। क्या कुत्ता छड़ों के नीचे से होकर निकल जायगा जो उसके लिए स्वाभाविक था ? यदि वह ऐसा करता तो अन्धा व्यक्ति पूरे वेग से छड़ों से टकरा जाता और उसके शरीर के मध्य भाग में अवश्य चोट पहुँचती। श्रीमती युस्टिस बड़े उत्कण्ठित नेत्रों से ध्यानपूर्वक देखती रहीं—कुत्ता भूमि पर पड़े हुए एक पुराने काँटे के पास से कतरिया कर पैदलवालों के लिए बने हुए एक संकीर्ण द्वार पर पहुँचा और वह तथा उसका स्वामी सूर्य के प्रकाश से भरे हुए हरे-भरे उपवन में बिना किसी विघ्न-बाधा के घुस गये।

उस लेख में यह दिखाया गया था कि सभी ज्योतिहीन व्यक्तियों का भविष्य उतना ही समुज्ज्वल हो सकता था। अब उनके लिए परिवार के किसी व्यक्ति, किसी मित्र या वेतनभोगी परिचारक के सहारे की आवश्यकता न थी। वे अब स्वयं साधारण रूप से अपना जीवन यापन कर सकते थे जो उनके लिए अब तक असंभव था। प्रत्येक नेत्रहीन व्यक्ति अपने पुराने जीविकोपार्जन के कार्य को फिर से हाथ में ले सकता था अथवा कोई नई जीवन-वृत्ति कर सकता था। वह अब एकदम आश्वस्त रह सकता था कि अपने काम पर वह निरापद पहुँच सकता है और वहाँ से लौट भी सकता है और उसके लिए अब वेतनभोगी पथ-प्रदर्शक पर कोई व्यय करने की आवश्यकता न थी। भीड़भाड़, मोटरगाड़ी आदि से डरने का कोई कारण न रह गया। वह आत्ममर्यादा को पुनः प्राप्त कर सकता था। दिन भर सचाई से काम करने के अनन्तर संध्या समय वह अपनी सुहृद-मंडली के साहचर्य का आनंद ले सकता था और उसे उनके ऊपर भारभूत होने की अथवा उनके कंधों पर व्यर्थ का उत्तरदायित्व रखने की कोई आवश्यकता न थी। वह अब इस बात के लिए परमुखापेक्षी न था कि बच्चे की भाँति उसे घर पहुँचाया जाय—मिलने-जुलने से उत्पन्न होनेवाले बड़े आनन्द को किरकिरा कर देनेवाले इस अभिशाप से उसे मुक्ति मिल गई।

लेखिका ने निष्कर्ष में कहा था—"सज्जनो! मैं पुनः बिना किसी संकोच के आपको प्रहरी कुत्ता दे रही हूँ।"

निबंध को समाप्त करते-करते मेरे पिताजी की वाणी अवरुद्ध हो गई। क्षण भर हम सब मौन रहे और फिर अकस्मात् बातचीत आरंभ हो गई।

बिना एक की बात पूरी-पूरी सुने ही दूसरा बोल उठता था, हमारे संलाप के शब्द एक दूसरे से ऐसे टकरा रहे थे जैसे एक चकमक दूसरे चकमक से। हमारा वह कक्ष जो पहले उदासी से भरा रहता था, उनके स्फुलिंग और प्रकाश के कारण सुखद और उज्ज्वल आशा से प्रदीप्त हो उठा। उस दिन की संध्या के पश्चात् हमारे जीवनक्रम में आकाश-पाताल का अन्तर हो गया।

मैं उस दिन सारी रात करवटें बदलता रहा। मैंने बहुत प्रार्थनाएँ की थीं। कदाचित् उनके वरदानस्वरूप मुझे एक वैसा आश्चर्यजनक चौपाया मेरा दुःख दूर करने के लिए भगवान् मुझे दे दे। ज्योतिहीनता के कारण मेरे जीवन में जो कटुता आ गई थी उसे वह दूर कर सकता था। कुछ घटनाओं का क्रम ऐसा रहा—जैसा मैं सोचता हूँ किसी अन्य परिवार में कदाचित् ही हुआ होगा—कि मेरी माता और मैं दोनों ही दैव-दुर्विपाक के कारण अपनी आँखें खो बैठे। एक की दृष्टि कुछ वर्ष पहले गई और दूसरे ने कुछ वर्ष पश्चात् दृष्टि खोई। माँ की एक आँख प्रसव-काल में शरीर पर बहुत जोर पड़ने के कारण उसकी एक रक्त-वाहिका नाड़ी के फट जाने से चली गई; घोड़े पर से गिरने के कारण दूसरी आँख भी जाती रही।

मैं जब छः वर्ष का था तो घुड़सवारी करते समय एक पेड़ की शाखा से टकरा जाने के कारण मेरी दाहिनी आँख चली गई। तदनंतर जब मैं सोलह वर्ष का हुआ तो दुर्भाग्यवश एक मुक्की द्वन्द्वयुद्ध में मुझे ऐसी चोट लगी कि उसके दो दिनों के पश्चात् मैं सर्वथा ज्योतिहीन हो गया। अब चार वर्ष तक एकदम अंधा रहने के पश्चात् पथ-प्रदर्शक कुत्तों के संवाद से मेरे लिए वे सभी द्वार उन्मुक्त हो गये जिन्हें मैं सोचता था कि मेरे लिए सदा को बंद हो चुके हैं।

मैं अपनी कल्पना में उन्मुक्त रूप से सड़क पर विचरने लगा। मैं सोचने लगा, अब मैं बीमा के लिए लोगों के पास सरलतापूर्वक जा सकूँगा और व्यर्थ के एक बकवादी पथ-प्रदर्शक को साथ रखने का झंझट टूट जायगा। अब मैं स्वयं कालेज जा सकूँगा। किसी प्रेमिका से प्रणय-व्यापार चला सकूँगा और उसमें मुझे दुहरे प्रणय-व्यापार की कोई आशंका न रहेगी।

तात्पर्य यह कि यदि मैं किसी तरुणी को अपने साथ घूमने लिवा जाऊँगा तो कोई दूसरा व्यक्ति उसे उसके द्वार तक पहुँचाकर मेरा अभिवादन कहते समय रात्रि के विदा-काल में उसका चुम्बन न ले पाएगा, क्योंकि जहाँ तक मुझे विदित है, ऐसा होता था। अब जब मैं कुत्ते को

साथ लेकर जाऊँगा। तो वह अगली सीढ़ियों तक दौड़ा जायेगा और मेरी प्रेमिका से रात्रि का अभिवादन कहकर फिर मनुष्य की भाँति कार में लौट आयेगा।

मुझे नींद तो आ नहीं रही थी—मैं व्यग्रता से प्रभात होने की प्रतीक्षा कर रहा था और सोच रहा था कि अन्य विकलांग भी अब मनुष्य हो सकेंगे। समस्त अमेरिका में ऐसे मेरे समान और भी बहुसंख्यक तरुण होंगे जो नेत्रहीनता के कारावास से मुक्ति पाने के लिए अत्यन्त लालायित होंगे। वे कुत्ते हम सभी को उन्मुक्त कर देंगे।

जब बालारुण धीरे-धीरे आकाश में उदय हो रहा था तब मैं "सैटरडे ईवनिंग पोस्ट" के पते से डोरोथी हैरीसन युस्टिस को पत्र लिख रहा था। मैं जैसा बोलता जाता था, मेरे पिता टाइप करते जाते थे। "आपने जो लिखा है वह क्या सचमुच यथार्थ है?" मैंने पूछा, "यदि हाँ, तो मैं ऐसा एक कुत्ता स्वयं लेना चाहूँगा। और मैं ऐसा अकेला ही व्यक्ति नहीं हूँ। मेरे ऐसे और भी सहस्रों व्यक्ति परमुखापेक्षी होने से घृणा करते हैं। आप मेरी सहायता करें तथा मैं उनकी सहायता करूँगा। आप मुझे प्रशिक्षित करें और जब मैं अपने कुत्ते के साथ लौटूँगा तो लोगों को दिखाऊँगा कि एक नेत्रहीन व्यक्ति किस प्रकार सर्वथा आत्म-निर्भर हो सकता है। फिर हम लोग भी इस देश में एक वैसा ही प्रशिक्षण केन्द्र खोलेंगे जिसमें उन सभी लोगों को प्रशिक्षण दिया जायगा जो अपने जीवन को नये सिरे से आरंभ करना चाहते हैं।"

जब मैं अपने जीवन के इस सबसे महत्त्वपूर्ण पत्र पर हस्ताक्षर कर रहा था तो मेरा हाथ काँप रहा था। हस्ताक्षर करने के अनन्तर मैं अपने घर के पासवाले चिट्ठी के बक्स के पास पहुँचा। मैंने उसका छेद टटोल कर अपनी समस्त आशाओं को उसके संकीर्ण मुख के हवाले कर दिया। उसके ढक्कन के गिरने के शब्द ने मेरे जीवन को एक नये संदेश का संकेत किया। यहाँ से एक एकान्त प्रेरणा देनेवाले लक्ष्य का आरम्भ होता है जिससे मेरे आगामी तीस वर्षों का प्रत्येक क्रिया-कलाप विनियंत्रित हुआ। बीस वर्ष की अवस्था में मैं भाग्य को आत्मोत्सर्ग कर चुका था।

तदनन्तर पत्रोत्तर की प्रतीक्षा का दुःखद-काल आरंभ होता है। श्रीमती युस्टिस ने जो कुछ लिखा था उसमें मुझे कुछ संदेह होने लगा। मैंने अपने को समझाया कि मुझे इस प्रकार उसके पीछे नहीं दौड़ना चाहिए। हो सकता है, वह केवल पत्र-वार्ता रही हो जो सनसनी उत्पन्न करने के लिए लिखी गई हो जिससे लेख की खूब बिक्री हो। उस अवस्था में क्या होगा

यदि उस कार्य के निमित्त कुत्ते पर्याप्त संख्या में न उपलब्ध हो सकें ? यदि सरकार उन्हें इस देश में न आने दे तब क्या होगा ? यदि कुत्ते अपनी परिचित जर्मन परिस्थितियों में ही कार्य कर पाते हों तब क्या होगा ?

मेरे मस्तिष्क में प्रश्नों, अनिश्चितताओं तथा आशंकाओं का झंझा-वात सा चल रहा था। क्या मेरे भाग्य में आजीवन बेंत से ही डरते-डरते मार्ग टटोलना बदा है ? इस विकलता में मैं तीस दिनों तक अपने चिट्ठी वाले बक्स के पास जाता रहा कि कदाचित् मेरी बात के उत्तर में श्रीमती युस्टिस का कोई पत्र आया हो, परन्तु व्यर्थ।

दूसरे दिन प्रातःकाल से मैंने चिट्ठीवाले बक्स के पास जाना स्थगित कर दिया और चाहता था कि जहाँ तक हो सके, वहाँ पत्र के रहने की संभावना को अधिक से अधिक बढ़ा सकूँ। यह वह समय था जब मुझे दौड़कर डाकिये को पकड़ना चाहिए था। उसने एक पत्र डाला जिस पर मुझे विदित हुआ कि एक चमकीला नीला और लाल स्विस टिकट लगा हुआ है। स्विस आल्प्स के वेवी नामक स्थान के पास से "फारचुनेट फील्ड्ज" नामक श्रीमती युस्टिस के आवास-स्थल से यह उत्तर आया था जिसकी मैंने इतनी दीर्घकालिक प्रतीक्षा की थी। पिताजी ने उसे पढ़-कर मुझे सुनाया।

श्रीमती युस्टिस ने लिखा था कि वे फिलाडेल्फिया की निवासी थीं और अब स्विट्जरलैंड में रह रही थीं। उन्हें कुत्तों से प्रेम था और वे अपनी "फारचुनेट फील्ड्ज" नामक जमींदारी में पुलिस, रेडक्रास तथा सेना के लिए जर्मन प्रहरी कुत्तों को प्रशिक्षित कर रही थीं।

उन्होंने बताया था कि उन्होंने अन्धों के पथदर्शन के लिए कभी कुत्तों को प्रशिक्षित न किया था। इस संवाद से मेरा हृदय बैठ गया। उन्होंने सूचित किया था कि वह कार्य बहुत विशिष्ट-ज्ञान की अपेक्षा करता है। परन्तु उन्होंने आगे लिखा था कि यदि मैं साहस कर टिनेसी से अपने अभिलषित कुत्ते के लिए स्विट्जरलैंड के पर्वतों तक पहुँच पाऊँ तो उनके पास एक ऐसा सुविज्ञ प्रशिक्षक है जो मेरी सहायता कर सकता है।

पिताजी के पत्र पढ़ने के साथ-साथ मेरी हृदय की धड़कन बढ़ती जाती थी। श्रीमती युस्टिस बड़े दिनों में फिलाडेल्फिया आ रही थीं और उन्होंने लिखा था कि उसी समय वे मेरे अन्तिम निर्णय के लिए मुझसे फोन पर बात करेंगी।

मेरे परिवार में बड़े कोलाहल का वातावरण उत्पन्न हो गया। पिताजी

की पूरी-पूरी इच्छा थी कि मैं अवश्य जाऊँ। वे स्वयं मुझे लेकर जाना चाहते थे, किन्तु उनके लिए अपने व्यापार-कार्य को छोड़ना संभव न था। मेरी माता को इतनी लम्बी यात्रा के सम्बन्ध में नाना प्रकार की भारी आशंकाएँ थीं। कुछ मित्रों ने कहा, "तुम उन्मत्त हुए हो, केवल एक कुत्ते के लिए इतने विस्ताखहीन समुद्र के पार जाओगे!" दूसरों ने कहा, "मॉरिस! यह सचमुच बड़ा कार्य लगता है। तुम्हारी हानि ही क्या हो सकती है?"

एक विशेषज्ञ का मत जानने के लिए मैंने अंधों की परकिन्स इंस्टीट्यूट के संचालक डा० एडवर्ड ई० एलेन को लिखा। उनसे मेरी व्यक्तिगत मैत्री थी। उन्होंने लिख भेजा, "अभी तुम्हारे संमुख लम्बा जीवन पड़ा हुआ है। तुम्हें परमुखापेक्षी होना कदापि पसंद नहीं। कदाचित् इससे तुम्हारी समस्या सुलझ जायगी, और यदि तुम्हारी योजना सफलता के पथ पर अग्रसर हुई तो उससे केवल तुम्हारी ही नहीं, तुम्हारे जैसे सहस्रों व्यक्तियों की समस्याएँ भी सुलझ जायँगी, तुम अभी एकदम तरुण हो। सुअवसर से लाभ उठाने का प्रयत्न करो, केवल अपने लिए ही नहीं, प्रत्युत दूसरों के लिए भी।" इस पर मेरी मा समुद्र-यात्रा के प्रस्ताव से सहमत हो गईं।

दो सप्ताह पश्चात् मुझे श्रीमती युस्टिस का एक तार मिला जिसमें सूचित किया था कि उस दिन, रात को, वे मुझे फोन करेंगी। ज्यों-ज्यों निश्चित घड़ी समीप आती जा रही थी, मेरे घर के लोगों की उत्कण्ठा और जिज्ञासा बढ़ती जा रही थी। मैं फोन के पास बैठकर घबड़ाहट में प्रतीक्षा करने लगा। जब अन्त में घंटी बजी तो मैं विस्मय से उछल पड़ा। तब मुझे बड़े शान्त और सुसंस्कृत शब्द सुनाई पड़े, "फ्रैंक महोदय! क्या अब भी आप सोचते हैं कि आप अपने कुत्ते के लिए स्विट्जरलैंड चलना चाहेंगे?"

मैं उत्तर न दे सका, मेरा कण्ठ अवरुद्ध हो रहा था। वह स्वर्गिक वाणी कहती जा रही थी, यद्यपि उसमें चेतावनी और प्रोत्साहन दोनों संमिलित थे, "अकेले एक अन्धे तरुण के लिए यह यात्रा बड़ी लम्बी है।"

मैंने अपना स्वर सँभालते हुए चिल्लाकर कहा, "श्रीमती युस्टिस! आत्म-निर्भरता को पुनः प्राप्त करने के लिए मैं नरक तक भी जा सकता हूँ।"

अध्याय २

अमेरिकन एक्सप्रेस द्वारा भेजे गये एक पार्सल के बंडल की भाँति मैं अप्रैल में, स्विट्ज़रलैण्ड पहुँचा। यात्रा के अनुभव से मुझे बड़ा क्षोभ और निराशा हुई तथा मैंने और दृढ़ निश्चय कर लिया कि चाहे जो हो, मैं परमुखापेक्षी होने के अभिशाप को दूर करके ही रहूँगा।

मैं यात्रा में जिस परिप्रबंधक (steward) के संरक्षण में रहा वह विशेष रूप से कल्पनाशून्य व्यक्ति था। या यों कहें कि जहाजी वेश-भूषा में वह एक जेलर था। मैं अपने कक्ष में एक कारावासी की भाँति रहता था, उसमें बाहर से ताला बन्द कर दिया जाता था। प्रतिदिन प्रातःकाल वह आकर मुझे प्रातराश के लिए ले जाता था। जैसे ही मैं कॉफी पी चुकता था, वह मुझे मेरे कक्ष में पहुँचा देता था।

दस बजने पर वह मुझे व्यायाम के लिए बड़े नियमपूर्वक डेक पर ले जाता था और घोड़े की भाँति दुलकी चलाता था। तदनन्तर वह मुझे जहाज की कुर्सी पर बैठा देता था। यदि कोई साथी यात्री मुझे थोड़ा घूमने के लिए आमंत्रित करता तो मैं कदाचित् कुछ ही कदम चल पाता कि वह दौड़कर हाँफता हुआ पहुँच आता और मेरी केहुनी पकड़कर मुझे ले जाकर मेरे स्थान पर पुनः बैठा देता जहाँ से वह मेरे ऊपर दृष्टि रख सके।

मेरी भेंट एक बड़ी अच्छी अंग्रेज युवती से हो गई थी। संध्या समय मैं उसके साथ अकेला ही रहना चाहता था। किन्तु हम जैसे गंध सूँघकर पता लगाने वाले प्रतिबंधक की आँखों से बच न सकते थे। चाहे हम ऊपरी छत की बड़ी भली लगनेवाली प्राण-रक्षक नौका की छाया को देखने का आनन्द ले रहे हों, चाहे यान की मनोविनोद-स्थली के किसी दूर कोने में हों, नौ बजे वह रोज आ धमकता और हम लोगों को ढूँढ़ लेता तथा मुझे अपने पीछे-पीछे लिवा ले चलता और मेरे कक्ष में रात भर

के लिए मुझे बन्द कर देता। अमेरिकन एक्सप्रेस और उसका कप्तान यानस्थ अंधे व्यक्तियों के प्रति अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह करते थे।

मैंने गंभीरतापूर्वक सोचा कि "जब ये लोग मुझे पेरिस में उतार देंगे तो मैं इस सबका प्रतिकार कर लूँगा।"

पेरिस! यह नगर ऐतिहासिक वस्तुओं का भाण्डार है तथा बहुसंख्यक आधुनिक आमोदकारी बातों का केन्द्र भी। मैं नगर में पहुँचने के लिए प्रतीक्षा न कर सकता था। मैं ऐश्वर्यशाली ठंडी सड़कों पर पहुँचने के लिए लालायित हो रहा था। पुरानी पुलियों के नीचे से बहती हुई सीन नदी की कलकल ध्वनि को सुनना चाहता था। ऐतिहासिक पात्रों में नैपोलियन मेरा बड़ा प्रिय व्यक्ति था; मैं इनवैलिडीज में उसकी समाधि को देखना चाहता था और जिस स्फटिक समाधि में वह महानिद्रामग्न सो रहा था उसके स्पर्श का आनन्द-लाभ करना चाहता था।

मैं सड़क के किनारेवाले एक जलपान-गृह में कुछ काल रुकने को सोचने लगा। मैं वहाँ से कोई सुधा-वर्द्धक वस्तु पीना चाहता था और सोचता था कि वहाँ स्टेशन जाने के लिए तैयार दूकान पर रहनेवाली बालाओं की हँसी और संसार के सभी देशों से जुटे हुए अपने ही समान आमोद-प्रमोद-रत लोगों के विदेशी उच्चारणों को सुन सकूँगा। मुझे इधर-उधर आती-जाती हुई मोटरों की पों-पों में भी बहुत आनंद आने की संभावना थी। नेत्रहीन होते हुए भी मैं नगरों की रानी के आमोद-प्रमोद का रस लेना चाहता था।

मैं गेयर डू नार्ड नामक स्थान में वाष्प-नौका से उतरा और कुछ काल अकेले ही रहा। ऐसा भास होता था कि वह अकेलापन घंटों का था।

अन्त में पेरिस के उच्चारण में एक महिला का बड़े तपाक के साथ बोला हुआ शब्द सुनाई पड़ा—"फ्रैंक महोदय!" वह अमेरिकन एक्स-प्रेस की प्रतिनिधि थी।

उसने रूखे और बस काम से काम रखनेवाले स्वर में कहा—"कृपया आपको मेरे साथ चलना है।" एक फ्रांसीसी महिला से मुझे वैसा स्वर सुनने की आशा न थी।

वह मुझे एक छोटे होटल के पुराने महकते हुए एक कमरे में लिवा ले गई।

उसने बाहर निकलकर द्वार बंद करते हुए कहा—"मेज पर एक बोतल मदिरा और कुछ बिस्कुट रक्खे हुए हैं।"

मैं टटोलते हुए बोतल के पास पहुँचा और एक गिलास मदिरा पी।

तत्पश्चात् मैं भोजन संबंधी आदेश देने के लिए टेलीफोन ढूँढ़ने लगा। मैं भूख के मारे मरा जा रहा था। वहाँ कोई अँगरेजी न जानता था और मैं फ्रेंच नहीं जानता था। मैं भीत के सहारे टटोलते-टटोलते द्वार तक पहुँचा— किन्तु महा खेद! उसने द्वार में ताला लगा दिया था!

बड़ी निराशा में मैंने बोतल खाली कर डाली और बिस्कुटों को भी समाप्त कर डाला। तदनंतर मैं सो गया। कई घंटे पश्चात् किसी ने मुझे बड़े रूखे ढंग से झकझोरकर जगाया।

"फ्रेंक महोदय, उठिए। आधी रात हो चुकी है। आपके अपने वाष्पयान पर जाने का समय हो गया है।"

वह अमेरिकन एक्सप्रेस की महिला थी। यूरोप के सबसे रमणीय नगर में मेरे रुकने की अवधि समाप्त हो चुकी थी।

मैं सूर्य के समुज्ज्वल और सुखद प्रकाश से चमकते हुए स्विट्ज़रलैंड के वेवी स्थान में गाड़ी से उतरा जहाँ शीतल टटके वासंती पवन का साम्राज्य था। "फ्रैंक महोदय! हम लोग यहाँ हैं!" मुझे ये स्वागत के प्रथम शब्द सुनाई पड़े। यह श्रीमती युस्टिस का मधुर स्वर था। उन्होंने बड़े प्रेम से मुझसे हाथ मिलाया।

"मेरे साथ हम लोगों के प्रशिक्षण और प्रजनन-विभाग-संचालक जैक हम्फ्री, श्रीमती हम्फ्री तथा उनका चतुर्वर्षीय पुत्र जार्ज भी है" उन्होंने कहा। और हम सबने बड़े प्यार से हाथ मिलाये।

श्रीमती युस्टिस, जो मेरी हितैषी होने के कारण पहले से ही मेरे जीवन का बहुत महत्त्वपूर्ण अंग बन गई थीं, मेरे अनुमान से लम्बाई में छोटी थीं—लगभग पाँच फुट दो इंच। उन्होंने अपने चालक और अन्य व्यक्तियों से जिस ढंग से बातें कीं उससे वे मुझे दूसरों का बहुत ध्यान रखनेवाली एवं साथ ही दृढ़-विचारवाली भी जान पड़ीं। अपने प्रति और अन्य लोगों के प्रति भी उनके आचार-व्यवहार का स्तर पर्याप्त ऊँचा था। मैं कह सकता था कि वे अपना उद्दिष्ट कार्य करना भली भाँति जानती थीं—वे किसी के कार्य को अपने हाथों में लेने के लिए पूर्ण योग्य थीं। मैं "फारचुनेट फील्ड्ज" तक की यात्रा में उनके और श्रीमती हम्फ्री के बीच में बैठा हुआ था। हम लोग माउण्ट पेलेरिन के संकीर्ण चक्करदार पथों से होकर गये।

मैं जिस नये संसार में प्रवेश करनेवाला था उसका उन्होंने जब मुझसे वर्णन किया तो मैं कुछ उद्भ्रांत-सा हुआ। लकड़ी का घर बड़ा भव्य बना

हुआ था। उससे संलग्न दो बड़े भवन थे। एक तीन-तल्ला था, दूसरा चौतल्ला।

हम लोगों ने छोटे डेवढ़ीवाले कमरे में अपने हैट और कोट उतार दिये। उसका फर्श पत्थरों का बना हुआ था जो लगातार कई पीढ़ियों से प्रयोग में आने के कारण चिकना हो गया था। उसका द्वार एक लम्बी बैठक को मिलाता था। उसके केन्द्रस्थ भाग में बिलियर्ड की एक मेज थी। दूर-वाले किनारे पर एक चूल्हे के पास अच्छी-अच्छी सुखावह कुर्सियाँ लगी हुई थीं। चूल्हे से बड़ी सुखद उष्णता प्राप्त हो रही थी। उसके चट-खने की ध्वनि बड़ी सुहावनी लग रही थी।

मैं अपने आस-पास की बातों की स्थिति को अपने मस्तिष्क में जमाने लगा—खेलने वाले कमरे से मैंने आरम्भ किया। मेरे वाम-पार्श्व का द्वार श्रीमती युस्टिस के भवन को मिलाता था। दाहिनी ओर सीढ़ी थी जो भोजनवाले कमरे में जाती थी। सीधे आगे की ओर एक वस्तुतः विचित्र स्थान था। उसमें तीन सीढ़ियाँ थीं जो एक विशाल रहनेवाले कमरे में जाती थीं। एक महराबदार छतवाले कोने में एक अमूल्य भव्य पिआनो रखा हुआ था। वह फारचुनेट फील्ड्ज के पूर्व-स्वामी जोसेफ हॉफ-मैन का था। जब मैं उसकी बगल में खड़ा था तो उन लोगों ने मुझे बताया कि उस कमरे से स्विट्ज़रलैंड की सीमा के समीप से होकर जानेवाले इटली और फ्रांस के पर्वतों का बड़ा उदात्त और मनोरम दृश्य दिखाई पड़ता है। शिशु जार्ज ने मेरे हाथ में अपना खींचा हुआ एक चित्र देकर कुछ लजाते हुए कहा, "अगर आप देख पाते तो खिड़की के बाहर जो कुछ दिखाई देता है, यह उसी का चित्र है।"

भोजन के पश्चात् जैक हम्फी ने अपने कार्यों के संबंध में मुझे कुछ बताया। श्रीमती युस्टिस को जर्मन प्रहरी कुत्तों की एक-एक जाति को पालने में विशेष अभिरुचि थी। उनमें प्रशिक्षण ग्रहण करने की योग्यता बहुत थी, यह सिद्ध करने के लिए वे उन्हें प्रहरी, पुलिस और प्राण-रक्षण कार्यों के लिए प्रशिक्षित करती थीं।

जैक मेरे प्रशिक्षक बननेवाले थे। उन्होंने प्रक्रिया सीखने के लिए पौट्सडैम में एक मास रहकर बहुत विशिष्ट-ज्ञान की अपेक्षा करनेवाले कार्य किये थे। सर्वप्रथम वे पथ-प्रदर्शक कुत्तों को प्रशिक्षित करने के कार्य पर पूर्ण मनोयोग से जुटे थे। उसमें पूर्ण दक्षता प्राप्त करने के पश्चात् उन्होंने अन्धों को उनका प्रयोग करना सिखाने के ढंग का अध्ययन किया

था। मैं उनका प्रथम शिष्य बननेवाला था। उन्होंने कहा कि कल मैं आपका एक ऐसे जर्मन प्रहरी कुत्ते से परिचय कराऊँगा जो अपनी जाति के सर्वोत्तम कुत्तों में से विशिष्ट रूप से चुना गया है। कल हम लोग प्रशिक्षण कार्य का श्रीगणेश करेंगे।

दूसरे दिन का मेरा प्रातःकाल बड़ी अधीरता और विकलता में बीता। यह नया चौपाया मेरे जीवन में कैसा रहेगा? क्या उसे मेरा साहचर्य अच्छा लगेगा? मैं जानता था कि देखने में वह सुन्दर था। श्रीमती युस्टिस ने बताया था कि वह सुन्दर गहरे भूरे रंग का है और उसके गले पर मलाई के रंग का धब्बा है। उसके कान बड़े सतर्क हैं, उसकी मृदुल भूरी आँखें बड़ी चमकदार हैं और वह बड़ा बुद्धिमान् प्राणी है। मैं सोच रहा था कि मैं उसकी आँखों में कैसे उतना ही भला लगूँगा जैसे वह मेरी आँखों में पहले से लग रहा था।

कहीं दोपहर को जाकर जैक ने कहा, "मारिस! मैं तुम्हारा कुत्ता तुम्हारे पास ले आता हूँ।"

मेरा कुत्ता!

उन्होंने मेरे हाथ में कटे हुए मांस का एक गोला देते हुए कहा, "इसे आप उसे खिलाइएगा, जिससे आरंभ से ही वह आपसे प्रेम करने लगे।"

वे गये और कुछ ही मिनटों में लौट आये। मैंने द्वार खुलने और फर्श पर कुत्ते के चलने के कारण उसके पंजों का धीमा शब्द सुना। मैंने मांस-खंड को आगे बढ़ाया और उसने बड़े सुन्दर ढंग से उसे ग्रहण किया। मैंने घुटने टेककर उसके रेशमी बालों पर अत्यन्त मृदुलता से थपथपाया।

वह कितनी सुन्दर थी? मुझे आत्मनिर्भरता का स्वर्गीय वरदान देना उसके हाथ में था। मेरे हृदय में उसके लिए प्रेम उमड़ रहा था।

जैक शान्त खड़े थे। "इसका नाम क्या है?" मैंने पूछा।

"किस!" उन्होंने उत्तर दिया।

"किस!" मैंने कुतूहल और आवेग में कहा। जब मैंने यह सोचा कि अपरिचितों की भीड़ में मेरा उसे "अरे किस! यहाँ आओ किस!" इस प्रकार पुकारना कितना विचित्र लगेगा तो मेरे चेहरे पर ललाई दौड़ गई। मैंने कुछ मुँहफट ढंग से कहा, "कुत्ते के लिए यह बड़ा भद्दा नाम है। तब मैंने अपने इस नये मित्र को भुजाओं में लेते हुए उससे कहा, "मैं तुम्हें बडी कहकर पुकारूँगा।"

मैंने बडी की चमड़ेवाली रस्सी अपने हाथ में ली और अपराह्न भर उसके साथ ऊधम करता रहा। वह अपने प्रशिक्षकों तथा श्वान-गृह में रहनेवाले अपने साथियों से पहले से ही हिली-मिली थी, उसने मेरे प्रति भी पर्याप्त सद्भावना दिखाई। वह मेरे गर्म कमरे में मेरे बिस्तर की बगल में उस रात सोने में बड़ी प्रसन्न हुई—उस दिन वह श्वान-गृह में नहीं गई।

दूसरे दिन प्रातःकाल हिमाच्छादित पर्वतों से अति शीत समीर चलने के कारण मैं कम्बलों में लिपटा हुआ था और मेरी जड़ता दूर नहीं हो रही थी। उसी समय मैंने अनुभव किया कि कोई अपनी गर्म-गर्म जिह्वा से मेरा चेहरा चाट रहा था। तब मुझे ध्यान आया कि मैं स्विट्जरलैंड पेलेरिन में माउण्ट के शिखर पर हूँ तथा यह बडी है। पिछले कुछ सप्ताहों में जो घटनाएँ घटी थीं वे केवल स्वप्न न थीं।

मैं उठा और कपड़े पहने तथा बडी को उसकी प्रातःकालिक क्रियाओं के निमित्त बाहरी सीढ़ी से नीचे प्रांगण में ले गया। फिर हम लोग खानेवाले कमरे में गये, वहाँ परिवार के लोग बाहर निकली हुई खिड़की के पास प्रातराश लिये मेज पर जुटे हुए थे। वहाँ से लेमन झील का दृश्य दिखाई पड़ता था। बड़ी अच्छी अल्पाइन मलाई के साथ वन्य किन्तु स्वादिष्ट बेर खा चुकने और तेज काला कहवा पी लेने के पश्चात् जैक ने अपनी कुर्सी पीछे ढकेलते हुए कहा, "मारिस! अब काम पर चलने का समय हो गया।"

अन्ततः मेरा प्रशिक्षण कार्य आरंभ होनेवाला था। मैं अपने कमरे में गया और बडी को लगाम लगाई तथा वहाँ से चलकर सम्मुखवाले दरवाजे पर जैक से मिला।

"तुम अपनी मुठिया अपने बायें हाथ में ले लो, कुत्ता तुम्हारे और पैदल चलनेवालों के बीच सदैव तुम्हारी बाईं ओर से काम करता है।" जैक ने शान्त किन्तु दृढ़ स्वर में कहा। "अपने कंधों को पीछे किये रहो और एक सैनिक के डगों से चलो।"

"अब एकदम स्पष्ट रूप से आदेश दो कि 'आगे चलो', और जैसे ही कुतिया तदनुसार कार्य करती है, उसकी प्रशंसा करो।"

मैंने लगाम अपने हाथों में ली, मेरा हृदय धड़क रहा था। मैंने कुछ कंपित स्वरों में कहा, "आगे चलो।" और फिर बोला "तू बड़ी अच्छी लड़की है!" मुठिये में एक झटका लगा और वह मेरे हाथों से छूटते-छूटते बची और हम एकदम फाटक की ओर बढ़ चले। बडी उसके पास जाकर रुक

गई, क्षणभर में आगे-पीछे आन्दोलित हुआ जैसे मैं अपना सन्तुलन ही खो बैठूँगा।

"वह तुम्हें सिटकिनी बता रही है।" जैक ने कहा।

मैंने अपना हाथ उसके सिर पर रक्खा और टटोलते-टटोलते उसे उसकी नाक पर ले गया और मुझे विदित हुआ कि यदि वह काष्ठदंड हाथ में लिये एक अध्यापिका भी रही होती तब भी सिटकिनी को उतना ठीक से न बता सकती थी। मैंने उसे उठाया और हम फाटक से निकल चले।

जैक ने चेतावनी दी, "अपना खाली हाथ अपनी बगल में रक्खो, अन्यथा वह फाटक के खंभे से टकरा जायेगा।"

जैक के निर्देशनों का अनुसरण करते हुए मैंने आदेश दिये -'दाहिने' और 'आगे चलो'—इस बार मेरे स्वर में पहले से कुछ कम कंपन था और हम एक धक्के से सड़क पर जा पहुँचे, जैसा पिछले कई वर्षों में कभी न हुआ था। जब मैंने अपने शरीर को सीधा किया तो मुझे सुनाई पड़ा, "अपने कंधों को पीछे किये रहो।" अनजाने मैंने अपना सीना आगे निकाल दिया। मेरे डग बढ़ चले और मुझे श्रीमती युस्टिस का स्वर सुनाई पड़ा, "यह देखो! कैसा सिर उठाकर चल रहे हैं!"

कोई आश्चर्य की बात नहीं! वह बड़ी शोभा और गौरव का अवसर था। एक कुत्ता और एक चमड़े की रस्सी द्वारा मेरा जीवन से संबंध स्थापित हो रहा था। हम फारचुनेट फील्ड्ज से पर्वत-प्रान्त से नीचे की ओर तारोंवाली कारवाले वेवी को जा रहे थे। मुझे भली भाँति पता चल रहा था कि एक छोटे गोदाम को जानेवाली उस ढालुआँ सड़क पर लोगों, कुत्ता-गाड़ियों, ढकेलकर चलाई जानेवाली गाड़ियों, घोड़ों तथा बोझा ढोनेवाली गाड़ियों का ताँता लगा हुआ था। जब मैं भी उभाड़ की कल्पना में स्वास्थ्यप्रद वायु का आनंद लेता चल रहा था तो बडी अकस्मात् रुक गई। "आह! तारोंवाली कारों की सीढ़ियाँ, कदाचित्," मैंने सोचा और अपना पाँव आगे बढ़ाया। निस्संदेह, आगे एक नीचा चबूतरा था। कितना आलोड़नकारी अवसर था! "आगे चलो, तू बड़ी अच्छी है!" मैं चिल्लाया। मुझे लगाम में कुछ धक्के का अनुभव हुआ, जिससे मैं कुछ आगे खिंचा और हम ऊपर चढ़ गये।

केबुलकार (तारों के सहारे चलनेवाली गाड़ी) में हमारे चढ़ने पर जैक भी हमारे साथ बैठ गये।

उसने कहा, "कुतिया को अपने घुटनों के बीच में रक्खो, जिससे कोई

मॉरिस फ्रैंक तथा उनकी सर्वप्रथम दृष्टिदात्री कुतिया, बडी (१९३१)

प्रजनन-शास्त्री जैक हम्फी, जिन्होंने जर्मनी के पोट्सडैम नामक स्थान में जाकर पथ-प्रदर्शक कुत्तों को प्रशिक्षित करने का विशिष्ट ज्ञान प्राप्त किया था। बडी को इन्होंने ही प्रशिक्षित किया था। मॉरिस फ्रैंक मनुष्यों में इनके सर्वप्रथम शिष्य थे।

डोरोथी हैरीसन यूस्टिस, तीन जर्मन-प्रहरी कुत्तों के साथ वे स्विस आल्प्स की अपनी जमींदारी में इस जाति के कुत्तों को पुलिस और रेडक्रॉस के कामों के लिए पालती और प्रशिक्षित करती थीं। परन्तु जब श्री फ्रैंक ने एक पथ-प्रदर्शक कुत्ते के लिए उनके पास पत्र लिखा, तब से वे नेत्रहीनों के लिए पथ-प्रदर्शक कुत्ते प्रशिक्षित करने लगीं।

उसके ऊपर चढ़ न जाये।" तारों से चलनेवाली गाड़ी एक धक्के से गतिशील हुई और बीस मिनट पश्चात् हम पर्वत भूमि को रौंदते हुए नीचे की ओर—लघु-नगर के केन्द्र की ओर—चल पड़े।

वेवी में पहले-पहल पहुँचने के संबंध में मुझे कुछ बातों की धुँधली स्मृति है—वे हैं आदेशों के तथा स्वास्थ्यकर एवं उत्साहवर्द्धक वातावरण में सवेग चलने के मिश्रित शब्द, कंकड़ोंवाली सड़कों पर घोड़ों की टापों का तुमुल रव तथा लोगों की संलाप ध्वनि जिसे मैं समझ न पाता था। तदनन्तर और रुकने के अवसर और आदेशों तथा और सड़कों के किनारे मेरे मस्तिष्क में घूम जाते हैं।

एक संकीर्ण सड़क के किनारे लगाम से मुझे विदित हुआ कि बडी दाहिनी ओर मुड़ रही है, मैं भी उसके साथ मुड़ गया। "वह तुम्हें एक ऐसे व्यक्ति की बगल से कतराकर निकाल ले गई है जो छीमी के दो बड़े झावे लिये जा रहा था।" जैक ने कहा।

बडी रुक गई। मैंने अपना पाँव आगे बढ़ाकर देखा, कहीं कुछ नहीं था। जैक हँसा। उसने बताया, "कोई बात नहीं है। एक महिला तुम्हारे संमुख रुक गई थी। बडी को आगे बढ़ने का आदेश दो।"

मैंने वैसा ही किया और हम व्यवधान से कतराकर चल पड़े। "कोई माँ बच्चों की गाड़ी लिये हुए आगे पड़ गई थी, बडी प्रतीक्षा कर रही थी कि वह अपने बच्चे को लेकर आगे निकल जाय तब हम आगे बढ़ें।" जैक ने कहा।

एक स्थान पर बडी बड़े जोरों से बायें घूमी और फिर पीछे मुड़ी। मुझे आगे कोई व्यक्ति अथवा भवन निकट न प्रतीत हुआ।

"उसने ऐसा क्यों किया?" मैंने जैक से पूछा।

उसने उत्तर दिया, "अपना हाथ ऊपर करो।"

मैंने हाथ ऊपर किया। लगभग मेरी आँखों के बराबर ऊँचाई पर आगे एक चँदवे में एक लोहे का नल था जिसके सहारे वह तना हुआ था। यदि बडी न रही होती तो मेरे मुँह में उसके टकराने से चोट आ गई होती। पथ-प्रदर्शन के उसके इस कार्य पर मुझे बड़ा विस्मय हो रहा था। यदि वह अकेली रही होती तो अपने इतने ऊँचे उस भारी-भरकम नल को कदाचित् ही देख पाती किन्तु मेरे साथ-साथ चलने के कारण मेरी छः फुट लम्बाई के लिए उसकी आँखों ने उसे देख लिया। उसे कोई आदेश नहीं दिया गया था, फिर भी उसने वैसा सर्वथा अपनी समझदारी से किया था। जब उसने वैसा

किया तो उसमें विचार-शक्ति काम कर रही थी। उसकी आँखों से वस्तुतः मैं देख रहा था। मैंने भावपूर्ण हृदय से कहा, "तू बड़ी अच्छी लड़की है।"

प्रत्येक नये अनुभव से लगाम से पता लगाने की मेरी शक्ति बढ़ती जा रही थी, बीच-बीच में मुझे विश्राम करना आ रहा था और बडी पर मेरा विश्वास बढ़ता जा रहा था। दो घंटे तक जैक लगातार मुझे कुतिया की गतियों का अर्थ बताते रहे और मुझे बार-बार स्मरण दिलाते रहे कि मैं शरीर सीधा कर के चलूँ और उसकी रस्सी को बहुत कड़ाई से न पकड़ूँ। बडी पूँछ हिलाती हुई सहर्ष अपना कार्य करती रही मानो इस बात से वह बड़ी प्रसन्न थी कि उसे मुझसे कहीं अधिक ज्ञान था।

मेरे हृदय में ऐसा आलोड़न था कि जब मैं घर पहुँचकर कुर्सी पर ढुलमुला गया तब कहीं जाकर मुझे विदित हुआ कि मैं कितना थक गया था। मेरे पाँव चुटैल से हो गये थे, उनकी पेशियों में पीड़ा हो रही थी क्योंकि मुझे वैसे व्यायाम का अभ्यास न था। मेरी बाईं बाँह में भी कुछ कष्ट था और लगाम पकड़े-पकड़े मेरी पीठ में भी पीड़ा हो रही थी। किन्तु इन पीड़ाओं के होते हुए भी मेरा हृदय बाँसों उछल रहा था जैसा पिछले कई वर्षों में कभी न हुआ था।

जब मैं प्रतिदिन प्रातःकाल और अपराह्न में पाँच दिनों तक इस प्रकार चलने का अभ्यासी हो गया तो जैक ने कहा,—"कल तुम अपने भरोसे घूमोगे। मैं तुम्हारे पीछे कुछ दूरी पर रहूँगा, किन्तु तुम्हारे घूमने में कोई हस्तक्षेप न करूँगा।"

भीतर-भीतर मैं काँप उठा। प्रत्येक पर्यटन में जैक और और कठोर होते जाते थे। जब मेरा मन इधर-उधर चक्कर लगाने लगता और मैं अन्य-मनस्क होने लगता तो वे उसे सह न सकते थे। जब सुखद उत्साहवर्धक वातावरण में घूमने से मैं मस्त हो जाता तो वे मुझे बड़े जोरों से यह स्मरण दिलाकर कि मेरा प्रशिक्षण चल रहा है, मुझे बाह्य-जगत् की वास्तविकता में ला देते। वे बड़े उत्कृष्ट प्रशिक्षक थे।

उन्होंने चेतावनी दी थी, "अब मैं तुम्हें किसी बात का स्मरण नहीं दिलाऊँगा। जैसा मैंने तुम्हें सिखाने का प्रयत्न किया है वैसा यदि तुम न करोगे तो एक दिन स्वयं धड़ाम से गिरोगे। तब तुम्हारी मोटी बुद्धि में बातें स्वयं आ जायेंगी।"

मैं उनकी बातें सुन लेता और आशापूर्ण हृदय से सोचता, "वे मुझे आहत थोड़े ही होने देंगे।"

जब दूसरे दिन प्रातःकाल बडी और मैं सामनेवाले द्वार पर पहुँचे तो जैक ने मुझे नगर जाते और वहाँ से लौटते समय मार्ग में पड़नेवाले प्रत्येक घुमाव और व्यवधान को एक बार फिर से बताया। तत्पश्चात् हम पहली बार अपने भरोसे घूमने निकले।

फाटक पर जब बडी रुकी, उसके साथ रुकने के स्थान से मैं दो डग और आगे चला गया और खंभे से तड़ से टकरा गया। जैक जोरों से मेरे पीछे हँस पड़े और कहा, "मैंने तुम्हें बताया था किन्तु तुम तो सुनते नहीं।"

मैंने फाटक की सिटकिनी उठाई और यह दिखाने की चेष्टा की कि मैं खंभे से केवल रगड़ खा गया था तथा मैं भी उनकी भाँति हँस पड़ा।

मैंने आदेश दिया—'आगे चलो और दाहिने।' बडी तनिक भी नहीं हिली। जैक ने भी एक शब्द नहीं कहा। "अरे, मेरा कहना है दाहिने, आगे चलो।" मैंने भूल-सुधार की और दो मिनट में दो भूलें करने के कारण कुछ घबड़ाया हुआ-सा था। मैंने अनुभव किया, बडी पूँछ हिला रही थी और तब हम आगे बढ़ चले।

बडी तारों के पासवाली सीढ़ियों के पास यथापूर्व रुक गई, किन्तु मैं घबड़ाया हुआ था, इस कारण स्वयं शीघ्रता से न रुक सका। मैं टकराकर गिर गया और मेरे घुटनों को काफी चोट पहुँची। जैक ने यह भी नहीं कहा कि "तुमको चोट तो नहीं आई?" उन्होंने केवल हँस दिया। धूल झाड़ने के अनन्तर दाँत पीसते हुए मैंने सोचा, "एक नेत्रहीन व्यक्ति के साथ इस प्रकार का बर्ताव करना भारी नीचता है।"

मैं केबुल कार में जाकर बैठ गया और अपनी निराशा तथा चिंता में डूब गया तथा बडी को अपने सामने धम से बैठ जाने दिया—इस बात पर कोई ध्यान न दिया कि उसके पाँवों को ऐसा कर दें कि वे कुचल न जायँ। जैक ने जान-बूझकर उसके पंजों पर पाँव रख दिया और वह चिल्ला उठी। मैंने जल्दी से उसे अपने घुटनों के बीच में कर दिया, जैसा मुझे करना चाहिए था और वहाँ मन मारे चिन्तित-सा बैठ गया। केबुलकार द्रुतगति से पर्वत के नीचे की ओर जा रही थी, किन्तु मेरे हृदय की नीचे उतरने की गति उससे कहीं तेज थी।

जैक हम लोगों से कुछ न बोले। मैं विक्षुब्ध सोच रहा था, "वे क्यों इस प्रकार मेरे ऊपर हँसते हैं।" "उन्होंने मुझे गिरने से क्यों नहीं बचा

लिया ? और उन्होंने क्यों यह आवश्यक समझा कि बडी के पाँव को दबा-कर मुझे एक पाठ सिखाया जाय ?"

वेवी में पहुँचने पर जैक पर तब भी क्रोध ठंडा न होने के कारण कुछ कुपित और हतोत्साह तथा कृत्रिम चिन्तामग्नता दिखाते हुए मैं बडी के पीछे चुपचाप चल रहा था, यद्यपि वह अत्यन्त सतर्कता से चल रही थी। मेरा कन्धा कई लोगों से रगड़ खा गया तथा मुझे बलात् और अत्यन्त करुण रूप से इस बात के लिए विवश किया कि मैं अपनी बाँह को और अपने समीप कर लूँ।

जब मैं पहले कोने के पास पहुँचा तो मैं क्रोध के मारे उबल रहा था और आने-जानेवाले लोगों की ध्वनि न सुन सका, जैसा कि जैक ने मुझे निर्देश दिया था। शीघ्रता में मैंने आदेश दिया, "आगे चलो।" आधी दूर चलकर बडी अकस्मात् रुक गई और तब बड़े वेग से पीछे मुड़ी और मुझे भी अपने साथ खींचने लगी। मेरे पास से एक कार भर्राती हुई निकल गई—वह इतने पास से गई कि उसके पिछले पहियों से उछाले हुए कंकड़ मेरे मुँह पर लगे। इस बात ने मेरी बुद्धि ठिकाने कर दी। जब मैं सामने सड़क के किनारे पर निरापद स्थान में पहुँच गया तो मैंने जी भरकर उसका खूब आलिंगन किया।

फारचुनेट फील्ड्ज लौटते समय मुझे उतना कष्ट नहीं हुआ। मुझे अधिक विश्राम मिला और मैं अपने पथ-प्रदर्शक के पीछे स्वैर-गति से चलता रहा किन्तु जैक के प्रति मेरी क्षोभ की भावनाएँ ज्यों की त्यों बनी हुई थीं।

जब मैं घर पहुँचा तो मैंने कहा कि मैं भोजन नहीं करूँगा और सीधे अपने कमरे में जा पहुँचा।

मैं बिस्तर पर पड़ा हुआ बडी को बता रहा था कि मेरे साथ बड़ा अनुचित बर्ताव किया गया तब तक मैंने द्वार खुलने का शब्द सुना और मुझे विदित हुआ कि कोई भीतर आया।

जैक कह रहे थे, "देखो मारिस ! तुम्हारे सामने दो उपाय हैं। तुम या तो केवल एक नेत्र-हीन व्यक्ति बने रह सकते हो अथवा बडी की आँखों का सहारा लेकर आत्म-निर्भर बन सकते हो। तुम मेरे भरोसे नहीं रह सकते। यदि मैं तुम्हारे साथ-साथ चलता रहूँ और तुम्हें सभी बातें बताता फिरूँ, तो तुम अपने कुत्ते पर नहीं निर्भर हो सकते। तुम्हारा अधिकार संकेतों पर कभी भी न हो पायेगा।"

मैंने कोई उत्तर न दिया।

जैक कहते रहे, "जब तुम संयुक्तराष्ट्र लौट जाओगे तो मैं तो तुम्हारे साथ जाऊँगा नहीं। तुम्हारा भविष्य तुम्हारे हाथ में है।"

उन्होंने धीरे से द्वार बंद कर दिया तब कहीं जाकर मुझे विदित हुआ कि वे चले गये। मैं लज्जित था। मैंने मन ही मन कहा कि जैक ने कोई असहानुभूति नहीं दिखाई। उनका व्यवहार सर्वथा उचित था।

उस दिन, रात को जब मैं सोने गया तो मुझे कुछ अकेलेपन का अनुभव हो रहा था और मैं कुछ हतोत्साह-सा था। यदि अन्तोगत्वा मैं पथ-प्रदर्शक कुत्ते का प्रयोग करना न सीख सका तो क्या होगा? यदि मुझमें आवश्यक चित्त की एकाग्रता नहीं है तो क्या किया जाय? यदि मैं बडी के साथ सांकेतिक-संलाप में दक्षता प्राप्त न कर सका तो क्या स्थिति होगी? यदि मैं नैशविले यों ही लौट जाऊँगा और लोगों के समक्ष मुझे स्वीकार करना पड़ेगा कि मैं कृतकार्य न हो सका तो मैं कितना मूर्ख प्रतीत होऊँगा। जिन दूसरे नेत्रहीनों की मैं सहायता करना चाहता था वे कभी जान भी न पायेंगे कि मैंने उनके लिए कुछ प्रयत्न किया था।

अकस्मात् मेरे मस्तिष्क में घूम गया कि मैं घर से बहुत दूर हूँ—मेरे और मेरे ऊपर अनुराग रखनेवाले व्यक्तियों के बीच विशाल समुद्र तथा विदेशी भूमि थी। आज पहली बार मुझे अपने घर की स्मृति बहुत संतप्त कर रही थी।

बडी मेरे बिस्तर के पास ही थी। वह उठ पड़ी जैसे वह समझ रही हो कि मेरा मन गिरा हुआ है। वह मेरी बगल के प्रच्छद के ऊपर चढ़ आई और मेरे गले के पृष्ठ भाग को अपनी नाक से स्पर्श करने लगी तथा जितना हो सकता था, मेरे समीप सट आई और देर तक सन्तोष और साहचर्य-सा व्यक्त करते हुए घुरघुराती रही।

उसके इस प्रेमपूर्ण बर्ताव से मेरी मानसिक स्थिति एकदम बदल गई। जब मैं प्रातःकाल का सिंहावलोकन करने लगा तो मैंने सोचा कि वस्तुतः कोई अत्यन्त दुःख का कारण न था। मैंने बहुत सी भूलें अवश्य की थीं, किन्तु मैंने उनसे बहुत कुछ सीखा था। यात्रा के अन्तिम भाग में मुझे पर्याप्त सफलता मिली थी। यहाँ तक कि जैक ने भी उस बात को स्वीकार किया था। उन्होंने कहा था, "तुम्हें काफी सफलता मिली, क्योंकि तुम पहली बार अपने भरोसे चल सके।"

सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह थी कि बडी ने मुझे यह दिखा दिया था कि

यदि मैं अपना कार्य सुचारु रूप से करूँ तो हम निरापद रूप से साथ-साथ चल सकते हैं। मेरी मनोव्यथा जाती रही थी; मुझे बड़े चैन के साथ नींद आने लगी—बगल में बडी का होना मुझे बड़ा अच्छा लग रहा था।

उस रात एक नये साहचर्य का जन्म हुआ—एक कुत्ते और एक मनुष्य के जीवन में नये सहवास की नींव पड़ी—कुत्ता मनुष्य का तारक बननेवाला था, नये संसार का द्वार खोलनेवाला था और अन्य संसारों—बातों—की विजय का मार्ग प्रशस्त करनेवाला था।

हमारी प्रशिक्षण-यात्राएँ नित्यप्रति कठिनतर होती जा रही थीं। जैक ने मेरे और बडी के परीक्षणार्थ कई यात्राओं का कार्यक्रम बनाया जिससे हम विवश होकर सभी परिस्थितियों में साथ-साथ चलना सीख लें। एक दिन हमें सर्वथा अप्रत्याशित रूप से अपनी सीखी हुई बातों की परीक्षा देनी पड़ी। जब हम केबुल कार से उतरकर संकीर्ण पथ से धीरे-धीरे चले तो मेरे कानों में जोरों की गड़गड़ाहट और खुरों की ऊटपटाँग टपटप का तुमुल रव सुनाई पड़ा।

जब कोलाहल हम लोगों की ओर बढ़ा तो मैंने सोचा, "घोड़ों की भगदड़ है।" मेरी समझ में न आया कि किस ओर भागकर जाऊँ। किन्तु बडी के लिए वह बात न थी। वह सड़क के किनारे दाहिनी ओर इतने वेग से झपटकर मुड़ी कि मैं उससे गिरते-गिरते बचा। तब लगाम इतने ऊँचे उठ गई कि मुझे उसे पकड़े रहने के लिए अपने सिर से बहुत ऊँचे उठना पड़ा—वह मुझे एक अत्यन्त ढालुआँ बाँध के ऊपर लड़खड़ाते हुए लिये जा रही थी। वस्तुतः वह मुझे सात फुट ऊँचे ढालू चट्टानी भाग पर खींच ले चली। हम बड़े ठीक समय से पथ से दूर हाँफते हुए चोटी पर पहुँचकर रुक गये तब तक एक चरमर करनेवाली भारी चौपहिया गाड़ी का बोझ खींचनेवाले, जोरों से साँस लेते हुए, उन्मत्त-से पशुओं का वह झुण्ड मुड़कर निकल गया।

जब यह सारा दृश्य समाप्त हो गया और मैंने नीचे उतरकर प्रशंसा करते हुए बडी को थपथपाया तब मुझे अकस्मात् अनुभव हुआ कि जैक ने सारा वृत्तान्त देखा था। बहुत दूर पीछे होने के कारण वे सहायता न कर सकते थे, वे हतप्रभ प्रार्थना करते रहे कि हम उस महासंकट से बच जायँ। हम बच गये—इसके लिए बडी हमारे कोटिशः धन्यवाद की पात्र है।

जैसे-जैसे प्रशिक्षण-कार्य आगे बढ़ता गया, चित्त को एकाग्र रखने की

मेरी शक्ति भी बढ़ती गई, इससे जब आदेश दिये जाते तो मुझे कभी यह कहने की आवश्यकता न पड़ी कि वे दुहराये जायँ। मैं स्वयं भी आदेश बडी के सिर के ठीक पीछे मुड़कर बड़े स्पष्ट और तार स्वर से देता; मेरा कण्ठ अत्यंत शक्तिशाली हो गया था। अब बड़ी के नैतिक-संलाप सरलतापूर्वक मेरी समझ में आ जाते थे। मैं अब यह भी बता सकता था कि वह अपना सिर बायें घुमानेवाली है या दाहिने।

अब जैक को विश्वास हो गया था कि हम वेवी के आस पास और, पीछे, बिना जैक के अत्यंत समीप रहे, अपना मार्ग ढँढ़ ले सकते हैं। केबुल कार से पर्वत के नीचे पहुँचाकर वे हमें अपने भरोसे छोड़ देते थे। लघुनगर की कंकड़ोंवाली सड़कों पर हम लोगों की द्वयी बड़ी परिचित हो गई थी और हमारा पर्याप्त अभिनन्दन किया जाता था। अब मैं डाकिये, फूल बेचनेवाली महिला और मटरगश्ती करनेवाले पुलिस के सिपाही के नमस्कारों को अलग-अलग पहचान लेता और उनका उत्तर दे सकता था।

बडी और मैं जैक द्वारा निर्धारित यात्रा पर द्रुतगति से चल पड़ते। यदि मैं केबुल कार के आने के पहले पहुँच जाता तो प्रायः हमारा यह निश्चित क्रम हो गया था कि वह और मैं गोदाम के किनारेवाले जलपान-गृह में साथ-साथ मदिरा पीते। थोड़े ही समय में मुझे ऐसा अभ्यास हो गया कि मैं जैक द्वारा निर्धारित यात्रा से ऐसे समय से लौट आता कि हम कार आने के पहले दो-दो गिलास मदिरा पी लेते थे। मैं सोचता, मेरी उन्नति की गति सन्तोषजनक है।

मैंने अपने माता-पिता को बड़ी प्रसन्नता के पत्र लिखे, "इस बात को सोचिए कि अब मैं जहाँ चाहता हूँ, वहाँ जा सकता हूँ। आप लोग जानते ही हैं कि पिछले चार वर्षों में मैं कभी नहीं रोया हूँ। किन्तु जब मेरा सहचर कुत्ता मेरे चारों ओर से भर्राती हुई मोटरों से भरी सड़क के बीच से मुझे निरापद निकाल ले जाता है, तो मेरी इच्छा होती है कि जैसे मैं पटरी पर बैठ जाऊँ और उसके गले में बाहें डालकर रो लूँ।" जब मैं सोचता कि अमेरिका के सभी नेत्रहीन व्यक्ति इस प्रकार रक्षा करने-वाले सहचर का लाभ उठा सकते हैं तो मेरे हृदय का उल्लास सहस्र-गुणित हो उठता था।

किन्तु मेरा जीवन केवल रँगरलियों से ही नहीं भरा हुआ था। मैं एक दिन बडी के साथ वेवी नगर के चतुष्पथ पर रुक गया और मुझे अनुभव हुआ कि कोई बड़े अधिकारपूर्ण रूप से मेरे कोट की अस्तीन को खींच

रहा था। तब एक महिला ने बड़े टकसाली आँग्ल उच्चारण में मुझसे कहा, "तरुण! एक बेचारे कुत्ते को बंधन में रखकर तुम बड़ा अत्याचार कर रहे हो!"

मैं शान्त भाव से बोला, "महोदया! यह कुतिया जानती है कि उसे प्यार किया जाता है, उसका किसी से सम्बन्ध है और किसी को उसकी आवश्यकता है। वह प्रातःकाल बच्चों के पाठशाला जाते समय बाहर करके तीसरे पहर उनके लौटने तक स्वयं इधर-उधर टकराने के लिए नहीं छोड़ दी जाती। उसके ऊपर कोई ढेले नहीं फेंक पाता, और उसके पानी पीनेवाले बर्तन को कभी गंदा या खाली नहीं रहने दिया जाता। जब उसे भूख लगती है तो उसे किसी जूठे के पास दौड़ने की आवश्यकता नहीं पड़ती।"

महिला यद्यपि मौन रही किन्तु उसके उस मौन से मुझे ऐसा विदित हो रहा था कि बिना उसे और समझाये, बात उसकी समझ में आ नहीं सकती।

मैं कहता गया, "फिर प्रत्येक कुत्ता मानव-साहचर्य का सबसे अधिक प्रेमी होता है। मैं उसे प्यार करता हूँ, और सदैव उसे भली भाँति साफ-सुथरा रखता हूँ तथा उसे कभी कोई कष्ट नहीं होने पाता। इसके बदले में वह सहर्ष मेरी आँखों का काम करती है।"

मेरी वक्तृता का उस पर कोई प्रभाव न पड़ा; वह और उत्तेजित हो गई।

मैंने अनुभव किया, वह दाँत पीसती हुई अपना छाता घुमा रही थी। वह फिर बोली—"भले मानस! तुम संयुक्तराष्ट्र से इतनी दूर आये हो, इसका तात्पर्य यह है कि तुम्हारे पास रुपये की कमी नहीं है। तो तुम किसी व्यक्ति को नौकर क्यों नहीं रख लेते जो तुम्हारी देख-रेख भी करे और तुम्हारा पथ-प्रदर्शन भी कर सके? तुम व्यर्थ यहाँ आकर क्यों एक विदेशी कुत्ते को बंधन में रक्खे हुए हो?"

और उसने अपने तर्क की अधिक उग्रता और प्रभविष्णुता जताने के लिए ओठ काटते हुए कहा, "क्या तुम खीष्ट-मतावलम्बी नहीं हो?"

यह सुनकर मैंने अपना हैट लगाते हुए कहा, "जी नहीं, मैं मुसलमान हूँ! बडी! आगे चलो।"

आगे एक आँग्ल-महिला से मेरी और मुठभेड़ हो गई। उससे मुझे उस महिला के लिए कुछ करुणा-सी आ रही थी।

"तुम्हारी कुतिया को बच्चे कब होंगे ?" उसने पूछा।

मैंने उसे बताने की चेष्टा की कि बडी एक निश्चित उद्देश्य लेकर चल रही है और वह कभी माँ नहीं बनेगी।

उसने सहानुभूति-पूर्ण शब्दों में धीरे-धीरे कहा, "अरे बेचारी! वह भी मेरी भाँति आजीवन वृद्धा कुमारी रह जायगी!"

मुझे फारचुनेट फील्ड्ज में रहते कई सप्ताह हो चुके थे। एक दिन प्रातःकाल मैंने श्रीमती युस्टिस से कहा, "मैं बाल कटवाने की सोच रहा हूँ। अतएव सोचता हूँ कि जैक से कहूँ कि वे मुझे नाई की दूकान पर ले चलें।"

उन्होंने उत्तर दिया, "तुम स्वयं चले जाओ। तुम्हारे पास अपना कुत्ता तो है ही।"

कितना भारी काम है! मैं कभी अकेले नगर के चारों ओर द्वार-द्वार न गया था। मेरे हाथों में पसीना आ गया और एक उत्तेजना से मेरे सारे शरीर में गर्मी-सी दौड़ गई। यह पहला अवसर है जब मैं जैक के बिना अपने भरोसे बाहर निकलने का दुःसाहस करूँगा।

मैं तीव्र स्वरों में बोला, "बडी, आगे चलो।"

जब हम परिचित मार्गों से फाटक से गाड़ी के तारों की ओर स्वयं वेवी की ओर चले तो मेरी इन्द्रियाँ जैसे अधिक काम कर रही थीं।

जो-जो निर्देश मुझे दिये गये थे, इस समय मैं उन्हें दुहरा रहा था। मेरी अवस्था गोरखधंधे में अपना मार्ग ढूँढ़ने वाले शिशु के सदृश हो रही थी—अन्तर केवल इतना ही था, कि यह खेल न था, वास्तविकता थी। यदि कहीं मैं ऐसा खो गया कि ढूँढ़ना कठिन हो जाय तब क्या होगा? यदि मुझे नाई की दूकान न मिल सकी और असफल होकर हृदय पर पत्थर धरे घर लौट आना पड़ा तो कैसी स्थिति होगी?

ग्राम की दूकानों के पास से निकलते समय मैं मार्ग के पत्थरों को गिनता जा रहा था। मुर्गियों के शब्द से मुझे विदित हुआ कि मैं मुर्गियों के पालनेवाले के घरवाले मोड़ पर पहुँच गया। मैं बायें मुड़ गया। थोड़ी ही देर में मुझे बिस्कुट बनानेवाले की दूकान से निकलनेवाली पावरोटी की सुगंध का भान हुआ और तब मुझे पूरा विश्वास हो गया कि मैं ठीक मार्ग पर हूँ।

"दाहिने, बडी" मैंने कहा।

तब तक अकस्मात् मुझे तेजपात की मदिरा के स्वर्गिक सुगंध के

वातावरण में नाई के अभिवादन के शब्द सुनाई पड़े—"नमस्कार महोदय!"

यद्यपि वह बहुत दिनों से बाल काटने का काम कर रहा था किन्तु मुझे विश्वास है कि उसे उस दीर्घ अन्तर में अपने अभिवादन का वैसा प्रेम-पूर्ण, भावाकुल और उल्लासकर उत्तर न मिला होगा जैसा मैंने दिया।

मैं उसके बाल काटने से ऐसा प्रसन्न हुआ जैसे रिंज के सुप्रसिद्ध केश-प्रसाधक ने विशिष्ट रूप से मेरे बालों को काटा हो और उनका विन्यास किया हो। हम घर इतनी द्रुतगति से चल पड़े जैसे हम अपने संयुक्त छहों पावों को काम में लाने के स्थान में पंखों पर उड़ रहे हों।

मैं पहुँचकर अपने रहनेवाले कमरे में बैठ गया और हँसने तथा ठहाका मारने लगा, यहाँ तक कि कुछ ही क्षणों में मेरी आँखों में आँसू आ गये।

"क्या बात है, मारिस?" श्रीमती युस्टिस ने पूछा।

"महोदया!" मैंने उत्तर दिया, "मैं सोलह वर्ष की अवस्था से नेत्रहीन हूँ। वर्षों से मुझे किसी को साथ लेकर नाई के पास जाना पड़ता था। कभी-कभी वहाँ मुझे लावारिस सामान की भाँति घंटों प्रतीक्षा करनी पड़ती थी। कभी-कभी मेरे पिताजी अपने काम पर जाते समय नौ बजे मुझे वहाँ ले जाकर पहुँचा देते और मैं वहाँ तब तक बैठा रहता जब तक कि वे दोपहर के समय मुझे लिवाने के लिए न आते। आज जब मैंने आपसे बाल कटवाने की चर्चा की, तो आपने बताया कि मुझे कहाँ जाना चाहिए और किस प्रकार। मैं कुतिया को साथ लेकर या उसके साथ होकर गया और स्वयं अपने बाल कटाकर लौट आया। आज सबसे पहली बार मुझे विश्वास हुआ है कि मैं वस्तुतः आत्मनिर्भर होने जा रहा हूँ। इसी-लिए मैं हँस रहा हूँ—मैं स्वतंत्र हो गया हूँ, ईश्वर जाने, मैं स्वतंत्र हो गया हूँ।"

कोई नेत्रोंवाला व्यक्ति भी मेरे अपार हर्ष की कल्पना न कर सकता था। मेरी दशा एक पक्षी की भाँति थी जो पहले बंधन में रहा हो और अब उसे विनिर्मुक्त कर दिया गया हो। सोलह वर्ष की अवस्था के पश्चात् से मैं केवल अपने को प्रसन्न दिखाने के लिए मुसकराया करता था। चार वर्षों में आज पहली बार मैं वस्तुतः हृदय से हँसा था।

जब मेरे पूर्ण "स्नातक" होकर घर जाने का समय समीप आने लगा, तो श्रीमती युस्टिस, जैक और मैं गोष्ठियाँ करने लगा कि किस प्रकार

अमेरिका के नेत्रहीन व्यक्तियों के लिए बडियों का प्रबंध करने के लिए एक संस्था का निर्माण किया जाय। श्रीगणेश किस प्रकार किया जाय ? उसके लिए आवश्यक धन की क्या व्यवस्था हो ? क्या संयुक्तराष्ट्र में बुद्धिमान् कुत्ते पर्याप्त संख्या में मिल जायँगे ? उनके और अन्धों द्वारा उनके प्रयोग या प्रशिक्षण का कार्य वहाँ कौन चलावेगा ?

हमने सोचा कि सबसे अच्छा यह होगा कि पहले नैशविले में एक कार्यालय स्थापित किया जाय; क्योंकि वहाँ मेरा घर है और पर्याप्त केंद्रस्थ होने के कारण उसकी स्थिति भी अच्छी है। वहाँ से फिर हम शाखाएँ स्थापित कर सकते हैं। बड़ा अच्छा हो, यदि हमें पूर्व-स्थापित दातव्य नेत्रहीन-सहायक केन्द्रों से सहायता प्राप्त हो सके। ऐसे बहुसंख्यक केन्द्र देश के विभिन्न भागों में बड़े अच्छे स्थानों पर बने हुए हैं और उनके पास पहले से एतदर्थ आवास-स्थान, भूमि तथा धन की अच्छी व्यवस्था है। यदि वे हमें ऐसी सुविधाएँ तथा आर्थिक सहायता देकर हमारा हाथ बटायें तो यह कार्य तुरन्त आरंभ किया जा सकता है। हमें जितने कुत्ते और प्रशिक्षक उपलब्ध हो सकें, हम उतने नेत्रहीनों के प्रशिक्षण का कार्य तुरन्त आरंभ कर सकते हैं। परन्तु यदि हमें उपर्युक्त संस्थाओं का सहयोग न प्राप्त हो सका तो फिर हमें अपने आर्थिक साधनों के अनुसार कार्य आरंभ करने में छोटे पैमाने पर काम का श्रीगणेश करना पड़ेगा।

आरंभ में फारचुनेट फील्ड्ज केवल कुछ कुत्ते और प्रशिक्षक दे सकता था। यदि प्रगति संतोषजनक रहे, तो आवश्यकता पड़ने पर सारे प्रशिक्षक-वर्ग और कुत्तों को नये पर्युपक्रम (entraprize) की अपेक्षाओं के अनुरूप बढ़ाया जा सकता है।

श्रीमती युस्टिस ने कहा, 'यह सब दूर के भविष्य की बात है। पथ-प्रदर्शक कुत्तों के प्रशिक्षण-केन्द्र स्थापित करने के लिए पहले दो बातों की सबसे अधिक आवश्यकता है। पहली, यद्यपि हमें तो पूर्ण विश्वास है कि बडी तुम्हें पूर्णतया आत्मनिर्भर बना सकती है, किन्तु तुम्हारे घर पर पहले लोग विश्वास न करेंगे। साथ ही हम यह भी नहीं जानते कि वेवी जैसे लघु नगर में प्रशिक्षित कुत्ता संयुक्तराष्ट्र के अपरिचित, कोलाहलपूर्ण तथा जन-संकुल बड़े-बड़े केन्द्रों में कैसा काम करेगा। तुमको और बडी को नगरों में जा-जाकर एकदम निस्संदिग्ध रूप से दिखाना पड़ेगा कि तुम केवल थोड़ा-बहुत इधर-उधर घूम ही नहीं सकते प्रत्युत सारे कार्य ऐसी सुघरता से कर सकते हो जैसे कोई आँखोंवाला व्यक्ति कर सकता है।"

सचमुच यह आदेश और आशा बहुत बड़ी थी। जब मैंने शिकागो की गोरखधंधेवाली जन-संकुलता तथा यातायात का ध्यान किया तो मेरा हृदय काँप गया।

"दूसरी बात", श्रीमती युस्टिस ने आगे कहा, "तुम्हें यह न भूलना चाहिए कि जलपान-गृहों, होटलों, कार्यालयों, गोदामों एवं दूकानों सभी स्थानों में लिखकर टँगा रहता है—"कुत्तों के लिए प्रवेश-निषेध"। यदि नेत्रहीन व्यक्ति का सहारा कुत्ता सर्वत्र अपने स्वामी के साथ बेखटके नहीं जा सकता तो फिर उसके स्वामी को उससे लाभ ही क्या है? फिर गाड़ियों, कारों तथा मोटरों में उस पर जो प्रतिबंध रहेगा उस संबंध में क्या होगा? यदि कोई व्यक्ति अपने काम पर पहुँचने के लिए अपने कुत्ते का प्रयोग नहीं कर सकता तो वह जीवन-वृत्ति के लिए कोई काम हाथ में नहीं ले सकता। जब तक सभी सार्वजनिक स्थानों में पथ-प्रदर्शक कुत्तों के प्रवेश की व्यवस्था न हो जाय तब तक उपर्युक्त प्रकार की कोई संस्था सफलरूप से कैसे चल सकेगी?"

वास्तव में यह गम्भीर तथ्य था।

निष्कर्ष में उन्होंने कहा, "अतएव तुम्हारा दूसरा काम यह होगा कि तुम ऐसा कर लो कि बडी को साथ लेकर तुम अमेरिका में सर्वत्र वैसे ही प्रवेश पा सको जैसे अपने बेत के साथ।"

यह काम सुकर न था। बहुत से स्थानों में बडी के केवल मुँह के प्रवेश पाने के लिए बड़े दृढ़ प्रयत्न की आवश्यकता पड़ेगी। उनमें प्रवेश पाने के अनंतर जब उन्हें उसके कार्यों को देखकर पूर्ण विश्वास हो जायगा कि वह कोई गड़बड़ी नहीं कर सकती तभी वे वर्षों से चले आते हुए पुराने नियम को ढीला करेंगे।

"जब मैं पिछली बार संयुक्तराष्ट्र गई थी", श्रीमती युस्टिस कहती गईं, "तो मुझे स्मरण है कि मैंने सड़कों पर कुछ ऐसे अन्धे भिक्षुक देखे थे जो कुत्तों को अपना सहचर बनाये हुए थे। जीवन में पराभूत से दिखाई पड़नेवाले उन श्वेत अस्थि-पिंजरों की स्मृति अब भी मेरा हृदय हिला देती है। मारिस! तुम जनता के हृदय में एक नई भावना भरने की चेष्टा करना। तुम अपना सिर ऊँचा रखना और ऐसा करना जिससे अन्धा व्यक्ति और उसका साथी कुत्ता समाज में आदर पा सकें और वे आत्म-निर्भर हो सकें।"

नाना प्रकार के सन्देह मुझे घेर रहे थे। क्या मैं ऐसा कार्यभार अपने हाथ में ले रहा हूँ जिसे मैं कभी न पूरा कर पाऊँगा?

"इसमें संदेह नहीं कि अपनी अभीष्ट-सिद्धि की आधार-शिला के न्यास के इस कार्य के अन्तिम भाग में तुम्हें कुछ दीर्घकाल तक विशेष परिश्रम करना पड़ेगा," श्रीमती युस्टिस ने फिर कहा, जैसे वे मेरे मनोभावों को पढ़ रही हों,"पुरानी बनी हुई भावनाओं के मूलोच्छेदन में समय लगता है। किन्तु जब तुम नैशविले में लौटोगे तो अपरिचित भीड़-भाड़ में बडी की शक्ति की परीक्षा कर सकते हो। तुम प्रत्येक बड़े नगर में रुकते हुए जाना और सबमें उसकी कठिन परीक्षा करना। इस संबंध में उस पर दया न दिखाना। यदि वह और तुम उस अग्नि-परीक्षा में खरे उतरे और सिद्ध कर सके कि नेत्रहीन व्यक्ति अपने कुत्तों के साथ अमेरिका के नगरों की भीड़-भाड़ में भली भाँति चल-फिर सकते हैं, तो मैं पथ-प्रदर्शक कुत्तों के प्रशिक्षण-विद्यालय की स्थापना में तुम्हारी सहायता करने के लिए दस सहस्र डालर की एक निधि प्रत्याभूत कर दूँगी और कुछ प्रशिक्षक भी भेज दूँगी।"

फिर हम लोगों में अपनी प्रस्तावित संस्था के नामकरण के बारे में बातचीत होती रही।

मैंने श्रीमती युस्टिस से कहा,"मैं उसका नाम 'जीवन-ज्योति' रखना चाहूँगा; इसी शीर्षकवाले लेख के कारण हमारा संमिलन हुआ।"

उन्होंने उत्तर दिया, "मेरे विचार से भी यह बड़ा सुन्दर नाम होगा। यह अभिधान एक ऐसी पुस्तक से लिया गया है जो स्वयं शताब्दियों से अनुपम पथ-प्रदर्शक रही है। पुराने धर्म-नियम की 'कहावत' पुस्तक (२०:१२) सुननेवाले श्रवण तथा जीवन-ज्योति नयन, दोनों ही को परमेश्वर ने बनाया है।"

जब हमारे प्रस्थान का समय आ गया तो श्रीमती युस्टिस, जैक, श्रीमती हम्फी तथा शिशु जार्ज हमें और बडी को स्टेशन तक पहुँचाने आये और हमारी सुखावह यात्रा के लिए उन्होंने मंगल-कामना की।

श्रीमती युस्टिस ने विदा के समय स्नेह से मेरे हाथ को दबाते हुए कहा, "मारिस, अब तुम वह लज्जालु, नतमुख और अनिश्चित-जीवनवाले किशोर नहीं रहे जिसे हमने छः सप्ताह पूर्व देखा था। हमें तुम्हारे ऊपर गर्व है।"

मुझे शब्द ही न मिलते थे कि मैं उन्हें किस प्रकार धन्यवाद दूँ। मेरा हृदय भावनाओं से ओत-प्रोत हो रहा था। मैं आजीवन उन सभी का ऋणी रहूँगा। वे कभी न जान पायेंगे—मैं स्वयं भी नहीं समझा सकता

कि उन दिनों ने मेरे लिए क्या कर दिया है। मैं सोच रहा था फारचुनेट फील्ड्ज (सौभाग्य निकेतन) यथा नाम तथा गुणवाली कहावत को चरितार्थ करता है। उन लोगों के कारण मुझमें बड़ा आत्म-विश्वास आ गया था।

मैंने अपने कंधों को सीधा किया, एक गहरी साँस ली और अपने वक्षःस्थल को ऊँचा करते हुए मैं अधिक से अधिक लंबा दिखाई देने की चेष्टा करता रहा। मैंने अनुभव किया कि अब मैं अपने महान् उद्देश्य के लिए पूर्ण परिकर-बद्ध हूँ। अब मैं अपनी भाँति अमेरिका के सभी नेत्र-हीनों के लिए ऐसा संभव कर दूँगा कि वे भी अपनी स्वतंत्रता की उद्घोषणा कर सकेंगे।

अध्याय ३

घर की ओर निवर्तन-यात्रा—स्वतंत्रता-प्राप्ति। इस बार पेरिस मेरे लिए वस्तुतः पेरिस था। मैं वहाँ दो दिन रुका था और बड़ी अच्छी पद्धति निकाल ली थी। मैं चुपचाप एक अमेरिकन डालर-दात्र (Bill) निकाल लेता और उसे तब तक हाथ हिला-हिलाकर दिखाता रहता जब तक कि मुझे कोई आँग्ल भाषाभाषी टैक्सी-चालक न मिल जाता। इस प्रकार बडी और मैं प्रायः सभी प्रमुख स्थानों में हो आये। हम लोग 'पार्श्ववर्ती' एलीवेटर द्वारा ईफेल टावर के शिखर पर भी गये, टूलरीज में घूमे तथा फुहारों की छपछपाहट और वेगवती एवं उद्वेलनशील धाराओं में अपनी नावों को खेते हुए नन्हें-नन्हें बालकों के कोलाहल को सुनने का आनंद लेते रहे। अपने घूमने के समय हम सड़क के किनारे के जलपान-गृहों तथा रात्रि के क्लबों में भी जाते थे और वहाँ जब मदिरा-पान के समय मदिरा की बोतलों के कागों के खुलने के धड़ाके होते और उनसे झाग निकलने लगता तो उसमें हमें बड़ा आनंद आता था। उस आमोद-प्रमोदपूर्ण नगर में जहाँ तक संभव हुआ, हम अधिक से अधिक सुख लूटते रहे। उन दो अत्यन्त कुतूहल-जनक दिनों में हम लोगों ने जो कुछ किया, उसका वृत्तान्त बडी ने अपने जीवन-काल में कभी किसी को न बताया और मैं भी नहीं बताने जा रहा हूँ। आप केवल कल्पना कर सकते हैं कि बीस वर्षीय एक स्वच्छंद युवक पेरिस जैसे नगर में क्या-क्या कर सकता है।

आमोद-प्रमोद-रत पेरिस नगर की मुझे जो स्मृति है उसमें सबसे बड़ी बात यह है कि वह बड़ा पूजार्ह स्थान भी है और उससे बड़ी प्रेरणाएँ मिलती हैं। मैं नैपोलियन की समाधि देखने भी गया था। वह यात्रा मुझे आजीवन कभी न भूलेगी। समाधि को दिन के कुछ निश्चित भागों में ही देखा जा सकता है। जब हम वहाँ पहुँचे तो वह समय समाप्त हो

चुका था; किन्तु वहाँ का रक्षक बड़ा सज्जन व्यक्ति था। उसे अधिकार था कि वह किसी विशेष दशा में उस नियम का उल्लंघन भी कर सकता था। वह अपने विशिष्टाधिकार द्वारा हमें स्वयं उस छदिराभोगवाले कक्ष में ले गया जिसे देखने की हमारी बड़ी लालसा थी। वहाँ पहुँचकर मुझे ऐसा विदित हो रहा था जैसे मैं महान् सम्राट् के सम्मुख उपस्थित हूँ। बडी पर भी अद्भुत प्रभाव पड़ा था। मैंने अपना एक हाथ शीतल स्फटिक शिला पर रक्खा तथा दूसरा अपनी स्वामिभक्त सहचरी के सिर पर। मैं अपने मन में कह रहा था, "बडी! तुम भी नैपोलियन की तरह एक सैन्य-समुदाय का उन्नयन करोगी! वह सेना नैपोलियन की सेना के सदृश न होगी, प्रत्युत वह ऐसे पुरुषों और महिलाओं की सेना होगी जो आत्म-निर्भरता के लिए ईश्वर से प्रार्थना करती हुई एक महासमर ठाने होंगी। तुम सेनानी होगी—आत्म-निर्भर नेत्रहीन व्यक्तियों के उन्नायकों में सर्वाग्रणी।" मुझे पूर्ण विश्वास था कि बडी मानवता के कल्याण के लिए वह कार्य करेगी जो इतिहास में कोई कुत्ता न कर पाया होगा। इस बार मेरी नौका-यात्रा, पोत की निवर्तन-यात्रा पहले से कितनी भिन्न थी!

अब मैं ऐसा नेत्रहीन तरुण न था जिसे विक्षुब्ध परिचारक चारों ओर से घेरे रहते थे। अब मैं एक स्वतंत्र व्यक्ति था जो अपने उद्देश्य को समझता था और उसे उपलब्ध भी कर सकता था। यान-परिप्रबंधक ने हमें अपने कक्ष, धूम्र-कक्ष, मदिरागृह, स्वागत-भवन, छत, स्नानागार आदि की बनावट के बारे में बताया तथा यानस्थ अन्य स्थानों की रूपरेखा भी समझाई। हमें बस इतनी बातों की आवश्यकता ही थी। मुझे विदित हो गया कि मुझे कहाँ जाना है। अब मुझे केवल बडी को आदेशमात्र देने रह गये थे।

पहले दिन ही प्रातःकाल उजियाली का पूर्ण प्रसार होने पर जलपान के प्रथम ही हम यान की छत पर चारों ओर घूम आये। अब हम दिन के भोजन तथा अपराह्ण के जलपान के लिए अपनी इच्छानुसार जाते थे, यह नहीं कि परिप्रबंधक जब चाहे हमें ले जाय। हम स्वच्छन्दतापूर्वक यान पर घूम सकते थे, अब यह भय न रह गया था कि जब मैं कहीं अन्यत्र जाने के लिए तत्पर हूँगा तो कोई कर्मचारी आकर मेरी बाहें पकड़ लेगा और मुझे कुर्सी पर मेरी इच्छा के न होते हुए भी बलात् बैठा देगा। अब रात्रि के समय वे हमें नौ बजे ताले में न बन्द कर देते थे। किसी-किसी रात को तो हम अपने शयनकक्ष में जाते ही न थे।

स्विटजरलैंड आने के पश्चात् मॉरिस के सम्मुख पहला काम था विविध लोगों से परिचय प्राप्त करना। श्रीमती युस्टिस और श्री हम्फ्री ने (ऊपर) बीसवर्षीय तरुण का उसके कुत्ते से परिचय कराया और व्यापक प्रशिक्षण कार्य आरम्भ हुआ। बडी प्रथम (नीचे) बुद्धिमती, जागरूक और अत्यन्त प्रेम रखनेवाली कुतिया थी। उससे मॉरिस फ्रैंक को आत्म-विश्वास प्राप्त हुआ और उन्होंने नये सिरे से कर्मठ जीवन आरम्भ किया एवं स्वयं जीविकोपार्जन करने लगे।

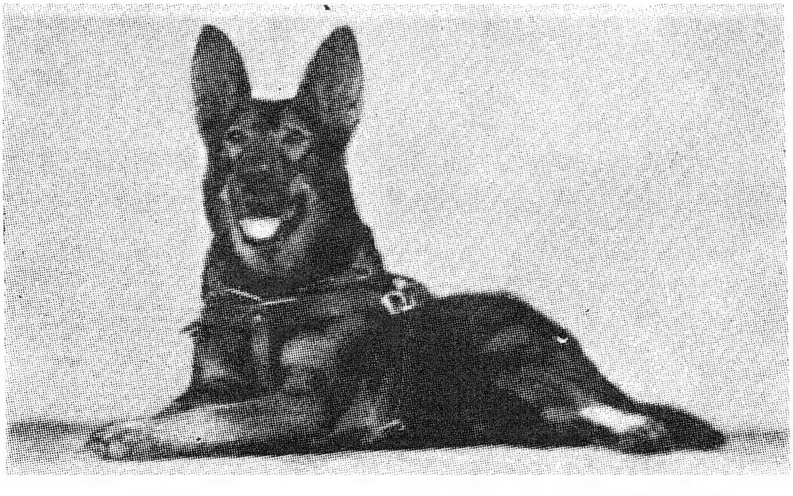

बडी के साथ निवर्तन-यात्रा करते समय फ्रैंक को आत्मनिर्भरता का बड़ा ही सुखद अनुभव हुआ। उनकी वर्तमान और विगत यात्रा में आकाश-पाताल का अन्तर था। अब फ्रैंक की दशा सावधानी से छूये जानेवाले अमेरिकन एक्सप्रेस पार्सल सरीखी न थी। नैशविले (नीचे) के नगर-निवासी मॉरिस और बडी को सड़क पर स्वच्छन्दतापूर्वक घूमते हुए देखकर एक क्षण के लिए आश्चर्यचकित हो रुक जाते थे; किन्तु शीघ्र ही वे उन दोनों के उस दृश्य को चिर-परिचित मानने लगे और उनका विस्मय जाता रहा।

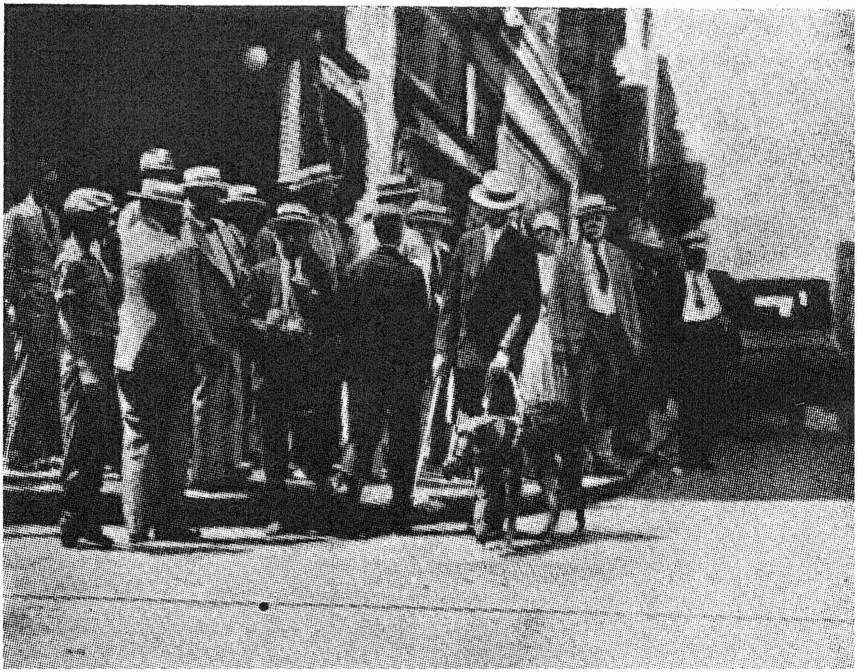

बडी ने अपनी बुद्धिमत्ता, स्नेही स्वभाव तथा दूसरों की भावनाओं के प्रति पूर्ण जागरूक रहने के कारण सभी के हृदयों में स्थान पा लिया था। उसके कारण यान पर पहुँचते ही अत्यल्पकाल में मैंने इतने मित्र बना लिये जितने मैं अपनी समग्र यूरोप-यात्रा में न बना सका था। हमने आमोद-प्रमोद भी पर्याप्त किये। यानस्थ घुड़दौड़ में हमने रुपये जीते तथा नृत्य-संगीत आदि उत्सवों का भी आनंद लिया। हम कप्तान की छत पर भी गये। उसने हमें बताया कि बडी पहला कुत्ता थी जो वहाँ पहुँच पायी थी। ऐसा प्रतीत होता था कि बडी वहाँ पहुँचकर ऐसी प्रसन्न थी जैसे कोई पुराना समुद्री प्राणी। वहाँ खड़ी होकर वह दीर्घ काल तक समुद्र की ओर निहारती रही।

जब हमारी यात्रा समाप्त होने का समय निकट आ गया तो मैं अपने पारपत्र की जाँच तथा फ्रांसीसी मुद्रा को संयुक्तराष्ट्र की मुद्रा में परिवर्तित करवाने के लिए कोष-कार्यालय में गया। वहाँ से निकलकर मैंने अपने रुपयों की थैली अपने कोट के जेब में डाली और अपने कक्ष की ओर चल पड़ा। इसमें हमें समस्त यान से होकर जाना पड़ा। हमें प्रथम श्रेणी से लेकर पर्यटन श्रेणी तक की सभी श्रेणियों के मार्गों की भूल-भुलैया एवं विभिन्न सीढ़ियोंवाले पथों को पार करना पड़ा। किसी नेत्रवाले व्यक्ति के लिए भी यह एक पूरी यात्रा होती है।

जब मैं अपने तख्ते पर एक झपकी लेने के लिए लेटा तो बडी अपने पंजे से मेरी बाँह को छूने लगी, किन्तु मैंने उसके इस कार्य पर कोई ध्यान न दिया। मुझे पुनः उसका स्पर्श हुआ, किन्तु मैं पूर्ववत् उसकी उपेक्षा कर गया तब उसने अपने अगले पावों को मेरे ऊपर मार दिया और मेरे सीने पर कुछ गिराया। जब मैंने हाथ ले जाकर देखा कि वह क्या है तो मुझे विदित हुआ कि वह मेरे रुपयों की थैली है। बात यह थी कि जब मैंने उसे अपनी जेब में डाला था तो वह जेब में न पड़कर यान की छत पर गिर गई थी। उसने उसे उठा लिया था और पथ-प्रदर्शन के समय सारे मार्ग भर उसे लिये रही।

मैं हृदय में उसके प्रति अत्यंत आभार का अनुभव कर रहा था क्योंकि उसने मुझे भारी हानि से बचाया था, परन्तु साथ ही मेरा हृदय इस बात से और भी मुग्ध हो रहा था कि उसने बिना किसी आदेश के केवल अपने विवेक से वह कार्य किया था। इससे मुझे लगा कि बडी स्पष्टतया जानती है कि मैं नेत्रहीन हूँ। वह इस बात का पूर्ण अनुभव करती है कि मैं

उसका हूँ और मेरा उत्तरदायित्व उसके ऊपर है। जिस प्रकार वह कभी-कभी मेरे उन आदेशों का पालन न करती जिनसे मुझे हानि होने की संभावना होती, उसी प्रकार वह बिना किसी आदेश के मेरी रक्षा का भी ध्यान रखती।

हम लोगों की सबसे पहली बड़ी परीक्षा का अवसर तब उपस्थित हुआ जब न्यूयार्क में यान पर मिलनेवाले बहुसंख्यक संवादाताओं में से एक ने मुझे वेस्ट स्ट्रीट पार करने के लिए कहा। मैंने वेस्ट स्ट्रीट का कभी नाम न सुना था। यदि कभी सुना होता तो उतने विश्रंभपूर्वक कदापि उत्तर न दिया होता। वह फिफ्थ एवेन्यू से कहीं अधिक चौड़ी है और हडसन नदी के प्रवाह की दिशा में जाती है। इस पर यातायात की बड़ी भीड़ रहती है। किन्तु वह मेरे लिए अन्य सड़कों जैसी ही थी। "भाई" मैंने कहा, "तुम हमें केवल उसे दिखा भर दो और हम उसे पार कर लेंगे।"

"यह रही वह तुम्हारी दाहिनी ओर" उसने कहा।

"ठीक," मैंने उत्तर दिया और आदेश दिया, "बडी! आगे चलो।"

तब हम लोग एक ऐसी कोलाहलपूर्ण सड़क पर पहुँच गये जैसे हम भारी जनरव की भित्ति में प्रवेश कर रहे हों।

वह चार डग जाकर रुक गई। कानों को बहरा कर देनेवाले घोर शब्द और गर्म वायु के एक उग्र झोंके से मुझे विदित हुआ कि एक अत्यन्त भीमकाय ट्रक हमारे इतने समीप से सनसनाती हुई निकल गई कि यदि बडी ने अपनी नाक भी उठाई होती तो वह उससे छू गई होती।

वह पुनः कानों को फोड़नेवाली टनटनाहट के बीच आगे बढ़ी, रुक गई, पीछे मुड़ी और फिर चलने लगी। मुझे एकदम दिग्भ्रम हो गया और मैंने पूर्णतया अपने को बडी के हाथों में समर्पित कर दिया। अगले दो-तीन मिनटों की स्मृति मेरे मस्तिष्क से कभी न मिटेगी। दस-दस टन की ट्रकें हम लोगों के समीप से हरहराती हुई दौड़ रही थीं। टैक्सी गाड़ियों की पों-पों हम लोगों के कानों को छेदे डाल रही थीं और चालक अलग चिल्लाते थे। एक व्यक्ति चिल्ला उठा, "अरे मूर्खो! क्या मरना चाहते हो?"

जब अन्ततोगत्वा हम सड़क के दूसरे किनारे पर पहुँच गये और मुझे यह अनुभव हुआ कि उसने वस्तुतः कितना महान् कार्य किया है तो मैंने झुककर बडी को गले लगाया और उससे कहा कि वह सचमुच बड़ी अच्छी है।

मेरी कुहनी के पास पहुँचकर एक व्यक्ति चिल्ला उठा, "निस्संदेह वह बड़ी

अच्छी लड़की है।" यह एक छायाचित्र लेनेवाले की ध्वनि थी। "मैं एक गाड़ी में बैठकर आया हूँ, जिन व्यक्तियों ने तुम्हारे साथ सड़क पार करने की चेष्टा की थी, उनमें कुछ अब भी सड़क के उसी पार रह गये हैं।"

अब फिफ्थ एवेन्यू की बयालीसवीं सड़क आगे थी। यद्यपि यहाँ भी सब लोगों ने स्वीकार किया कि हम लोगों ने बहुत अच्छा काम किया, परन्तु इसे पार करना भीषण कोलाहलवाली वेस्ट स्ट्रीट की तुलना में बहुत सुगम रहा। वह आने जानेवाले लोगों से ऐसी खचाखच भरी थी कि सर्वत्र बडी भीड़ के केवल पीछे पीछे चलती रही। संयुक्तराष्ट्रवाला को इस कथा का वृत्तान्त बताने के लिए छायाचित्र लेनेवाले तथा समाचारपत्रोंवाले व्यक्ति सदैव हमारे पीछे लगे रहते और वे तथा मित्रगण जब कोई भारी चतुष्पथ हमें पार करने के लिए कहते तो उसे हमें पारकर दिखलाना पड़ता। वे बड़े भावावेश के क्षण थे। रात्रि के समय मुझे बडी की लगाम हलके हलके पकड़कर बयालीसवीं सड़क से ब्राडवे की ग्रेट ह्वाइट वे से होकर पचासवीं सड़क पर जाना पड़ा। इसमें मुझे बहुसंख्यक चतुष्पथों तथा सड़कों को कई बार पार करना पड़ा।

लगाम के माध्यम से संकेत मुझे मिलते थे, उनके आधार पर मैं कह सकता हूँ कि नीअन के उग्र प्रकाश से तथा यातायात-प्रकाश के बारम्बार लाल से हरा होने के समय जो तुमुल टनटनाहट होती थी उससे बडी कभी-कभी व्यग्र सी हो जाती थी। वह बड़ी सतर्कता से दाहिने-बाएँ अपना सिर मोड़ती, किन्तु विभिन्न प्रकार के प्रकाश, भीषण जनरव तथा पटरी पर गर्म चेस्टनट विक्रेताओं के चूल्हों के अड्डों के कुछ भी व्यवधान हमें अपने निश्चित पथ पर आगे बढ़ने से रोक न सके।

हाँ, सब कहीं लोग बडी की ओर आकृष्ट हो जाते थे। वे उससे बातें करते, उसे थपथपाते तथा मिठाइयाँ देते परन्तु वह अपना ध्यान न बटने देती, न उत्तेजित होती, न पथ-भ्रान्त होती, अपितु बड़ी सुचारुता से उल्लासपूर्वक अपना कार्य करती जाती। एक सप्ताह के भीतर ही बडी ने संसार के सबसे बड़े नगर को जीत लिया। वह अब ऐसे नगर में सुप्रथित हो चुकी थी जो प्रसिद्धि का सबसे बड़ा उपासक है।

मै संवाददाताओं का अत्यन्त आभारी हूँ जो सर्वत्र उसकी प्रत्येक बात का इतिवृत्त प्रकाशित करते रहे। हम अपने निर्धारित कार्य के प्रथम भाग को पूरा कर रहे थे। संसार को यह दिखा रहे थे कि दृष्टिदात्री संस्था का श्वान वस्तुतः आँखों का काम दे सकता है।

न्यूयार्क से विदा होने के पूर्व मैं नेत्रहीनों के एक प्रसिद्ध केन्द्र में गया। उसका संचालक स्वयं एक नेत्रहीन व्यक्ति था। उसने मेरी बातें बड़ी नम्रतापूर्वक सुनीं। मैंने उसे अपनी योजनाओं के बारे में बताया। मैंने कहा—मैं पथ-प्रदर्शक कुत्तों की उपादेयता सिद्ध करने में छः मास या एक वर्ष तक लगा सकता हूँ और तदनन्तर अपने बीमे के कारबार में लग जाऊँगा। तब उस नेत्रहीन-केन्द्र को हमारी संस्थापित समिति का कार्यभार अपने हाथ में ले लेना चाहिए और उसका विस्तार करना चाहिए।

किन्तु उसने मेरी बातों में बिना कोई विशेष अभिरुचि लिए कहा; 'फ्रैंक महोदय! मेरा व्यक्तिगत विचार है कि अन्धा होना वैसे ही बहुत बुरा है, फिर एक कुत्ते से बँध जाना तो और भी बुरा है।'

न्यूयार्क में तथा कुछ समय पश्चात् अन्य नगरों में मुझे नेत्रहीनों के उद्धार के लिए काम करनेवाले व्यक्तियों से संलाप करने के लिए बहु-संख्यक अवसर प्राप्त हुए। उनमें यह पहला अवसर था। परन्तु इन सब ने मेरी आँखें खोल दीं। इनमें बहुत से लोगों ने बहुत अच्छे कार्य किये थे, किन्तु कुछ लोग ऐसे भी थे जो इस बात से सहमत ही न होते थे अथवा हो सकते थे कि ज्योतिहीन व्यक्ति स्वयं संसार में सबसे निकलकर आत्म-निर्भर हो सकते हैं।

नेत्रहीनता सभी को अप्रिय होती है, किन्तु समाज के सभी आर्थिक वर्गों में कुछ नेत्रहीन और कुछ नेत्रवान ऐसे व्यक्ति होते हैं जिन्हें निराश्रित होना कुछ अच्छा-सा लगता है और जब कोई दूसरा उनका भार सँभा-लता है तभी उन्हें आनंद आता है। अतः हमारे कार्य के विशिष्ट महत्त्व को केवल वे ही पुरुष-स्त्रियाँ समझ सकती हैं जो आत्म-निर्भरता प्राप्त करने के लिए वस्तुतः संघर्ष मोल ले सकती हों। दातव्य केन्द्रों से सहायता पाने की आशा मैंने छोड़ दी। हमें बड़ी असुविधापूर्ण अवस्था में कार्यारंभ करना था।

हमें "कुत्तों के लिए प्रवेश-निषेध" वाले आदेश से निपटने की आवश्यकता न पड़ी—यद्यपि न्यूयार्क में यह हमारे कार्य का आधा भाग था। मैं वहाँ पचहत्तरवीं सड़क पर स्थित एक छोटे से होटल में नाथन नामक अपने एक मित्र के साथ ठहरा था। वहाँ के प्रबंधक-वर्ग ने बडी के साथ ऐसा अच्छा बर्ताव किया जैसे वह "मनुष्य के सर्वोत्तम सुहृद की" प्रतिमूर्त्ति हो। परन्तु जब हम न्यूयाक में अपना कार्य समाप्त कर अपने घर नैश-

विले की ओर फिलाडेलफिया के लिए प्रस्थित हुए तो इस यात्रा के प्रथम चरण में स्थिति कुछ भिन्न-सी हो गई।

जब मैं ट्रेन पर चढ़ने लगा तो प्रचालक (conductor) ने मेरी बाँह पर अपना हाथ धरते हुए कहा, आप इस कुत्ते को गाड़ी में नहीं ले जा सकते।

"आप ठीक कहते हैं, "मैंने उत्तर दिया, कुत्ता मुझे ले जायगा। फिर मैंने आदेश दिया, "बडी, चलो !"

बडी एकदम गाड़ी में घुस गई और मेरे लिए एक स्थान ढूँढ़ लिया तथा उसके नीचे गुड़मुड़ाकर बैठ गई। क्रुद्ध प्रचालक हमारा अनुसरण करता हुआ उसे बाहर ले जाने के लिए हमारे पास आया। बडी ने उसकी ओर देखा और अपने सुन्दर श्वेत दाँत दिखाए। वह कुछ हिच-किचाया, और मेरे टिकट को प्रचिह्नित (Punched) कर आवेश में मुझे लौटा दिया, इस प्रकार "हताश प्रचालक की कथा" का अन्त हुआ। इस घटना से जैसे मुझे एक और प्रमाण मिल गया कि बडी मेरे आदेश द्वारा अथवा उसके बिना ही किसी भी परिस्थिति को सँभाल सकती है !

फिलाडेलफिया में बडी को किसी प्रतिबंध का सामना नहीं करना पड़ा। वहाँ हमें न केवल श्रीमती युस्टिस के परिवारवालों का ही प्रत्युत आश्चर्य कर वृद्ध व्यक्ति श्री अशा विंग का भी समर्थन प्राप्त था। श्री विंग प्रविडेण्ट म्युचुअल इन्श्योरेंश कंपनी के अध्यक्ष थे। मैं संप्रति की भाँति पहले भी इसी बीमा कंपनी में काम करता था। बडी से वे एकदम मन्त्रमुग्ध से हो गये। हम सीधे उस भोजन-गृह में जा पहुँचे जो केवल उच्चपदस्थ व्यक्तियों के लिए बना हुआ था। बडी सगर्व दुल्की चलती हुई हमारे साथ गई—जैसे कोई नितान्त भद्र महिला अपने दो प्रशंसकों के साथ हो।

प्राविडेण्ट म्युचुअल कंपनी के कारण वेंजमिन फ्रैंकलिन होटल में हमारा भव्य स्वागत हुआ। बडी बिना किसी हस्तक्षेप के मुझे भोजन-गृह, मिलन-कक्ष तथा लेखन के कमरों में ले गई।

हम लोगों में प्रशिक्षण-कार्य-प्रसार के निमित्त संवाद-पत्रों के लिए बडी ने अपने बहुत से चमत्कार दिखाए। वह मुझे विभिन्न प्रकार के व्यवधानों प्रदीप-स्तंभों, चिट्ठी के बक्सों, पटरी के बाहर उगे हुए वृक्षों तथा वर्षा के जल से भरी हुई नालियों के पास से या उनके चारों ओर घूमकर निरापद रूप से लिवा जाती थी। इंडीपेंडेंस स्क्वायर में हमारे बहुसंख्यक छाया-चित्र लिये गये। यहाँ बडी अनेक अकस्मात् उपस्थित हुए सिद्धहस्त

स्केट-खिलाड़ियों, स्कूटरों (एक प्रकार की गाड़ी) तथा एक्सप्रेस माल ढोनेवाली गाड़ियों के बीच से इतनी दक्षता से चल लेती थी जैसे किसी फुटबाल के मैदान में कोई एकदम अमेरिकन परम-प्रवीण खिलाड़ी दौड़ता हो।

उसे अभूतपूर्व सफलता मिली। फिलाडेलफिया से विदा होने के समय तक बडी को इस नगर का अत्यधिक "भ्रातृ-प्रेम" प्राप्त हो चुका था जो इस नगर की सुप्रसिद्ध विशेषता है।

अब हम सिनसिनाटी के सिग्टन होटल में पहुँचे तो वहाँ हमारे लिए एक सुविधा थी। वहाँ वाले हमारे परिवार को जानते थे। वस्तुतः इस नगर में हमारे मार्ग में एक बार बाधा पड़ी। वह थी मेरी माँ की सुन्दर बूढ़ी चाची के यहाँ। जब हम उनके घर की सामनेवाली सीढ़ियों से ऊपर चढ़ने लगे, तो उन्होंने पुकारकर कहा, "प्यारे मारिस ! कुत्ते को बाहर छोड़कर तुम भीतर चले आओ।"

उनके इस ढंग को देखकर मुझे अनुभव हुआ कि मेरा कार्य कितना गुरुतर है। अभी हम लोगों ने अपने कार्य का केवल श्रीगणेश ही किया था कि पथ-प्रदर्शक कुत्तों का वास्तविक महत्त्व लोगों की समझ में आने लगा। भला मैं अपनी आँखों को बरसाती में ही छोड़ दूँ! मैंने चाची से कहा, "यदि बडी नहीं आ सकती तो मेरा आना भी असंभव है।" तदनन्तर हम तीनों की भेंट बड़ी सुन्दर रही।

सिनसिनाटी से चलते समय यद्यपि मैंने बहुत कहा, किन्तु किसी ने मेरी एक न सुनी और मुझे विवश होकर बडी को सामानवाले डब्बे में रखना पड़ा। आधी रात जाने पर प्रचालक मेरे पास आया और मुझे जगाकर कहने लगा, "आपका कुत्ता छूट गया है, कृपया उसे आकर बाँध दीजिए।"

मैंने स्नान के कपड़े और चप्पल पहनी तथा बैठने के स्थानों के बीच वाले संकीर्ण पथ से लड़खड़ाता हुआ चल पड़ा। बडी ने परम-उल्लास-पूर्वक मेरा स्वागत किया, जैसे बहुत दिनों के बिछोह के पश्चात् हम मिले हों। जब मैं उसका आलिङ्गन करने लगा तो प्रचालक चला गया। बडी को बाँधकर जब मैं चलने को उद्यत हुआ तो मुझे विदित हुआ कि उस दुष्ट ने मुझे भी ताले में बंद कर दिया था!"

बैठने के लिए स्थान टटोलते टटोलते मुझे एक ओर को भीतर से लगा हुआ एक लंबा सुखंकर संदूक मिल गया। मैं उस पर लेट गया और बडी

भी मेरी बगल में पहुँच गई। जब गाड़ी लुइसविले में रुकी और लोग सामान वाले डब्बे में घुसे तो मैं यह जानकर भयभीत हो उठा कि हम लोग किसी के शवाधार पर सो रहे थे!

इससे मैं इतना अधिक डर गया कि स्टेशन पर बडी के साथ गाड़ी से उतर गया और बाहर प्लेट फार्म पर चला गया। फिर एक छोटा कर्मचारी आकर हमें गाड़ी पर लिवा गया, परन्तु प्रचालक वहाँ निरन्तर हमारे ऊपर छींटे कसता रहा। मैंने उसकी पूर्ण उपेक्षा करते हुए बडी को अपने सोने के वास्तविक स्थान पर पहुँचने का आदेश दिया और फिर स्वयं भी लेट गया। मैंने इस बात की तनिक भी चिन्ता न की कि गाड़ी के अधिकारी क्या सोचेंगे। अब मैं शवाधार के पास न फटक सकता था!

इस अनुभव के अनन्तर हमने रेल से यात्रा करने की एक नई युक्ति निकाल ली। अपनी शेष यात्रा में मैंने यह किया कि मैं रात की गाड़ी में निश्चित रूप से अपने लिए एक निम्नस्थ शयनस्थान सुरक्षित करवा लेता था। हम गाड़ी में तभी चढ़ते जब वह एकदम चलने को होती। प्रचालक सोचता जब बडी इन्हें अपने स्थान पर पहुँचा देगी तो मैं तुरन्त उसे सामानवाले डब्बे में ठूँस दूँगा। किन्तु बडी बड़ी फुर्ती से परदा गिरा देती और बिस्तर में छिप जाती।

यद्यपि वह बड़े मृदुल स्वभाववाली थी, किन्तु वह ऐसी कुतिया भी थी जिसे मूर्ख बनाना सरल न था। यदि प्रचालक उसकी रस्सी पकड़कर उसे मुझसे पृथक् करना चाहता तो वह उसे तरेरने लगती और अकड़ जाती तथा विकट रूप से गुर्राती भी। अस्तु।

हम लोगों की यात्रा के अन्तिम चरण में एक बड़ी सुखद विस्मयजनक बात हुई। दिन के समय हमें एक ऐसा प्रचालक मिला जिसने बड़े रुष्ट स्वर में चिल्लाकर हमें डाँटा, "कुत्तों के लिए प्रवेश-निषेध है! यह सर्वथा नियम-विरुद्ध है! मुझे पुलिस को बुलाना पड़ेगा।" तदनन्तर उसने झुककर धीरे से मेरे कानों में कहा, "अपने पावों को सीट से सटाए रखिए जिससे कुत्ता मार्ग में पड़कर लोगों के पावों से दब न सके।" फिर वह भोजनालय वाले डब्बे की ओर चला गया। उसने अपने कर्त्तव्य का पालन किया, साथ ही भलाई भी की।

अब हम घर पहुँचनेवाले थे—नैशविले आ रहा था—मित्रों और परिवारवालों से मिलने का समय समीप आ चुका था। मैं सोच रहा था इस समय मैं एक विजयी शूरमा की भाँति हूँ, यद्यपि वास्तविक विजेता बडी

ही थी। उसने अपने तत्त्वावधान में रक्खे हुए नेत्रहीन व्यक्ति का अन्ध महासागर की महायात्रा तथा आधे अमेरिका महाद्वीप की यात्रा में बड़ी सफलतापूर्वक पथ-प्रदर्शन किया था।

हमने सहस्रों मील की यात्रा की थी। इसमें हमें सभी प्रकार के यातायात के साधनों का प्रयोग करना पड़ा था। हम नये और अपरिचित स्थानों में रुके थे। हम सहस्रों व्यक्तियों से मिले थे। तथा हमने सैकड़ों मित्र बनाये थे। हमलोगों ने जानबूझकर अपने सम्बन्ध की सफलता सिद्ध करने के लिए जोखिमवाले चतुष्पथों, संकीर्ण मार्गों, बिना पटरी वाली सड़कों एवं भयंकर रूप से जन-संकुल स्थानों को पार किया था। विदेश में रहकर जिन सिद्धांतों को हमने सीखा था और जिनका परीक्षण हो चुका था उन्होंने यहाँ हमें कभी धोखा नहीं दिया। बडी ने एकदम निर्विवाद सिद्ध कर दिया था कि भली भाँति प्रशिक्षित कुत्ते संसार के सबसे बड़े और सबसे भीड़भाड़वाले नगरों में भी निरापदरूप से और सफलतापूर्वक नेत्रहीनों का उन्नयन कर सकते हैं। इसमें संशय नहीं कि वह मेरी "जीवन-ज्योति" थी।

जब हम कार में चढ़े, जिसमें मेरी नेत्रहीन माँ प्रतीक्षा कर रही थी, तो बडी ने पहुँचते ही मेरी माँ का हाथ चाटना आरम्भ कर दिया, जैसे वह कह रही हो, "महोदया मैं तुम्हारे लिए एक नया पुत्र लाई हूँ—वह पुनः देख सकता है।"

जब मैं अपनी माँ को चूमने लगा तो मुझे विदित हुआ कि उसका मुखमंडल आर्द्र हो रहा था, मुझे लग रहा था कि वह बडी की बातों को समझ रही थी।

मेरे पिताजी—पहले ही क्षण से वे कुत्ते को कितना प्यार करने लगे! वह कोई हानि न कर सकती थी। मेरे लिए सबसे बड़ी समस्या यह थी कि वे बडी को दुलार से बिगाड़ न दें।

जब मेरा परिवार बडी से मिलने आया तो पहले उसने सब को एक बार देखा। फिर वह कुछ लोगों के संमुख अपने घने बालोंवाली पूँछ हिलाती रही और कुछ लोगों के ऊपर कूदकर तथा उनका मुँह चाटकर उसने अपना चुम्बन अंकित किया। जिनके ऊपर उसने कम कृपादृष्टि दिखानी चाही, उनका बड़ी नम्रता से नाक उठाकर स्वागत किया। मैंने प्रत्येक परिचय कराने के स्वर से भली भाँति भाँप लिया था कि मैं किनको अधिक प्यार करता हूँ और किनको कम, क्योंकि

उसने भी विभिन्न लोगों के प्रति विभिन्न मात्रा में अपना प्यार और सौहार्द दिखाया।

घर पहुँचकर बड़ी प्रसन्नता हो रही थी।

दूसरे दिन प्रातःकाल बडी और मैं एक ऐसी बस में बैठे जिसका ड्राइवर परिचित था। हम वेस्टर्न यूनियन जानेवाले थे।

"मैं एक समुद्री तार भेजना चाहता हूँ। उस पर पता लिखो—युस्टिस, माउण्ट पेलेरिन, स्विटजरलैंड" मैंने अधिलेखक (क्लर्क) से कहा।

"जी हाँ, सन्देश बोलिए।"

"सफलता।"

"बस, इतना ही! केवल एक शब्द!" उसने अविश्वासपूर्ण शब्दों में कहा।

मैंने उत्तर दिया—"भाई! यह एक शब्द ही सारी कहानी कह देता है।

———

अध्याय ४

निस्संदेह यह हमारे कार्य का केवल श्रीगणेश था। नैशविले में पहले हमें यह करना था कि बडी को सब बसों में आने-जाने की सुविधा हो जाय। मोटर गाड़ियों में बडी को प्रवेश मिलने लगे। मुझे कालेज और काम पर पहुँचाकर ही उसके कार्यों की इतिश्री न होनेवाली थी; उसको अभी ऐसा ही कार्य करने के लिए दूसरे कुत्तों का भी मार्ग प्रशस्त करना था।

यह दुष्कर कार्य था। कुछ बस वाले कंपनी के नियमों की उपेक्षाकर हमें चढ़ जाने देते थे। किन्तु जब मैं कोई मोटर पकड़ने जाता तो मुझे पहले से कुछ न विदित होता कि वह मोटरवाला मुझे अपने साथ कुत्ता ले जाने देगा या नहीं। अंततः मैं कंपनी का प्रतिनिधित्व करनेवाले एक न्यायाधीश से मिला और मैंने उससे बहुत देर तक संलाप किया। मैं सोचता हूँ, वह मुझसे कहीं अधिक अन्धा था। एक घंटे की बातचीत के अंत में उसने पूछा, "बेटा! क्या यही सबसे अच्छा मार्ग है जिसके द्वारा तुम प्राणान्त करना चाहते हो?"

इससे मुझे पता चल गया कि मोटरों पर से "कुत्तों के लिए प्रवेश-निषेध" वाले अभिशप्त लेख को हटाने के लिए बहुत परिश्रम करना पड़ेगा।

मेरे बीमे का कार्यालय नेशनल बैंक बिल्डिंग के प्रथम और चतुर्थ भवन में स्थित था। बैंक का वकील कुत्ते को एलीवेटर पर चढ़ते-उतरते देखकर जैसे कुछ चिढ़ता था; उसने उस संबंध में वहाँ के अध्यक्ष श्री जेम्स काल्डवेल से कुछ कहा।

"श्री जिम्मी ने" मुझे और वकील को बुलाया। उन्होंने वकील से कहा, "परसी ! तुम्हारे तीन बच्चे हैं। तुम्हें पता नहीं आगे जीवन में क्या होगा। हो सकता है, तुम्हारे बच्चों में से कोई विकलांग हो जाय। यह तरुण पहले एकदम बेसहारा था। अब इसने स्वतंत्र रूप से अपने आने-जाने का उपाय ढूँढ़ लिया है। हमें और तुम्हें इसके मार्ग में बाधा डालने का कोई अधिकार नहीं।"

वकील ने प्रतिवाद करना चाहा, किन्तु उस पर जिम्मी महोदय को बड़ा रोष हुआ। उन्होंने कहा, "मैं नियम और विधानों को कुछ नहीं समझता। यदि कोई व्यक्ति अपनी समस्याओं को मर्यादापूर्ण ढंग से सुलझा रहा हो, तो ईश्वर के लिए उसके मार्ग में तुम व्यर्थ अड़ंगा न लगाओ।"

तदनन्तर अपने कार्यालय में मुझे फिर कोई कठिनाई न हुई।

अब नैशविले में मेरे लिए पर्याप्त स्वतंत्रता थी। मेरे विगत चार वर्ष बड़े करुण और दुःखद रहे थे। मैंने बेत के सहारे इधर-उधर आने-जाने की बारह महीने तक चेष्टा की थी। इसमें एक बार मैं एक हाल ही में खोदी हुई खोह में सिर के बल गिर पड़ा था और मुझे वहाँ एक घंटे तक रहना पड़ा था जिसमें बड़ा कष्ट हुआ था। आप स्वयं सोच सकते हैं कि जब मैं उस गंदे स्थान से किसी प्रकार निकाला गया तो मुझ पर क्या बीती।

एक दूसरी भारी दुर्घटना यह हुई थी कि एक ड्राइवर मुझे बचाने में सड़क की पटरी से टकरा गया था। उसकी गाड़ी एकदम उलट गई थी। सौभाग्यवश किसी को चोट न आई थी। बहुसंख्यक हृदय हिला देने वाली दुर्घटनाओं में से इन दोनों ने पूर्ण रूप से यह सिद्ध कर दिया कि बेत से मुझे कोई विशेष सहायता न मिल सकती थी।

तब मैंने अपने पथ-प्रदर्शन के लिए दस डालर प्रति सप्ताह पर एक लड़का नौकर रक्खा। कई दिन प्रातःकाल वह आया ही नहीं जिससे मैं वांडरविल्ट में पढ़ने न जा सका। मेरे अध्ययन में यह भारी बाधा थी। मैं कक्षा में होने वाले लेक्चरों से कोई लाभ न उठा सकता था क्योंकि मैं तो उनको सुन भी न पाता था। बहुधा जब मैं अपनी कक्षा से बाहर निकलता तो वह कहीं नीचे ऊँघता होता और मैं उसे ढूँढ़ न पाता, फलतः मेरा अगला घंटा छूट जाता।

विद्यालय से छुट्टी पाने पर वह मुझे बीमे के कार्यों के लिए लोगों के पास ले जाता। किन्तु कुछ लोग ऐसे होते जो उस समय अपना समय न देना चाहते। वे संकेत से उससे कह देते कि वह मुझसे कह दे कि वे कहीं

बाहर गये हुए हैं और वह इस प्रकार मुझे धोखा देने में उनका साथी हो जाता।

अपनी अयोग्यता और अविश्वासपात्रता के होते हुए भी एक दिन मार्ग में मेरे साथ-साथ चलते समय वह अपना पारिश्रमिक बढ़ाने के लिए आग्रह करने लगा। इस पर जब मैंने उससे कहा कि उसकी बात तभी मानी जा सकती है जब वह काम में सुधार करे तो उसने तुरन्त वहीं मेरा साथ छोड़ दिया और मैं ब्राड स्ट्रीट की भीड़भाड़ के बीच भटकने लगा।

भीषण निराशा, परम कष्ट और शोकाकुलता के पुराने दिन बीत चुके थे। अब मैं जहाँ कहीं भी जिस समय जाना चाहता, वहाँ बडी मुझे बेखटके ले जाती। अब मैं अपने बचपन के खेल के मैदानों में पुनः जाने लगा जहाँ मैं कई वर्षों से न जा सका था। हम यौवन का पुनः आनंद लेने के लिए ग्राम्य-प्रान्त में स्थित तैराकी वाले स्थान के पुराने शिलोच्चय के पास भी जाने लगे। वहाँ जाने के लिए मैं बहुत दिनों से लालायित था, इसमें बडी से बढ़कर मेरा कोई दूसरा प्रिय साथी न हो सकता था।

बडी को अपना काम बहुत प्रिय था। उसे अपनी लगाम भी प्यारी थी मैं उसे केवल पकड़े रहता और वह मेरा पथ-प्रदर्शन करने के लिए मुड़ना, चलना, कतराना आदि सारी बातें स्वयं कर लेती। बहुसंख्यक पुरानी परिचित संकीर्ण गलियों में साथ चलने में मुझे फिर से बड़ा आनंद आता। इन गलियों के पुराने वृक्षों की स्मृति मेरे मस्तिष्क में चित्रवत् घूम जाती। इस प्रकार हम घंटों घूमा करते। मैं अनुभव करता कि जैसे मुझे पुनः पतझड़ में वृक्षों से पृथक् होकर वायुमंडल में तिरती हुई पथ पर बिछ जानेवाली पत्तियों का रंग दिखाई पड़ रहा हो।

बडी ग्राम्य और नगर दोनों ही भागों में पूर्ण सुचारुता से अपना काम कर लेती थी। हम नगर के निचले भागों की ओर जानेवाली सड़कों पर ऐसी स्वैरता से घूमते कि नैशविले के जन-साधारण बड़ा आश्चर्य करते। "ब०पू०" बडी से पूर्व कुछ बहुत निकट के लोगों को छोड़कर मुझे प्रायः कोई नहीं जानता था। पहले मैं अपने घर से निकलकर पटरी से कुछ ही दूर आगे बढ़ पाता कि लोग मेरा नाम न लेकर अपनी खिड़की से किसी उस ओर से जाने वाले व्यक्ति को पुकारकर कह देते, "भाई! उस नेत्रहीन तरुण को मार्ग पर कर देना।"

अब मैं उनको यह कहते हुए सुनता, "वह देखो! मारिस और उनकी कुतिया आ रही है।"

"मारिस !" इस प्रकार की संज्ञा से मैंने पुनः अपनी खोई हुई मर्यादा प्राप्त करली थी। अब एक बार पुनः अन्य साधारण मनुष्यों की भाँति मेरा भी एक सुनिश्चित नाम हो गया था। मुझे प्रसन्नता होता थी कि अब मैं "वह अंधा तरुण" नहीं हूँ।

अब अपरिचित व्यक्ति निस्संकोच बातें करते। पहले जब मैं मोटर रुकनेवाले स्थानों में जाता तो दो अपरिचित आँखोंवाले व्यक्तियों को अत्यन्त सुखपूर्वक आपस में संलाप छेड़ते सुनकर बहुधा हृदय में बड़ी ईर्ष्या करता। उनमें कोई ऋतु अथवा अन्य साधारण बात की पहले चर्चा छेड़ता, फिर संलाप की धारा बह चलती। मैं सोचता हूँ अपने संलाप में वे मुझे भी साथी बनाना चाहते, किन्तु उनकी समझ में न आता था कि मेरा ध्यान कैसे आकृष्ट किया जाय। यद्यपि वे भाली भाँति समझते थे कि मुझे संलाप में न सम्मिलित करने से शिष्टाचार की कुछ हानि हो रही थी, किन्तु मेरी नेत्रहीनता की बात उठाए बिना मुझे भी अपने संलाप में साथी बनाने का उन्हें कोई उपाय ही न सूझता। परन्तु बडी के साथ हो जाने पर अब उनके लिए अत्यन्त स्वाभाविक और सरल हो गया था कि वे तुरन्त कह सकते थे, "आपका कुत्ता कितना सुन्दर है?" तब मैं उन्हें उसका नाम बताता और उसकी सतर्कता की प्रशंसा करता और इस प्रकार बडी की पूछ और मेरी जिह्वा के आन्दोलन की गति का अनुसरण करता हुआ संलाप का प्रवाह चल पड़ता।

मैं कुछ सौभाग्यशाली था। मेरे नये मित्रों की संख्या तो बढ़ ही रही थी, उनके अतिरिक्त नैशविले में मेरे कुछ पुराने मित्र भी थे जो मेरे प्रति बड़ी भक्ति रखते थे। हममें से लगभग छः के सारे कार्य एक साथ होते थे। वह मेरे लिए अतिशय सुखकर बात थी। हम सभी द्वैध प्रणय-व्यापार चलाते थे, इस प्रकार हमें एतदर्थ बारह अवसर मिलते थे। इस परिपाटी से मुझे बहुसंख्यक लड़कियों के साहचर्य का अवसर मिला, जैसा अन्यथा संभव न था।

मुझे ग्राम्य-क्लब के सर्वप्रथम नृत्य का स्मरण है। मुझे डाक द्वारा नृत्य-मंडली की सूचना प्राप्त हो चुकी थी, किन्तु मैं उसमें जाने में कुछ संकोच का अनुभव कर रहा था। नृत्यवाले लड़के जब मेरे पास आये तो उन्होंने देखा कि मैं केवल पतलून और खेलनेवाली कमीज पहने हुए हूँ।

"अरे तुम तैयार नहीं हुए?" सभी ने पूछा।

"नहीं, मैं नहीं चलूँगा।"

"हम यह बात नहीं पूछ रहे हैं। क्या तुम ऐसे ही चलोगे, अथवा ऊपर जाकर कपड़े बदलोगे।"

इसके अनन्तर फिर किसी ने प्रश्न न किये; मैंने अन्य लोगों का अनुसरण करते हुए सारी तैयारी की। वस्तुतः अपनी नेत्रहीनता की कमी पूरी करने में मैंने अन्य लोगों से तैयारी में बढ़ जाने की चेष्टा की। एक बार रात को मैंने एक व्यक्ति के बारे में अपने भावों को उसके संमुख एकदम स्पष्ट व्यक्त कर दिया। उसने कहा कि यदि तुम अन्धे न होते तो मैं तुम्हारी नाक तोड़ देता। तब तक पीरी आ पहुँचा और बोला, "मैं अंधा नहीं हूँ।" और वह उससे भिड़ गया और अन्य लड़के मुझे एक कोने में ले जाकर मेरे ऊपर घूँसेबाजी करने लगे कि मैंने उन्हें लड़ा दिया।

इस प्रकार की दैनिक जीवनचर्या से मैं विकलांगों के कल्याण के लिए काम करनेवाले व्यक्तियों तथा मनोविज्ञानों के अतिरिक्त ऐसे जन-वर्ग के संपर्क में विशेष आया जिसमें कोई कमी न थी और जिसने मेरे प्रति पूर्णाङ्ग व्यक्ति-सा व्यवहार किया। इससे मुझे वर्णनातीत लाभ हुआ।

बडी भी हमारी मंडली का एक अंग हो गई थी। हममें से सभी उसे प्यार करते थे। उसके प्रति कितना कृतज्ञता-प्रकाश करूँ, उसके कारण अब मैं असहाय परमुखापेक्षी व्यक्ति न रह गया था। अब मैं नगर के बाहर घूमने-फिरने के लिए जा सकता था—मित्र-मंडली को केवल घर पर ही एकत्र होने की आवश्यकता न रह गई थी। हम बडी के साथ मनमाने और अनुचित ढंग से भी खेलते, कभी उसे ढकेलते, कभी उसे भूँकने देते और कभी उसे कुदवाते तथा ऐसे अन्य बहुत से कार्य करवाते जैसे अन्य किसी जीवन-ज्योति के कुत्ते से आशा न की जा सकती थी। परन्तु वह मेरी मुक्ति का मूल-मंत्र थी और हम लोगों ने उसे बिगाड़ डाला।

जब लड़के मेरे घर आते तो बडी एक पिल्ले की नाईं उन्हें देखकर प्रसन्न होती, उनकी ओर कूदती तथा उनके अभिवादनार्थ अपने अगले पंजों को उनके वक्षस्थल पर रख देती। कुछ तो इतने स्वच्छन्द स्वागत को पसन्द करते, किन्तु कुछ के लिए वह सह्य न होता। उनहत्तर पौंड की काया के धक्के से कोई गिर भी सकता था। कभी-कभी बडी उकताकर अपने स्वागत को अभिव्यक्त करने के लिए हर्षातिरेक में एक छलांग लगाती।

इसको ठीक करने के लिए यह सुझाव दिया गया कि अतिथि धीरे से आकर हर्षातिरेक में बढ़ी हुई अतिथेयी के पिछले अँगूठों को दृढ़ता से दबा दिया करें। इसके मूल में यह सिद्धान्त है कि इससे कुत्ते की उपर्युक्त कार्य-प्रवृत्ति रुक जायगी और उससे मैत्री भी बनी रहेगी—वह यह समझेगा कि किसी व्यक्ति के कारण उसे पीड़ा नहीं पहुँची है प्रत्युत उसके अशिष्ट व्यवहार के कारण ऐसा हुआ है।

मैंने सिलवन से बडी की इस बात का उपचार करने के लिए कहा। अतएव जब दूसरी बार बडी ने अपनी पद्धति का प्रयोग किया तो सिलवन ने अपने संतुलन में न होने के कारण जूतों से कसा हुआ अपना पाँव चलाया और उसके पिछले बाएँ पंजे पर एकदम जा पहुँचा। बडी ने कोई नियम की पुस्तक तो पढ़ी न थी, उसने तुरन्त उसका ऐसा प्रतिकार किया जैसे वह स्वयं नहीं वरन् सिलवन ही उसकी चोट के लिए उत्तरदायी था। एक शिशु को "उसके हित में" शिक्षा देने के लिए एक माँ के सदृश उसने सिलवन की कलाई अपने श्वेत दाँतों के बीच पकड़ ली और उसको चेतावनी-सी देती हुई उसकी ओर तरेरने लगी जैसे वह कह रही हो, "अब यह ठीक है, तुमने सीमा का उल्लंघन कर दिया था!" सिलवन ने तत्क्षण अपना पाँव हटा लिया, तब बडी प्रसन्न होकर सौहार्द-पूर्ण भाव से उसे चाटने लगी, मानो वह कह रही है, "अब तुम अच्छे लड़के हो।" इस प्रकार बडी की उछलने की आदत को छुड़ाने के लिए किये जाने वाले उपचार के अध्याय का अन्त हुआ। मैं सोचता हूँ, उससे सिलवन ने पर्याप्त बातें सीखीं।

बडी हम लोगों के वास्तविक परिवार को या यों कहना चाहिए "हमारे परिवार के बड़े को" कोई कष्ट न पहुँचा पाती थी। जब मेरी माँ परिवेदन करती कि उसके विस्तरों की चादरों पर सोने से धुलाई का काम बढ़ जाता है तो मेरे पिताजी उत्तर देते, "कपड़ा धोनेवाली मशीन मोल ले लो।"

इससे मेरी भावनाएँ व्यक्त होती थीं। एक सप्ताह पश्चात् मुझे विदित हुआ कि मेरी स्थिति क्या है। कुछ दिनों के लिए मैं घर से बाहर चला गया था। उस अन्तरा में मुझे अग्र-लिखित पत्र प्राप्त हुआ। मैं उसे ज्यों का त्यों उद्धृत कर रहा हूँ: "प्रिय मारिस; बडी कैसी है? उसके प्रति मेरा प्यार प्रकट करना। तुम्हारा पिता"

बडी के सम्बन्ध में अपनी सैडी चाची की भावनाएँ मुझे न विदित

थीं। किन्तु एक बार रात को जब हम बडी को उनके कमरे में छोड़कर थिएटर देखने गये तो उसका भी पता चल गया। हम कुछ देर से लौटे और यह जानकर मैं अत्यन्त भयभीत हुआ कि बडी ने मेरी चाची के एक पन्द्रह डालर के नये लाल पंखोंवाले हैट को टुकड़े-टुकड़े कर डाला है।

मैंने सोचा था, बड़ा तहलका मचेगा। परन्तु मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब मेरी धारणा के विरुद्ध सैडी चाची चिल्ला उठीं "अरे! बडी तेज प्राणी।" और यह कहते हुए उन्होंने उसे अपनी भुजाओं में भर लिया। फिर उन्होंने कहा, "तुम जानती थी कि वह हैट मुझे ठीक न होता था। मुझे भी यह विदित था, किन्तु विक्रयवाले के कहने में आकर मैंने उसे ले लिया था।"

जब मेरी आँखें जाती रहीं तो पिताजी की भाँति सैडी चाची को भी मेरी करुण असहाय अवस्था पर दुःख हुआ था और जब बडी के कारण मुझे आत्मनिर्भरता प्राप्त हुई थी तो उन्हें भी उन्हीं की भाँति परम हर्ष हुआ था। बिखरी हुई लाल पाखों को देखकर कुत्ते को प्रसन्नता हुई होगी यह सोचकर सैडी चाची ने हैट के मूल्य पर कुछ भी ध्यान न दिया।

गोल्डी नाम की मेरी माँ की एक और बहन थी। गोल्डी चाची "बडी के आने के पूर्व" प्रायः प्रति शुक्रवार को मुझे बाइबिल सुनाती थीं। दुर्भाग्यवश वे कुत्तों से घबड़ाती थीं और जब वे पहले शुक्रवार को बाइबिल लेकर आईं तो उन्होंने चाहा कि मैं बडी को बाहर कर दूँ। इस पर मैंने कहा कि मैं बडी को लेकर बाहर प्रांगण में चल सकता हूँ, किन्तु मुझे भय हो रहा था कि बाहर पाठ करने में कहीं गोल्डी चाची को ठंड न लगने लगे।

वे अपनी भय की भावनाओं से मुक्ति न पा सकीं। उन्होंने घर में प्रवेश करना अस्वीकार कर दिया। अपने स्वभाव की दुर्बलता के कारण वे बड़ी कुपित हुईं और संकल्प कर लिया कि वे उसका प्रतिकार एक "अप्रिय" ढंग से करेंगी। "अप्रिय" शब्द के प्रयोग के लिए पाठक मुझे क्षमा करेंगे। उन्होंने अपने लिए एक पिल्ला मोल लिया और उसका अतिशय दुलार करने लगीं, जैसी दशा ऐसे सभी लोगों की होती है जो पहली बार कोई जीव पालते हैं। वे फ्रैंक परिवार के सभी लोगों से अधिक उसे ही प्यार करने लगीं। उसके पश्चात् वे बडी को प्यार करती थीं। हम मानव, जो कुत्तों की जीवन-सारणी से बहुत दूर थे, उनकी प्रिय वस्तुओं की तालिका में बहुत नीचे थे।

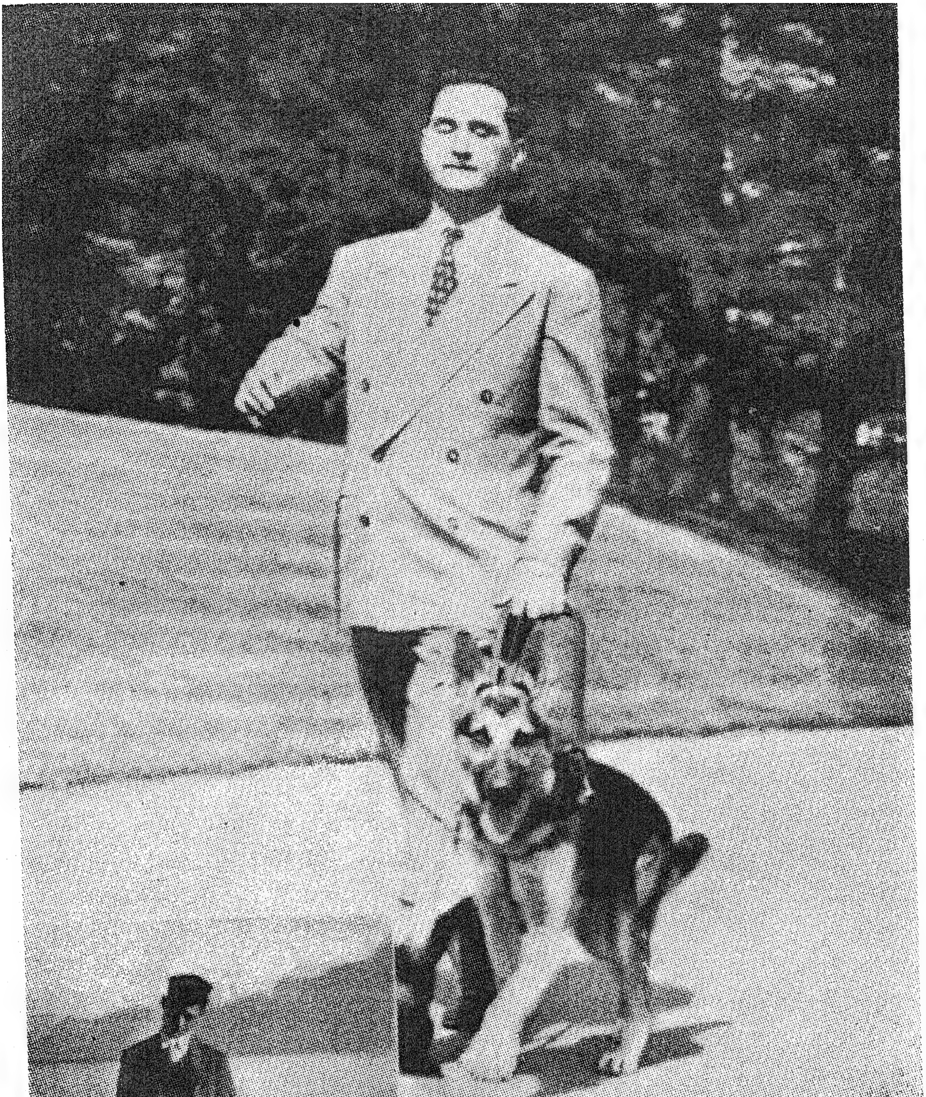

एक बीसवर्षीय तरुण के जीवन में जो एकाकीपन, भीरुता तथा चिन्ता घर कर चुकी थीं, उसे समाप्त कर अब वही युवक निर्द्वन्द्व-निर्भय जीवन-संग्राम में उतर पड़ा है।

आयरिश वीट के सौजन्य से

विश्वास कीजिए या न कीजिए भोजन पर जुटे हुए ये पाँचों पिल्ले ज्योतिहीनों के पथप्रदर्शक बननेवाले हैं। जन्म के दस सप्ताह पश्चात् वे १०० एकड़वाले पालन क्षेत्र से हटाकर "फोर-एच् क्लब होम्स" में भेज दिये जाते हैं और वहाँ उन्हें बहुत ही अनुकूल और सुखद वातावरण में लगभग एक वर्ष तक रक्खा जाता है।

ये मद्य-निषेध के दिन थे। एक बार रात को हम पन्द्रह साथी एक अवैध मद्यगृह में बैठे हुए थे। हमारे साथ बडी भी थी। उस पर किसी ने आपत्ति की, इसलिए हमने उसे अपने साथ कुर्सी पर बैठा लिया और उसे भी अपनी ही भाँति गिनने लगे। जितनी बार हम मदिरा पीते, उतनी बार वह अपना दूध पीती। यह सुन्दर, संभ्रान्त जर्मन प्रहरी बड़े ठाट से मेज पर पंजा रक्खे हुए कुर्सी पर बैठी हुई अत्यन्त मोहक ढंग से अपना दूध पी रही थी। उसके इस दृश्य को देखकर किसी के हृदय में उसके प्रति कोई विद्वेष की भावना न रह गई और थोड़े ही समय में हम सब एक बड़े अतिशय सुखी परिवार के सदृश हो गये।

जब हम उक्त मद्यगृह से निकले तो मैं एकदम मदमत्त हो रहा था। जब तक हम पटरी पर चलते रहे तब तक बडी यथापूर्व मेरा पथ-प्रदर्शन करती रही। किन्तु मुझे उस अवस्था में लेकर सड़क पार करना उसने अस्वीकार कर दिया। वह तब तक प्रतीक्षा करती रही जब तक कोई मुझे अपनी बाहुओं का सहारा देकर ठीक से ले चलने के लिए न आ गया।

यह आश्चर्य की बात है कि बडी को अपने स्वामी के लिए बहुधा ऐसा करने के लिए विवश न होना पड़ता था। यह बात नहीं कि मद्यपान में मुझे विशेष आसक्ति थी, बल्कि मेरे साथियों ने मुझे ऐसा काम सौंप रक्खा था जिसके कारण ऐसा होता था। मैं पीपे की यव-मदिरा का अधिकृत पारखी हो गया था। उसके मूल में बात यह थी कि यदि वह विषाक्त हुई तो कम से कम मुझे तो ज्योतिहीन जीवन न व्यतीत करना पड़ेगा।

इस समय मेरे सह-वास में जितने तरुण थे उन सभी के पास बडी के चित्र की एक प्रति है। यह श्रीमती थर्बर द्वारा तैयार की गई थी। वह उनके कार्यालयों और घरों में आदरपूर्ण स्थान पर रक्खी हुई है। जब वे उसकी चर्चा करते हैं तो ऐसा प्रतीत होता है कि वह उनके जीवन का अंग है और उससे उनका वही स्नेह और अनुराग व्यक्त होता है जो उसके लिए मेरे हृदय में है।

बहुत पहले की बात है, हम दोनों के एक ऐसे भले मित्र से मेरा कुछ झगड़ा हो गया। दूसरे दिन सड़क पर उससे हमारी भेंट हो गई। बडी अपनी पूर्ववत् स्वागत-भावना से उसकी ओर द्रुतगति से बढ़ी, अपनी इस क्रिया से जैसे उसने कहा, "यह देखो, हमारा एक मित्र आ रहा है।" किन्तु वह मित्र बिना कुछ बोले-चाले हमारे पास से निकल गया। मैंने अनुमान से पता लगा लिया कि वह कौन था और मैं स्वयं भी कुछ न बोला।

तीन दिनों तक हम इसी प्रकार एक दूसरे के पास से निकलते रहे और एक दूसरे से बिना कुछ बोले चुपचाप आगे बढ़ जाते। इसके पश्चात् एक दिन बडी आगे बढ़कर ठीक उसके सामने रुक गई और बिना किसी आदेश के बैठ गई। वह स्पष्टतया कह रही थी, "तुम दोनों अपनी मूर्खता छोड़कर पुनः मेल कर लो।"

हम हँस पड़े। हमें यह बात स्वीकार करनी पड़ी कि बडी ने हमसे अधिक विवेक दिखाया और तब से हम दोनों की बड़ी घनिष्ठ मैत्री चल रही है।

विशिष्ट अनुमति के द्वारा हम वेस्ट एण्ड की मोटर पर भी चढ़े। यात्रियों को यह देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि बडी हमारे घर के पास वाले मोटर रुकने के स्थान को देखकर पहचान गई। अर्द्ध रात्रि के समय भी जब निविड़ अन्धकार के कारण सभी वस्तुएँ आँखों से ओझल होतीं, तब भी वह अपने स्टेशन के आने के थोड़ा पहले ही मोटर के कर्मचारी के बगलवाले स्थान से, जहाँ वह लेटी होती, उठ खड़ी होती, अपना शरीर फड़फड़ाती और मुझे लिवाने के लिए आ जाती। प्रत्येक व्यक्ति यह देखकर बड़ा प्रसन्न होता। मैं उन्हें कहते सुनता था, "देखो! कुत्ता अपने उतरने का स्थान आने पर उसे पहचान जाता है।" उसकी "प्रकृति-बुद्धि" देखकर सब लोग दंग रह जाते।

मैं अन्धा होने के कारण ध्वनियों के प्रति बहुत सतर्क हो गया था। इस कारण मुझे विदित हो गया था कि वह अपने स्टेशन को कैसे पहचान लेती है। मैंने अनुभव किया था कि हमारे स्टेशन पर पहुँचने के ठीक पहले एक सूने पथ से निकलते समय मोटर के पहियों से एक विशेष प्रकार की खड़खड़ाहट होती थी। जब वह इसे सुनती तो उठ खड़ी होती। इस प्रकार बडी के अन्य बहुसंख्यक रहस्य हैं। उसके उपर्युक्त भेद को केवल आज मैंने खोला है।

थोड़े ही समय में बडी के कार्यों की ख्याति समस्त नगर में फैल गई। जहाँ हम जाते वहाँ उसकी कीर्ति पहले से लोगों को विदित होती। एक बार जब हम एक सड़क पार कर रहे थे तो एक अष्टवर्षीय बालक मेरे पास आकर कहने लगा, यदि आप मेरा हाथ पकड़कर मुझे सड़क पार करवा देते तो बड़ा अच्छा होता।

इससे मुझे अत्यन्त हर्ष हुआ और सड़क के पार पहुँचकर मैंने कहा, "बेटा, हम सड़क के पार आ गये। किन्तु एक बात तो बताओ, तुमने नेत्रवान व्यक्तियों को छोड़कर एक अन्धे से क्यों सहायता माँगी?"

उसने उत्तर दिया, "मुझे इस कुत्ते का सारा इतिवृत्त विदित है, इससे मैंने सोचा कि इसके साथ चलने से मैं सर्वथा निरापद रहूँगा।"

बडी ने सारे नैशविले-वासियों के हृदय पर अधिकार कर लिया था। स्थानीय श्वान-क्लब के अधिकारियों ने मुझसे कहा कि बडी भी वहाँ के श्वान-प्रदर्शन में भाग ले और उन्होंने उसके वहाँ आने का पर्याप्त विज्ञापन किया। मुझे उन लोगों की बात कदापि न स्वीकार करनी चाहिए थी। उसने नगर के बहुसंख्यक संभ्रान्त लोगों के यहाँ बहुत से भोज खाये थे तथा अन्य लोग भी उसे बहुत खिलाते थे। इनमें मेरे पिता जी भी सम्मिलित थे। मेरे नेत्रहीन होने के कारण उन्होंने उसे बहुत दुलरा दिया था। इस प्रकार वह बड़ी मोटी हो गई थी। यद्यपि मैं प्रतिदिन उसे मलकर ठीक करने का प्रयत्न करता, किन्तु जब वह श्वान-प्रदर्शन की प्रतियोगिता में गई तो उसकी विपुलता सीमा को लाँघ चुकी थी। निर्णायक एक निकटवर्ती प्रदेश के सज्जन थे। उन्होंने जैसा उचित था, पुरस्कार एक दूसरे जर्मन प्रहरी जाति के कुत्ते को दिया।

किन्तु बडी के नगर के प्रशंसकों में कोई उसे सर्वोत्तम न कह सका। दर्शकों की भीड़ से बहुसंख्यक केवल बडी को ही देखने आये थे। वे वृत्तिक-रूप से (Profssionally) किये जाते श्वान-प्रदर्शनों के कदाचित् विशेषज्ञ नहीं थे; किन्तु वे पूर्णतया यह धारणा बनाये हुए थे कि नैशविले में उस समय तक जितने कुत्ते आये थे उनमें बडी सबसे तेज थी। जब पुरस्कार न प्राप्त हो सका तो उपर्युक्त निर्णय के विरुद्ध बड़ा हो-हल्ला मचा।

किसी ने घबड़ाये हुए निर्णायक को बडी की लोकप्रियता के बारे में बताया। वह भी बड़ी सूझ-बूझ का व्यक्ति था। उसने बडी को प्रदर्शन-प्राङ्गण में बुलवाया और बड़े समारोह के साथ "बाहर से आई हुई सर्वोत्तम कुतिया" घोषित करते हुए एक विशिष्ट विजय-घट (ट्राफी) प्रदान किया। इसपर उसके भक्तों के प्रशंसासूचक शब्दों से प्राङ्गण मुखरित हो उठा।

कुछ समय पश्चात् जब एक ऐसी संवाद चलचित्रावली (Newsreel) तैयार की गई जिसमें बडी को पथ-प्रदर्शन-कार्य करते हुए दिखाया गया था, तो महान् पण्डाल में बड़े-बड़े प्रकाशाक्षरों में चमक रहा था "बडी—जीवन-ज्योति श्वान" और उसके नीचे छोटे अक्षरों में था—"और श्वान-समुदाय में—कैमिली में—ग्रेटा गार्बो।" नैशविले उस चलचित्र-तारिका से परिचित था; परन्तु मुझे तो चुम्बन भी न प्राप्त हो सका था।

बडी और मैं बहुधा चलचित्र देखने भी जाते थे। प्रेक्षागृहों में वह मेरे बैठने के स्थान के नीचे चुपचाप अपना सिर धरे रहती और उसी पंक्ति के पासवाले स्थानों में अपना शेष शरीर फैला देती। सामान्यतः लोगों को पता ही न चल पाता था कि वह वहाँ थी भी। एक दिन मैंने प्रेक्षागृह में पहुँचकर उसे बड़े प्यार से थपथपाया और उसने अपनी पूँछ हिलाई। दो स्थान छोड़कर एक महिला बैठी हुई थी। वह तुरन्त भीतर लिवानेवाले कर्मचारी से चिल्ला उठी, "कोई मेरे पाँव में गुदगुदी-सी कर रहा है!"

मैंने तुरन्त सोच लिया कि इस समय सच्चाई दिखाने की आवश्यकता नहीं, वरन् मौन रहना ही उत्तम है। जैसे ही वह आन्दोलन शान्त हुआ, बडी और मैं निकल भागे। पूरा चलचित्र देखता ही कौन है?

मेरा बीमे का कारबार बड़े जोरों से चल रहा था, इससे मैं बड़ा प्रसन्न था। वस्तुतः बडी की ही भाँति उसमें भी दिन-दूनी रात-चौगुनी उन्नति हो रही थी। मेरे उच्चाधिकारी श्री पोलार्ड हमें प्रातःकाल अपने साथ ले लेते। बडी बड़ी उत्सुकतापूर्वक हमारे यहाँ मोड़ के पास उनकी कार की प्रतीक्षा किया करती। मैं विश्वासपूर्वक यह कह सकता हूँ कि यदि इसके केवल दो पाँव कम होते तो वह एक अत्यन्त आश्चर्यकारी जन-संपर्काधिकारी हो सकती थी। वह श्री पोलार्ड का ऐसा हार्दिक स्वागत करती जैसे वे बिन्दुदार रेखा पर हस्ताक्षर करने के लिए पूर्ण तैयार कोई बीमे के मेरे मुवक्किल हों।

अब मुझे अपने भावी मुवक्किलों के पास जाकर बातचीत करने में कोई बाधा न रह गई थी। अब वे मुझे धोखा देकर मुझे निष्फल लौटा देने के लिए मेरे पथ-प्रदर्शक को कोई गुप्त संकेत न दे सकते थे। मेरे "शिकार" मेरा स्वागत करते। वे बडी का कुशल-मंगल पूछने के लिए बहुत उत्सुक रहते और उसके कार्यों को देखना चाहते। जब किसी उपाध्यक्ष को यह संवाद दिया जाता कि श्री फ्रैंक और उनका कुत्ता द्वार पर खड़ा है, तो बड़े हर्ष के साथ उत्तर मिलता' "उनसे भीतर आने के लिए कहो। मारिस! बेखटके चले आओ।"

मैं एक बार पुनः बडी को धन्यवाद देता हूँ। अब मेरे जीवन के सारे कार्य पूर्णतः संतोषजनक रूप से चल रहे थे। मेरे मित्र थे, मैं अध्ययन भी कर रहा था, और साथ ही जीविकोपार्जन भी कर रहा था। हमने अपने

ठोस कार्यों से यह दिखा दिया था कि कुत्ते आत्मनिर्भरता के संग्राम में अन्धों की महती सहायता कर सकते हैं और मुक्तिदान दे सकते हैं।

किन्तु मेरी नेत्रहीनता अब भी मेरे साथ थी। पर मैंने अपने को समझा लिया था और यह बात स्वीकार करने में मुझे अब तनिक हिचक न थी। पहले जो बात मुझे सबसे अधिक खला करती थी वह थी कि मुझे सर्वदा इस बात का ध्यान रखना पड़ता कि कहीं कोई तिपहिया गाड़ी तो नहीं आ रही है। साथ ही मैं यह भी सुनते-सुनते उकता जाता था—"कैसी दयनीय दशा है बेचारे की।"

मैं अपने मित्रों से मिलना बहुत चाहता किन्तु किसी से पथ-प्रदर्शन के लिए कहना मुझे बहुत खलता था। जब मैं कोई पथ-प्रदर्शक लेकर नगर में जाता तो कहीं पहुँचकर वह कहता, "अभी एक मिनट में आया" और इस प्रकार एक मिनट के बहाने से वह पूरा पौन घंटा बिताकर आता। इससे मुझे अपार क्लेश होता। मित्रों और परिवारवालों की भेंट का सुखलाभ जीवन में आवश्यक होता ही है, अतः उसके लिए मुझे प्रतीक्षा की बहुत यंत्रणा उठानी पड़ती।

एक सबसे बुरी बात और होती थी—जब मैं किसी कुर्सी से टकरा जाता अथवा कुछ सीढ़ियों से गिर जाता तो मुझे लोगों से कहना पड़ता कि मुझे तनिक भी चोट नहीं आई। यद्यपि इससे मेरे शरीर को कोई चोट न भी आती, तो भी मैं मर्माहत हो उठता।

मेरी ये बातें समाप्त हो चुकी थीं। उनके स्थान में बडी के कारण अब मुझे स्वतंत्रता, सुखद-साहचर्य, स्नेह और आत्म-मर्यादा प्राप्त हुई थी।

अध्याय ५

धीरे धीरे पत्रिकाओं में प्रकाशित कहानियों एवं चित्रों के द्वारा बडी की ख्याति सारे देश में फैल गई। उनसे अवगत होने पर कई नेत्रहीन व्यक्तियों ने उस बारे में मुझे लिखा। इन पत्रों में पादरी श्री आर० ए० ब्लेयर का पत्र बड़ा हृदय-द्रावक था। तीन वर्ष पहले मलेरिया हो जाने के कारण इनकी आँखें जाती रही थीं।

उन्होंने लिखा था, "मैं ब्रेल पद्धति से पढ़ सकता हूँ और टाइप भी कर लेता हूँ, जैसा प्रस्तुत पत्र स्वयं बताता है; किन्तु मैं धार्मिक सभाओं में नहीं जा पाता। पहले मेरी पत्नी मुझे सर्वत्र ले जाती थी; किन्तु डेढ़ वर्ष से अधिक हुए वह भी रोगशय्या पर पड़ी हुई है। मेरी लड़की बाल-पक्षाघात से विकलांग हो चुकी है। वह भी आने-जाने में मेरी सहायता नहीं कर सकती। इस कारण मेरे काम में बढ़ी बाधा पड़ती है। जब आपका वृत्तान्त मुझे पढ़कर सुनाया गया तो मैं बड़े आश्चर्य में पड़ गया कि क्या सचमुच हम लोगों की कोई सहायता कर सकता है? यदि मुझे गिरजा ले जाने के लिए कोई कुत्ता मिल जाय तो अन्धा होने के कारण मुझको जो एकमात्र कठिनाई है वह जाती रहे।

कितनी शक्ति और उत्साह था! मैं ऐसे ही परमोत्साही व्यक्तियों की सहायता करने के लिए उत्सुक था। यह पादरी अंधा होने के पहले जितना विद्वान् और विविध बातों की जानकारी रखनेवाला था वैसा ही अब भी था। अपनी ज्योति खोने के साथ उसने धर्म-ग्रन्थों का अपना सुन्दर ज्ञान नहीं खोया था। संभवतः अन्य व्यक्तियों की अपेक्षा वह अधिक सुन्दर धर्मोपदेश दे सकता था, क्योंकि मानव-वेदनाओं का उसे विशेष गहरा अनुभव हो गया था।

उसे अपने गिरजे के व्यक्तियों से मिलने की अनिवार्य आवश्यकता थी किन्तु अन्धा होने के कारण अब वह ऐसा न कर पाता था। धर्माधिकारी के रूप में उसे विश्वासपात्र व्यक्ति और परामर्शदाता का कार्य करने की आवश्यकता थी किन्तु जन-वर्ग से सतत सम्पर्क के बिना यह संभव न था। वह अपने कार्य को भली भाँति न कर पाता था, यद्यपि इसमें उसका कोई दोष न था"। किन्तु भली भाँति अपना कार्य करने के लिए उसे केवल एक बात की आवश्यकता थी कि वह अपने गिरजे के क्षेत्र में उन्मुक्त रूप से आ-जा सके। मुझे उसकी मनोदशा का पूरा भान हो रहा था। बडी जैसा कोई कुत्ता उसके लिए नितान्त उपादेय हो सकता था।

कैलीफोर्निया से एक महिला का एक विशिष्ट पत्र मिला था जिसमें उसने एक पथ-प्रदर्शक कुत्ता और आवश्यक प्रशिक्षण के लिए प्रार्थना की थी। दो डाक्टरों ने भी—एक ने जार्जिया प्रदेश के सवैना से और दूसरे ने इलीनोइस के मनमाउथ से—सहायता के लिए उत्कट प्रार्थना की थी। नैशविले तथा सारे टिनेसी प्रान्त से तो स्थानीय पत्रों की भरमार सी हो रही थी। मैंने प्रत्येक के बारे में श्रीमती युस्टिस को लिखा। उनके पत्र का स्वर इस प्रकार था, "हमें अब भी तुम्हारे ही सदृश इस बात का पूर्ण विश्वास है कि हमें एतदर्थ कार्य करने की महती आवश्यकता है। ये सहायता-याचनाएँ हमारे उस विश्वास को और दृढ़ बनाती हैं।"

एक दिन सितम्बर के महीने में जब मैं डाकखाने जा रहा था तो मेरी यह धारणा कि अब हमें अपना प्रशिक्षण-विद्यालय स्थापित कर देना चाहिए, अकस्मात् अतिशय प्रबल हो उठी—वस्तुतः विभिन्न स्थानों से आने वाली बहुसंख्यक सहायता-याचनाओं के उपसंहार के रूप में ऐसा हुआ था।

जन-समुदाय की भारी भीड़ और कोलाहल में कूद पड़ने के पहले जब बडी और मैं एक क्षण के लिए एक अत्यन्त भीड़भाड़ वाले मोड़ पर रुका तो मुझे एक अन्धे व्यक्ति के टेकने की ध्वनि सुनाई पड़ी। वह सड़क की पटरी पर खड़ा था और यह प्रतीक्षा कर रहा था कि कोई पास से जानेवाला व्यक्ति दया कर उसे सड़क पार करा दे। हमें उसी समय इस बात का पूर्णानुभव हुआ कि हमें तब तक शान्ति नहीं मिल सकती जब तक हम मोड़ों और सड़क पर पैर घसीटनेवाले, करुणा उत्पन्न करनेवाले, बहुसंख्यक नेत्रहीन के दुःख दूर करने और आत्म-मर्यादा की प्राप्ति के लिए एक प्रशिक्षण विद्यालय न स्थापित कर लें।

इसके अनन्तर घटनाओं का क्रम तीव्र गति से चला। श्रीमती युस्टिस ने मुझे उत्तर दिया था कि जहाँ तक संभव हो, मैं शीघ्रातिशीघ्र कार्यारंभ कर दूँ। उन्होंने दूसरा बहुत बढ़िया संवाद यह दिया था कि जैक फारचुनेट फील्ड में प्रशिक्षकों के शिक्षण में अत्यन्त श्लाघनीय रूप से उन्नति कर रहे थे। उनमें एक के जैक का बहुत अच्छा सहायक होने की संभावना थी।

श्रीमती युस्टिस ने लिखा था, "सबसे आश्चर्य की बात यह है कि वह एक लड़की है। वह अभी बीस वर्ष की भी नहीं हो पाई है और वर्षों से मेरे परिवार के साथ उसकी विशेष मैत्री रही है। उसका नाम एडीलेड क्लिफोर्ड है और हमारे सौभाग्य से हम लोगों के अन्य समकालीनों की भाँति उसे "घोड़ों के लिए सनक" नहीं है प्रत्युत "कुत्तों के लिए सनक" है। जैक का विचार है कि उसमें इस कार्य के लिए विलक्षण प्रतिभा है।

उन्होंने आगे लिखा था, "जैक भी यथापूर्व कुत्तों के विषय में अपनी दक्षता दिखाने में तत्पर हैं। आजकल उनकी देख-रेख में टाटा और गाल नामक दो कुत्ते हैं, जो अपनी संवेदनाओं में सर्वथा मानव-सरीखे हैं।"

श्रीमती युस्टिस के पत्र का अन्तिम भाग तो और भी सुखद था। उनका विचार था कि फरवरी में मैं आरंभिक प्रशिक्षक का कार्य बिना किसी हिचकिचाहट के आरंभ कर सकता हूँ। "जैक उसके थोड़ा पूर्व पहुँचेंगे—हम तुम्हें निश्चित दिनांक सूचित करेंगे—उनकी प्रतीक्षा करना। उनके पश्चात् फारचुनेट फील्ड्ज में अपने कार्यों की व्यवस्था कर शीघ्रातिशीघ्र मैं भी आ जाऊँगी।"

दिसम्बर का महीना बीत रहा था। एक दिन बहुत तड़के जब बड़ी ठंड पड़ रही थी, बडी और मैं घर से निकलकर माल लादनेवाले मोटर के प्लैटफार्म की ओर चल पड़े। अकस्मात् बिना किसी स्पष्ट कारण के बडी मार्ग में रुक गई। मैं अपने कानों पर जोर देकर पता लगाने की चेष्टा करने लगा कि बडी के इस प्रकार मूर्तिवत् हो जाने का कारण क्या था। एक क्षण तक बिल्कुल शान्ति रही। तब हमें ज्ञात हुआ कि हमारे आगे कोई ऐसा व्यक्ति चल रहा है जिसकी पगध्वनि हमारी पहचानी है। हिमाच्छादित पटरियों पर वह पग-चाप बड़ी-परिचित संगीत-स्वर सी लग रही थी। मेरा हृदय बाँसों उछलने लगा। मैं चिल्ला उठा, "जैक!" किन्तु कोई

उत्तर न मिला; परन्तु चलनेवाले की पगध्वनि अब भी सुनाई पड़ती थी। हम भी और आगे बढ़े और तब मैंने फिर पुकारा, "जैक !" पुनः कोई उत्तर नहीं मिला।

अन्त में मैं कह उठा, "तुम्हें स्वीकार करना पड़ेगा कि तुम्हीं हो। तुम मुझे मूर्ख बना सकते हो, किन्तु बडी को नहीं छल सकते। उसका सिर वैसे ही इस प्रकार ऊपर उठा हुआ है जैसे वह तब उठता था जब वह स्विट्ज़रलैण्ड में जैक को देख लेती थी। यह तुम्हारे अतिरिक्त और कोई हो ही नहीं सकता !"

हमारे इतना कहने के अनन्तर वहाँ का वातावरण जैक के अट्टहास से निनादित हो उठा। तब फिर वह पगध्वनि हमारे समीप आने लगी और मैंने अपने कंधों पर पूर्व-परिचित हाथों के सुखद स्पर्श का अनुभव किया। जैक ने सर्वप्रथम बडी को लक्ष्य किया। उन्होंने उसे थपथपाया और बड़े प्रेम से उससे कहा, "पुरानी तरुणी ! बधाई है ! तुम्हारे ही कारण हम यहाँ एकत्र हो सके हैं।" तब उन्होंने मुझे लक्ष्यकर कहा, "मारिस, अब काम करने का समय है।"

हमने नगर के नौ फुट लम्बे और दस फुट चौड़े एक कमरे में एक छोटा सा कार्यालय खोला। यहाँ हम प्रशिक्षण कार्यक्रम तैयार करते, छात्रों के रहने की व्यवस्था करते, आय-व्यय का ब्योरा रखते, कुत्तों को पहुँचानेवालों से मोल-भाव करते और आनेवाले पत्रों की पर्वत-राशि का उत्तर लिखते। तब तक स्विट्ज़रलैण्ड से बुद्धिमती कुमारी क्लिफोर्ड भी आ पहुँचीं। वे सहस्रों छोटी-छोटी बातों का प्रबंध करने में बड़ी दक्ष थीं। यदि वे न रही होतीं तो हम उन बातों से एकदम घबड़ा गये होते।

नगर के केन्द्रस्थ भाग से दूर हमने श्वान-गृहों के निर्माण के लिए एक टूटा-फूटा पुराना घर किराये पर लिया। प्रांगण को घेर कर हमने कुत्तों के व्यायाम के लिए एक विस्तृत क्षेत्र बनाया।

जैक अपने साथ बुद्धिमान् टाटा और गाल को भी लाये थे। धीरे-धीरे हमने देश के विभिन्न भागों के कुत्ता पालनेवालों के यहाँ से और भी कुत्ते मँगाये। किन्तु उनमें कुछ ही जैक की कठिन योग्यता-परीक्षा में सफल हुए और केवल उन्हीं को पथ-प्रदर्शक श्वान बनाया जा सका।

इनमें एक प्रशिक्षणार्थी कुत्ता केवल एक बात को छोड़कर बहुत योग्य था। यदि कोई व्यक्ति उसकी पूँछ दबा देता तो वह उसके प्रतिवाद में गुर्राता वा भूँकता अवश्य। इसको सुधारने की बड़ी-बड़ी चेष्टाएँ की गईं किन्तु

सब व्यर्थ। स्वामी के नेत्रहीन होने के कारण पथ-प्रदर्शक कुत्तों की पूँछ का उनके द्वारा अनजाने दब जाना साधारण सी-बात होती है, इसके लिए उन कुत्तों को बड़ी बुद्धिमानी बरतने की आवश्यकता होती है। इसमें होने वाली पीड़ा को जब वे स्वाभाविक संयोग समझकर उसका एक विरागी की भाँति सामना करते हैं तभी वे सफल पथ-प्रदर्शक बन पाते हैं। गुर्राने और भूकनेवाला कुत्ता अपने स्वामी का अच्छा सहचर नहीं बन सकता और वह हमारे समस्त जीवन-ज्योति के कार्यों के प्रति जनता में अविश्वास और अनास्था उत्पन्न कर दे सकता है, अतएव जैक ने उसे इच्छा न होते हुए भी बेच दिया।

न्यू जरसी के मारिस टाउन के एक श्वान-पालक डब्ल्यू० एच० विली एब्लिंग हमारे लिए कुत्तों की प्राप्ति के बहुत अच्छे साधन थे। उन्हें और जैक दोनों को ही सर्वोत्तम जर्मन प्रहरी कुत्तों के पालने में अतिशय चाव था। इन लोगों की ऐसी पटी कि विली ने मारिसी टाउन छोड़कर नैशविले में आने का निश्चय कर लिया। अपनी कुशलता एवं कार्यनिष्ठा के कारण उन्होंने हमारे यहाँ के कार्यकर्ताओं में अपना अनुपम स्थान बना लिया। थोड़े ही समय पश्चात् हम सभी उन्हें "चाचा" कहने लगे।

जनवरी में श्रीमती युस्टिस के आने के समय तक हमारे कार्यों की गुनगुनाहट चारों ओर फैलने लगी थी। हम लोग कुछ आरंभिक कठिनाइयों को पारकर केवल उनके आदेश की प्रतीक्षा कर रहे थे कि वे बस कह दें कि "आगे बढ़ो।" हमारे संघ की लगभग सारी बातें इस अवस्था में पहुँच चुकी थीं कि वह एक प्रतिष्ठित आधिकारिक शिक्षण-संस्था के रूप में कार्यारंभ कर सकता था।

हम लोगों ने "जीवन-ज्योति" के लिए टिनेसी में वहाँ के विधानों के अनुसार एक संस्था के रूप में मान्यता ले ली। उसका उद्देश्य यह घोषित किया गया था कि यह "नेत्रहीनों के पथ-प्रदर्शनार्थ कुत्तों के प्रशिक्षण एवं दीक्षा के लिए तथा ज्योति से रहित स्त्री-पुरुषों को ऐसे कुत्तों का प्रयोग सिखाने के लिए" स्थापित की गई है। हमने अपने पर्युपक्रम (Enterprise) को बिना किसी लाभ के चलाने का निश्चय किया था। श्रीमती युस्टिस उसकी अध्यक्षा होनेवाली थीं और मैं प्रवन्ध संचालक।

हमारे तीन ऐसे सहायक थे जिन्हें यदि देवता कहा जाय तो अत्युक्ति न होगी। उन्होंने हमें वचन दिया था कि उनमें से प्रत्येक हमारी संस्था को चलाने के लिए, तीन वर्षों तक, पच्चीस सौ डालर देता रहेगा। इसके

अतिरिक्त हमारी संस्था के लिए पहले से ही सर्वस्व निछावर करनेवाली श्रीमती युस्टिस ने भी सहर्ष और बड़ी उदारतापूर्वक दात्रों (bilty) की भारी भरमार का भार वहन करने के लिए हमें अपनी जमा की हुई संपत्ति प्रदान कर दी।

श्रीमती युस्टिस के निबन्ध के पढ़ने के पश्चात् जब पहली बार अमेरिका में पथ-प्रदर्शक कुत्तों की व्यवस्था करने की कल्पना मेरे मस्तिष्क में आई थी, उसके ठीक पन्द्रह मास के अनन्तर हमने अपने विद्यालय का श्रीगणेश किया।

हमारी पहली प्रशिक्षण-कक्षा का कार्य फरवरी में आरम्भ हुआ। यह शिक्षार्थियों से पूरी भरी थी तथा उसके लिए हमें अत्यधिक व्यय करना पड़ा। इसमें दो शिक्षार्थी थे—सवैना के डा० रेमण्ड हैरिस और मनमाउथ के डा० होवर्ड बुकानन। इन्होंने हमें बड़ा आग्रहपूर्ण पत्र लिखा था। इन्हीं दो चिकित्सकों में हमारे सारे पथ-प्रदर्शक कुत्ते लग गये। बाहर से आये हुए टाटा और गाल इन्हीं को दे दिये गये। ये ही दो कुत्ते ऐसे थे जिन्हें जैक की संमति में इतना पूर्ण रूप से सुशिक्षित किया गया था कि वे किसी नेत्रहीन व्यक्ति की आँख बनने का भार उठा सकते थे।

इसके साथ साथ जब ये दोनों हमारे शिष्य व्यवधानों से बचने और भीड़भाड़ में चलना सीख रहे थे तो दूसरे कुत्ते भी आगे आनेवाले द्वितीय शिक्षार्थी-वृन्द के लिए तैयार किये जा रहे थे। यह द्वितीय वृन्द प्रशिक्षण के लिए मार्च में आनेवाला था।

जैक एक सुविज्ञ प्रजनन-विज्ञान-शास्त्री होने के अतिरिक्त अच्छे प्रशिक्षक भी थे। केवल एक घंटा उनके साथ संलाप करने से ही विदित हो जाता कि उन्हें सभी जीवधारियों का कितना अद्भुत ज्ञान था। श्रीमती युस्टिस के यहाँ अपना कार्य-भार ग्रहण करने के पूर्व वे सरकसों में घोड़ों, हाथियों, कुत्तों तथा सिंहों के साथ काम कर चुके थे। एक बार उनसे कहा गया कि आज तक ऊँटों को पीछे चलना कोई नहीं सिखा सका है। फिर क्या था, उन्होंने तीन साँड़ियों को एक साथ उस प्रकार चलने में प्रशिक्षित कर असंभव को संभव कर दिखाया!

जिन कुत्तों का हम प्रयोग करना चाहते थे उनका जैक और विली पहले तीन महीने तक अध्ययन करते थे। हमने जर्मन प्रहरी कुत्तों को पालने का काम हाथ में लिया था; क्योंकि उनमें असाधारण बुद्धि, शक्ति और विश्वासपात्रता पाई जाती थी। अनुभव से हमें विदित हुआ था कि चौदह

महीने की किशोर कुतियाँ हमारे कार्य के लिए अधिक उपयुक्त पड़ती थीं।

खेल-खेल में उनके प्रशिक्षण की सबसे पहली बात यह होती थी कि उन्हें ऐसा सिखाया जाय कि वे घर की ममता सर्वथा छोड़ दें। तदनन्तर आज्ञा-पालक बनाना आता है। फिर यह सिखाने की आवश्यकता पड़ती है कि लगाम लगाने पर वे सर्वदा कार्य-तत्पर रहें। उस समय मार्ग में पड़नेवाले कुत्तों और दुःसाहसी बिल्लियों की ओर कुतिया तनिक भी ध्यान न दे। अपनी क्रीड़ा के समय वह मनमाना गिलहरियों का पीछा करे; किन्तु लगाम लगते ही वह समझे कि चमड़े की पट्टी यह कह रही है कि "बाधा न डालो" और इस आदेश का पालन होना चाहिए।

यह पाठ स्वयं एक पूरा प्रशिक्षण है और इससे बुद्धिमती कुतियाँ स्वयं भी सोचने लगती हैं। वे सीख जाती हैं कि चाहे उनकी भावनाएँ कुछ भी हों, वे अपने स्वामी को छोड़कर लड़ाई करने अथवा खेलने नहीं जा सकतीं।

तदनन्तर वे अपनी दूसरी कक्षा के लिए तैयार हो जाती हैं। इसमें आज्ञा-पालन का अभ्यास कराया जाता है। उन्हें आगे चलना, बायें-दाहिने मुड़ना, बैठना और लेटना सिखाया जाता है। उन्हें अपने स्वामी की किसी गिरी हुई वस्तु को उठाना और ले आना भी सिखाया जाता है। इस प्रकार वे गिरी हुई वस्तुओं को ढूँढ़कर लाने में भी दक्ष हो जाती हैं। वे फर्श पर अपना सिर मोड़कर कालर-बटनों तथा सिक्कों को भी अपने मुँह में उठाने लगती हैं। कभी-कभी कोई कुतिया कुञ्जी आदि जैसी वस्तुएँ ढूँढ़ लाकर जैक को चकित कर देती। उन्हें इन वस्तुओं के गिरने का पता भी न होता।

धीरे-धीरे कुतियों को छोटे-से बड़े कार्य करने सिखाये जाते। जब तक वे छोटे-छोटे कार्यों को करने में दक्ष न हो जातीं तब तक उन्हें बड़े-बड़े कार्य न दिये जाते। लगाम लगने के पहले दिन उन्हें यह सिखाया जाता कि वे जहाँ मकानों की एक पंक्ति समाप्त हो और सड़क का कोई नया मोड़ आये तो वे एकदम बैठ जायँ जिससे उनके स्वामियों को इसका पता लग जाय और वे अपनी दिशाएँ निर्धारित कर आदेश दे सकें कि "आगे चलो", "बायें मुड़ो" या "दाहिने मुड़ो।"

जैक इस मूलभूत बात का बड़े धीरज से अभ्यास कराने में घण्टों लगा देते। तब उन्हें अवसर देते कि वे बिना बैठे और बिना उनका आदेश पाये सड़क

पार करने की भूल करें। जैसे ही यह बात होती, जैक एकदम एक अन्धे व्यक्ति की भाँति बड़े ढंग से लड़खड़ाते और रस्सी को झटका देते। इसमें कुतियों को कोई तमाशा न लगता और वे अपनी सामान्य-बुद्धि के द्वारा अपने इस प्रशिक्षण के परीक्षण की सारी भूलों को दूर कर लेतीं।

सारे प्रशिक्षणकाल में जब वे अपना कार्य ठीक से और शीघ्रतापूर्वक करतीं तो उनकी तुरन्त प्रशंसा की जाती, "तू बड़ी अच्छी लड़की है।" जब भूलों के लिए "छिः" कहा जाता तो वे एकदम सिटपिटा जातीं।

इस प्रशिक्षणकाल में एक और विशेष बात सिखाई जाती थी—वह थी ऊर्ध्वस्थ व्यवधानों को पार करना जिसके नीचे से वे स्वयं तो निकल जा सकतीं किन्तु उनके लंबे साथी को उनसे चोट पहुँच जाने की आशंका होती। जैक एक अत्यन्त निम्नस्थ तल पर तने हुए चँदोवे की ओर इस प्रकार चलते कि यदि वे दौड़कर जाते तो उनके मुँह में अवश्य चोट आती। वे अपनी छड़ी से उसे बड़ी तेजी से पीटते जिससे उसके शब्द से संवेदनशील कुतिया प्रभावित हो उठे। तब वे उसे व्यवधान से कतरा कर ले जाते और तुरन्त फिर वहीं आ पहुँचते। यदि वह इस बार उसे बचाकर न निकल जाती तो वे उसे सुधारने के लिए बड़ी दृढ़ता का बर्ताव करते और परीक्षणार्थ इस कार्य को कई बार दुहराया जाता। जब अन्ततोगत्वा वह अपने कार्य को समझ जाती तो जैक उसे थपथपाते और उसकी प्रशंसा करते। समय पाकर वह एक अच्छी लड़की की भाँति सभी ऊर्ध्वस्थ व्यवधानों को स्वयमेव कतरा कर पार करना सीख जाती।

आज्ञा-पालन की शिक्षा समाप्त हो जाने पर, जैक उसे उतनी ही सावधानी से बुद्धिमत्तापूर्वक आज्ञोल्लंघन करना भी सिखाते, क्योंकि यदि कोई आदेश अन्धे व्यक्ति के लिए शंकाजनक होता तो उसका उल्लंघन करना आवश्यक था। इस विवेक-शक्ति का विकास उसके प्रशिक्षण-पाठ्यक्रम में उच्च गणित के सदृश था। जैक एकदम निश्चित रूप से उसे सिखा देना चाहते थे कि यदि उसे "आगे चलो" का आदेश दिया गया हो, किन्तु सामने से कोई कार उनकी ओर आ रही हो तो वह कदापि आगे न बढ़े और अपने स्वामी को पीछे खींच लाये।

उनका विचार था कि वह पूर्णतया आज्ञापालक बन जाय, पर साथ ही सर्वथा यंत्रवत् न हो जाय। उसे अपनी बुद्धि का प्रयोग और अपने से कोई कार्य करने की स्वतंत्रता होनी चाहिए। हमारे कुत्ते इस प्रकार आज्ञा-पालन और यदि कोई उत्तरदायित्व-भावनाहीन मोटर-चालक लाल प्रकाश

की ओर जा पहुँचे या कोई अकस्मात् संकटजनक काम हो जाय तो उस अवस्था में बुद्धिमत्तापूर्वक आज्ञोल्लंघन करना भी साथ-साथ सीख जाते। यूरोप के अपने पूर्वानुभव से जैक जानते थे कि कई बार ऐसा हुआ था कि कई नेत्रहीन व्यक्तियों ने आगे आने वाले जोखिम न देख पड़ने के कारण बढ़ने का आदेश दिया किन्तु बुद्धिमत्तापूर्वक अपने कुत्तों के आज्ञोल्लंघन करने के कारण अपने प्राण बचा लिये, क्योंकि उनके कुत्ते आगे की ओर एकदम टस से मस न हुए तथा सामने खड़े हो गये और रक्षा के लिए उनके पाँवों को पीछे दबाने लगे।

कुतिया की अन्तिम परीक्षा के लिए जैक या विली चाचा वस्तुतः अपनी आँखें ढक लेते और अपने उन्नयन के लिए उसे भीड़ में ले जाते। तब सुशिक्षित शिष्या सर्वथा अपने भरोसे अपने प्रशिक्षक को भारी भीड़ के बीच से ले चलती। जनसंकुल मोड़ों पर वह कारों को देखकर रुक जाती जिससे वे निकल जायँ; यदि कारें उन्हें देखकर धीमी हो जातीं तो उस अवस्था में वह उन्हें लेकर खट से सड़क पार हो जाती। पथ-प्रदर्शक कुतियों में ऐसा आत्म-विश्वास भर दिया गया होता कि वे पटरियों की भारी भीड़ में पैदल चलनेवाले व्यक्तियों को तनिक भी स्पर्श किये बिना निकल जातीं। वे अपने दिखाने के लिए अन्धे बने हुए स्वामियों को तोरणपथों के नीचे से, चिट्ठी के बक्सों की बगल से तथा घूमनेवाले द्वारों के बीच से इतनी सुकरता से ले जातीं जैसे वे बाल-बियरिंग (मशीन की चिकनी गोलियों) पर फिसल रही हों।

अत्यधिक सत्यशील होने के कारण जैक पथ-प्रदर्शक कुतियों की अनेकशः परीक्षाएँ करते जब तक कि उन्हें उनकी कार्य-बुद्धि में पूर्ण विश्वास न हो जाता और वे भली भाँति यह न समझ लेते कि उनकी शिष्या स्नातक होने के पूर्ण योग्य हो गई है। तब कहीं जाकर वे अपना कृत्रिम अन्धापन छोड़ देते और अपनी शिष्या से कहते कि वह कहीं अधिक अच्छी लड़की हो गई है एवं अब वह सर्वथा पूर्ण बाला है। इतना होने के पश्चात् ही उसे पदवी प्रदान की जाती कि वह किसी अन्धे व्यक्ति की आँख बनने का उत्तरदायित्व ग्रहण करने के पूर्ण योग्य है।

मार्च में आरंभ होनेवाली कक्षा के लिए हमने पाँच पथ-प्रदर्शक कुत्ते तैयार कर लिये थे और पहली बार प्रशिक्षण के लिए जितने शिक्षार्थी भर्ती किये थे उनकी इतनी संख्या के प्रशिक्षार्थ अबकी बार व्यवस्था कर ली थी। इसके लिए हमने बड़ी सावधानी से अग्रलिखित प्रशिक्षार्थी

चुने थे—दूरस्थ कैलीफोर्निया के बर्कले स्थान की एक महिला, टिनेसी के इण्डियन स्प्रिंग्स के अर्ल पेण्डेल्टन, नैशविले के ई० ए० रोगर्स तथा सिडनी स्वीनी तथा पेनसिलवेनिया के पादरी डा० आर० ए० ब्लेयर जो बहुत दिनों से अपने गिरजा के लोगों से अपने भरोसे मिलने-जुलने के लिए लालायित थे।

उनके वास्तविक प्रशिक्षण का आरंभ करते हुए पहले जैक ने उन्हें बड़े उत्साहपूर्वक एक वक्तृता दी। उन्होंने कहा, "यहाँ आप लोगों के आने की हमें बड़ी प्रसन्नता है और बड़ा सौभाग्य है कि आप लोग भी यहाँ पहुँच पाये हैं। आप लोगों को सैकड़ों आवेदकों में से चुना गया है। आप लोगों को प्रशिक्षण कुछ कठिन प्रतीत होगा, परन्तु आप देखेंगे कि उससे आपको अनंत लाभ होंगे। संभवतः वह आपके लिए एक जीवन-मरण का प्रश्न होगा।

"मुझे पाट्सडेमर प्लाट्ज की एक घटना का स्मरण आता है। जाड़ों के दिन थे। एक तरुण नेत्रहीन लड़की कहीं जाते समय एक हिमप्रच्छादित भाग में जा गिरी। उसके पथ-प्रदर्शक कुत्ते ने उसके कोट का कालर पकड़ लिया और उसे पटरी के निरापद स्थान में खींच ले गया। हमारा तात्पर्य यह नहीं है कि वैसी घटना आप लोगों के साथ भी घटेगी, परन्तु अपने अनुभवों के आधार पर हम कह सकते हैं कि आपका कुत्ता अनेक प्रकार से आपका प्राणरक्षक होगा।"

प्रशिक्षार्थियों को कुत्ते दिये जाने के पूर्व अलग-अलग लगाम का प्रयोग करना सिखाया जाता था। जैक स्वयं लगाम के द्वारा उनका उन्नयन करते जैसे वे ही वास्तविक पथ-प्रदशक कुत्ता हों। वे पहले रस्सी के सहारे उनके एकदम आगे चलते, तत्पश्चात् अकस्मात् दाहिने वा बायें मुड़ जाते। "लगाम को दृढ़ता से पकड़े रहिए। न बहुत कड़ाई से और न बहुत ढीला—एक ढंग से और दृढ़ता से यह लगाम आप और आपके कुत्ते के बीच विभिन्न बातों की अभिव्यंजना का माध्यम है। समय पाकर आप जान जायँगे कि विभिन्न संकेतों द्वारा वह क्या द्योतित करती है।"

जैक विभिन्न दिशाओं में लगाम के खिंचाव का अर्थ उन्हें लगातार बताते जाते। "यह संगीत और संवाद के लिए रेडियो-डायल को अपने इच्छानुसार ठीक करने के सदृश है। पहले संकेत कुछ गड़बड़ और अस्पष्ट से लगते हैं परन्तु थोड़े अभ्यास और अनुभव के अनन्तर वे सर्वथा स्पष्ट और निर्भ्रान्त रूप से समझ में आने लगते हैं।

"आप लगाम मोड़कर अपने कुत्ते को किसी अभिलषित दिशा में चलने के लिए प्रेरित न करें। वह घोड़े की लगाम नहीं है। आप उसका उन्नयन करने की चेष्टा न करें; उसे अपना उन्नयन करने दें।" फिर जैक ने आज्ञा दी, "अब आप मुझे आदेश दें और जब मैं काम ठीक करूँ तो मेरी प्रशंसा करें।"

जब वे अपने आदेश के शब्दों के प्रत्येक अक्षर के उच्चारण में तथा अपने काल्पनिक कुत्ते की प्रशंसा में एक ही प्रकार के उत्साहवर्द्धक शब्दों के प्रयोग में पूर्णतया दक्ष हो जाते तब वे अपने पथ-प्रदर्शक कुत्तों को पाने योग्य समझे जाते।

उस समय जैक अत्यन्त उत्सुक प्रशिक्षार्थियों से कहते, "इस कुतिया की भली भाँति परीक्षा की गई है कि यह अपने चरित्र तथा स्वभाव में पूर्णतया आपके अनुरूप होगी। पालन करते समय ही इसे बता दिया गया है कि आपका उत्तरदायित्व इसके ऊपर होगा। सारे जीवन भर उसे इसी के लिए प्रशिक्षण दिया जाता रहा है। वह केवल आपकी आँखों का काम करने के लिए रहती है तथा उसके बदले में आपसे आशा करती है कि आप उसके सहचर रहेंगे और उसे प्यार करेंगे।"

फिर उन्होंने सावधान करते हुए कहा, "परन्तु आपको यह सदैव स्मरण रखना चाहिए कि वह आपकी नहीं है वरन् आप उसके हैं। आप उसे अपनी आज्ञा के पालन के लिए विवश नहीं कर सकते; आप उसके साथ ऐसा बर्ताव करें कि वह प्रेम के वश होकर आपका कार्य करे।"

तब बड़े नाटकीय ढंग से जैक पुनः कहते, "और अन्त में आप यह जान लें कि यह आपके जीवन में सबसे महत्त्वपूर्ण महिला होगी!"

प्रशिक्षार्थी के जीवन का वह दिन बड़ा महत्त्वपूर्ण होता जिस दिन उसकी कुतिया से उसका परिचय कराया जाता। जैक चेतावनी देते हुए कहते, "स्मरण रखिए कि वह आपका पथप्रदर्शन करती है; किन्तु चलना कहाँ है, यह आपको उसे बताना होगा। आप मस्तिष्क का काम करेंगे और वह आँखों का—इसमें दोनों का समान महत्त्व है—दोनों का आधा-आधा उत्तरदायित्व है।"

बड़े समाहित चित्त से सैकड़ों घंटे काम करने के अनंतर आधा-आधा उत्तरदायित्ववाली बात में शत-प्रतिशत सफलता मिल पाती। प्रशिक्षार्थियों को कन्धों और पाँवों में अनभ्यास के कारण होनेवाली पीड़ा पर विजय प्राप्त करनी पड़ती। सबसे कष्टकर बात यह थी कि उन्हें अपने उल्लास

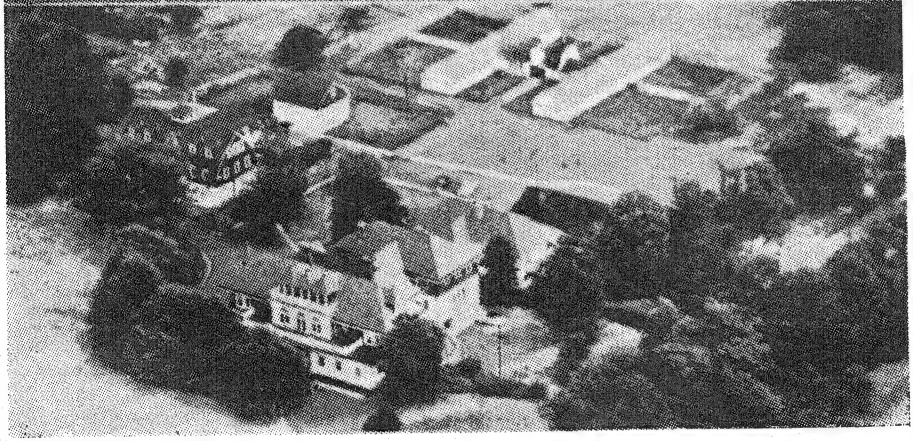

आयरिश वीट के सौजन्य से

"फोर-एच् क्लब फार्म" में नये पिल्ले भर्ती किये जाते हैं उन्हीं में से एक पूर्ण वयस्क पिल्ला अपने साथियों से बिदा ले रहा है। अब उसके प्रशिक्षण का कार्य आरम्भ होने वाला है। पथ-प्रदर्शक कुत्ते और उनके नेत्रहीन स्वामी अपने प्रशिक्षण के दिन दृष्टिदात्री संस्था के प्रधान कार्यालय में बिताते हैं। यह कार्यालय पहले न्यूजरसी के मॉरसटाउन में बनाया गया था और ५० एकड़ भूमि घेरे था।

आयरिश वीट के सौजन्य से

अपने नेत्रहीन स्वामी के हाथों में सौंपे जाने के प्रथम प्रत्येक कुत्ते को मॉरिसटाउन में एक नेत्रवान् व्यक्ति के साथ तीन मास का प्रशिक्षण ग्रहण करना पड़ता है। (ऊपर) इस प्रकार का श्वान-प्रशिक्षार्थी नगर की भीड़-भाड़ में व्यावहारिक अनुभव प्राप्त कर रहा है। एक मास तक कुत्ते का प्रशिक्षक नेत्रहीन और उसके कुत्ते को अपने पूर्ण अधीक्षण में रखकर उन्हें व्यक्तिगत प्रशिक्षण प्रदान करता है। पथ-प्रदर्शक कुत्ता (नीचे) अपने स्वामी को एक खुली मोरी के पास से ले जा रहा है और उसका प्रशिक्षक उसके कार्यों का अत्यन्त ध्यानपूर्वक निरीक्षण कर रहा है।

और कार्यों के बीच सदैव असफलता का भूत अलग चिन्तित और व्यग्र किया करता। इस पर विजय पाना भी अत्याश्यक था।

तीन सप्ताह में वे स्नातक हो जाते।

वे "जीवन-ज्योति" में डरते-डरते, हिचकिचाते और लड़खड़ाते तथा अपना मार्ग टटोलते-टटोलते आते। परन्तु वे पुनरुज्जीवन प्राप्त कर हमारे द्वार से सिर ऊँचा किये हुए बड़े ठाट से जाते। यह विश्वास करना कठिन हो जाता कि वे सचमुच नेत्रहीन हैं।

प्रतिमास हमारे यहाँ नये उत्सुक प्रशिक्षार्थी आ रहे थे एवं उनके और विस्तृत ढंग से प्रशिक्षण की आवश्यकता बढ़ती जा रही थी। अतएव स्पष्टभाषी जैक ने निर्देशनों की विस्तृत रूपरेखा तैयार की, जिससे प्रशिक्षार्थियों को उनके कुत्तों के साहचर्य में जीवन के सभी क्षेत्रों के लिए शिक्षित किया जा सके।

प्रशिक्षण के आरंभ में वे कहते, "सज्जनो! आपको सदैव यह व्यवस्था करनी चाहिए कि आपका कुत्ता सदा एक नियमित समय से अपनी नित्य-क्रिया करे। एतदर्थ आप इसे एक निश्चित समय को छोड़कर कभी उन्मुक्त न करें। हमने उसे इस बात की शिक्षा दे दी है, अब यह आपका उत्तरदायित्व है कि आप यह देखें कि वह अपनी प्रशिक्षित पद्धति को न छोड़े।

"आपके स्मरण रखने की दूसरी आधारभूत बात यह है कि उसे ऐसा प्रशिक्षित किया गया है कि वह सतत आपकी आँखों का काम करे। जब उसे लगाम लगी हो तो आप उसे उसकी इच्छा के अनुसार पानी के नलों पर सर्राटे न भरने दें। आप उसे अपना प्रणय-व्यापार चलाने के लिए उन्मुक्त नहीं कर सकते, क्योंकि हो सकता है उस समय आपको सड़क पार करने की आवश्यकता पड़ जाय।"

अधिकांश प्रशिक्षार्थी जैक के निर्देशनों का अक्षरशः पालन करते। थोड़े ही समय पश्चात् उन्हें बारंबार इस बात का स्मरण दिलाने की आवश्यकता न रह जाती कि वे अच्छा काम करने पर अपनी कुतियों की प्रशंसा करें। "तू बहुत अच्छी लड़की है"—ये शब्द उनके आभार से भरे हृदयों से स्वयमेव निकल पड़ते। परन्तु मुझे एक उद्धत व्यक्ति का वृत्तान्त स्मरण है कि चाहे उससे कितनी बार कहा जाय, उसे सदैव यह स्मरण दिलाने की आवश्यकता शेष ही रह जाती कि "अपनी कुतिया की प्रशंसा करो, उसे प्रोत्साहित करो।" अपने चित्त

को एकाग्र करने में वह उसकी प्यारपूर्ण शब्दों में प्रशंसा करना सर्वथा भूल-सा जाता।

वह सदैव अपने पथ-प्रदर्शक के प्रति चिल्लाता रहता, उसे झटके से खींचता और उसे कभी न थपथपाता और न प्रोत्साहित करता। जैक उसे चेतावनी देते कि कुतिया इस प्रकार अपने काम में कभी मन न लगायेगी, यदि उसे प्यार नहीं किया जायेगा, किन्तु उनके शब्दों का कोई प्रभाव न पड़ता।

एक दिन प्रातःकाल यह प्रशिक्षार्थी और उसका कुत्ता बड़ी स्फूर्ति में एक सड़क पर चल रहा था। उनका अनुसरण करते हुए जैक ने अत्यन्त साश्चर्य देखा कि कुतिया सीधे एक आग बुझानेवाले नल की ओर बढ़ी जा रही थी। क्या वह प्रशिक्षण के सभी नियमों को तोड़कर नल को सूँघने जा रही थी? नहीं। उसने अपने स्वामी को प्रशिक्षित करने का कार्य स्वयं अपने सुयोग्य हाथों में लेने का निश्चय किया था। बिना द्रुतगति से कतराये वह सीधे लोहे के नल के पास चली गई। परिणाम-स्वरूप उसका बुद्धिहीन स्वामी पूरे वेग से उससे टकरा गया और उसके घुटनों में बड़ी चोट आई। बताने की आवश्यकता नहीं कि उस व्यक्ति को इस कष्टकर ढंग से आवश्यक शिक्षा मिल गई और उसने अपना ढंग सुधार लिया।

भविष्य के प्रशिक्षण कार्य के लिए यह घटना एक वरदान सिद्ध हुई। जब जैक प्रशिक्षार्थी-वृन्द को यह बताते कि प्रोत्साहन के लिए कुतिया की प्रशंसा अवश्य करनी चाहिए और इस संबंध में उन्हें चेतावनी देते हुए उक्त करुणापूर्ण घटना का वर्णन करते तो वे बड़ी सरलता से स्मरण कर लेते कि प्रेम द्वारा सभी को जीता जा सकता है।

कुछ समय बीतने पर हम ऐसे प्रशिक्षार्थी भर्ती करने लगे जो हाल के अंधे थे। उनकी समस्याएँ पुराने अन्धों की समस्याओं से कुछ भिन्न थीं।

हम उन्हें इस बात के लिए प्रोत्साहित करते कि वे अपनी अल्प-कालिक नेत्रहीनता को उचित दृष्टिकोण से समझने की चेष्टा करें जिससे वे सरलतापूर्वक अपने को नई परिस्थितियों के अनुकूल बना लें। हमारा उद्देश्य यह था कि उनकी इस प्रकार सहायता की जाय कि वे कर्मठ तथा अन्य आँखोंवालों की भाँति बने रहें और अपने वर्ग के सक्रिय सदस्य रहें। बहुधा इन तरुणों और तरुणियों को वैज्ञानिक प्रशिक्षण एवं वक्तृताओं के अतिरिक्त कुछ और बातों की आवश्यकता थी।

हम उनमें आत्मविश्वास भरना चाहते थे और ऐसा करना चाहते थे कि वे अपने को नेत्रवानों के समान समझने लगें।

भोजन का समय भी एक ऐसा अवसर था जब उन्हें हमारी सहायता की आवश्यकता थी। अन्धा होने पर भी अपना मुंह ढूँढ़ लेना अत्यन्त सरल और स्वाभाविक है परन्तु काँटों से सफलतापूर्वक खाद्य-पदार्थों को उठाकर मुँह में डालना दूसरी बात है। जब कोई नेत्रहीन व्यक्ति काँटों को अपने मुँह के समीप ले जाता है और उसे कुछ खाने के लिए मिलने के स्थान में उसके दाँत धातुखंड से बज उठते हैं तो उस समय उसकी दशा बड़ी करुणाजनक होती है।

हमने उन्हें एक उपाय बताया कि वे अपनी थालियों या तश्तरियों को घड़ी के तल के सदृश समझें। जहाँ छः लिखा रहता है, वहाँ मांस का स्थान निश्चित कर लें और जहाँ नौ लिखा रहता है वहाँ आलू का। इस प्रकार नई आत्मनिर्भरता प्राप्त कर लेने पर तरुणों के हर्ष का वारापार न रहा। उनके अतिशय उल्लास से हमें भी बड़ा विस्मयकर आह्लाद होता रहा। एक तरुण अपने इस "शौर्य" के कार्य से इतना प्रसन्न हुआ कि उसने अत्यन्त आलोड़नकारी शब्दों में अपने साथियों से कहा, "मुझे विश्वास है कि मैं एक बार पुनः उन तीन बजेवाली मटरों को ग्रास बनाऊँगा" और "क्या आपने कभी ऐसी साढ़े सात बजेवाली सुस्वादु गाजरें खाई थीं ?"

उन्हें आत्मविश्वास दिलाने के लिए घड़ी से संबंध रखनेवाला एक और सामान्य परामर्श दिया गया था अथवा यों कहा जाय कि इस परामर्श का संबंध उनकी जेब वा कलाई घड़ियों से अधिक था। कभी-कभी अन्धे व्यक्तियों के लिए समय बहुत विलम्ब से बीतता प्रतीत होता है और उन्हें बार-बार पूछना पड़ता है, "कृपया, तनिक समय बताइएगा ?" हमने उनके इस परेशानी से भी बचने का उपाय किया। सभी लोगों को विदित है कि बार-बार ऐसा प्रश्न करना श्रोता के लिए उसी प्रकार तंग करनेवाला होता है जैसे किसी लम्बी यात्रा में कोई बालक बार-बार पूछे, "क्या हम अब लगभग पहुँच गये हैं।" हमने उन्हें अन्धों के लिए बनी हुई घड़ियाँ दिखाईं। इनमें घंटों के लिए उभड़े हुए बिन्दु लगे हुए थे।

बहुसंख्यक प्रशिक्षार्थियों ने हमसे कहा कि हमने उन्हें बिजली के प्रकाश के बटनों को गिराने और उठाने के संबंध में उचित परामर्श देकर उनके व्यक्तिगत सामाजिक संबंधों को ठीक रखने में भी सहायता की। नेत्रहीन

व्यक्तियों के लिए चाहे सूर्यास्त के पहले का समय हो या उसके पश्चात्, उनके लिए दोनों बराबर हैं—वे दोनों अवस्थाओं में समान रूप से देख सकते हैं, परन्तु ऐसा करते हुए पकड़ा जाना उनके सामाजिक संबंध को धक्का पहुँचाता है। यदि कोई आँखोंवाला व्यक्ति किसी अँधेरे कमरे में जाता है और जान जाता है कि नेत्रहीन व्यक्ति ब्रेली पुस्तक पढ़ रहा है वा रेडियो सुन रहा है तो उसके हृदय को कुछ आघात-सा लगता है। उससे उसके हृदय में कुछ भय-सा उत्पन्न होता है।

एक तरुण ने कहा, "जब से आप लोगों ने बताया है कि हमारे कार्य प्रकाश में किये जाने चाहिए, तब से मैं ग्रामोफोन के गाने भी सूर्यास्त के पश्चात् बिना दीपक जलाये नहीं सुनता। इससे मैं अधिक प्रसन्नता और सामान्यता का अनुभव करता हूँ और मैं जानता हूँ कि यह मेरे माता-पिता तथा मित्रों को भी अच्छा लगता है।"

एक दिन प्रातःकाल मैं भर्ती के लिए सारे देश से आये हुए अत्यधिक प्रार्थना-पत्रों को पढ़वाकर सुन रहा था। उनमें हमें पेनसिलवेनिया के परनेसस नामक स्थान से आया हुआ एक पत्र मिला। यह हमारी मार्च की कक्षा के प्रशिक्षार्थीरत्न डा० ब्लेयर का था। उन्होंने जर्मन प्रहरी कुतिया डाट की ओर से हमें अभिवादन भेजा था जिसे वे पहले ही बहुत प्यार करते थे। आगे उन्होंने और बातें लिखी थीं।

उन्होंने बताया था, "जब मैं पहले पहल लौटा तो मेरे धर्म-प्रवचनों के श्रोताओं में से कुछ लोगों में यह चर्चा उठी कि प्रवचन के समय वक्तृता के अलिन्द पर डाट का विद्यमान रहना कहाँ तक उचित है। दूसरे रविवार को मैंने मैथ्यू के प्रकरण में से पढ़कर सुनाया, "ईश्वर को उनकी आवश्यकता है" और इसे अच्छे ढंग से समझाया। इसका प्रभाव बड़ा आश्चर्य-जनक हुआ। तदनन्तर डाट का उन्मुक्त हृदय से स्वागत किया गया। मैं सोचता हूँ, इस प्रवचन के तर्क का आधार था। "यदि ईश्वर को उनकी आवश्यकता है तो फिर हमें उस प्राणी के संबंध में परिवेदन करने का क्या अधिकार है जो डा० ब्लेयर के लिए इतना आवश्यक है।"

पादरी ने पत्र का उपसंहार इस प्रकार किया था, "मैं निश्चित रूप से कह सकता हूँ कि इसका श्रेय बहुत कुछ डाट को है कि मेरे गिरजे की सदस्य-संख्या में उत्तरोत्तर वृद्धि हुई है। जब मैं अपने गिरजे के सदस्यों से मिलने जाता हूँ तो वह सदैव मेरी प्रिय सहचरी होती है। वह इतनी

उत्साहपूर्ण तथा जीवन-स्फूर्ति-संपन्न है कि यदि उसकी चले तो हम सदैव लोगों से मिलते ही रहें। इस कारण मुझे उस पर सतत अंकुश रखना पड़ता है, क्योंकि मैं इस प्राणी को जो मेरी नेत्र-ज्योति बनकर आई है, थकाना नहीं चाहता।"

——

अध्याय ६

यद्यपि सभी लोगों को नैशविले, जहाँ मेरा घर था, बहुत पसंद था; परन्तु इस नगर की स्थिति जीवन-ज्योति के प्रशिक्षण विद्यालय के लिए पूर्णतः उपयुक्त न थी। यहाँ की ग्रीष्म ऋतु बड़ी लंबी होती है और उसमें असह्य गर्मी पड़ती है। यहाँ कुछ दिनों ऐसी भयंकर गर्मी पड़ती है और सड़कों की पटरियाँ तथा अलकतरे की सड़कें उत्तप्त होकर जूतों और पाँवों को ऐसा जलाने लगती थीं कि कुत्ते तथा प्रशिक्षार्थी दोनों ही केवल दो चक्कर करने में पसीने से लथपथ होकर थककर चूर हो जाते थे। हम लोगों के लिए ऐसा ग्राम्यभाग सबसे उपयुक्त था जिसके पास कोई नगर हो जिसमें हम लोग अभ्यास के लिए चक्कर लगा सकें।

हम अन्धमहासागर के शीतल तटवर्ती भागों के बारे में सोचने लगे। अन्य अनेक अर्थ-संपन्न व्यक्तियों की भाँति, जिनकी आर्थिक सहायता की हमें अत्यंत अपेक्षा थी, श्रीमती युस्टिस भी पूर्वी प्रदेश की ही रहनेवाली थीं। फिर बड़े-बड़े नगरोंवाले भाग में स्वभावतः हमारी सहायता की अपेक्षा करनेवाले अन्धों की संख्या अधिक थी, और ऐसे भाग में हमारे विद्यालय के स्थापित होने पर लोग उसमें सरलता से पहुँच सकते थे।

ऐसे उपयुक्त स्थान की खोज करते समय हमें एक ऐसा क्षेत्र कम से कम अस्थायी रूप से काम चलाने के लिए मिल ही गया। चाचा विली एब्लिंग ने ओपेनका झील के किनारे के निकटस्थ अपना देहाती मकान हमें बड़ी उदारता से समर्पित कर दिया। यह स्थान न्यू जरसी के मारिस टाउन से छः मील दूर था।

इस प्रकार १९२९ की वसंत ऋतु में किसी अरब-निवासी के शिविर में घुस पड़नेवाले ऊँट की भाँति हमारी संस्था चाचा विली और श्रीमती एब्लिंग के साथ वहाँ जा पहुँची और चाचा के आवास के अधिकांश

भूओं में जम गई। हमारे प्रशिक्षकों ने उनके फाटक के पास वाले घर में और हमारे कुत्तों ने उनके श्वान-गृह में अपना अड्डा जमाया। श्रीमती युस्टिस, जैक, मैं तथा हमारी संस्था के अन्य व्यक्ति प्राय: प्रति सप्ताहान्त में चाचा के वास्तविक आवास-केन्द्र पर धावा बोल देते। परन्तु एब्लिंग दंपति हमारे भारी जमाव के विषय में कभी कोई शिकायत न करता। हमारी योजना की उन्नति में सहायता करने में उन्हें बड़ा आनंद आता था। मेरे ऊपर तो जैसे उनकी विशेष कृपा-दृष्टि रहती थी; वे मुझे अपने पुत्र की भाँति मानते थे और उनका घर मुझे अपना घर ही लगता था।

यहाँ हमारी संस्था में एक सदस्य और बढ़े। इनका नाम बिली डेवेटाज था। ये बड़े कर्मठ प्रशिक्षक थे। इनमें फ्रेंच और स्विस दोनों का रक्त था। इन्होंने फारचुनेट फील्ड्ज में प्रशिक्षण पाया था। तेईस वर्ष के इस तरुण में अथक काम करने की शक्ति थी। इनकी असीम कार्य-तत्परता वैसी ही थी जैसी इनके प्रशिक्षार्थी चौपायों की। प्रतिदिन प्रात:काल ये कुत्तों और अपने सहायकों को फोर्ड ट्रक में लादकर मारिस टाउन में पहुँच जाते जहाँ की सड़कें हमारे अभ्यास का नया स्थान थीं।

परन्तु हमारे केन्द्र को भारी असुविधाएँ थीं। प्रशिक्षार्थी होटलों अथवा अन्य ठहरने के स्थानों में टिका दिये जाते थे, इस कारण वे संस्था के व्यक्तियों से केवल काम करने के समय ही मिल पाते थे। परन्तु हम प्रति-दिन की समस्याओं को सुलझाने का प्रयत्न करते और कक्षाओं में निर्देशन के समय अपनी सारी शक्ति लगा देते थे।

जितने समय हम अपने तत्त्वावधान के व्यक्तियों से काम लिया करते, उतने समय श्रीमती युस्टिस सदैव वास्तविक जमींदारी के कारबार करने-वाले व्यक्तियों से शान्तिपूर्वक बात किया करतीं। उन्होंने अपने को हमारी "जीवन ज्योति" के कार्य के लिए ही एकदम उत्सर्ग कर दिया था, क्योंकि अपनी सहायता स्वयं करने की उत्कट इच्छा रखनेवाले व्यक्तियों को सहायता प्रदान करना ही उनके जीवन का सबसे सुखद लक्ष्य हो गया था। एक दिन १९३१ के अगस्त में प्रात:काल उन्होंने हमें फोन किया कि मैं मारिस टाउन से तीन मील दूर स्थित एक स्थान पर आप लोगों से मिलूँगी। उन्होंने कहा, "मैं आप लोगों को एक विशेष वस्तु दिखाऊँगी।"

उनके आदेशों के अनुसार चाचा विली और मैं राजपथ के वृक्षों से परिवृत मार्ग से होता हुआ एक बड़े नयनाभिराम स्थान पर पहुँचा। यह हरित शाद्वलों और वनस्थलियों से घिरा हुआ था।

"अरे यह तो कोई महल है !" चाचा विली ने जोर से कहा।

"आइए, आइए ! अपने नये आवास में आप लोगों का स्वागत करती हूँ।" श्रीमती युस्टिस ने अभिनंदन करते हुए कहा।

हम लोग फूले न समा रहे थे। हम लोगों ने तीन तल्ले विक्टोरियन भवन का प्रत्येक कमरा—प्रत्येक कोना घूम डाला। इससे हम लोगों के ऊपर जो प्रभाव पड़ा उसे देखकर हमारी अध्यक्षा महोदया ऐसी प्रसन्न हुईं जैसे उन्होंने ही भवन की प्रत्येक ईंट चुनी हो। उन्होंने बड़े उत्साहपूर्वक घोषित किया, "भविष्य में कई वर्षों तक हमें अपना कार्यालय चलाने के लिए जितने स्थान की आवश्यकता होगी उतना प्रथम तल्ले पर ही उपलब्ध है।" अपने बढ़ते हुए भावोद्रेक में वे कहती गईं, "और तदनंतर हम बरसाती को घेर कर सहस्रों टाइपराइटरों तथा फाइलों की आलमारियों को रखने के लिए स्थान निकाल सकते हैं।"

हम लोग छप्पन-एकड़वाली सारी जमींदारी घूमे, भविष्य की उन्नति की योजनाओं के बारे में सोच-सोचकर प्रत्येक डग पर हमारा उल्लास बढ़ता जाता था। हमें सुविधापूर्वक कुत्तों के प्रशिक्षण और विद्यार्थियों के निर्देशन-विद्यालय के लिए जिन बातों की आवश्यकता थी वे सभी वहाँ उपलब्ध थीं। विशाल क्षेत्र के दो भवनों को बृहत् शाद्वल-प्रांगण से मिलाकर बड़ा उत्तम श्वान-गृह बनाया जा सकता था तथा उनके संमुखस्थ एवं पृष्ठस्थ भाग कुत्तों के व्यायाम एवं प्रशिक्षा के लिए बहुत अच्छा काम दे सकते थे। सबसे अच्छी बात यह थी कि यहाँ रसोई, भोजन-गृह तथा प्रशिक्षार्थियों के शयनागारों के लिए प्रचुर सुविधा थी। यहाँ हम अपने शिष्यों को चार सप्ताह के पाठ्यक्रम में भोजन, कपड़े पहनने, प्रसाधन तथा मनोरंजन के विषय में यथेष्ट शिक्षा दे सकते थे जिससे उनका दैनिक जीवन पूर्ण सुन्दर और अधिक सुखद हो सकता था।

श्रीमती युस्टिस ने बताया, "ताले, भंडार और पीपे सभी हमारी संपत्ति हैं और मैं सोचती हूँ कि ऐसे कई मित्र भी हैं जो आर्थिक बातों के संबंध में भी हमारी सहर्ष सहायता करेंगे। हम अभी अपने अध्यापन का कार्यक्रम तथा पहले-पहल दिये जानेवाले भोजन की योजना बना लें तो अच्छा हो।"

घर आने के जिस शुभ दिन मैं अन्धमहासागर पार करनेवाले यान की सीढ़ियों से बडी के साथ उतरा था, उसी दिन से हम लोगों ने कठोर श्रम करने वाले संवाददाताओं तथा छायाचित्र लेने वालों के पहले ही दल का

सोभना करने के लिए बहुत सुदृढ़ आधारभूमि तैयार कर ली थी। हम लोगों ने पचास स्त्री-पुरुषों को नई आशा प्रदान की थी और विद्यालय में किसी के साथ कोई भारी दुर्घटना न हुई थी। हमारे कार्य के पर्यवेक्षक कहने लगे थे कि अंधों का कष्ट दूर करने के लिए ब्रैली के पश्चात् जीवन-ज्योति ने ही सबसे अधिक महान् कार्य किये हैं। हमारे यहाँ पहले से ही ऐसे बहुसंख्यक आवेदकों के आवेदन-पत्र पड़े हुए थे जो बड़ी अधीरता से हमारे विद्यालय में भर्ती होने की प्रतीक्षा कर रहे थे।

अब हम और उन्नति की दिशा में अग्रसर होने के लिए तैयार हो चुके थे। हम लोगों के सतत बढ़ते कारबार की सहायता के लिए श्रीमती युस्टिस ने जैक से कहा कि वे वेवी में जाकर वहाँ के उनके कारबार को बंद कर दें और प्रशिक्षण लेनेवाले कुत्तों को मारिस टाउन में ही ले आवें।

जब हमारा स्थायी प्रधान-कार्यालय स्थापित हो गया तो मैं और भी कठिन परिश्रम करने लगा और जितने समय मैं जागता रहता, उसका प्रत्येक क्षण जीवन-ज्योति को ही देने लगा। तदनंतर हमारी संस्था में बहुसंख्यक अनुभवी एवं सुयोग्य व्यक्ति भी संमिलित हो गये। कुछ अनधिकारिक रूप से हमारे परामर्शदाता बन गये और कुछ उसके सदस्य हो गये। परन्तु सभी, चाहे वेतन पर या अवैतनिक, संस्था से प्रेम होने के कारण आये थे। पेनसिलवेनिया की प्रादेशिक नेत्रहीनों की समिति के अध्यक्ष मरविन सिनक्लेयर के पास स्वयं करा नाम का जीवन-ज्योति का एक कुत्ता था।

उपर्युक्त समुदाय में न्यूयार्क प्रदेश के रोजगार कार्यालय के अध्यक्ष ब्राउन, मेरी ड्रेंगा कैंपवेल, जिन्हें मेरे परिचितों में अन्धों की समस्याओं का सबसे अधिक ज्ञान था; तथा ईवी हचिसन, जो हमारी संस्था के कार्य-कर्ता हो गये, के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

हम लोगों ने अपनी योजनाओं पर विमर्श करने, नीतियों के निर्धारित करने तथा समस्याओं की छानबीन करने में भी बहुत समय लगाया। इन सबमें हमें सफलता ही मिली।

कुत्तों को प्राप्त करना भी हमारी एक जटिल समस्या थी। चाचा विली के श्वानगृह से पहले से ही पूरा न पड़ पाता था और कार्य के लिए उपयुक्त कुत्तों को अन्य स्थानों से लाना भी उनके लिए प्रायः असंभव हो रहा था। हमें बहुत विशिष्ट गुणवाले कुत्तों की आवश्यकता पड़ती थी। चुने हुए कुत्ते ऐसे होने चाहिए थे जो न अधिक मुँहचोर हों और न अधिक चंट।

उन्हें शान्त, बुद्धिमान् और सौहार्दपूर्ण हृदयवाला होना चाहिए था। जब चाचा विली ऐसी कोई उत्कृष्ट कुतिया लाते तो फिर उसकी कई बार परीक्षा करके ही उसे प्रशिक्षण में लेने का साहस किया जाता। उदाहरणार्थ उसकी स्नायु-शक्ति तथा स्थिरता की परीक्षा करने के लिए चाचा विली प्रायः एकदम उसकी नाक के पास सहसा पटाखा छोड़ते। जो कुत्ता किसी जोर के शब्द से अथवा किसी जानेवाली मोटर के पृष्ठ भाग से सहसा निकलने वाली अग्नि से घबरा जा सकता है, वह किसी आकस्मिक संकट के समय अपना सिर सीधा नहीं रख सकता और उस पर अपने स्वामी की रक्षा के लिए भी निर्भर नहीं रहा जा सकता।

परन्तु हमारी संस्था के विकास और प्रसार में सबसे बड़ी बाधा यह थी कि हमें अच्छे प्रशिक्षक ही जल्दी न मिल पाते थे। हाँ, डेवेट्ज की गणना प्रथम श्रेणी के प्रशिक्षकों में की जा सकती है। हमारी अध्यक्षा ने अपनी बेबी की जमींदारी में उसके संबध में जो कुछ सोचा था उसे उन्होंने पूरा किया। उनके स्वभाव में भी, जेक की भाँति, वे सभी बातें पाई जाती थीं जो एक सफल प्रशिक्षक के लिए अपेक्षित थीं। उनमें शारीरिक शक्ति थी, मानसिक जागरूकता थी, साथ ही वे हँसमुख भी थीं। उनमें "आँखों का एक जोड़ा" तैयार करने के लिए ऐसी दृढ़ इच्छा-शक्ति थी कि वे एतदर्थ सभी कठिन से कठिन कार्य कर सकते थीं।

योरप में एक प्रशिक्षक को शिक्षित करने में तीन से पाँच वर्ष तक लगते थे। परन्तु हम अमेरिकन सभी कार्यों को भारी पैमाने पर करने के प्रेमी होने के कारण यह सोचने लगे कि उक्त पद्धति में ऐसा सुधार किया जाय कि एक निश्चित समय में ही बहुसंख्यक प्रशिक्षक शिक्षित किये जाने लगें

परन्तु इस प्रकार काम न चला। प्रशिक्षक के कार्य के लिए दो बातें अपेक्षित होती हैं--उसमें केवल कुत्तों को ही प्रशिक्षित करने की योग्यता न होनी चाहिए, अपितु उसे ऐसा भी होना चाहिए कि वह अंधों को कुत्तों का प्रयोग सिखा सके। कुछ व्यक्ति पहले कार्य में दक्षता दिखा सकते हैं और कुछ दूसरे में; किन्तु दोनों कार्यों में समान योग्यता रखनेवाले व्यक्ति दुर्लभ होते हैं।

मैं एक व्यक्ति का उल्लेख कर सकता हूँ जो कुत्तों के प्रशिक्षण में अच्छी गति रखता था, साथ ही उसका अपने अंधे शिष्यों में भी भली भाँति मन लगता था। परन्तु जितनी शक्ति उसमें थी, उसके कार्य के लिए उससे अधिक अपेक्षित थी। उसे प्रति दिन चौदह-पन्द्रह मील पैदल चलना

पड़ता था जिसमें प्रतिक्षण उसे यह देखना पड़ता था कि उसका विद्यार्थी पूर्ण विश्वास से काम करना सीख रहा है, साथ ही उसे किसी जोखिम का भय नहीं है। परन्तु इतना करने में उसका मस्तिष्क और शरीर दोनों परिश्रान्त हो जाते थे। हमें बड़ा खेद हुआ कि उसने अपना काम छोड़ दिया, परन्तु हमें स्पष्ट विदित हो चुका था कि इससे उसके स्नायुमंडल पर अत्यधिक जोर पड़ा था।

बहुत से व्यक्ति जब पूरा-पूरा अधीक्षण रहता था तो बहुत अच्छा काम करते थे किन्तु जब अपने भरोसे छोड़ दिये जाते तो कठिन परिश्रम के कारण असफल रहते थे। एक बड़े होनहार व्यक्ति में इस कार्य के कारण एकदम चित्त-विकृति आ गई। बहुत से प्रशिक्षक आये और गये; किन्तु केवल अत्यन्त विलक्षण योग्यतावाले ही ठहर पाये।

इस कटु अनुभव के परिणाम-स्वरूप कुछ विशेष नीतियाँ निर्धारित करनी पड़ीं। हमें इस कार्य में अत्यधिक व्यय करना पड़ता था। कुत्ते, खाद्यान्न, अन्य वस्तुएँ तथा संभार आदि मोल लेने पड़ते थे तथा वेतन देना पड़ता था। हिसाब लगाने से विदित हुआ था कि एक विद्यार्थी के चार सप्ताह के प्रशिक्षण में लगभग पन्द्रह सौ डालर लगते थे। इसमें उसके भोजन और आवास का व्यय भी संमिलित था। हमारी संस्था का उद्देश्य लाभ कमाना कदापि न था अतएव एक कुत्ते का मूल्य हमने केवल तीन सौ पचहत्तर डालर निर्धारित कर रक्खा था। इस धन में, जो हमारे यहाँ पड़ने-वाले व्यय का केवल चतुर्थांश था, हम सभी वस्तुएँ देते थे। इसमें विशेष रूप से बनी हुई चमड़े की लगाम का मूल्य भी संमिलित था।

पहले जो कोई नागरिक-वर्ग या क्लब जीवन-ज्योति के कुत्ते का लाभ किसी को प्रदान करना चाहता, हम उसके रुपये स्वीकार कर लेते। वे हमें एक चेक भेज देते और अपने वर्ग के किसी व्यक्ति-विशेष को हमारे यहाँ प्रशिक्षण के लिए मनोनीत कर देते। परन्तु थोड़े ही समय में हमें विदित हो गया कि यह प्रक्रिया भ्रांतिपूर्ण थी। कुछ क्लब हमारे स्नातकों तथा कुत्तों का प्रयोग अपनी उदारता के अनुचित प्रचार के लिए कर रहे थे।

दृष्टान्तस्वरूप मध्य पश्चिमी भाग के एक नगर में एक सेवा-क्लब ने लोगों द्वारा प्रदत्त धन-राशियों से तीन सौ पचहत्तर डालर एकत्र किये और उससे हमारे यहाँ प्रशिक्षण के लिए एक अन्धा गायक भेजा। जब वह घर लौट-कर गया तो वह जहाँ कहीं जाता, सर्वत्र लोगों को कहते हुए सुनता, "वह

देखो सेवा-क्लब का कुत्ता जा रहा है।" प्रतिदिन लोग इस प्रकार उसे इस बात का स्मरण दिलाते रहते कि वह एक दातव्य की वस्तु है। इससे ऐसा हुआ कि उसे बाहर जाने से यहाँ तक कि काम पर पाने से भी घृणा होने लगी।

इससे "जीवन-ज्योति" के लक्ष्य को गहरा धक्का पहुँच रहा था, क्योंकि उसका उद्देश्य महत्त्वाकांक्षी अन्धे स्त्री-पुरुषों की इस प्रकार सहायता करना था कि वे शारीरिक, मानसिक और आर्थिक सभी प्रकार से पूर्ण आत्म-निर्भर हो जायँ।

अब हम अपने एक दूसरे स्नातक का वृत्तान्त सुनाते हैं। वह लगभग बीस वर्ष की अवस्थावाली एक तरुणी थी। मैं मध्य-पश्चिम के एक नगर में भाषण देने गया हुआ था। वह मुझसे वहीं मिली। वह बड़ी दुःखी थी। नेत्रहीनों की एक संस्था ने रुपये उगाहकर उनसे उसे हमारे यहाँ मारिस टाउन में भेजा था। जब वह अपने घर लौटी तो उसे विदित हुआ कि उक्त संस्था की महिला संचालिका ने बिना उससे पूछे ही नगर की कई जन-सभाओं में उसे प्रदर्शित करने का कार्य-क्रम बना लिया था। यही नहीं, उस संचालिका ने उससे आग्रह किया था कि उक्त संस्था के दातव्य का लाभ उठानेवाली वह तरुणी सभी सभाओं में अवश्य उपस्थित हो। उसने मुझे बताया कि उसे सत्ताईस स्थानों में जाना था। प्रत्येक सभा में विचित्र स्थिति में पड़ी हुई बेचारी नेत्रहीन तरुणी का इस प्रकार परिचय कराया जाता, "ये हैं सौभाग्यशाली कुमारी महिला जिनके लिए हमने कुत्ते की व्यवस्था की है।"

हमें इस बात से बड़ा हर्ष हुआ कि हमने नेत्रहीनों की उस संस्था को उसके रुपये लौटा दिये और उसकी महिला संचालिका से एकदम निश्चित रूप से कह दिया कि वह एक क्षुद्र धनराशि के बदले में किसी नेत्रहीन व्यक्ति का अनुचित उपयोग नहीं कर सकती। आत्म-निर्भरता प्राप्त करने के संघर्ष में अन्धे को जितना कष्ट होता था उसकी तुलना में रुपये का महत्त्व प्रायः नगण्य था। क्या उनकी उस आत्ममर्यादा का अपहरण उचित था जिसके लिए वे इतना अधिक प्रयत्न करते थे?

तब से हमने यह नियम कर दिया कि सभी धनराशियाँ एकदम सीधे जीवन-ज्योति को प्रदान की जायँ तथा किसी एक व्यक्ति के मध्य वे नहीं दिखाई जा सकतीं। हमने यह भी निर्णय किया कि प्रत्येक विद्यार्थी में आत्मविश्वास और आत्म-मर्यादा की भावना जागरित करने के लिए

उससे कुत्ते का मूल्य अवश्य लिया जाय। हमने कुत्ते का मूल्य घटाकर एक सौ पचास डालर कर दिया और हमारा विश्वास था कि कई वर्षों के बीच में कोई भी व्यक्ति इतनी धनराशि एकत्र कर सकता था। प्रत्येक विद्यार्थी को यह सुविधा दी जाती थी कि वह चाहे जितने समय में रुपये चुकता करे—आवश्यकता होने पर कई वर्ष लगा देते थे; परन्तु हम चाहते थे कि उसे अपनी सबसे बहुमूल्य वस्तु के लिए किसी का आभार न लेना पड़े, यहाँ तक कि हमारा भी नहीं। पहले कुत्ते की मृत्यु हो जाने के पश्चात् दूसरे के लिए केवल पचास डालर देने पड़ते हैं।

मिलवाकी की एक युवती माँ हमारी एक ऐसी स्नातक थी जिसने हमें बताया कि हमारा निर्णय सर्वथा उचित था। नेत्रहीन होती हुई भी वह एक फैक्टरी में काम करती थी। वह प्रतिदिन बड़े तड़के उठकर अपने, अपने बच्चे और अपने कुत्ते के लिए जलपान तैयार करती और तब अपने काम पर जाती। वह बच्चे को दुपहिया गाड़ी में सुला देती और फिर बायें हाथ से पथ-प्रदर्शक कुत्ते की लगाम पकड़कर दाहिने हाथ से बच्चे की गाड़ी खींच ले जाती। मोटर के स्टेशन तक पहुँचने में वे छः पत्थर पार करते।

मोटर पर चढ़ना सबसे भारी काम था। वह गाड़ी को मोड़कर अपने दाहिने हाथ पर लटका लेती और फिर बच्चे को उसी हाथ में सावधानी से पकड़े रहती तथा बायें हाथ से कसकर कुत्ते की लगाम पकड़े रहती और साथ ही किराया भी देती।

वह बच्चे को एक शिशु-सदन में दे देती जहाँ दिन भर उसकी देखरेख की जाती और तब एक मील पैदल चलकर अपने काम पर पहुँचती। संध्या समय का कार्यक्रम भी यही था, केवल उनका क्रम उलट जाता था—शिशु-सदन जाना, घर पहुँचना, भोजन बनाना, बच्चे को खिलाना, घर स्वच्छ करना, कपड़े धोना और दूसरे दिन के लिए तैयार होना।

मैंने कहा, "मेरी ! तुम्हें विदित ही होगा कि तुम्हारी जैसी माताओं तथा शिशुओं की सहायता के लिए प्रादेशिक तथा केन्द्रीय सरकारों ने अलग धन-राशियाँ निर्धारित कर रक्खी हैं। तुम सहायता के लिए उनके यहाँ क्यों नहीं आवेदन-पत्र भेजती ?"

उसके उत्तर को सुनकर मेरा हृदय स्वाभिमान से भर उठा। उसने कहा, "जब मैं जीवन-ज्योति में आई और सारा मुझे प्रदान की गई तो मैंने उसका मूल्य अपनी कमाई से चुकाया था। वह मेरी कमाई की पहली वस्तु

थी। उससे मुझे आत्म-मर्यादा की भावना प्राप्त हुई। मैं केवल इसलिए कि मेरी परिस्थितियाँ अच्छी नहीं हैं, अपनी उस आत्म-मर्यादा की भावना को तिलाञ्जलि नहीं दे सकती। मेरे पास सारा तो है ही, मुझे दान की आवश्यकता नहीं।"

पिआनो को ठीक करनेवाला एक तरुण मारिस टाउन में हमारे यहाँ आया। उसने संसार में बिना किसी अन्य व्यक्ति की सहायता लिये घर-घर में जाकर अपना काम करने का दृढ़ संकल्प कर लिया था। मुझे कोई ऐसा विद्यार्थी स्मरण नहीं आता जिसने लारी की इतनी शीघ्रता से अपना पाठ सीखा हो। उसमें और उसके कुत्ते में प्रथम परिचय के क्षणों से ही पूरी-पूरी पटने लगी थी। जब वह अपने घर लौटा तो उनकी जोड़ी सबसे सुन्दर थी।

उसके अपने काम पर लौटने के कुछ ही सप्ताह पश्चात् क्रिश्चियन इण्डेवर सोसायटी का एक प्रतिनिधि उससे मिला।

"लारी," प्रतिनिधि ने कहा, "हमें तुम पर गर्व है। हमने एक सौ पचास डालर एकत्र किये हैं। हम वह रकम तुम्हें अपने कुत्ते का मोल चुकाने के लिएदेना चाहेंगे।"

लारी का हृदय भावनाओं से भर उठा। उसने उत्तर दिया, "मुझे आपकी सहानुभूति की प्रशंसा करने के लिए शब्द नहीं मिलते। किन्तु मैं मारिसटाउन इसलिए गया था कि अपना व्यय स्वयं सँभाल सकूँ। उसमें आरंभ से लेकर सभी कुछ समाविष्ट है।

"वस्तुतः जीवन-ज्योति प्रत्येक विद्यार्थी से यह अपेक्षा करती है कि वह केवल स्वयं का आभारी हो, किसी दूसरे व्यक्ति का नहीं," उसने समझाते हुए कहा, "वहाँ आपको तब तक प्रवेश नहीं मिल सकता जब तक कि आप उनको आश्वासित न कर दें कि आप यह उत्तरदायित्व लेने को तैयार हैं। उससे वे यह जानने की चेष्टा करते हैं कि आप अत्मनिर्भरता के संघर्ष में उतरने के लिए सचमुच इच्छुक हैं वा नहीं।"

उसके एक मित्र ने कहा, "लारी! इसमें संदेह नहीं कि तुम अपने उस संघर्ष में विजयी हो गये हो; किन्तु जब से तुम्हें वह कुत्ता मिला है तबसे ऐसा प्रतीत होता है कि तुम्हें कुछ-कुछ "अनात्म-निर्भर" बनाने की आवश्यकता है।"

लारी हँस पड़ा। उसने एक सुझाव देते हुए कहा, "आप जो चाहें, कह सकते हैं। किन्तु अच्छा हो, हम उन रुपयों को क्रिश्चियन इण्डेवर

सोसाइटी के अधिवेशन भवन की कुर्सियों को ठीक कराने में लगायें। मुझे विदित है—यह न पूछिए कि कैसे—कि उन चुभनेवाली पुरानी कुर्सियों की बेंत की बुनावट प्रायः टूट चुकी है। उन्हें बुनवाने की सचमुच बड़ी आवश्यकता है।"

कुछ सप्ताह पश्चात् जब लारी किसी घर से, पिआनो ठीक कर, निकल रहा था तो उसने पटरी पर एक महिला को अपने साथी से कहते हुए सुना, "वह देखो अन्धा लारी आ रहा है। अब वह सचमुच मनुष्य हो गया है और दान एकदम नहीं लेता।"

इस बात को सुनकर लारी को जो प्रसन्नता हुई वह कुत्ते के मूल्य से कहीं अधिक अनर्घ्य थी—चाहे उसे उसके लिए सोना ही सोना क्यों न देना पड़ा होता। वह प्रायः मुझसे कहा करता था कि उस कुत्ते का मूल्य सचमुच स्वर्णराशि में ही आँका जा सकता है।

———

अध्याय ७

ज्यों-ज्यों हमारे स्नातक अपने घर लौटकर अपने वर्ग में सुख और सम्मानपूर्वक रहने लगे और ज्यों-ज्यों हमारे कार्यों की कीर्ति सारे देश में फैलने लगी त्यों-त्यों हमें उत्तरोत्तर अधिक लोग जानने लगे। हम लोगों के छोटे उन्नायक-कार्यकर्त्ता-वृन्द के विषय में जानने की जनता की अभिरुचि और उत्कण्ठा बहुत बढ़ती गई और हमारे पास बहुत-सी प्रार्थनाएँ आने लगीं कि हममें से कोई जाकर जनता को जीवन-ज्योति के कार्यों के बारे में कुछ बताये। बहुत से व्यक्तियों ने इसके लिए रुपये देने के लिए कहा। हमें रुपयों की आवश्यकता थी ही। ऐसी प्रार्थनाएँ करने-वाले व्यक्तियों में से बहुसंख्यक वस्तुतः बडी के कार्यों को देखना चाहते थे; इसलिए श्रीमती युस्टिस ने, जिन्हें अब हम "अध्यक्षा" कहकर पुकारने लगे थे, यह निर्णय किया कि व्याख्याता का कार्यभार मैं ही ग्रहण कर लूँ। इसमें हमारे संभार की तारिका का साथ रहना तो नितांत आवश्यक था ही।

फिर बडी के साथ मैं पर्यटन पर निकल पड़ा। जनता के समक्ष मुझे भाषण करना न आता था, किन्तु मंच पर बडी के साथ होने के कारण मुझे विश्वास रहता था कि श्रोतागण मेरी बातों को अभिरुचि-पूर्वक सुनेंगे।

मैं अपनी वक्तृता के प्रथम अवसर को कभी नहीं भूल सकता। मुझे केण्टकी प्रान्त के लुइस विले नगर में 'इण्टरनेशनल लायन्स क्लब्स' के समक्ष भाषण करना था। उसके साढ़े सात हजार सदस्य उपस्थित थे। इन व्यक्तियों के भावावेशपूर्ण कोलाहल को सुनकर, जो उत्तरोत्तर बढ़ता जा रहा था, मुझे घबराहट से कुछ मूर्च्छा का-सा आभास होने लगा। परन्तु बडी की दशा कुछ दूसरी थी। उसकी चाल ढाल से ऐसा भास होता

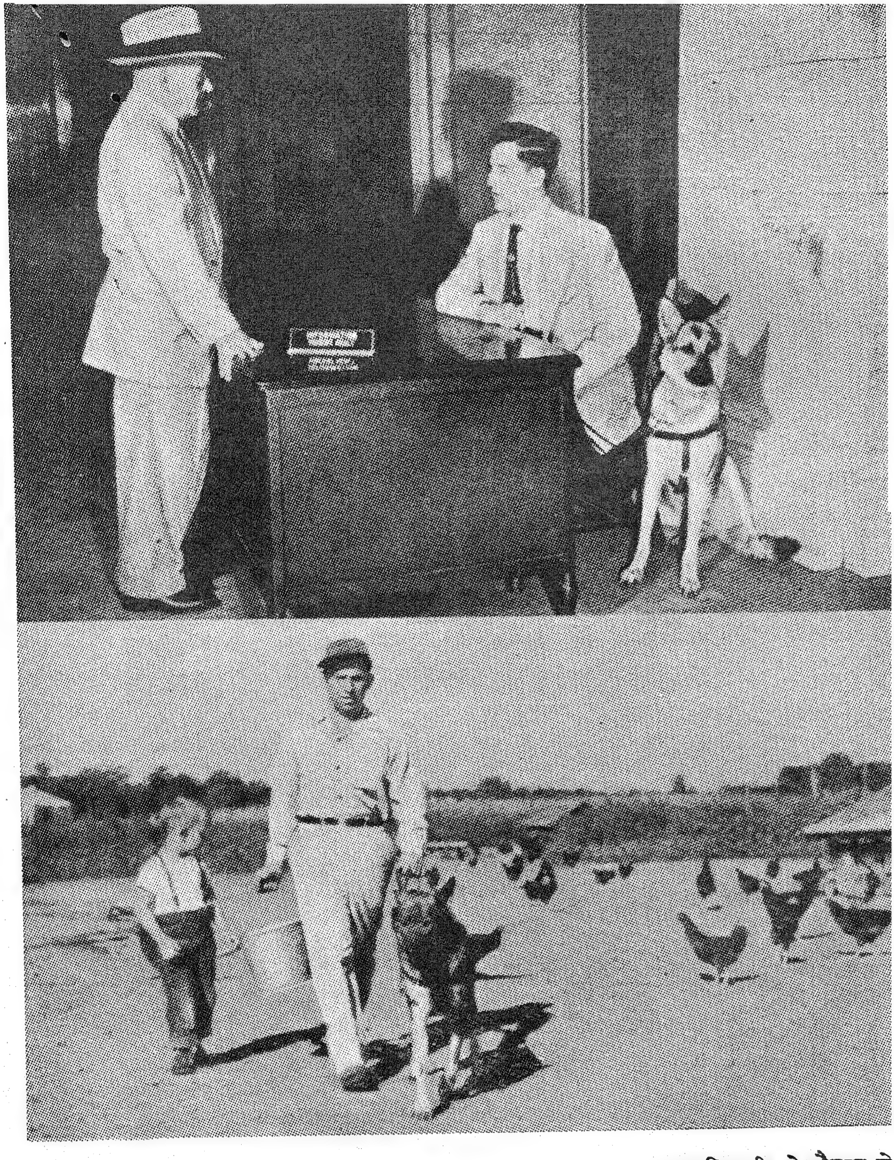

आयरिश वीट के सौजन्य से

इन चित्रों से स्पष्ट है, अब नेत्रहीन व्यक्ति समाज में वृथा नहीं समझे जाते। (ऊपर) भवन से परिचित एक नेत्रहीन व्यक्ति स्वागताधिकारी के पद से एक नेत्रवान् व्यक्ति को बड़े सुष्ठु रूप से आवश्यक सूचनाएँ दे रहा है। (नीचे) एक कृषक पथ-प्रदर्शक कुत्ते का लाभ उठा रहा है। पालतू पशुओं और छोटे बच्चों के चंचल करते रहने पर भी कुत्ता दैनिक कार्यों में अपने स्वामी का पथ-प्रदर्शन कर रहा है।

नेत्रहीन व्यक्तियों से फैक्टरियों आदि में अब कोई भय नहीं रह गया है। फैक्टरी का एक श्रमिक अपना काम कर रहा है और उसका कुत्ता शान्ति-पूर्वक पृथक् बैठा हुआ है।

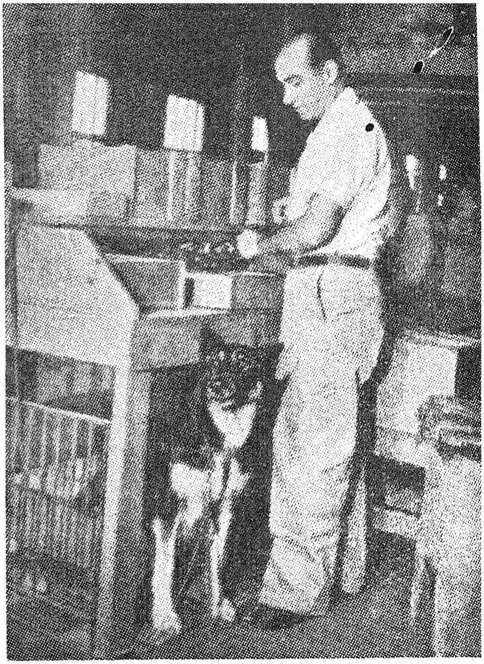

आयरिश वीट के सौजन्य से

आयरिश वीट के सौजन्य से

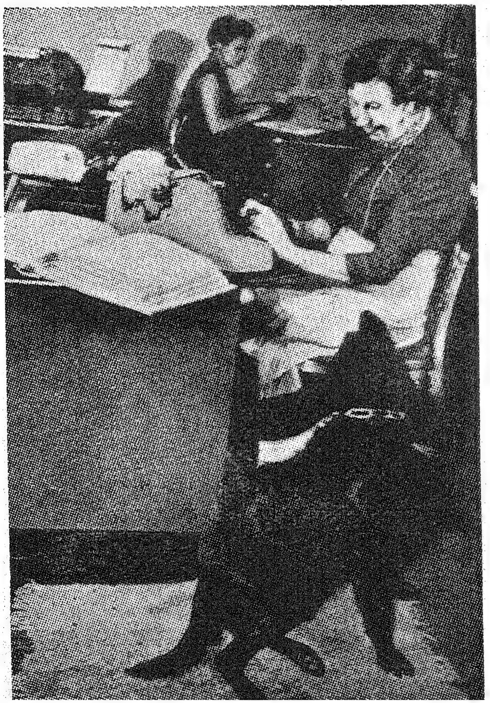

कई कार्यालयों में नेत्रहीन व्यक्ति टाइपिस्ट का भी काम करते हैं। इस चित्र में ऐसे ही व्यक्ति "डिक्टेटिंग मशीन" की सहायता से प्रतिलिपि तैयार कर रहे हैं।

था कि जैसे वह किसी नाट्यमण्डली में पैदा हुई हो और नेपथ्य में काम करने में बड़ी पटु हो। मेरे मंच-भय को दूर करने के लिए मानो व्याख्यान-मंच पर उसका उपस्थित रहना बहुत अच्छा हो। वह बड़ी सतर्कता से अपना सिर ऊँचा किये, अपने कूल्हों पर बंदूक की छड़ की नाईं बैठी हुई थी और उसकी बुद्धिमत्ता अभिव्यक्त करनेवाली आँखें भावोद्रेक में जैसे जनता और परिस्थितियों का चित्र ले रही हों।

हमारा परिचय देने के अन्त में जब बडी ने सभापति के मुख से मेरा नाम सुना और जब श्रोताओं के प्रशंसा-सूचक शब्दों से सभा-भवन गूँज उठा तो वह भी उस अभिनंदन के तुमुल रव में भाग लेने के लिए कई बार भूँक उठी। भीड़ के हर्षातिरेकपूर्ण कोलाहल से सभाभवन फिर मुखरित हो उठा। रंग-मंच की प्रकाश-पंक्ति के दोनों ओर से इस प्रकार सद्भावना मिलने से मेरी घबराहट दूर हो गई और मैंने बड़े अच्छे ढंग से वक्तृता आरंभ की।

जीवन-ज्योति की कार्य-पद्धति के सम्बन्ध में उन्हें बताने के पूर्व मैंने कहा, बड़ी प्रसन्नता है कि मुझे आज यह सुअवसर मिला है कि मैं सबसे पहले आपको बता दूँ कि नेत्रहीनों के लिए नेत्रवानों का उनके प्रति दृष्टि-कोण सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण होता है।

मैंने उनसे निवेदन किया, "आप अपने संभाषण और व्यवहार दोनों में ही अन्धे व्यक्तियों के साथ स्वाभाविकता बरतें। उनके ऊपर करुणा न दिखायें। उनकी उपस्थिति में उनके प्रति सहानुभूति न प्रकट करें। उनकी परिचर्या में भी अधिक न रहें; उन्हें अपनी शक्तियों का प्रयोग करने दें। सदैव प्रसन्नता दिखायें किन्तु कृत्रिम प्रसन्नता नहीं। आप अपने मित्र के ज्योतिहीन हो जाने के पश्चात् भी "पढ़ने", "देखने" के लिए उन्हीं पदावलियों का व्यवहार करें जिनका आप उनके अंधा होने के पूर्व करते रहे हों।

"मैं कभी यह नहीं सोचता कि मैं सामान्य व्यक्तियों की भाँति देखने में असमर्थ हूँ। मैं मानसिक नेत्रों से देखने की शक्ति में विश्वास करता हूँ। मैं अपनी मानसिक आँखों से देखता हूँ कि सूर्य श्वेत भवनों, हरित यवनिकाओं, पादप-पुञ्जों और पक्षियों के ऊपर अपना प्रकाश बिखेर रहा है। कभी-कभी मैं सोचता हूँ कि मुझे उन व्यक्तियों की अपेक्षा अधिक दिखाई पड़ता है जो जीवन में अपनी मानसिक आँखों का प्रयोग नहीं करते।

"मैं अपने जीवन के सबसे आह्लादकारी अनुभवों में से उसको नहीं भूल सकता जब मैंने मालविना हाफमैन द्वारा निर्मित एक आश्चर्यजनक मूर्ति को अपने स्पर्श की आँखों से देखा था। उसने एक धनुर्धर की संगमर्मर-प्रतिमा बनाई थी—वह प्रत्यंचा खींचे हुए था और तीर छूटने ही वाला था। मैंने धनुष को छूआ और अपनी अँगुलियों के स्पर्श से "देखा" कि काष्ठ के अनुकरण में उसकी बनावट कितनी सुन्दर थी यद्यपि वह शुद्ध पत्थर का, छेनी से तैयार किया गया था।

"जब मैं यह कहता हूँ कि कोई नेत्रहीन व्यक्ति बिना आँखों के देख सकता है तो उसका तात्पर्य यही होता है। वह अपनी मानसिक आँखों से असाधारण रूप से देख सकता है। आप उससे यह पूछने में डरें नहीं 'क्यों, तुमने इधर अपने मित्र मेरी को देखा है ?' वह बड़ा प्रसन्न होगा कि आपने उससे बिना व्यर्थ की किसी भावना के निःसंकोच प्रश्न किया और किसी अस्वाभाविक शब्द का प्रयोग न कर उसके हृदय में कोई असामान्यता की भावना न उत्पन्न होने दी।"

मुझे विदित हो गया था कि मेरे और श्रोताओं के बीच बड़ा अच्छा संबंध चल रहा है। इससे मुझमें अपनी वास्तविक दैनिक जीवन-चर्या बताने के लिए बहुत आत्म-विश्वास आ गया। वे बड़े ध्यानपूर्वक और सहानुभूति के साथ मेरी बातें सुन रहे थे। जब मैंने अंत में यह कहा कि, "......और संप्रति हमारे पास सेवा-कार्य के लिए चौदह कुत्ते हैं" तो मुझे ऐसा अनुभव हुआ कि इसका उन्हें ऐसा ही गर्व था जैसा मुझे।

इसमें संदेह नहीं कि उस दिन के कार्य में बडी ने चार चाँद लगा दिये। हमने जनता के सम्मुख प्रदर्शित किया कि हम कैसे एक साथ काम करते हैं तथा बडी ने बड़ी सफलता और सतर्कतापूर्वक मेरे आदेशों का अक्षरशः पालन किया। उसने वस्तुतः अपनी पूर्ण योग्यता सिद्ध कर दी। विशाल भवन और रंगमंच सर्वथा अपरिचित थे, अभूतपूर्व परिस्थिति थी तथा सहस्रों आँखें निर्निमेष हमारे प्रत्येक कृत्य को देख रही थीं, फिर भी वह तनिक भी विचलित न हुई। वस्तुतः उस विद्युन्मय वातावरण में वह और स्फूर्तिमती हो उठी थी।

मैं सोचता हूँ, क्या ही अच्छा हुआ होता यदि हालीवुड के लोगों ने उसे उस दिन देखा होता। इसमें संदेह नहीं, उसके सबसे सुन्दर क्रिया-कलाप के लिए उस वर्ष का आस्कर-पुरस्कार उसे मिलना चाहिए था।

वक्तृता समाप्त होने के पश्चात् श्रोताओं ने लगभग एक घंटे तक

हमें अपने बीच रोक रक्खा। वे हमारे ऊपर प्रश्नों की बौछार-सी कर रहे थे।

"किन्तु फैंक महोदय! मैं सोचता था कि कुत्ते वर्णान्ध होते हैं। वे किसी चतुष्पथ पर रुकने अथवा आगे जाने देने के लिए स्थापित प्रकाशों को कैसे पहचान सकते हैं?"

मैंने समझाते हुए कहा, "आपके कुत्ते के लिए यह आवश्यक नहीं कि वह लाल या हरे प्रकाश को पहचाने। आप अपने कानों से प्रकाश के रंगों को पहचानते हैं। लाल प्रकाश होने पर भीड़ आपके विरुद्ध जाती होती है; हरा प्रकाश होने पर भीड़ आपके साथ चलती होती है। इतना समझने पर उचित आदेश देना आपके हाथ में होता है।"

प्रश्नकर्त्ता ने बीच में टोकते हुए कहा, "किन्तु यदि आपने उसे आगे चलने का आदेश दिया हो और उस समय प्रकाश की अवहेलना कर कोई मोटर आ निकले तो आप अवश्य टकरा जायँगे।"

"आप कुत्ते को बुद्धि में कम न समझें" मैंने उत्तर दिया, "आपकी ही भाँति वह भी मरना नहीं चाहता। यदि कोई मूर्ख मोटर-चालक प्रकाश की अवहेलना कर आगे से आता होता है, तो कुत्ता आपके 'आगे चलो' आदेश देने पर भी एक डग न हिलेगा।"

"किन्तु अभी आपने बताया है कि वह अत्यन्त आज्ञाकारी होता है।"

"हाँ, वह आज्ञाकारी अवश्य होता है, किन्तु बुद्धिहीन नहीं होता। वह केवल इसलिए कि आप उसकी लगाम पकड़े रहते हैं, किसी मूर्खतापूर्ण तथा संकटजनक आदेश का पालन कर वह आपको और स्वयं को आहत नहीं कर सकता। उदाहरणार्थ, यदि आप किसी छत पर हों और वहाँ से उसे कूदने का आदेश दें तो वह केवल और पीछे हट जायगा और वैसे ही अपना मौन 'छिः' प्रकट करेगा जैसे 'बुद्धिमत्तापूर्वक आज्ञोल्लंघन' की प्रशिक्षा देते समय उसके लिए किया जाता था।"

तब तक दूसरा श्रोता बोल उठा, "फ्रैंक महोदय! मेरी समझ में अब भी यह बात न आई कि कुत्ते कैसे जान पाते हैं कि अन्धों को जाना कहाँ है। क्या यह नहीं हो सकता कि आप गिरजे के लिए निकलें और द्यूत-गृह में पहुँच जायँ?"

मैं हँस पड़ा और बोला, "नहीं, ऐसा कोई भय नहीं होता जब तक कि मार्ग में आप अपना निश्चय न बदल दें। कुत्ता आपके गन्तव्य के बारे में कुछ नहीं जानता; वह केवल आपके निर्देशनों के अनुसार काम

करता है जैसे 'दाहिने,' 'बायें' या 'आगे चलो'। इन आदेशों के सहारे ही वह अपने स्वामी को उसके गन्तव्य स्थान पर ले जाता है।"

"परन्तु क्या उसका स्वामी अपना मार्ग नहीं भूल सकता ?"

"नेत्रहीन व्यक्ति साधारणतया अपने समुदाय के लोगों को जानता होता है। उनके यहाँ पहुँचने के लिए वह मार्ग के पत्थरों तथा विभिन्न मोड़ों को स्मरण रखता है और उससे अपना पथ ढूँढ़ लेता है।"

"यदि आप किसी अपरिचित नगर में हों और वहाँ आप किसी ऐसे स्थान पर पहुँचना चाहें जिसका मार्ग आपको न विदित हो तो ?"

"तब आप भी वहाँ जानेवाले नये व्यक्तियों की भाँति मार्ग पूछें। आपको कुछ इस प्रकार बताया जायगा, 'सीधे चार पत्थर जाइए, तब दाहिने मुड़कर डेढ़ पत्थर आगे जाइएगा।' फिर आपको केवल आदेश देना रह जाता है और आपका कुत्ता आपका पथ-प्रदर्शन करता है। जब आप सोचें कि अब लगभग पहुँच गये हैं तो आप किसी से पूछकर अपनी स्थिति का पता लगा लें।

मैंने उन्हें बताया कि एक बार शिकागो में मैंने इसी उपाय का अवलंबन किया था। मैं सोच रहा था कि मैंने जितने पत्थर तय किये हैं उतने ठीक से गिन रक्खे हैं किन्तु वास्तविक स्थिति का हमें कुछ भी भान न हो रहा था। जब मैंने एक व्यक्ति से पूछा कि पीपुलस गैस बिल्डिंग कहाँ है, तो उसने प्रत्युत्तर में कहा "बात क्या है ? क्या आप नेत्रहीन हैं ? आप ठीक उसके सामने खड़े हैं।" अभी मैं अपने कुत्ते की लगाम सँभाल ही रहा था और उसे आदेश देने ही वाला था कि "आगे भवन में घुसो", इतने में एक तरुण मेरे पास आकर कहने लगा, "महानुभाव, क्षमा कीजिएगा; क्या आप बता सकते हैं कि पीपुल्स गैस बिल्डिंग कहाँ है ?" तब मैं विजय-पूर्वक यह पूछने का लोभ संवरण न कर सका, "बात क्या है ? नेत्रहीन व्यक्ति ! वह एकदम तुम्हारे सामने ही तो है !"

जैसे ही मैंने यह कहना समाप्त किया, श्रोतागण मेरी भूरि-भूरि प्रशंसा करने लगे। बडी पुनः भूक उठी और इस प्रकार मेरी प्रथम वक्तृता बड़े उल्लासपूर्ण तुमुल रव के साथ समाप्त हुई।

इस प्रकार बडी के और मेरे उस जीवन-क्रम का आरंभ हुआ जिसके कारण हमें बहुसंख्यक प्रदेशों में जाना पड़ा और असंख्य सभा-समितियों में भाषण करना पड़ा। हमारे इस जीवन-क्रम के आरंभ में बडी ने लोगों को भली भाँति जता दिया कि वह एक पथ-प्रदर्शक कुतिया है तमाशे की

वस्तु नहीं और कोई मूर्खता की बात कदापि नहीं सह सकती। स्वभावतः उसकी कार्य-पद्धति को देखने के लिए उत्सुक व्यक्ति केवल उसकी परीक्षा करने के लिए मुझसे कहते कि मैं उन्हें आदेश देने दूँ। कह नहीं सकता, कदाचित् वे यह सोचते थे कि हम किसी बात का पहले से अभ्यास किये रहते हैं और प्रदर्शन के समय उसी को दिखाते हैं। अस्तु, जब मैं उनकी बात स्वीकार कर परीक्षा के लिए अनुमति दे देता तो उनमें से प्रत्येक शंका करने वाला व्यक्ति दस में से नौ बार यही कहता "आगे चलो" और फिर "दाहिने! दाहिने! दाहिने!" और फिर हम एकदम वहीं आ पहुँचते जहाँ से चले थे। बडी जान जाती थी कि इस प्रकार निर्दिष्ट रूप से कहीं नहीं जाना है और प्रयोग निरर्थक है तो कुछ समय पश्चात् उसने उनके निरर्थक आदेशों का पालन करना बंद कर दिया।

एक दिन दोपहर के समय कुछ व्यक्तियों ने मुझसे कहा कि मैं बडी से अपनी रूमाल मँगवाकर दिखाऊँ। उसने रूमाल ला दिया। कुछ दिनों पश्चात् एक दूसरे श्रोतामंडल ने मुझसे उससे वही कार्य करवाने के लिए कहा; फिर तीसरे ने भी वही काम देखने की माँग की। अब तक बडी को यह विदित हो चुका था कि मुझे वस्तुतः उस रूमाल की कोई आवश्यकता न थी और जब मैंने उसे आदेश दिया, "रूमाल लाओ" तो उसने सदा के लिए यह दिखाने का निश्चय कर लिया कि वह कोई प्रहसन की नर्तकी नहीं है। वह फर्श पर दिखावे के लिए मेरे द्वारा गिराये हुए श्वेत टुकड़े पर लपकी और बड़ी कुशलता से उसे अपने दाँतों से उठा लिया। तब वह जान-बूझकर पथ के कोने के पास गई और उस पर अपने अगले दोनों पंजों को रखकर बड़ी सफाई से रूमाल को दो टुकड़ों में फाड़ डाला। फिर उसने बड़ी सावधानी से मुझे दोनों टुकड़े लाकर दे दिये। उसने वस्तुतः लाने का काम तो कर ही दिया अथवा यों कहा जाय कि जितना हमने माँगा था, उसका उसने ठीक दूना लाकर दिया।

श्रोताओं को हमारी वक्तृता का प्रश्नोत्तर वाला भाग सदैव विशेष आह्लादकर लगता था। एक प्रश्न का मुझे प्रायः सदैव सामना करना पड़ता था: "कोई अन्धा व्यक्ति जीवन-ज्योति के कुत्ते की सहायता से कैसे इधर-उधर जाता है?"

मेरा उत्तर होता, "यह प्रायः ठीक किसी बच्चे को गोद लेने की पद्धति के सदृश है।

"सर्वप्रथम बड़ी सावधानी से कुत्ते का चुनाव किया जाता है—वह तरुण,

स्वस्थ, शान्त, सुशील और मानसिक संतुलन रखने में निपुण होता है।" तदनन्तर उसके भावी स्वामी की भी उसी प्रकार भली भाँति परीक्षा की जाती है कि वह कुत्ता दिये जाने के योग्य है या नहीं। सभी नेत्रहीन व्यक्ति पथ-प्रदर्शक कुत्तों का प्रयोग नहीं कर सकते। हमें ऐसे व्यक्तियों को ही चुनना पड़ता है जिनमें मानसिक स्फूर्ति हो और जो न बहुत अल्प-वयस्क हों और न अत्यधिक अवस्था के।

"ऐसे व्यक्ति को शरीर से भी स्वस्थ होना चाहिए। प्रशिक्षण काल में ही पर्याप्त परिश्रम करने की आवश्यकता होती है; तदनंतर हमें कुत्ते पर ध्यान देना पड़ता है; हमें भली भाँति यह सोचना पड़ता है कि उसे कोई बोझ न घसीटना पड़े—उसके स्वामी में संसार में अपने दोनों पैरों से चलने की शक्ति होनी चाहिए।

"तदनंतर दूसरी बाधा का सामना करना पड़ता है। हमारे यहाँ जो लोग आवेदन करते हैं, उन्हें आवेदनपत्र में बहुसंख्यक प्रश्नों का उत्तर देना पड़ता है इससे हम यह निर्णय करते हैं कि कौन व्यक्ति जीवन-ज्योति के कुत्तों के योग्य हैं। हम उन्हें केवल उन्हीं स्त्री-पुरुषों को देना चाहते हैं जो कोई काम करने के इच्छुक होते हैं या अपने समाज की कार्यवाहियों में सक्रिय रूप से भाग लेना चाहते है। जो लोग हमसे यह कहते हैं कि हम पुनः अध्यापक, वकील, चिकित्सक, श्रमिक अथवा वस्तु-विक्रेता के रूप में अपना पुराना रचनात्मक कार्य करना चाहते हैं, उन्हीं को कुत्ते दिये जाते हैं। साथ ही जो स्त्रियाँ पत्नी और माता के रूप में निर्विघ्न जीवन के सारे कार्य करना चाहती हैं, और कालेज के वे विद्यार्थी जो कोई उपादेय जीवन-वृत्ति अपनाना चाहते हैं उन्हें भी कुत्ते प्रदान किये जाते हैं।

"अन्त में हम आवेदकों द्वारा दिये गये अपने प्रश्नों के उत्तरों का बड़ी सावधानी से अध्ययन करते हैं और उससे आवेदक के स्वभाव की थाह लगाते हैं। इससे हमें यह पता लगाने में सहायता मिलती है कि कौन कुत्ता किस व्यक्ति के लिए उपयुक्त होगा और कौन व्यक्ति किस कुत्ते के उपयुक्त होगा। जब दोनों प्राणियों के दृष्टिकोण से सभी अपेक्षित योग्यताएँ किसी व्यक्ति में मिल जाती हैं, तब हम उस आवेदक को अपने विद्यालय में आने की और पंजी-करण की अनुमति देते हैं।"

अपनी वक्तृता को और चित्रोपम बनाने के लिए हमने अपने कार्यों के विनिदर्शन के लिए एक चलचित्र बनाने का निर्णय किया। चलचित्र में हमने दिखाया कि प्रशिक्षक कैसे कुत्तों के भूल करने पर

जान-बूझकर लड़खड़ाते हैं और गिरते हैं। ये लोग कृत्रिम अनाड़ीपन दिखाते और वस्तुओं से बार-बार टकराते जब तक कि प्रशिक्षार्थी की सामान्य बुद्धि में वह बात धँस न जाती और "छि:" का स्थान जिससे पथप्रदर्शक कुत्ते अत्यधिक घृणा करते, "तू बहुत अच्छी बेटी है!" न ग्रहण कर लेता।

एक फिरकी (Reel) में मैं बडी के साथ चलता हुआ दिखाया गया था। इसमें मैंने एक पत्थर की दूरी तय की थी। इस दूरी में दो मंडप थे--पासवाला ऊँचा था, तथा दूरवाला नीचा। हम द्रुतगति से निकले और निर्विघ्न पहले से आगे बढ़ गये। जब हम दूसरे की ओर बढ़े तो दर्शक यह देख सकते थे कि यदि मैं आगे कतराने के लिए चलता तो मेरी आँखें उससे टकरा जातीं। बडी, जैसे बिना ऊपर देखे ही, बड़ी सफाई से और सफलतापूर्वक कतराकर निकल गई। उसकी अत्यन्त सुन्दरतापूर्वक संपादित की हुई क्रिया को देखकर दर्शक इतने प्रभावित हुए कि उनके शब्दों में स्वयमेव बडी की पटुता की प्रशंसा की धारा फूट पड़ी।

इस समय जब मैं एक बार वाशिंगटन (डी० सी०) गया हुआ था तो एक ऐसी बात हुई जिसे मैं कभी भूल नहीं सकता। मुझे एक बृहत् जन-समूह में वक्तृता देनी थी और यहाँ हम अपना चलचित्र भी दिखानेवाले थे। इसमें श्री कारडेल हल भी आनेवाले थे। ये हमारे प्रदेश के सबसे विशिष्ट नागरिक थे। मैं चाहता था कि हमारे सारे कार्य और विशेष सुन्दर ढंग से हों। चलचित्र के क्षेपक को सदा की भाँति मैं ही चलानेवाला था; मैंने चक्रीय अँकुड़े (Sprocket clamp) तथा लपेटने की फिरकी एवं परैत को पुनः-पुनः जाँचा, जिससे यदि मुझे आँखें बन्द करके भी उसे चलाना पड़े तो कोई गड़बड़ी न हो। इस पदावली के प्रयोग के लिए पाठक मुझे क्षमा करेंगे।

हमने यह पद्धति सोची थी कि बृहत्कक्ष के पथ के केन्द्र में मशीन स्थापित की जाय और वहीं से हम अपने क्रिया-कलाप दिखाएँ। यहाँ से हम विषय के सम्बन्ध में कभी-कभी कुछ बता भी सकते थे। फिर इन दोनों कार्यों के लिए कि बडी की पथप्रदर्शन-योग्यता का विनिदर्शन किया जा सके, साथ ही भाषण के लिए भी मैं अधिक सुविधाजनक स्थान में रह सकूँ। बडी मुझे केन्द्रस्थ पथ से वक्तृता के लिए रङ्गमंच पर लिवा जानेवाली थी। जब इस अन्तरा में मुझे क्षेपक-यंत्र के प्रयोग की आवश्यकता

हो तो बडी मुझे जिस मार्ग से मैं मंच पर गया होऊँ उसी से उसके पास पहुँचा दे।

इस अवसर पर बडी की कार्य-पटुता की परीक्षा के लिए, कि वह इस भूल-भुलैया में मेरा किस प्रकार उन्नयन करती है, वहाँ के कार्यकर्त्ताओं ने बिना हमें सूचित किये हमारे लौटने के समय हमारे पथ को कुर्सियों से अवरुद्ध कर दिया। केवल इतना ही नहीं, उन्होंने एक ऐसा व्यवधान लटका दिया जिससे मेरा सिर टकरा जा सकता था और उन्होंने केन्द्रस्थ पथ के फर्श पर भी बहुसंख्यक व्यवधान बिखेर दिये।

जब मैंने मंच से चलने के लिए लगाम उठाई और सबसे निचली सीढ़ी पर पहुँचकर मैं रुक गया और उचित आदेश दिया "दाहिने!" तब मुझे बड़ा विस्मय और क्षोभ हुआ जब बडी ने मेरे आदेश का पालन नहीं किया। श्रोतागण पूर्णतया शान्त थे। मुझे कुछ पता न था कि बात क्या है, फिर भी मैंने अपनी कुतिया पर विश्वास रक्खा। मैंने उसे अपने से काम करने दिया। उसने मंच से सभी बातें देख ली थीं और हमारे मार्ग में लगाये हुए व्यवधानों को भी वह देख चुकी थी। वह एक क्षण भी हिच-किचाये बिना मुझे सरलतम मार्ग से कम से कम समय में अपने अभीष्ट स्थान पर लिवा गई। वह मुझे बाहरी पथ के ऊपर से, दर्शकस्थली के पृष्ठ भाग को पारकर, केन्द्रस्थ पथ के पिछले भागों के नीचे से क्षेपक यंत्र के पास ले गई।

फिर तो श्रोताओं ने इतनी प्रशंसा की जिसकी कोई सीमा न थी। बडी ने शौर्य का ऐसा कार्य कर दिखाया था जिसकी उन्होंने कभी आशा न की थी। व्यवधानों से भरे ऊटपटाँग मार्ग से जाने का प्रयत्न न कर उसने हमारी विचित्र परिस्थिति में सामान्य बुद्धि के सहारे दूसरा मार्ग ढूँढ़ लिया था। इसके अनन्तर हमारे एक प्रशंसक ने कहा था, "अरे! उस लड़की में वस्तुतः अपने विवेक से भी कार्य करने की शक्ति है।" दूसरे ने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा था, "उसे अभ्यास तो कराया ही गया है, साथ ही शिक्षा भी दी गई है।"

बडी के सभा-समितियों में उपस्थित होने के कारण तथा चलचित्रों द्वारा हमें इतनी अधिक सफलता मिली कि दूरदर्शी श्रीमती युस्टिस ने सुझाव रक्खा कि हम सरकारी तथा जनता के विद्यालयों में भी घूम-घूमकर भाषण करें।

"वहाँ आप अपनी बातें बालकों और किशोरों से कहेंगे और वे ही

आगे चलकर जनता के नेता बनेंगे। समय आने पर वे हमारे कार्य में तथा विकलांगों की भी बड़ी सरलता से सहायता कर सकते हैं।" उन्होंने कहा।

बहुसंख्यक बार सिद्ध हो चुका है कि उनकी बात सर्वथा ठीक थी। विद्यालय में हमारे भाषण को सुनकर बहुसंख्यक लड़के और लड़कियाँ जीवन-ज्योति के कार्यों में अभिरुचि लेने लगीं तथा फिर वे सभी हमारी संस्था के बड़े सक्रिय स्वयं-सेवक हो गये।

हमने मेन से लेकर इलीनोइस तथा वर्जिनिया से लेकर कैरोलिनाओं तक की अल्प-वयस्क बालकों की पाठशालाओं का पर्यटन किया। बालकों के साहचर्य में बडी भी बड़ी प्रसन्न रहती थी। उनके प्रशंसा करने पर वह भी प्रसन्नता के मारे भूँक उठती और हमारे भाषण के अन्त में उनकी चापलूसियों का भी पूरा आनंद लेती। वह चुपचाप खड़ी हो जाती और बच्चे एक-एक कर आकर उसे थपथपाते। यह कार्य उसे बड़ा अच्छा लगता था। यहाँ तक कि यदि कुछ विशेष उमंगोंवाले बच्चे स्मृति के लिए उसके बाल भी नोचते तब भी वह कुछ न बोलती।

बडी और मैं मिल जुलकर ऐसा अच्छा काम करते कि कुछ स्थानों में बहुत-से लोगों को विश्वास ही न होता था कि मैं वस्तुतः अन्धा हूँ। एक बार हम एक सैनिक विद्यालय में गये और वहाँ के भावी अधिकारियों ने "वेशभूषा में कुछ ऐसा प्रहसन का" सा कार्य करने का निर्णय किया कि हम सारे के सारे आमोद-प्रमोद-रत भीड़ सरीखे दीखने लगे। मेरे भाषण करते समय बडी मेरे पाँवों के पास थी, मुझे विदित हो रहा था कि वह अपनी गर्दन बड़ी कड़ी किये हुए थी। रह-रहकर वह बड़ी सतर्कता से अपना सिर घुमा रही थी जैसे बड़ी चौकसी से किसी जोखिम के फेर में हो। साथ-साथ मुझे यह भी सुनाई पड़ रहा था कि अगली पंक्तिवाले लड़के पीछे से उठनेवाले कहकहे को दबाने का निष्फल प्रयत्न कर रहे थे।

सोचने पर मुझे प्रतीत हुआ कि वे कदाचित् कोई बिल्ली उठा लाये हैं और उसे बडी को दिखा रहे हैं। अपने अनुमान की सत्यता की जाँच के लिए बीच में अवसर पाकर मैंने अपना भाषण रोक दिया तथा जहाँ प्रधानाध्यापक को बैठा हुआ छोड़ा था उस दिशा की ओर इंगित करते हुए कहा, "महोदय! कृपाकर उस बिल्ली को कमरे के पिछले भाग में भिजवा दें।"

तदनन्तर हम भोजन करने गये। यहाँ सैनिक-प्रशिक्षार्थी आ-आकर हमारे चेहरे पर हाथ फेरने लगे, क्योंकि उन्हें विश्वास नहीं हो रहा था कि मैं अन्धा हूँ।

परन्तु उनके इस अविश्वास के कार्य से न तो मेरी भूख कम हुई और न बडी की। उसने अत्यन्त निःसंकोच व्यवहार किया।

जब हम चलने को हुए तो सभी किशोर बड़ी नम्रता से खड़े हो गये। सभी लोग बड़ी जिज्ञासा से हमारी ओर देख रहे थे। द्वार के पास उस दिन, रात्रि के भोजन के लिए, एक काष्ठ प्रमंच (रैक) पर एक तश्तरी में सेब के समोसे ठंडे हो रहे थे। बडी ने बड़ी ढिठाई से एक झटक लिया और उसे एक श्वान हुडिनी की नाईं एकदम अदृश्य कर दिया और अपने पथ पर आगे चलती गई। बालकगण प्रसन्नता से हो-हल्ला मचा रहे थे।

पाठक भली भाँति अनुमान कर सकते हैं कि कुछ स्थानों में हमें सफलता केवल दैव-वशात् मिली; परन्तु हमारे सौभाग्य-वश वह केवल संयोग-घटित घटना न रह गई। एक विद्यालय में अपने क्षेपक-यंत्र को प्रस्थापित करने के पश्चात् मैंने बैठने के स्थानों के बीचवाले पथ से होकर मंच पर पहुँचने के लिए बडी को आदेश दिया, "आगे चलो"। तब हम एक ऐसी पुलिया से निकले जो दर्शकस्थलों के मार्ग की बाईं ओर प्रदर्शन-भूमि को मिलाती थी। उसे पार कर हम केन्द्रस्थित मंच पर पहुँचे।

भाषण समाप्त होने पर हम उसी मार्ग से लौटे भी अर्थात् मेरी धारणा थी कि वह वही मार्ग है जिससे हम मंच पर पहुँचे थे। परन्तु वास्तविकता यह थी कि हमारे भाषण करते समय लड़कों ने खिलवाड़ करने के लिए जंगम पुलिया को उठा लिया था और उसके स्थान पर एक संकीर्ण तख्ता रख दिया था। हम लोगों ने ऐसी जोखिम वाली पुलिया पार की थी जिसे देखकर कोई नेत्रवान् व्यक्ति काँप उठता। यदि मुझे पहले से विदित होता कि मैं क्या करने जा रहा हूँ तो मैं बिना सुरक्षा की पेटी और जाल के उसके लिए कभी प्रयत्न न करता।

कुछ विद्यालयों में मैं अधिक आयु के विद्यार्थियों की तुलना में विशेष अधिक अवस्था का न था। तरुणियों के एक बहुत अच्छे विद्यापीठ में मैंने भाषण के प्रसंग में कह डाला कि मैं उनके साथ घुड़सवारी भी कर सकता हूँ और यह भी डींग मार गया कि अंधा होने के पूर्व मैं बहुत अच्छा घुड़सवार था।

मैंने बिना सोचे समझे यह भी कह डाला कि "बसे मैं कई बार अपने पुराने प्रिय घोड़े पर सरपट भी चला हूँ।"

"बहुत अच्छा।" उन्होंने आवेश में कहा "आज अपराह्ण में हम लोगों के साथ घुड़सवारी करने चलिए।"

हम दुलकी चलने लगे किन्तु उस समय लड़कियों ने मुझे यह न बताया किउनके घोड़े कूदने वाले थे। मुझे शीघ्र ही पतालगने लगा कि मेरा घोड़ा उड़ने वाला था। मेरा अपरिचित उड़ने वाला घोड़ा, बडी के जैसा, मार्ग को किसी व्यवधान के विषय में कोई सूचना न देता था अथवा चाहे इसमें उसका यह विचार निहित रहता रहा हो कि वह सभी को पार कर जायेगा। वह शून्य में जितनी बार अप्रत्याशित रूप से छलाँगें मारता उतनी बार मेरा हृदय भी अपना स्थान छोड़ कर बाहर निकल सा पड़ता। आप कल्पना कर सकते हैं कि जिस समय मैं सकुशल अश्वालय में पहुँच गया उस समय मुझे कितनी शान्ति मिली।

इससे मुझे दो बातों का भली भाँति अनुभव हो गया। तब से मैंने अपनी घुड़सवारी के विषय में डींग मारना छोड़ दिया और अब बडी को छोड़कर मैं किसी चौपाये पर विश्वास करने की मूर्खता नहीं करता।

बेनिंगटन कालेज में वहाँ के अध्यक्ष ने जानबूझकर यह प्रस्ताव रक्खा कि बडी को मैं उनके विद्यालय के सुन्दर मैदान में धमा-चौकड़ी मचाने के लिए उन्मुक्त कर दूँ। वह शीघ्र ही एक विचित्र गंधों का आभास पर द्रुतगति से पीछे लौट आई। "गन्धमार्जार" लड़कियाँ चिल्ला उठीं। स्पष्ट था कि यह बिल्ली एकदम बडी की ओर बढ़ी थी, क्योंकि बडी उस आकस्मिक घबड़ाहट में आकर मेरी पतलून से अपना सिर रगड़ने लगी और फिर दौड़ कर हड़बड़ाई हुई लड़कियों के बीच जा पहुँची और फिर उनके कपड़ों से भी सिर रगड़कर उस गन्ध से मुक्ति पाने की चेष्टा करने लगी।

दूसरे दिन प्रातःकाल विद्यालय के छात्रावास धोबियों के घर जैसे दिखाई पड़ रहे थे। कपड़े, मोजे, बंडियाँ तथा अन्तर्वस्त्र सूखने के लिए खिड़कियों के बाहर लटक रहे थे। मुझे जहाँ तक विदित है, जब बडी और मैं अध्यक्ष के भवन में एक रात बिता चुके तो वे भी सर्वथा अप्रत्याशित रूप से अपना आवासस्थान छोड़कर कहीं अन्यत्र चले गये। जिस समय हम लोग बेनिंगटन से चले उस समय वहाँ के वातावरण में कुछ उल्लास न था। परन्तु मेरा विचार था कि उक्त गड़बड़ी मेरी कुतिया के कारण न हुई थी वरन् वहाँ के लोगों की बिल्ली के कारण हुई थी।

मैं बडी को अलबनी के एक पशु-चिकित्सक के पास ले गया। वहाँ दस डालर देकर मैंने उसके शरीर से दुर्गंध दूर करा दी; परन्तु मेरे शरीर की दुर्गंध कोई दूर न कर सका। एक महीने तक मैं जिस किसी होटल के किसी कमरे में किसी बूँदा-बाँदीवाले दिन जाता, परिचायक चारों ओर सूँघकर कहने लगता "आप फोन कर दूसरा कमरा ले लें; इससे तो बड़ी दुर्गन्ध आ रही है।" परन्तु मैं जानता था कि जब तक मैं साथ हूँ, दूसरा निर्गन्ध कमरा मिलना असंभव है और मैं उससे कह देता, "कितनी अच्छी गंध है! मुझे यह बड़ी अच्छी लग रही है। तुम तनिक भी चिन्ता न करो। हमें यहाँ बड़ा आराम रहेगा!"

बडी का और पशुओं से भी पाला पड़ा था, किन्तु कभी उसका परिणाम इतना विचित्र व दीर्घकालिक न हुआ था। हाँ, वह गोचर अवश्य हो जाता था। ओहिओ में होनेवाले एक सेवा-क्लब के प्रादेशिक अधिवेशन में किसी के प्रश्न का उत्तर देते हुए मैंने स्पष्ट कह डाला, "बडी कभी लड़ती नहीं। जीवन-ज्योति के कुत्ते केवल अपने काम से काम रखते हैं।"

कुछ क्षण पश्चात् प्रदर्शन के लिए हम बाहर गये तब तक एक बिल खोदनेवाला छोटा श्वान दौड़कर हमारे पास आ पहुँचा और बडी के पाँवों की ओर देख-देखकर भँकने लगा। अपनी प्रशिक्षा के अनुसार बडी ने उस पर कोई ध्यान न दिया और बड़े एकाग्र चित्त से चुपचाप आदेशों को सावधानी से सुन-सुनकर भली भाँति पालन करती रही। जब हम पूर्व स्थान पर लौटने के लिए चले तो वह क्रुद्ध छोटा श्वान फिर आ पहुँचा—कदाचित् मार्ग भर छेड़ने और तंग करने के लिए। परन्तु बडी ने न अपनी गति कम की और न अपने कार्यों की उपेक्षा की; उसने केवल चुपचाप उसके पास जाकर उसे नोच लिया। बिल खोदनेवाला वह छोटा कुत्ता अब धीरे-धीरे न भूँककर जोर-जोर से भूँकने लगा और फिर वह उपद्रवी दुम दबाकर भाग निकला।

किसी ने हँसते हुए छींटे कसे, "क्यों! आपने कहा था कि बडी लड़ती नहीं।"

"मैं उसे लड़ाई नहीं कहता, आप कहेंगे।" मैंने उत्तर दिया। किन्तु तदनन्तर मैं सदैव प्रश्नों का उत्तर इस प्रकार देता, "बडी कदाचित् ही कभी लड़ाई करती हो।"

यह बात सर्वथा यथार्थ थी। वह जितने वर्षों तक मेरे पास रही, उसमें वल पाँच बार उसने लड़ाई की थी और इसमें दो बार तो उसकी लड़ाई

उपयुक्त कुत्ते से ही हुई थी। वह कभी स्वयं झगड़ा मोल न लेती थी; किन्तु जब उसे झगड़े के लिए विवश कर दिया जाता, तो वह अन्य घबड़ानेवाले कुत्तों की भाँति न तो भागती, न भूँकती और न व्यर्थ शोर मचाती। वह बड़े सुदृढ़ ढंग से चुपचाप अपने चारों पैरों पर खड़ी हो जाती और इस बात की प्रतीक्षा करती कि उसका आक्रमणकर्त्ता उसकी पहुँच के भीतर आ जाय। तब वह एकदम गला नोच लेती। इतना होने के पश्चात् फिर उसके शत्रु को केवल पशु-चिकित्सालय की ही शरण लेनी पड़ती।

बडी कभी अन्य कुत्तों से ईर्ष्या न करती थी, यदि मैं कभी उन्हें थपथपाता या प्यार करता तब भी वह कुछ न बोलती, क्योंकि वह जानती थी कि मैं केवल उसे ही प्यार करता हूँ। यदि मैं कुत्ते का कोई बच्चा अपने हाथ में उठा लेता, तो जैसे वह भी हमारे साथ मिलकर कहती, "कहो बच्चे! तुम्हारा कैसा चल रहा है?"

बहुधा यदि कोई छोटा पिल्ला किसी एलीवेटर में गुर्राता अथवा उसकी ओर तरेरता तो वह केवल अपने पाँवों पर खड़ी हो जाती और उसकी ओर देखती। यदि उसे अवसर मिलता तो वह उसके पास पहुँचकर उसे चाटने लगती जैसे वह कह रही हो, "आओ, विचार से काम लो। जानते हो, यदि मैं चाहती तो तुम्हें केवल एक ही वार में कवलित कर जाती।"

नैशविले में हमारे एक मित्र को किसी ने एक छोटा बिल खोदनेवाला कुत्ता दे दिया। उसके परिवारवाले उसे उस कुत्ते को रखने न देते, अतएव उसने उसे हमें दे दिया। बडी तुरन्त छोटे व्यक्ति की संरक्षक बन गई और बड़ी सावधानी से उसकी देखभाल करने लगी। यदि वह रात को चिल्लाता तो वह जाकर उसे उठा लाती और हम तीनों सुखपूर्वक एक साथ सोते। पिल्ले के पूर्ण वयस्क हो जाने पर भी बडी उसके लिए सर्वथा स्नेह-सिक्त बडी ही बनी रही।

यद्यपि अब तक जनता में पथप्रदर्शक कुत्तों के लिए निषेध प्रायः समाप्त-सा हो चला था; किन्तु एक बार गाड़ी से यात्रा करते समय बडी को पुनः सामानवाले डब्बे में चलना पड़ा। इससे मुझे बड़ा चिन्तित रहना पड़ा और प्रातःकाल उठकर मैंने सबसे पहले यह पता लगाया कि वह सकुशल तो है।

सामानवाले कर्मचारी ने कहा, "आपको चिन्ता करने की कोई आवश्यकता न थी, उसे साथी मिल गया था। एक परित्यक्त छोटा

पिल्ला पहली बार यात्रा कर रहा था। वह ऐसा काँप रहा था और पें-पें कर रहा था कि उसे देखकर आपका हृदय द्रवित हुए बिना न रहता। मैंने देखा कि बडी उस दृश्य को बहुत काल तक चलने न दे सकती थी। वह उसके पास पहुँचकर उसके साथ माँ का-सा व्यवहार करने लगी। इस प्रकार निश्चिन्त होकर पिल्ला रात भर उसके पंजों के बीच सोता रहा। दोनों का समय बहुत सुन्दर ढंग से बीता।"

बडी का स्वभाव इतना मृदुल था कि जैसे वह जानती ही न थी कि बिल्लियों से उसकी जाति की पुरानी शत्रुता है। उसमें और जीवन-ज्योति की बिल्ली में बड़ी मैत्री थी। जब अपने पर्यटन के पश्चात् हम अपने कार्यालय लौटे तो उसकी साथिन को बच्चे हो चुके थे। बडी ने इस बात का पता लगाते हुए कि उसकी अनुपस्थिति में क्या क्या नई बातें हुई थीं, उन्हें ढूँढ़ लिया। वह बड़ी सावधानी से एक को उठाकर मेरे पास लाई, मानो कह रही थी, "यह देखो, हमारी अनुपस्थिति में हुआ यह!" वह ऐसे गर्व का अनुभव कर रही थी जैसे उस प्राणी के लिए वही उत्तरदायी हो।

अध्याय ८

बडी को हमारी यात्राओं में बड़ा आनंद आता था। जब मैं चलने के लिए तैयारी करता होता तो वह खड़ी होकर मुझे सामान बाँधते देखा करती। यदि मैं उसकी कंघी और बुरुश को सामान में पहले बाँध लेता तो वह धीरज से प्रतीक्षा करती किन्तु यदि मैं उन्हें रखने के पूर्व सब सामान ठीक कर लेता तो वह मेरे पास आकर मेरे घुटनों पर दबाने लगती मानो कह रही हो, "मेरी वस्तुओं को भी रख लेने का पूरा ध्यान रखिएगा।"

कार से यात्रा करना उसे अत्यधिक प्रिय था। यद्यपि हमारे मोटर-चालक बच्चों को वह कम न चाहती थी; परन्तु उनके प्रति उसका व्यवहार अत्यन्त अनासक्ति-पूर्ण होता था। उनके प्रति उसकी भावनाएँ कुछ इस प्रकार थीं, "तुम यहाँ एक कार्य-विशेष के संपादन के लिए हो। बस, इतना ही; इससे अधिक और कुछ नहीं।" वह प्रातःकाल अपने पीछे के बैठने के स्थान से उठकर उनके पास जाती और उनके कानों के पास चाटती तथा सीधी बैठ जाती, जैसे कहती, "चलो अब चलें।"

वह कार में बैठती भी बड़े सुन्दर ढंग से थी। एक अगला पंजा कलाई के पास किंचित् मोड़कर बाँह के सहारे रख लेती और अपनी चमकीली आँखों को इस प्रकार रखती कि बिना किसी प्रयत्न के खिड़की के बाहर देखा जा सके। हम जितनी वस्तुओं के सामने से होकर निकलते, उनमें वह स्वयं तो बहुत अभिरुचि लेती ही थी, साथ ही चाहती कि दूसरे भी वैसा ही करें। इसमें मैं अपवाद था; क्योंकि मेरे लिए अच्छा बहाना था। एक महिला जीवन-ज्योति के एक लम्बे अधिवेशन में उपस्थित रहने के पश्चात् उसकी बगल में बैठी हुई थी। उसने विश्राम लेने के लिए अपनी आँखें मूँद ली थीं। इस पर बडी ने अपनी उपर्युक्त प्रकृति का स्पष्ट परिचय दे ही दिया। वह कुछ समय तक असहमत रूप से अपनी साथिन को झपकी मारते देखती रही, फिर उसने बड़ी

सावधानी से लक्ष्य लेकर अपनी भीगी नाक से मारकर उस महिला का टोप गिरा दिया। इस प्रकार उसने संकेत किया कि जिनके पास अनर्घ्य आँखें हैं वे अपने चतुर्दिक् के विशाल, भास्वर तथा विस्मयावह विश्व को देखने का लाभ उठायें।

बहुधा हम दोनों को कार से यात्रा करने में अतिशय आनंद आता था, किन्तु एक बार ऐसी घटना घट गई जिसकी स्मृति हमें अब भी भयार्त्त कर देती है। हम एक दिन पेनसिलवेनिया की एक सड़क से नीचे उतर रहे थे। हमारा चालक मोड़ का ठीक अनुमान न कर सका और सड़क पर लगे हुए घेरे से टकरा गया। यह घेरा सुदृढ़ न था। उसने बचाने के लिए असह्य प्रयत्न करते हुए नियामक पहिये (Steering wheel) को जोरों से झटका दिया और हम चक्कर करते हुए तीन बार उलट गये।

बड़ी कठिनाई से हमने कार का द्वार खोला। चालक को तनिक भी चोट न आई थी। मेरे ललाट में बड़ी पीड़ा हो रही थी किन्तु मुझे बडी को छोड़कर किसी बात का ध्यान न था। वह बाहर घास पर पड़ी पें-पें कर रही थी। वह अत्यधिक आहत हो गई थी। उसके पंजों से रक्त निकल रहा था और उसकी नाक फट गई थी।

परन्तु आपत्ति का ध्यान कर हमने शक्ति एकत्र की और कुछ प्रयत्न करने के पश्चात् कार को ठीक किया तथा जितनी शीघ्र हो सका, हम पीट्सबर्ग की ओर भाग चले। मैंने तुरन्त होटल में पहुँचकर एक कमरा लिया और बिना एक क्षण भी खोये दो पशु-चिकित्सकों को बुलाया। जब वे बडी के उपचार में लगे हुए थे तो मैं मारिसटाउन को फोन द्वारा दुर्घटना का संवाद दे रहा था। इसी समय एक व्यक्ति आकर कहने लगा, "मैं डाक्टर जोन्स हूँ।"

मैंने बैठने के स्थान की ओर इंगित करते हुए कहा, "बहुत अच्छा। बडी वहाँ है।"

"कोई बात नहीं। मैं आप को देखने आया हूँ।" उसने कहा।

तब मुझे सर्वप्रथम विदित हुआ कि मेरे चेहरे, बाहुओं तथा वक्षःस्थल से रक्त निकल रहा था। वायु से रक्षा करनेवाले काँच से ऊपरी कोट तथा स्वीटर के फट जाने से मेरे ये अंग कट गये थे। मैं अपनी जीवन-ज्योति के बारे में सोचने में इतना उलझ गया था कि मुझे अपने संबंध में और बातों के बारे में सोचने का ध्यान ही न रहा था।

बडी के और मेरे स्वस्थ होने में कुछ समय लग गया। डाक्टरों ने

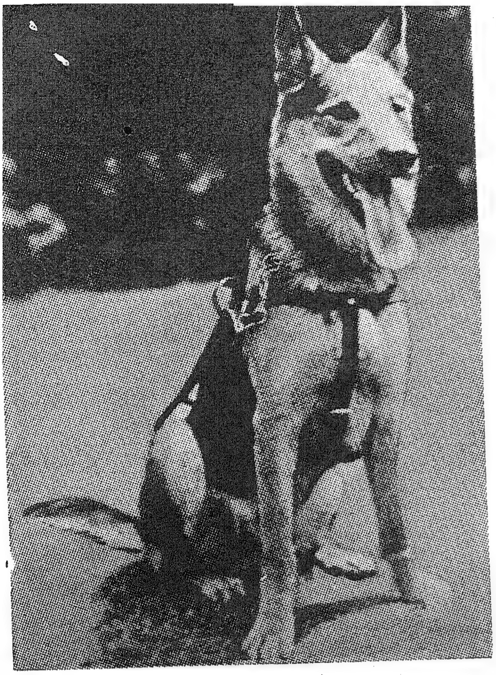

बडी द्वितीय। दस वर्ष तक अत्यन्त निष्ठापूर्वक कार्य-निर्वहण करने के अनन्तर १९३८ में मॉरिस फ्रैंक के प्रथम कुत्ते की मृत्यु हो गई। तत्पश्चात इसी ने उसका कार्यभार ग्रहण किया। केवल श्री फ्रैंक ही अपने पथ-प्रदर्शक कुत्तों का नाम "बडी" रख सकते हैं।

१९४७ में बडी द्वितीय तथा फ्रैंक "विकलांगों को काम देने के लिए मनाये गय राष्ट्रीय सप्ताह में" एतदर्थ नियुक्त की गई समिति में राष्ट्रपति ट्रूमन से मिले।

प्रेस असोसियेशन इनकार्पोरेटेड के सौजन्य से

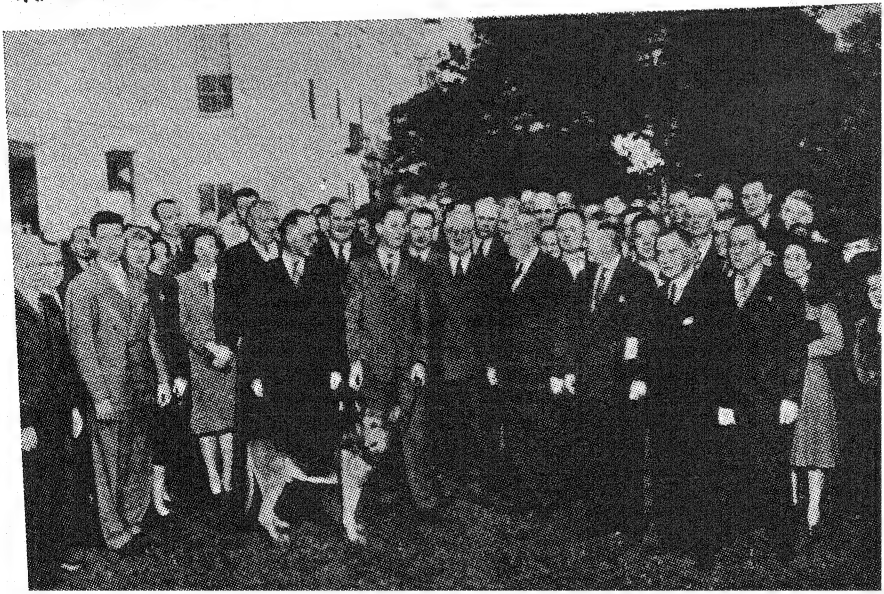

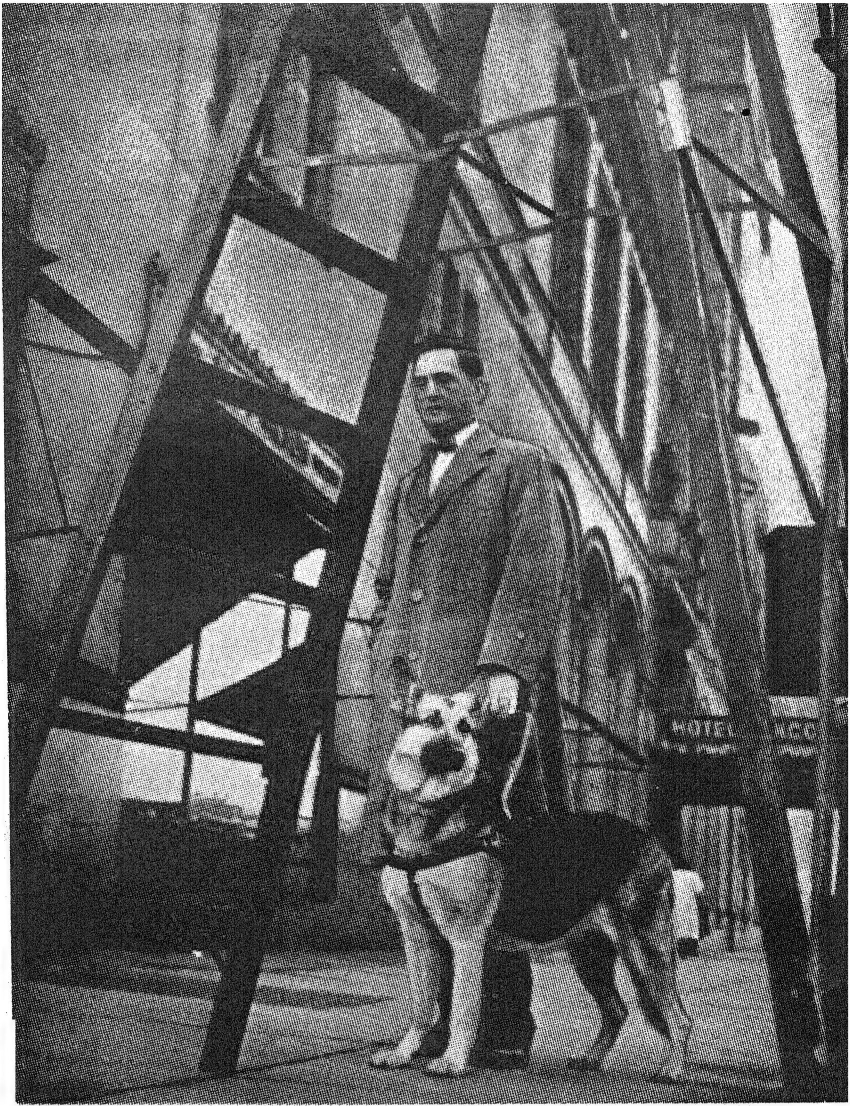

मॉरिस फ्रैंक तथा बडी स्नातकों एवं अपने भावी विद्यार्थियों से मिलते हुए, वक्तृताएँ देते हुए तथा प्रदर्शन करते हुए समस्त देश की यात्रा करते हैं। इस चित्र में कुत्ते और उसके स्वामी का अत्यन्त लाभकर घनिष्ठ सम्बन्ध स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रहा है। बडी दक्षतापूर्वक वैंकूवर (बी० सी०) की अपरिचित सड़कों पर फ्रैंक का पथ-प्रदर्शन कर रही है।

उसी दिन कह दिया कि हम दोनों अब पूर्णतया ठीक हैं, मानो नियति न पहले से निश्चित कर रक्खा था कि हम दोनों साथ ही स्वास्थ्य-लाभ करेंगे। इसके परिणामस्वरूप हम दोनों साथ-साथ पुनः पर्यटन के लिए घोड़ागाड़ी में निकल पड़े।

अपने भाषण के लिए की गई यात्राओं में मैं प्रतिदिन बडी से कुछ न कुछ सीखता था। वह सभी प्रकार के विकलांगों और कष्ट में पड़े हुए व्यक्तियों के प्रति सहानुभूति दिखाती थी। यदि कोई अंधा या वैशाखी से चलनेवाला व्यक्ति हमारे व्याख्यानमंच पर जाने के समय मार्ग में बैठा होता तो वह रुक कर अपना सौहार्द व्यक्त करने के लिए उसे चाट लेती। मार्ग में चलते समय यदि पहियोंवाली कुर्सी पर बैठे हुए गृहीतांग रोगी का अभिवादन करने की आवश्यकता पड़ती या पटरी पर बैठे हुए किसी दीन भिखारी को वह अपनी मिलनसारी दिखाने के लिए नाक से छूना चाहती तो पथ से कई फुट दूर मुझे खींच ले जाती।

एक बार वह एक ऐसे व्यक्ति की ओर विशेष सद्भावना दिखाने के लिए आकृष्ट हुई जिसे मेरा चालक जानता था कि देखने में उसे कुछ न हुआ था। जिस व्यक्ति का बडी ने अभिवादन किया था, उसने कुछ क्षणों पश्चात् मुझसे कहा, "मैं आपकी कुतिया की बुद्धिमत्ता से बहुत प्रभावित हूँ। उसे जैसे विदित था कि कुछ सप्ताह पूर्व मैं भयंकर हृदय-रोग से आक्रान्त था।"

जब हम सर्वप्रथम अंधों का एक विद्यालय देखने गये तो ऐसा प्रतीत होता था कि वहाँ बडी की सहानुभूति की सीमा न थी। वहाँ के २०२ में से प्रत्येक बालक ने उसकी नाक से लेकर पूँछ तक अपना सुपुष्ट हाथ फेरा और वह मूर्तिवत् शान्त खड़ी रही। उन्होंने नाल की आकृतिवाली लगाम का भी स्पर्श किया, क्योंकि इसी से साधारण कुत्ते तथा जीवन ज्योति के कुत्ते का भेद प्रकट होता था। वह रह-रहकर प्रत्येक बालक का नाक से स्पर्श करती मानो कहती, "किसी दिन तुम भी आत्म-निर्भर हो जाओगे। मेरा कोई साथी तुम्हारी आँखें बनेगा और तब तुम अपने स्वामी स्वयं बनकर चमक उठोगे।"

बडी में मानव-स्वभाव को समझने की अद्भुत शक्ति थी। विली डेवेट्ज तथा जैक हम्फ्री का सैकड़ों कुत्तों से पाला पड़ा था। वे भी उसकी इस शक्ति का लोहा मानते थे। वह लोगों के चरित्र-दर्शन में इतने गहरे पैठती थी कि मैं उसकी बातों को बिना किसी हिचक के एकदम मान लेता

था। कनसास नगर में एक दिन संध्या समय एक व्यक्ति ने मेरे होटल की ड्योढ़ी से मुझे पुकारा और मुझसे मिलने की इच्छा प्रकट की। मैंने उसे ऊपर आमंत्रित किया, किन्तु जब वह द्वार पर पहुँचा तो बडी उसे देखकर गुर्राई। मैंने उसे शान्त किया और मुझसे मिलने के लिए आया हुआ व्यक्ति भीतर घुसने लगा। बडी बिजली की भाँति लपककर उसके पाँवों के पास जा बैठी और उसे घुसने न दिया। मैंने बडी पर विश्वास करते हुए कहा, "अच्छा हो, हम द्वार पर ही बात कर लें।"

वह मुझे बड़ी अच्छी चाल-ढाल का व्यक्ति प्रतीत हुआ। मैं द्वार-स्तम्भ से टेक लगाकर उसकी बातों को ध्यानपूर्वक सुनता रहा। उसने दातव्य आपणों से जीवन-ज्योति के लिए धन एकत्र करने का प्रस्ताव किया था। किन्तु उसके पश्चात् मुझे पता चला कि उसके प्रति बडी की धारणाएँ मेरी अपेक्षा कहीं अधिक सच थीं। होटल के प्रबंधक ने मुझे बताया कि वह बड़ा दुष्ट व्यक्ति है। उसकी यह विशेषता है कि दातव्य कार्य के नाम से वह जुए करवाता है और उससे रुपये पैदा करता है।

लगता है, बड़ी में यह भी शक्ति थी कि वह यह बता सकती थी कि कौन व्यक्ति जान-बूझकर कोई गड़बड़ कर रहा है और कौन व्यक्ति अनजाने किसी गड़बड़ी में फँस गया है। एक बार पेनसिलवेनिया के एलेनटाउन में कार से यात्रा करते समय जब हम एक मोड़ पार कर रहे थे तो एक व्यक्ति एक ऊर्ध्वस्थ प्रमंच (Rack) से एक गठ्ठर उतारते समय अपना संतुलन खो बैठने के कारण बड़ी तेजी से उसके ऊपर गिर पड़ा।

"उफ" बडी घुरघुराई और फिर सरककर निकल गई। वह डराती हुई अपने दाँत निकालकर अपने आक्रमणकारी का सामना करने के लिए झपटी।

बेचारा वह व्यक्ति भयार्त्त होकर चिल्लाया, "मैं जान-बूझ कर उसके ऊपर नहीं गिरा हूँ। उसे मुझको काटने न दीजिए!" उसने अपनी रक्षा के लिए बाहुओं में अपने सिर को लपेट लिया और शान्त पड़ रहा जैसे वह डर गया हो कि वह उसके सारे अंगों को काट खायगी। यद्यपि बडी क्रुद्ध बहुत हुई थी, किन्तु जैसे उसकी समझ में आ गया हो कि वैसा केवल संयोग से हो गया था, वह क्षमा-प्रदान-सी करती हुई उसके पास जाकर उसका मुँह चाटने लगी।

स्त्रियों के विषय में भी—जो जटिल प्रकृति की होती हैं—बताने के लिए बडी को किसी ज्योतिष-सुलभ साधन की आवश्यकता न होती थी। मेरी

किसी साथी लड़की के बारे में यह भविष्यवाणी करने के लिए कि वह चमक-दमक तथा भीड़-भाड़ चाहनेवाली क्रीड़ाप्रिय है अथवा केवल एक ही व्यक्ति के साहचर्य में घर-पर रहना पसंद करनेवाली है, उसे उसका हस्त-लेख देखने की आवश्यकता न पड़ती थी।

बडी इस प्रकार की भविष्यवाणी करने में इतनी दक्ष थी कि मैं उसके संकेतों को देखकर जान जाता था कि आज मेरी साथिन अपनी संध्या किस प्रकार बिताना चाहेगी। जब मेरी कोई साथिन मेरे कमरे में रुककर मेरे साथ मदिरा पीती तो बडी मेरे बिस्तर पर पहुँच जाती। इससे मैं अनुमान लगा लेता कि आज संध्या समय मेरी साथिन नगर में घूमना चाहेगी। परन्तु कभी-कभी बडी वैसा न कर सोफे पर या कुर्सी पर जा बैठती। उससे मैं समझ जाता, आज हम लोगों की संध्या घर पर ही बीतेगी।

बडी के संकेतों का अनुसरण कर मैं तुरन्त वास्तविकता का पता लगा लेता। मुझे उसके विवेक में कदाचित् ही कभी कोई भ्रान्ति मिली हो।

बडी की निर्णायिका बुद्धि सचमुच विचित्र थी। दो विभिन्न अवसरों पर दो कदाचारियों के संबंध में ऐसी घटनाएँ घटीं जिन्होंने पूर्णतया द्योतित कर दिया कि वह भली भाँति जानती थी कि कब मुँह खोलना चाहिए और कब उसे बन्द रखना चाहिए। अपने स्वामी की अपेक्षा वह इस कार्य में विशेष प्रवीण थी।

ग्रीष्म ऋतु में एक दिन मैं कहीं भाषण देने के लिए जाते समय मार्ग में नैशविले में ठहर गया। इस रात को बड़ी उमस थी। मेरी माँ ने बडी का और मेरा बिस्तर परदा लगी हुई एक सोने वाली बरसाती में लगा दिया। मैं अर्द्धरात्रि के समय कुछ घबड़ाहट में जाग गया और देखा कि बडी मेरी बगल में अपने सोने के स्थान पर नहीं है। तब मुझे रात्रि की शान्ति-भंग करने वाला एक बड़ा अप्रिय शब्द सुनाई पड़ा। कोई सिटकिनी तक पहुँचने के लिए बड़ी तत्परता से परदे को काट रहा था। उसी से अत्यन्त कर्कश ध्वनि हो रही थी। फिर एक सन्नाटा छा गया। तदनंतर एक बड़ा हृदय-विदारक चीत्कार सुनाई पड़ा—उससे भय और पीड़ा टपक रही थी। चीत्कार से सारा वायुमंडल प्रतिध्वनित हो उठा था। फिर किसी के भागने की पग-चाप सुनाई पड़ी।

तत्पश्चात् बडी अत्यन्त शान्तिपूर्वक बिस्तर पर आकर लेट गई। स्पष्टतया मेरे जानने से पूर्व उसे खिड़की के पास धीरे से सेंध लगानेवाले के पहुँचने और खड़े होने का पता चल गया था। जब उस दुष्ट ने

सिटकिनी ढूँढ़ने के लिए बड़ी सावधानी से भीतर हाथ डाला तो उसका सिटकिनी के स्थान में तेज दाँतों से पाला पड़ गया।

बडी ने इस परिस्थिति में दूसरे ढंग से भी काम किया होता—वह भूँककर चोर को भयार्त कर और शीघ्र भगा सकती थी, किन्तु उसने सारा कार्य चुपके-चुपके किया। इससे विस्मय में भय का भी संचार हो गया। मैंने सोच लिया कि बडी से भयंकर स्मृति-चिह्न और अच्छी सीख पाकर इस प्रकार विशिष्ट रूप से सुरक्षित घर में वह फिर लौटने का नहीं। दूसरे दिन प्रातःकाल जब सब लोग बडी की प्रशंसा करने लगे, तो जैसे उसने भी उसका मौन अनुमोदन करते हुए कहा, "चाहे दिन में काम करना हो या रात में, मेरे लिए दोनों समान हैं।"

यह बडी के मुँह खोलने का वृत्तान्त रहा। एक दूसरे अवसर पर उसने डेट्राइट में इसका उलटा कर अपनी विशिष्ट बुद्धि का परिचय दिया। गोधूलि की बेला थी। मैं उसे बुक कौडिलाक होटल के पीछे की गली में नाक खुजलाने का अवसर देने के लिए लिवा गया था। अकस्मात् एक चोर पीछे से आकर मेरी पीठ में पिस्तौल सटाते हुए बोला, "अपने रुपये और घड़ी तुरन्त मेरे हवाले करो।"

मैं एकदम काँप उठा कि बडी उस पर आक्रमण करेगी और मारी जायगी; किन्तु वह चुपचाप आकर मेरी बगल में खड़ी हो गई। उसने पुलिस के कार्यों के लिए प्रशिक्षित किये जाते हुए कुत्तों के समुदाय में स्विट्जरलैंड में पिस्तौल देखी थी। उसे भली भाँति स्मरण था कि बन्दूकें अत्यधिक हानि पहुँचा सकती हैं।

मैंने उसे अपनी घड़ी तथा झोला देते हुए कहा, "घड़ी से तुम्हें कोई लाभ न होगा; परन्तु वह मेरे लिए बड़े काम की है। वह केवल अन्धों के लिए बनी हुई है।"

उसने घबड़ाकर कहा, "मैं अन्धे व्यक्ति को नहीं लूटूँगा।" और मेरी दोनों वस्तुओं को इस प्रकार लौटा दिया जैसे उसकी अँगुलियाँ जल गई हों।

लगभग एक सप्ताह के पश्चात् मुझे एक सरकारी तरुण-सुधार-सदन में भाषण करने का आमंत्रण मिला। उसमें एक लड़के ने मुझसे पूछा कि ग्राम्य भागों में यात्रा करने में मुझे कभी कोई भय ज्ञात होता था या नहीं, क्योंकि उन भागों में कोई भी व्यक्ति मेरे अंधा होने का अनुचित लाभ उठा सकता था। उसने टिप्पणी करते हुए कहा, "मैं सोचता हूँ कि किसी डाकू या उचक्के से पाला पड़ने पर तो आप एकदम बेचारे हो जाते होंगे।"

मैंने उत्तर में उसे मिशिगन की उपर्युक्त गली का इतिवृत्त सुना दिया।

एक किशोर ने कहा, "कुछ भी हो, वह साहसिक बहुत बुरा न था।"

"बालिश मत बनो!" दूसरे ने जोर से कहा, "कोई महामूर्ख भी जानता है कि अन्धे को लूटना श्रेयस्कर नहीं।"

यात्रा में किसी व्यक्ति का बडी से बढ़िया कोई साथी न हो सकता था। उसमें सभी परिस्थितियों के पहचानने की विशिष्ट बुद्धि थी। एक बार हम न्यूयार्क के पेनसिलवेनिया स्टेशन पर गाड़ी से उतरे। गाड़ी के कर्मचारी ने हमारे दो सामानों को एक कुली को दे दिया और हम प्लैट-फार्म से चल पड़े। थोड़ी ही दूर जाकर बडी सहसा रुक गई और फिर आगे न बढ़ी।

कुली बोला, "पता नहीं क्यों, यह सामानों को बड़े विचित्र ढंग से देख रही है।"

फिर बडी लौट पड़ी और हमें हमारी कार के पास ले गई। वहाँ प्रचालक (Conductor) एक उत्तेजित व्यक्ति को शान्त करने का प्रयत्न कर रहा था जो बारंबार आग्रह कर रहा था, "परन्तु यह मेरा सामान नहीं है।" तब हमने अपना एक संदूक बदल लिया और इससे सभी लोग बड़े प्रसन्न हुए; किन्तु बडी विशेष प्रसन्न थी। वह लोगों के अपनी प्रशंसा के शब्दों को सुनती हुई तेजी से पूँछ हिलाती हुई चारों ओर फुदक रही थी जैसे वह समझ रही हो कि वह प्रशंसा की पूर्ण अधिकारिणी है।

यद्यपि बडी को खेल और व्यायाम के लिए अपनी यात्राओं में साधारणतया मैं ही सदा निकालता था, किन्तु एक बार अटलाण्टिक नगर में, मेरे कहने से, एक परिचारक ने उसे बाहर निकाला। पथ पर भीड़ बहुत थी और बडी तेजी से घूमना चाहती थी; परन्तु परिचारक ने वैसा न किया। उसे इस "तमाशे के कुत्ते को" अपने मित्रों को दिखाने की सूझी और उसने तमाशा करने के लिए कुछ लोगों को जुटा लिया। वे उसे 'यह लाओ', 'यह करो, आदि व्यर्थ के आदेश देते रहे। वह इससे ऊबकर, अपनी लगाम छुड़ाकर, तरुण अभिनेता के पास से निकल भागी।

वह उसे ढूँढ़ते ढूँढ़ते थक गया किन्तु वह न मिली, तब उसने मेरे पास आकर सारा वृत्तान्त बताया। मुझे कभी किसी व्यक्ति की वाणी से उतनी प्रसन्नता की भावना न झलकी थी जितनी इस परिचारक की वाणी में तब झलकी जब उसने देखा कि बडी कोने में बैठी हुई है। उसे

आये लगभग पौन घंटा हो चुका था। वह सीधे होटल पहुँचकर एलीवेटर पर चढ़ गई थी। एलीवेटर का चलानेवाला उसे जानता था। उसने उसे पाँचवें तल्ले पर पहुँचा दिया और कुछ क्षणों में वह मेरे कमरे में पहुँच गई। वह परिचारक को देखकर उसकी ओर घूरने लगी, जैसे कह रही हो "सोचती हूँ, इससे तुमको सीख मिल गई होगी। यदि किसी महिला के रक्षार्थ उसके साथ चलनेवाला व्यक्ति उससे बहुत आशा करने लगता है तो महिला के लिए केवल एक ही उपाय शेष रह जाता है कि वह रक्षक के हाथों से भाग निकले और घर पहुँच जाय।"

मेरी यात्राएँ दिनोंदिन बढ़ती ही गईं किन्तु मुझे चिन्ता करने के अवसर बहुत कम आये। मुझे बडी में इतना विश्वास हो गया था कि मैं सोचने लगा था कि चाहे जितनी समस्याएँ आयें, मेरी सहचरी उन्हें सुलझा लेगी। जब भी कोई संकट उत्पन्न होता, तो वह सारी परिस्थितियों पर विचार कर लेती और तदनुसार उचित कार्यवाही करती।

एक बार रात के समय मैं फिलाडेलफिया में अधिलेखक के साथ गपाष्टक करने के लिए स्वागत स्थान में ही रुक गया। किसी अभ्यागत ने उससे जोर से परिवेदन किया कि मेरे कारण उसकी परिचर्या में बाधा पड़ रही थी। मैं खेद प्रकट करते हुए औषधालय की ओर चल पड़ा।

वह अपरिचित व्यक्ति मेरे पीछे चलता हुआ जोरों से मुझे पुकारने लगा। फिर उसने मुझे एक धक्का दिया। मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ कि बडी ने उसे काट नहीं खाया, प्रत्युत उसने चुपचाप अपने पिछले पाँवों पर दृढ़तापूर्वक खड़ी होकर मेरे ऊपर आक्रमण करनेवाले व्यक्ति को धीरे से शक्तिपूर्वक एक धक्का दिया। वह फर्श पर जा गिरा, और उसका क्रोध विस्मय में परिवर्तित हो गया। तब बडी शीघ्रतापूर्वक मेरे आगे आ गई मानों कह रही हो, "यहाँ से निकल चलना अच्छा है।" मैंने लगाम पकड़ी और हम द्रुतगति से एलीवेटर में जा पहुँचे और फिर अपने कमरे में पहुँच गये।

दूसरे दिन प्रातःकाल जब हम प्रातराश के लिए नीचे उतरे तो प्रबंधक ने हमें एलीवेटर पर ही रोककर कहा, "कृपया अभी बैठक में न आइए। कल रात को जिस व्यक्ति ने आपसे छेड़छाड़ की थी वह फिर इस समय यहीं है। वह एक पागलखाने से भागा हुआ है और उसके परिवार के लोग उसे लेने के लिए आ रहे हैं।"

एक बार पुनः मैं बडी की स्वाभाविक सूझ के लिए उसका आभारी

हुआ। उसने हमारे ऊपर आक्रमण करनेवाले व्यक्ति के पागलपन को भाँप लिया था और तदनुसार कार्य किया था। और केवल मैं ही एक व्यक्ति न था जो उसका आभारी हुआ। पहली रात को प्रबन्धक के सम्मुख की बैठक में कुछ मारपीट का काण्ड भी उपस्थित हो गया था और उस पर हानि के लिए भारी मुकद्दमा भी चलने लगा था। बडी के अत्यन्त बुद्धिमानीपूर्वक परिस्थितियों के सँभाल लेने के कारण दोनों संकट टल गये थे। वह इतना कृतज्ञ हुआ कि उसकी समझ ही में न आया कि वह उसका किस प्रकार प्रतीकार करे।

उस समय होटल में चार ऐसे व्यक्ति जुटे हुए थे जिनके कारण बड़ा शोर मच रहा था और अपने उन शोर करनेवाले पड़ोसियों के कारण हमें सोना दूभर हो रहा था। इनमें से एक शराबी ने फोन से प्रबन्धक से कहा कि "यह बड़ी बुरी बात है कि बगलवाले कमरे में एक कुत्ता है क्या यह चौपायों के रहने का स्थान है? सुनिए, या तो हम लोग चले जायँगे अथवा उसे निकालिए।"

प्रबन्धक ने उनकी बात पूर्ण रूप से स्वीकार कर ली और फोन रख दिया। तदनन्तर वह कुछ तगड़े आयरिश व्यक्तियों को लेकर ऊपर आया और उन्होंने उस चतुष्टय को निकाल बाहर किया।

यह केवल पहला अवसर था जब होटल बडी के कारण "घर से दूर दूसरा घर बन गया था।" मैं फिलाडेलफिया में था। एक दिन बड़ी ठंड पड़ रही थी। अकस्मात् प्रातःकाल बडी ने मेरा चेहरा चाटकर मुझे जगा दिया और बाहर चलने के लिए बाध्य करने लगी। अभी बहुत तड़का था और मुझे उसकी अधीरता पर आश्चर्य हो रहा था। मैं किसी प्रकार बिस्तर से निकला और अपने शरीर के कपड़े ठीक किये। मैं अपनी कुतिया के बारे में उस समय जो कुछ धीरे-धीरे बड़बड़ाया उसे यहाँ न लिखूँगा। जब मैंने अपना कोट निकालने के लिए कमरे का द्वार खोला तो उसमें अकस्मात् इतना गर्म धुँआँ भर गया कि हमारा दम-सा घुटने लगा।

खाँसते हुए मैंने नीचे फोन किया और कर्मचारियों को सूचित किया कि कमरे में आग लग गई है। मैंने बडी को लगाम लगाई और एलीवेटर द्वारा बैठक के लिए चल पड़ा। हम लोगों के नीचेवाले तल्ले से छालटी लगी हुई बर्तनों की आलमारी से लपटें निकल रही थीं। सौभाग्य से बडी ने उसे रोकने के लिए बड़े समय से सूचना दे दी थी। फिर तो

बडी उन होटलों में बड़ी जनप्रिय कुतिया हो गई और हम जितनी बार वहाँ जाते, उसका बड़ा सम्मान होता।

हमारी यात्राओं में बडी मुझसे भी अधिक लब्ध-कीर्ति हो गई थी। मैं जब अपने पुराने परिचित होटलों में पुनः जाता तो वहाँ के अधिलेखक कहते, "बडी! हमें तुम्हारे पुनः आने से बड़ी प्रसन्नता है!" तब वे मुझसे कहते, "क्षमा कीजिएगा महोदय! क्या कृपाकर आप अपना नाम बतायेंगे? हम उसे पंजीकृत करना चाहेंगे।"

एक बार की बात है कि मैं मारिस टाउन के लिए गाड़ी बदलने के लिए शनिवार को अपराह्न में एक बजे पीट्सबर्ग पहुँचा। मैंने देखा, मेरे पास रुपये बिलकुल न थे। हम चार होटलों में गये और वहाँ अपना चेक भुनवाने की बहुतेरी चेष्टा की किन्तु कृतकार्य न हो सके। अन्त में हम एक ऐसे होटल में पहुँचे जहाँ लोग मुझे तो नहीं, मेरी कुतिया को जानते थे। जब हम खजाञ्ची की खिड़की के पास पहुँचे तो एक परिचारक पुकार उठा "अरे बडी!" वह मुड़कर उसका हाथ चाटने लगी। इससे मेरी पहचान हो गई, और मेरे हस्ताक्षरों को मान लिया गया।

अपनी यात्राओं में मुझे बहुधा धर्मान्ध व्यक्तियों की भी बौछार सहनी पड़ती। एक बार मैं बोस्टन के स्टेटलर होटल में प्रातःकाल कहवा पी रहा था। उसी समय एक व्यक्ति वहाँ आकर बिना मेरी अनुमति के ही मेरी मेज के किनारे बैठ गया। वह तुरन्त ईश्वर में विश्वास रखने के कारण होनेवाले चमत्कारिक आरोग्य-लाभों के संबंध में लंबी-चौड़ी वक्तृता देने लगा।

जब उसने मुझे कुछ बोलने का अवसर दिया तो मैं चलने के लिए तैयार होता हुआ उससे बोला कि मुझे उसके भाषण से बड़ी प्रेरणा मिली। उसने मेरी आस्तीन पकड़कर कहा "मैं आपके कमरे में चलकर आपको बाइबिल सुनाना चाहूँगा।"

मैं दूसरों की धार्मिक भावनाओं का बहुत ध्यान रखता हूँ, अतएव मैंने उसके प्रति नम्रता दिखाने की चेष्टा की। किन्तु वह इतना दुराग्रह करने लगा कि मुझे विवश होकर कहना पड़ा, "मैं आपके दृष्टिकोण की प्रशंसा करता हूँ, किन्तु मुझे अब आँखें पुनः नहीं प्राप्त हो सकतीं क्योंकि मेरी प्रकृति-प्रदत्त आँखें जा चुकी हैं। ये तो कृत्रिम हैं।"

उसने बौखलाते हुए कहा, "यदि आप ईश्वर में पूर्ण विश्वास करें तो वह आपको दूसरी आँखें प्रदान कर सकता है।"

मैंने उससे बहुत कुछ ऐसा कहा जिससे वह मेरे ऊपर नास्तिक होने का आरोप न कर सके। परन्तु अन्त में उसके द्वारा अपनी विगर्हणा को आमंत्रण-सा देते हुए मैंने उससे अपनी बाँह छुड़ाई और कहा, "यदि वह ऐसा कर दे तो मैं उसका अत्यंत ऋणी होऊँगा। किन्तु तब मेरी जीवन-वृत्ति भी चली जायगी।"

इस प्रकार धर्म के संबंध में उससे भारी वाग्वितंडा हो जाने के पश्चात् मैंने एक दिन पीट्सबर्ग में सात स्थानों में भाषण किया और दस बजे रात को जब होटल लौटा तो एकदम थककर चूर हो रहा था। जैसे ही मैंने कपड़े उतारे, द्वार पर किसी ने खटखटाया और किसी के शब्द सुनाई पड़े, "मैं कलवरी गिरजे का पादरी हूँ।"

मैंने धीरे से कहा, फिर कोई धर्म का बावला आ पहुँचा; फिर जोर से बोला, "भाई! यदि आप किसी को बाइबिल पढ़कर सुनाना चाहते हैं तो नीचे बैठक में चले जाइए और वहाँ बाइबिल सुनने के लिए परिचारक को किराये पर रख लीजिए। मुझे ईश्वर की वाणी में आस्था अवश्य है, परन्तु मैं इस समय इतना परिश्रान्त हूँ कि धार्मिक बातें सुनना मेरे लिए असंभव है।"

मैंने थोड़ा द्वार खोलते हुए फिर कहा, "परन्तु यदि आप मेरे साथ मद्य-पान करना चाहते हों तो भीतर चले आइए।"

पादरी महोदय हँस पड़े तथा बोले "मुझे उससे प्रसन्नता होगी।" उनसे मुझें इतनी प्रसन्नता और शक्ति प्राप्त हुई जितनी कम लोगों से हुई थी। हम नई स्फूर्ति प्रदान करनेवाली स्काच मदिरा तथा सोडा पीते रहे तथा साथ ही ईश्वर, जीवन और मनुष्य आदि विषयों पर बातचीत भी करते रहे। इसी में प्रातःकाल के पाँच बज गये। परन्तु तब से उन पादरी महोदय के साथ मेरी गाढ़ी मैत्री चली आ रही है।

एक दिन जाड़े की ऋतु में हम शिकागो के पामर हाउस के बीसवें तल्ले पर ठहरे हुए थे। तुषारपात हो रहा था। लोगों ने बडी को, अत्यधिक रात जाने पर भी, बहुत सी वस्तुएँ खिला दी थीं, जब कि उसे उन्हें वस्तुतः उतनी रात को खाना न चाहिए था। इस कारण उसे उतनी रात गये बड़े जोरों की नैत्यिक क्रिया की आवश्यकता पड़ गई। मुझे उठना पड़ा। मैंने कपड़े पहने और उसके साथ कई बरामदों को पारकर एलीवेटर के पास पहुँचा। उतनी रात गये एलीवेटर सड़क के तट पर न उतर सका, अतः हमें प्रधान बैठक में ही उतरना पड़ा। बडी

मेहराबों वाले पथ से मुझे सीढ़ियों से गली में लिवा गई। वहाँ ओले पड़ रहे थे।

जितने समय मुझे बैठना पड़ा, मैं उतने समय तक काँपता रहा। मुझे इस कष्ट से बड़ा क्रोध आ रहा था। तीक्ष्ण-बुद्धि बडी मेरे क्षोभ को भाँप रही थी।

तब तक अकस्मात् मेरे मस्तिष्क में सद्विचारों का एक झोंका घूम गया। यदि रात में मुझे बाहर निकलने की आवश्यकता पड़ती तो मैं बडी के बिना न चल सकता था। तब मैं अपने क्षोभ पर बहुत लज्जित हुआ। मैं सोच रहा था, बडी चौबीसों घंटे मेरी सेवा में रहती है और बिना तनिक भी बुरा माने मुझे जहाँ आवश्यकता पड़ती, ले जाती है। यदि उसे मेरे साथ बंधन में रहकर शान्ति और धीरजपूर्वक श्रोता-स्थलियों में प्रतीक्षा न करनी पड़ती तो वह उन्मुक्त स्थानों में मनमाना घूमती होती। परन्तु उसने मेरे साथ मेरे ऐसा जीवन बिताने में कभी तनिक भी असंतोष नहीं व्यक्त किया था प्रत्युत प्राण प्रण से मेरी जीवन-चर्या में मेरी सहचरी बनी रहती। लगाम में जुती होने पर उसकी प्रसन्नता की सीमा न रहती। वह सदैव ऐसे रहती जैसे हम दोनों किसी एकात्म सत्ता के दो अर्द्धभाग हों जो एक दूसरे के पूरक हों।

अब रात्रि की अतिशय शीतलता उतनी नहीं खल रही थी। मैं नीचे पहुँचा और बडी को थपथपाते हुए सोल्लास गले लगा लिया। उसने तुरन्त मेरी संवेदनाओं का प्रतिदान दिया। उसने मेरे क्षोभ की सारी बातों को भूलते हुए मुझे क्षमा कर दिया। हम पुनः ऊपर अपने कक्ष में जा पहुँचे। एक मानव का विवेक जागृत हो चुका था तथा एक श्वान के हृदय में उल्लास की धारा बह रही थी। बडी बिस्तर के पैताने लेट गई और हम दोनों निद्रा का आवाहन करने लगे। एक कुत्ता और एक मानव दोनों की आँखें स्नेह के तारल्य से सिक्त हो चुकी थीं। कुत्ते को जैसे नया विश्वास प्राप्त हुआ था कि उसका स्वामी उसे प्यार करता है और उसे उसकी आवश्यकता है तथा मानव का हृदय कुत्ते के कारण प्राप्त हुई आत्मनिर्भरता एवं सन्तोष के द्वारा आभार की भावना से परिप्लुत हो रहा था।

हमारे विद्यार्थियों की विस्मयावह रूप से दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति हो रही थी। इससे हमारे कार्य पर्याप्त रूप से सफल हो रहे थे। उनकी उन्नति देखकर हमें जितनी प्रसन्नता होती थी वह यदि नाटकों में

रूपान्तरित की जा सकती तो हमें वधिक, बिस्कुट बनानेवाले एवं लगाम बनानेवाले व्यक्तियों का रुपया चुकाने में कोई कठिनाई न होती।

हमारे विद्यार्थियों की संख्या—इसमें केवल श्वान ही नहीं सम्मिलित हैं—बढ़ती जा रही थी और व्यय भी असीम गति से बढ़ रहा था। हमें अपनी कार्य-पद्धति के नवीकरण और कार्य-कर्ताओं की संख्या में वृद्धि करने के लिए और रुपयों की आवश्यकता थी। श्रीमती युस्टिस को अपने कुछ और घनिष्ठ मित्रों से आर्थिक सहायता प्राप्त हुई थी किन्तु हमारे कारबार में इतना अधिक विस्तार होता जा रहा था कि केवल इतनी सहायताओं से काम न चल सकता था।

इस कारण मुझे और बडी को श्रीमानों से भी संपर्क स्थापित करना पड़ा। हमारे प्रथम परिचय का मूलाधार एक भला कार्य था।

हमारे प्रश्रय-दाताओं की संख्या बढ़ाने के लिए श्रीमती युस्टिस ने ऐसी व्यवस्था की कि हमें उनके संपत्तिशाली तथा आटोप-प्रिय मित्रों के यहाँ सप्ताहांतों में जाने के लिए आमंत्रण मिलने लगे। आतिथेयी बहु-संख्यक लोगों को हमारा चलचित्र देखने तथा जीवन-ज्योति की कहानी सुनने के लिए बुलाते। बडी और मैं प्रदर्शन की सर्वोत्तम वस्तु समझा जाता। हम दोनों को लोग हमारी संस्था के सभी कार्यों का मूर्त्त स्वरूप समझते। हमें अपने इन नये मित्रों से कई प्रकार की सहायता मिली—उन्होंने हमें धनराशियाँ प्रदान कीं तथा हमारे अंधे स्नातकों को अपनी शिल्प-शालाओं में काम दिया। इसके अतिरिक्त हमारे पथ-प्रदर्शक कुत्तों को कारों, मोटरों तथा होटलों आदि में प्रवेश पाने में भी उनसे पर्याप्त सहायता मिली।

इन भोज आदि समारोहों में सम्मिलित होने का परिणाम बहुत अच्छा हुआ। हमें आगे बढ़ने के लिए स्वर्ण-सुयोग मिल गया। जिन कठिनाइयों को पार करने में हमें बड़ा कष्ट उठाना पड़ा होता और साधारणतया महीनों लग गये होते, उन्हें हम देखते-देखते पार हो गये।

उदाहरणार्थ, हमने एक बड़े सुन्दर दम्पति के साथ न्यू हेवेन का पर्यटन किया। इस दंपति का नाम ओटर्सन था। वे लोग बडी तथा हमारे कार्यों में बड़ी अभिरुचि लेने लगे थे। हम कनेक्टीकट के होटलों में पथ-प्रदर्शक कुत्तों के लिए प्रवेश चाहते थे। इस कारण ओटर्सन दंपति ने एक प्रीति-भोज का आयोजन किया और उसमें बहुत से अतिथियों में एक बहुत बड़े बैंक के संचालक को भी निमंत्रित किया। उक्त प्रदेश के बहु-संख्यक होटलों का नियंत्रण इस संचालक के हाथ में था।

इस बैंक-व्यवसायी ने हममें बड़ी अभिरुचि दिखाई और बड़ी अनुकंपा-पूर्वक श्रीमती ओटर्सन को अपने यहाँ चाय पीने के लिए आमंत्रित किया और उनसे यह भी कहा कि वे बडी और मुझको भी साथ लायें। नींबू वाली केक खाते समय हम पर्याप्त काल तक धीरे-धीरे स्वाद लेते हुए मारिस टाउन के बारे में बातें करते रहे। हमारा आतिथेयी बीच-बीच में कहता जाता था, "आपकी कुतिया का व्यवहार बड़ा मनोहारी है।"

जब हम बिदा लेने लगे तो श्रीमती ओटर्सन ने कहा, "अलबर्ट! मैं सोचती हूँ कि आप अपने होटलों को आदेश दे देंगे कि वे इन आश्चर्य-कारी कुत्तों के लिए अपने यहाँ प्रवेश की अनुमति देने में कोई आपत्ति न करें।"

उन्होंने बड़ी सद्भावनापूर्वक उत्तर दिया, "अवश्य! मैंने भी यही सोचा था।"

यद्यपि बृहत्कक्ष का पथ सर्वथा निर्बाध था फिर भी मैं गिरते-गिरते बचा। मैंने कारबारी ढंग से इसी अनुमति को प्राप्त करने के लिए पहले भी प्रयत्न किया था किन्तु उस बार किसी अधिकारी ने मुझसे मिलना भी स्वीकार न किया था। स्वभावतः आज मैं सोच रहा था, "दूसरों से मिलने-वाले उत्तर बहुधा इस बात पर भी निर्भर होते हैं कि प्रश्नकर्त्ता कौन है।"

मुझे स्मरण है कि मैं एक बार टक्सेडो पार्क के रेजीनाल्ड आचिन-क्लास की जमींदारी में गया। वहाँ हमें बड़ा आनन्द आया। बडी ने मुझे नई परिस्थितियों में बड़े सुन्दर ढंग से घुमाया। उसने मुझे अच्छे ढंग से रखाये हुए उपवनों, क्रोकेट खेल के मैदानों तथा अन्य स्थानों में सरलता-पूर्वक घुमाया। हम वहाँ की निजी झील देखने भी गये। इसमें मछलियों के पालने की अच्छी व्यवस्था थी। हम जिस वाहन से जल में घूमे वह विद्युत्-चालित था जिससे जल विषाक्त न हो सके और मछलियों को कोई हानि न पहुँचे।

वस्तुतः बडी मेरे लिए आँखों का इतना अच्छा काम करती थी कि उसकी कार्य-पटुता के कारण हमारा एक प्रश्रयदाता हमारे हाथ से निकलते-निकलते बचा। एक बड़े उद्योगपति ने श्रीमती युस्टिस के पास आकर कहा, "मैं बड़ा लज्जित हूँ कि मैं पहले सोचा करता था कि श्री फ्रैंक केवल एक प्रवंचक हैं। वे अपने कुत्ते के सहयोग में इतना अच्छा काम करते हैं कि मुझे विश्वास ही न होता था कि वे नेत्रहीन हैं।"

वह कहता गया, "यहाँ तक कि मैंने बाजी भी लगा ली कि वे यथार्थतः

नेत्रहीन नहीं हैं। मैं भोजन के समय मुड़कर उनके पास पहुँचा केवल यह देखने के लिए कि वे दिखावा तो नहीं रचे हुए हैं।"

तदनन्तर उक्त अतिथि ने हमारी अध्यक्षा को अत्यन्त उदारतापूर्वक पर्याप्त धन-राशि का एक चैक प्रदान किया। "मैं बाजी हार गया, यह उसी की धन-राशि है। जो कुछ आज मैंने देखा है, उससे यह धन आपको देते हुए मुझे बड़ी प्रसन्नता होती है। मैं सोचता हूँ कि आप लोग मारिसटाउन में बड़े चमत्कार के कार्य कर रहे हैं।"

बडी सदैव इस बात का ध्यान रखती कि समाज में उसके द्वारा कोई गड़बड़ी न हो। उसकी आवश्यकताएँ थोड़ीं, किन्तु सतत बुद्धिमती किशोरी लड़की की भाँति उसे भूख तो लगती ही थी। परन्तु वह अपनी बुभुक्षा को इस प्रकार शान्त करती कि उसे प्रायः परिस्थितियों के अनुरूप ही कहा जा सकता है। हाँ, घर पर मेरे साथ रहते हुए वह कभी कोई वस्तु न चुराती थी। वह आत्म-मर्यादा का ध्यान रखती अथवा उसका व्यवहार सुधार-सदन के पूर्वकथित लड़के के सदृश होता। वह जानती होती कि नेत्र-हीन के पास से कोई वस्तु चुराना ठीक नहीं। मैं संप्रीति के साथ खाई जानेवाली वस्तुएँ या अन्य खाद्य-पदार्थ फैला देता, किन्तु वह उन्हें कभी छूती तक न थी। किन्तु जब लोग आ जाते और उन वस्तुओं को देख लेते तथा उनकी रक्षा का भार उनके ऊपर चला जाता तो फिर बडी के ऊपर चुपचाप कुछ उठा लेने के लिए कोई प्रतिबंध न रह जाता।

हमारे आटोप-प्रेमी सुहृदों के प्रासाद-सरीखे घरों में वह अपनी तस्करता का कार्य बड़े ठाट से करती थी। एक बार हम बोस्टन में चाय पीने के एक अत्यन्त भव्य निमंत्रण में गये। अत्यन्त शिष्टतापूर्ण संलाप का धीमा शब्द हो रहा था। परोसनेवाले ने एक चाय की गाड़ी से हमें सैण्डविच (रोटी के दो भरे सटे टुकड़े) परोसे। जब वह गाड़ी मेरे पास पहुँची, तो उसकी निचली तश्तरी इस प्रकार रक्खी हुई थी कि बडी की नाक उसे छू सकती थी। न तो उसका सिर हिला और न पलक झपकी और जितना समय यह बताने में लग रहा है उससे बहुत थोड़े समय में सैण्डविच की एक राशि लुप्त हो गई। केवल श्रीमती युस्टिस ही इस कार्य को देख पाईं। वे ही उस क्षण बडी पर अपनी आँख जमाये हुए थीं। श्रीमती युस्टिस ने बताया कि बडी ने यह कार्य ऐसे किया था जैसे कोई संपत्ति-शाली विधवा एक क्षण में यह समझकर कि उसे कोई देख नहीं रहा है, बिना अपने चश्मे को तनिक भी नीचे की ओर झुकाये, चोरी से भली

भाँति जूता पहने हुए अपना एक पाँव आगे बढ़ाकर कोई गिरा हुआ बटुआ उठाकर तुरन्त अपने अन्तर्वस्त्र के नीचे छिपा ले।

एक बार बडी और मैं कुछ आर्थिक सहायता के लिए एक बड़ी बीमा कंपनी के अध्यक्ष के पास मिलने गया। उसने हम लोगों का स्वागत किया तथा मुझे बैठने के लिए कुर्सी दी और स्वयं अपनी मेज के किनारे बैठ गया। मैंने उसे अपने कार्यों के बारे में बताया तथा यह भी समझा दिया कि उसके रुपये से क्या किया जायगा। उसने बड़े ध्यान से मेरी बातें सुनीं और एक बढ़िया सा चैक दिया। जब मैं धन्यवाद देकर चलने लगा तो मुझे बडी के पाँवों की कुछ कूदने की सी ध्वनि सुनाई पड़ी। वह मेरी दाहिनी ओर से किसी आसन्दिकादि से उतरी थी। मैंने पहुँचकर देखा, उसने एक बहुमूल्य भव्य झालर लगी हुई शय्या का आनंद लिया था।

जब मैं उसकी अतिशय भर्त्सना करने लगा तो धन-राशि के देनेवाले ने कहा, "आप उसे न डाँटिए। जितने समय आप मुझसे बातें करते रहे उस सारी अन्तरा में वह शय्या के पृष्ठ भाग पर अपना सिर रक्खे मेरी ओर निहार रही थी। मैंने आपकी बातों से प्रभावित होकर सहस्र डालर नहीं दिये हैं, प्रत्युत मैंने कुतिया की आँखों में कुछ पढ़ा और उसकी मौन वाणी को अस्वीकार न कर सका।"

धनिक वर्ग के संपर्क में आने के कारण कभी-कभी मुझे बड़ी उलझन में भी फँस जाना पड़ता था। कभी-कभी हमें घुड़दौड़ में जाने के लिए भी निमंत्रण मिलता। बडी को वह भावावेशपूर्ण दृश्य बड़ा प्रिय लगता। "वे चल पड़े" का शब्द सुनकर वह काष्ठवत् खड़ी हो जाती और मैदान में होनेवाली भयकारी घुड़दौड़ की ओर अपनी नाक किये रहती। वह इस कार्य में इस प्रकार भाग लेती जैसे उसी ने हमारे दो डालर का टिकट लेने में खिड़की पर दाँव में रुपया लगाया है। रह-रहकर वह तेजी से अपनी पूँछ झाड़ उठती और द्रुत वेग से साँस लेती, मानों कहती "हमारा घोड़ा अब भी वहाँ दौड़ रहा है, किन्तु भाई! आपको तो पता ही नहीं चल पाता!"

मैं घुड़दौड़ के मैदान में केवल पचीस डालर लेकर जाता था। यदि उसमें हार जाता तो सोच लेता कि अपराह्न का जलपानादिक का व्यय चला गया। किन्तु एक दिन मैं चार खिलाड़ियों के साथ पहुँचा। उस दिन उन्हीं के घोड़े दौड़े थे। मैं कुछ काल उन्हीं के दर्शक-कक्ष (box) में बैठा

रहा और ऐसा अनुभव करता रहा जैसे मेरे भी कुछ घोड़े हों और इसमें खूब फूलता भी रहा। फिर मैं अपने प्रधान के पास गया। मैं बिना सोचे-समझे उनसे तथा अन्य धन-संपन्न घुड़दौड़के पुराने अखाड़ियों से, जो सपनों की तरंगों में डूबे हुए थे और जो अभी अभी घोड़ों के रखाने के स्थान से लौटे थे, परामर्श लेने लगा। प्रत्येक ने मुझे ऐसा परामर्श दिया जैसे वे घोड़ों की ओर से बोल रहे हों और वे जो कुछ कहना चाहते हों वही कह रहे हों। फिर प्रत्येक व्यक्ति ने 'निश्चित विजेताओं' की तालिका में मेरा नाम भी लिख लिया।

उनके विवेक के अनुसार कार्य करने का परिणाम यह हुआ कि छठीं दौड़ के अन्त में मैं एक सौ पचीस डालर हार चुका था। इसमें सौ डालर का हारना मेरी शक्ति के बाहर चला गया था, क्योंकि खींचतान कर मैं केवल पचीस डालर तक की हार सह सकता था।

सातवीं दौड़ में "ब्लाइण्ड बरनी" नाम का कोई आया था और आठवीं में ब्लैक बडी नाम का कोई था। केवड़ घुड़दौड़ के व्यवसायी सवारों को छोड़कर किसी ने उनका नाम भी न सुना था। मैंने उनसे बाजी लगा ली। कारण स्पष्ट है। इन सुन्दर घुड़सवारों के कारण केवल मेरी क्षति-पूर्ति ही न हो गई, प्रत्युत जितना मैं लेकर चला था उससे दो सौ डालर अधिक जीतकर लौटा।

यहाँ मैं यह नहीं बताऊँगा कि वे आटप-शाली व्यक्ति अपने और अपने घोड़े पालनेवाले साथियों को—विशेषज्ञों को क्या कहते थे जो एक विजेता और अंधे व्यक्ति को न पहचान पाये।

इस प्रकार स्पष्ट है कि हम खेल-कूद से दूर रहकर केवल काम ही काम में न भिड़े रहते थे। मैं अपनी आर्थिक सहायता प्राप्त करने तथा भाषण देने के लिए की हुई यात्राओं को "काम की यात्राएँ" कहा करता था। बडी और मैं इन "काम की यात्राओं से" प्रति मास कुछ न कुछ अवकाश निकाल मारिसटाउन पहुँच जाता था। वहाँ बडी पुरानी घिसी हुई होने के कारण प्रशिक्षण के लिए आये हुए नवसिखिये कुत्तों को छेड़-छेड़कर बहुत मगन होती।

परन्तु वह नव-सिखियों के साथ रहना पसंद न करती। यदि हम अन्धे विद्यार्थियों तथा उनके कुत्तों के साथ सड़क पर चलना आरंभ करते तो वह या तो मुझे उनके पर्याप्त पीछे रोक लेती या डग बढ़ाकर सारे समुदाय के एकदम आगे हो जाती। वह ऐसा कदाचित् इसलिए करती कि उसे कोई

अन्य साधारण पथ-प्रदर्शक कुत्ता न समझ ले। वह कदाचित् दिखाना चाहती कि वह कुत्तों में सर्वाग्रणी तथा सबसे विशिष्ट बडी थी।

यह एक बड़ी अच्छी बात है कि जिस किसी जीवन-ज्योति के स्नातक से पूछा जाय वह बड़ी सच्चाई से कहेगा कि इस संस्था से अब तक जितने प्रशिक्षित कुत्ते निकले हैं उनमें उसका पथ-प्रदर्शक कुत्ता सबसे तेज और सुन्दर है। परन्तु मेरी कुतिया वस्तुतः तेज और सुन्दर थी। उसे यह दिखाने में बड़ा आनंद आता था कि वह सर्वोत्तम है। जब मैं कोई दस्ताना या दियासलाई गिरा देता तो वह उन्हें उठाकर मेरे पास ला देती और फिर चारों ओर बड़े ठाट से देखती। उसकी यह लीला देखकर दर्शक बहुत मुग्ध होते। वह अपनी मौन-भाषा में जैसे उनसे कहती होती, "प्रशंसा करने की कोई आवश्यकता नहीं; किन्तु मेरी युक्ति आपको कैसी लगी।"

हम ओपेनका से केवल छः मील दूर थे। अतः जितनी बार हो सकता, हम एब्लिंग दंपति के साथ अधिक से अधिक सप्ताहांत में छुट्टी मनाने जाते। बडी भी इन छुट्टियों में बड़ा आनन्द लेती। वहाँ तैरने के लिए सुन्दर झील थी, अस्थियों के गाड़ने के लिए भव्य आलवालस्थली थी, क्योंकि ओपेनका में कुत्तों का मोल पाटल-प्रसूनों से अधिक था। यहाँ हमारे लिए एक कमरा अलग था जिसमें बृहत् शय्या लगी हुई थी जिस पर हम दोनों बड़े सुख से सोते थे।

जब हम वहाँ जाते तो उस शय्या पर एक बड़ा लंबा-चौड़ा अत्यन्त कलापूर्ण पर्यंक-प्रच्छद बिछा रहता। यह बिस्तर को बचाने के लिए होता, क्योंकि बडी की ऐसी बान थी कि झील में तैरने के अनन्तर वह उससे निकलकर सीधे ऊपर अपना शरीर सुखाने के लिए बिस्तर पर जा पहुँचती। जिन दिनों ओपेनका हमारी जीवन-ज्योति का अस्थायी प्रधान कार्यालय होता था, उन दिनों की स्मृति हमें नहीं भूलती कि बडी को उस प्रच्छद पर लेटकर खिड़की से प्रशिक्षार्थी कुत्तों के शिक्षण कार्य को देखने में, जब वे श्वान-गृह के सामने व्यायाम के लिए दौड़ाये जाते, कितना आनंद आता था।

वह प्रत्येक काम को इतनी सम्पूर्णता से देखती थी कि मैं उससे आशा करता था कि वह एक पुराने बुद्धिमान् अनुभवी व्यक्ति की भाँति शिष्यों के संबंध में मुझे विशद परिवृत्ति देगी: "गोरी सूजी को सन्तोषजनक रूप से प्रगति वही कर रही है।" या "जब आज टाम द्वितीय को लगाम लगाई गई तो उसने बड़ा अच्छा काम किया!"

पथ-प्रदर्शक कुत्ते और उनके स्वामी नेत्रवानों से भी अधिक सुकरता एवं निर्भयता से चतुष्पथों को पार करते हैं। मॉरिसटाउन में कदाचित् ही कोई ऐसा व्यक्ति होगा जो फ्रैंक तथा बडी तृतीय की जोड़ी से परिचित न हो। (नीचे) काम पर जाते समय प्रथित जोड़ी नगर-निवासियों से अभिवादनादि कर रही है।

अलबिना मर्फी के सौजन्य से

अलबिना मर्फी के सौजन्य से

बीमे के कार्य में लोगों से नियमित रूप से मिलना-जुलना पड़ता है। यहाँ बडी विश्राम कर रही है और फ्रैंक अपने काम की बातें कर रहे हैं।

व्यायसराइटर कला विभाग के सौजन्य से

मॉरिसटाउन के अपने बीमे के कार्यालय में फ्रैंक अपने काम पर जुटे हुए हैं और सतत जागरूक बडी उनके आदेश की प्रतीक्षा कर रही है।

वस्तुतः हम दोनों को वह शय्या बहुत प्यारी थी। मैं उसमें बैठा बैठा बहुत काल तक रेडियो सुना करता। मुझे आतंककारी कथाओं में सदैव बहुत आनन्द आता है और मुझे उन भयकारी दिनों की भली भाँति स्मृति है जब उन आलोड़नकारी कथाओं ने किशोरावस्था से ही मेरे ऊपर अधिकार कर लिया था और जब मैं रात को उनके कारण डर जाता था। मैं अर्द्धरात्रि के समय चिल्ला उठता था, "बचाओ! बचाओ! कोई दौड़ो!" मैं कराहता और आक्रोश करता रहता और उस अवस्था की अवधि ही न बीतती जब तक परिवार का कोई सदस्य मेरी रक्षा के लिए मेरे पास न पहुँच जाता।

परन्तु इन दिनों जैसे ही मैं बड़बड़ाता बडी मेरे पास पहुँच जाती, मुझे आश्वस्त करती हुई सूँघने लगती और बड़े सुखद ढंग से चाटने लगती। जबसे वह मेरे ही बिस्तर पर लेटने लगी थी तब से मुझे रात्रि में भय नहीं लगता था। मैं रेडियो से उक्त ढंग की पूरी कथा-माला सुना करता परन्तु मेरी 'निजी आँख' रात में मुझे डरने से बचा लेती।

एक और अवसर पर जब हम एबलिंग-दंपति के यहाँ गये हुए थे, बडी ने अपने कार्यों से एकदम स्पष्ट कर दिया कि उसमें विचार-शक्ति है। दूसरे तल्ले के लिए नई सीढ़ी बन रही थी। पाँव रखने का स्थान बन चुका था, किन्तु जँगला अभी तैयार न हुआ था। जाने-आने का मार्ग चौड़ा होने के कारण मुझे किसी बात का खटका न था। कमरे से आने-जाने में, भीत से सटकर चलने में मुझे कोई कठिनाई न हो सकती थी।

लगाम न लगी रहने पर बडी से कभी यह आशा न की जा सकती थी कि वह मेरे लिए कुछ कर सकती है—उस समय उसे अपने कार्यों को भूलकर इधर-उधर खेलने-कूदने की छुट्टी होती थी किन्तु जैसे ही पहली बार मैं उन अधूरी सीढ़ियों के ऊपर चढ़ने लगा, वह मेरी बगल में आ गई। उसने देख लिया था कि सहारे वाला जँगला न था, अतः वह मेरी रक्षा के लिए आ पहुँची। वह अपने को सीढ़ी के खुले भागों की ओर रखकर मेरे साथ साथ चढ़ी। जितने दिनों मैं वहाँ रहा उतने दिनों वह एक क्षण के लिए भी मुझे अपनी आँखों से ओझल न होने देती। मैं जितनी बार ऊपर-नीचे चढ़ता-उतरता उतनी बार वह मुझे सीढ़ियों के जोखिम से बचाने के लिए मेरे साथ चलती और मुझे भीत की ओर किये रहती। उस बार वह बाहर घूमने प्रायः कभी गई ही नहीं—वह सदैव सीढ़ियों के जंगम घेरे का काम करने में व्यस्त रही।

एबलिंग-दंपति के घर पर का एक दूसरी बार का वृत्तान्त है। वर्षा का आर्द्र दिन था। बडी ने रसोई का द्वार खड़खड़ाया और श्रीमती एबलिंग ने उसे वहाँ घुस जाने दिया।

मैंने उनसे पूछा, "क्या भोजन तैयार होने तक इसे लगाम में रख दूँ ?"

"मैं सोचती हूँ, इसकी कोई आवश्यकता नहीं।" उन्होंने उत्तर दिया, "सभी वस्तुएँ चूल्हे पर पक रही हैं। मेरा अनुमान है कि वह वहाँ उन वस्तुओं को न छूयेगी। क्यों, है न यह बात ?"

मैंने उत्तर दिया, " उसने अभी तक कभी ऐसा नहीं किया है।" और फिर हम रहनेवाले कमरे में जाकर संलाप में तल्लीन हो गये।

कुछ समय पश्चात् श्रीमती एबलिंग रसोई में यह देखने फिर गई कि भोजन पकने का कार्य ठीक हो रहा है या नहीं। उन्होंने देखा कि बडी अपने पिछले पाँव पर खड़ी होकर अपने अगले पंजे अब भी खिड़की पर रखे हुए है। वह पीछे की खिड़की से बड़े ध्यानपूर्वक हिम-गृह को निहार रही थी। इस भवन को वह सैकड़ों बार देख चुकी थी, किन्तु पहले कभी उसने उसमें तनिक भी अभिरुचि न दिखाई थी।

फर्श पर एक खाली बर्तन पड़ा हुआ था जिसमें नागदौन के लिए पिघला हुआ मक्खन रक्खा हुआ था। बडी के मुख से छोटी-छोटी पीली बूँदें गिर रही थीं। उसने जलते हुए लाल-लाल तारों के कई घुमाववाले बिजली के चूल्हे पर से उस गर्म बर्तन को न जाने कैसे उतार लिया था। इसमें उसने न तनिक आहट होने दी थी और न स्वयं रंचमात्र भी जली थी। यह वृत्तान्त अब भी "ओपेनका खंड की महान् डकैती" के नाम से स्मरण किया जाता है।

बडी को तैराकी से भी प्रेम था। एक दिन रविवार को वह मेरे साथ या मैं उसके साथ झील पर गया। मेरे साथ मेरी एक साथिन भी थी। यह उस समय की बात है जब रबर के स्नान-वस्त्र विशेष प्रचलित थे और मेरी साथिन उस प्रकार का सबसे बढ़िया ढंग का स्नान-वस्त्र पहने हुए थी।

बडी की यह प्रवृत्ति थी कि वह तैरती हुई एक तैराक के पास से दूसरे तैराक के पास जाती और उसके कन्धों पर अपने अगले पंजों को रखकर उसका अभिनन्दन करती। उसने इसी प्रकार की क्रिया मेरी साथिन के साथ भी की। वह इस बात को न जानने के कारण जल्दी से आगे बढ़ गई। इसमें बडी के पंजे उसके सारे वस्त्र पर से निकल गये। इससे गुड ईयर का बना वह वस्त्र उसके नाखूनों से ऐसा फट गया जैसे वह लोहे की पत्तियों से फाड़ा गया हो।

तदनन्तर बडी को और मुझे जाकर घर से एक तौलिया लानी पड़ी जिससे मेरी साथिन लज्जा-निवारण कर पानी से बाहर निकल सके। मैं सोचता हूँ कि बातें कुछ अच्छी न हुई, क्योंकि अंधा होने के कारण मैं परिस्थिति का पूरा पूरा आनन्द न ले सका।

झील के मध्यस्थ भाग में एक पुरानी घन्नई स्थिर की हुई थी। बडी को उसके पास तैरकर जाना बड़ा अच्छा लगता था। वह उस पर चढ़कर धूप लेती। ज्यों ज्यों समय बीतता गया, घन्नई पानी के कारण केवल एक व्यक्ति के अथवा दो हलके व्यक्तियों के चढ़ने योग्य रह गई। तब बडी बड़े उल्लास के साथ उसके पास तैरकर पहुँच जाती और चुपचाप उस पर चढ़ जाती, उसके डूब जाने पर वह अपने मित्रों को डुबकी मारने का मजा खिलाती।

एक बार मैं घन्नई के पास पहुँचने के लिए तैरने लगा, किन्तु वह न जाने कहाँ खो गई। उसे ढूँढ़ने के लिए मैं चक्कर लगाने लगा; किन्तु इसमें मुझे एकदम दिग्भ्रम हो गया। मैंने बहुत समय तक पर्याप्त प्रयत्न किया परन्तु उसका कोई फल न निकला। अन्त में उसे पाने की आशा मैं छोड़ने लगा। तब तक अकस्मात् कुछ घबड़ाहट में मैंने देखा कि मैं अत्यन्त द्रुत गति से थकता जा रहा हूँ।

मैं तट पर लौटने की सोचने लगा किन्तु मुझे पता ही न चल पाता था कि किधर जाऊँ। मैं सम्भवतः झील के दूरस्थ तट की ओर बढ़ रहा था। तब सदा की भाँति आवश्यकता पड़ने पर मुझे बडी का ध्यान आया। मैंने उसे पुकारा, क्योंकि मैं सोच रहा था कि वह इतनी दूर न होगी कि मेरी आवाज न सुन सके। उसने बड़े प्रेम से भोंककर उत्तर दिया, जिससे मुझे विदित हो गया कि वह आ रही है। वह झम से पानी में कूद पड़ी और कुछ ही क्षणों में मेरे पास आ पहुँची। मैंने हाथ बढ़ाकर उसका कालर पकड़ा, और इसके प्रथम कि मैं यह कहूँ कि "तू बड़ी अच्छी है !" वह मुझे लेकर निरापद रूप से तट पर पहुँच गई।

पथ-प्रदर्शक कुत्तों के सार्वजनिक स्थानों में प्रवेश पाने के लिए हमें स्वयं सामान्य संघर्ष नहीं करना पड़ा। हमारे स्नातकों की संख्या अनुदिन बढ़ रही थी। अब वे दूसरों के लिए भार न बनकर अपनी जीवन-वृत्ति कमानेवाले धीरे-धीरे समाज के उपयोगी सदस्य बन रहे थे। पर उनको सबसे बड़ी बाधा यह थी कि उनके कुत्तों को जलपानगृहों से लेकर रेलगाड़ियों आदि सभी आवश्यक स्थानों में प्रवेश पाने में अतिशय कठिनाई पड़ रही थी।

श्रीमती युस्टिस और मैं जब भी अवसर मिलता, इन सभी क्षेत्रों में

इस कार्य के लिए डटकर लोहा लेते। एक बार मोटर से कनेक्टीकट होकर जाते समय हम भोजन के लिए एक बहुत अच्छी सराय में रुके।

उन्होंने कहा, "मारिस! मैं आगे जाकर एक मेज पर अधिकार जमाती हूँ। मैं एक नये हैट की बाजी लगाकर कहती हूँ कि तुम्हें बडी के साथ वहाँ तक पहुँचने में कम से कम दस मिनट अवश्य लगेंगे।"

हमने जब यह अनुमान कर लिया कि वे अब बैठ गई होंगी तो हम भी भीतर गये।

परिचारकों के अध्यक्ष ने कहना आरम्भ किया, "महोदय मुझे खेद है, किन्तु......।"

"बडी आगे चलो!" मैंने आदेश दिया।

उसने वैसा ही किया जैसी मुझे आशा थी। वह सीधे श्रीमती युस्टिस के पास पहुँची। उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ कि हम उतने शीघ्र वहाँ तक कैसे पहुँच गये।

परिचारकों का अध्यक्ष हम लोगों के पीछे पड़ा हुआ था, किन्तु हम झगड़ेवाले स्थान में जम ही गये। अधिकार ही प्रायः विधान बन जाता है, और वहाँ अधिकार पा जाने के अनंतर अब हमें हटाये जाने का कोई भय न रह गया था। मैंने इतने जोर से कि कम से कम दस मेज दूर तक के व्यक्ति स्पष्ट सुन सकें, यह घोषित किया कि किसी कुत्ते को अपनी आँखें बनाना कितना विस्मयावह रूप से आह्लादकर होता है। उक्त परिचारक ने पुनः आरम्भ किया, "मुझे खेद है, महोदय!" किन्तु बीच में ही, टोककर मैं बोल उठा, "देखिए, बडी का व्यवहार कितना आश्चर्य-जनक और मोहक है······" फिर मैंने अपना स्वर तनिक और ऊँचा करते हुए कहा "······परन्तु मुझे बड़ी उलझन होती है जब मुझे उसको ऐसे स्थानों में आने देने के लिए लोगों को तर्क द्वारा समझाना पड़ता है।"

घबड़ाये हुए व्यक्ति ने एक बार पुनः प्रतिवाद करने की चेष्टा करते हुए कहा, "महोदय! मुझे बहुत खेद है,······" परन्तु मैं भी अपनी हाँकता गया, "—क्योंकि मुझे यह दिखाना पड़ता है कि मेरा कुत्ते के बिना काम नहीं चल सकता!"

इस समय तक सराय के अन्य अतिथि, परिचारकों के अध्यक्ष की ओर, ऐसा घूरने लगे थे जैसे वे उसे खा जायँगे। वह चुपचाप रसोई की ओर खिसक गया। उसने बड़ी कठिनाई से जो चार शब्द कहे थे उसके अतिरिक्त हमें उसके प्रतिवाद का फिर और कोई शब्द न सुनाई पड़ा।

श्रीमती युस्टिस हम लोगों की युक्ति से बड़ी प्रसन्न हो रही थीं। वे बड़ी उमंगोंवाली और हँसमुख महिला थीं और अवसर पड़ने पर हृदय खोलकर हँसती थीं। यदि किसी की बात यथार्थ हो तो वे चौगुने उत्साह से उसका समर्थन करतीं। बडी की और मेरी सहायता के लिए उनकी, साथ चलने की, इस पद्धति का हम कई वर्षों तक प्रयोग करते रहे और उसमें हमें पर्याप्त सफलता भी मिली। किसी स्थान में पहुँचने पर हमें केवल इतना समय चाहिए था जिसमें लोगों को हम यह दिखा सकते कि बडी का व्यवहार बहुत अच्छा है—वह कोई गड़बड़ी नहीं करती। जीवन-ज्योति के कुत्तों के व्यवहार के सम्बन्ध में उसने असंख्य भोजनालयों के अधिपतियों के हृदय में ऐसी भावना भर दी कि उसके अनन्तर वे प्रायः सर्वदा अत्यन्त प्रसन्नतापूर्वक पथ-प्रदर्शक कुत्तों का अतिथियों-सा स्वागत करते।

एक बार हमारी 'अध्यक्षा' को, जैसा कहकर हम श्रीमती युस्टिस को पुकारते थे, और मुझे न्यूयार्क में जान डी० राकफेलर (कनीयस) के साथ भोजन करने के लिए आमंत्रित किया गया था; हम उनसे जीवन-ज्योति के लिए कुछ रुपये लेने के फेर में थे। हम अपने कार्य के लिए उस भव्य होटल में निश्चित समय से पर्याप्त पहले पहुँच गये। होटल का प्रबन्धक सुन्दर काला कोट तथा प्रातःकालीन पतलून पहने बड़े ठाट में था। उसने कहा कि वह बडी को भोजन-गृह में न जाने देगा। अतः मैंने बडी को भोजन-क्षेत्र के प्रवेश के पासवाले सामान-घर में रोक दिया। उसने मेरे "नीचे रहो और विश्राम करो" के आदेश का बड़े मोदक ढंग से पालन किया।

श्रीमती युस्टिस और मैंने बहुत सोच-विचारकर एक कोने की मेज चुनी। यह द्वार से बहुत दूर न थी। श्री राकफेलर भी कुछ समय पश्चात् आ गये। परस्पर अभिवादन के पश्चात्, मैंने उनसे कहा, "मैं आपको अपनी संस्था के एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण सदस्य से मिलाऊँगा।" मैंने धीरे से सीटी दी और बडी ने भीतर आकर उनका स्वागत किया और वह शान्तिपूर्वक मेज के नीचे बैठ गई।

धारीदार पुराने पतलूनोंवाला व्यक्ति चक्कर मारने लगा किन्तु श्री राकफेलर जैसे अपने महान् पोषक के सम्मुख कुछ बोलने का वह साहस न कर सका। वह यह देखकर कि बडी ने कोई उपद्रव नहीं मचाया, बहुत प्रसन्न हुआ और एकदम पानी-पानी हो गया। जब हम चलने लगे तो,

उसने आकर बडी की बहुत प्रशंसा की और उसे थपथपाया भी ,तथा अत्यन्त सहृदयतापूर्वक बोला, "कृपया फिर आइए और बडी को भी साथ लाइए।"

मैंने दक्षिणी कैरोलिना के एक जलपान-गृह के एक परिचारक-प्रबन्धक को बहुत छकाया यद्यपि मेरी युक्ति बहुत अच्छी न थी। हम भोजन समाप्त करने के अनन्तर कुछ फल-मिष्टान्नादि खा रहे थे। इसी बीच वह आकर कहने लगा, कि भोजनगृह में कुत्तों के लिए प्रवेश निषिद्ध है।

"क्या आप किसी विकलांग व्यक्ति की वैसाखी छीननेवालों में से हैं ?" मैंने पूछा।

"कदापि नहीं" उसने उत्तर दिया।

"तो क्यों मेरी आँखों को निष्कासित करना चाहते हैं ?"

परन्तु उसने मेरी इस बात पर कोई ध्यान न दिया कि बडी ही मेरी आँखें थी।

उसके वाग्मितापूर्ण प्रतिवाद के शब्दों के उच्चारण से मैंने देख लिया कि यद्यपि वह धनिकों के उत्तरी प्रदेश में नौकरी कर रहा था, किन्तु वह था कोई पूर्वी व्यक्ति। फिर क्या था, मैंने अपने सारे शस्त्रास्त्रों का प्रयोग करने का निश्चय कर लिया।

मैंने टीनेसी स्वर में जोर से, जिससे भोजनगृह के सभी लोग सुन सकें, ठहर-ठहरकर कहना आरम्भ किया, "मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप अमरीकन हैं। आप दक्षिण के रहनेवाले कदापि नहीं हो सकते। यदि हों तो आपको दक्षिण का अतिथि-सत्कार तो भली भाँति विदित ही होगा।"

विजय के पीछे सदैव जान देनेवाले किसी सेनापति को यह देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई होती कि हमारे होटल-वेशधारी शत्रु के पाँव एकदम उखड़ गये और वह भाग खड़ा हुआ। बडी और मैं समरांगण के बीच विजयोल्लास में झूम रहे थे।

जब कभी बडी को "अपनी ओर से कुछ बोलकर" अपना समर्थन करना होता तो उसका व्यवहार सदैव इतना अच्छा होता कि उससे अवरुद्ध मार्ग भी प्रशस्त हो जाता। एक जलपान-गृह में एक परिचारक ने बड़े तपाक से घृणित टेक दुहराई, "कुत्तों के लिए प्रवेश निषिद्ध है।" तब मैंने उससे होटल के स्वामी को बुलाने के लिए कहा।

मैं होटल के स्वामी से लगभग बीस मिनट तक इस विषय पर बात करता रहा। मैंने उससे मनवा लिया कि एक प्रशिक्षित पथ-प्रदर्शक कुत्ते

से उसके होटल की शोभा ही बढ़ेगी। अन्त में उसने कहा, "ठीक है, ठीक है! आप अपने कुत्ते को भीतर ले आइए। मैं भी उसे देखना चाहूँगा।"

मैंने केवल मेजपोश उठा दिया। नीचे बडी अन्य बहुसंख्यक लोगों की अपेक्षा शान्त और सुस्थिर बैठी हुई थी। प्रबंधक इससे बहुत प्रभावित हुआ।

वह कह उठा, "मेरे अन्य अतिथि भी इतने संभ्रान्त हैं! कुतिया ऐसी!"

इसके पश्चात् हम वहाँ बहुधा गये, और प्रतिबार हमारा नय: मित्र मेज के पास आ जाता और मेजपोश उठाकर बडी को प्यार से थपथपाता।

मुझे एक बार का वृत्तान्त कदापि नहीं भूल सकता। हम अपने कुछ नये संपत्तिशाली परिचितों को अपने विद्यालय की बातों से अवगत कराने के लिए उनके साथ एक भोज में सम्मिलित होने वाले थे। एतदर्थ हम एक बहुत अच्छे होटल में पहुँचे। किन्तु हमें वहाँ बैठे अधिक समय न हुआ होगा कि होटल का स्वामी आ पहुँचा। उसने बड़ी विनम्रता से कहा कि यदि हम एक दूसरे कक्ष में चले जायँ तो बड़ा अच्छा हो।

वह बोला, "फ्रैंक महोदय! यदि आपको मेरे साथ सहयोग करने में कोई कष्ट न हो तो मैं आपके लिए एक पृथक् भोजन-गृह की व्यवस्था कर सकता हूँ। आपको उसके लिए कुछ और न देना पड़ेगा।"

इस पर मैंने बड़ा तहलका मचाया और उससे कहा, "यहाँ मैं दो वर्ष से खाने आता हूँ और कभी मुझे कुत्ते के विषय में ऐसी किसी कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ा।"

परन्तु उसका उत्तर सुनकर मैं बड़े आश्चर्य में पड़ गया। उसने कहा, "महोदय, मुझे अत्यंत खेद के साथ कहना पड़ता है कि अतिथिगण बडी के लिए नहीं आपत्ति कर रहे हैं, प्रत्युत उन्हें अन्धे व्यक्ति के साथ बैठने में आपत्ति है।"

इससे मैं सर्वथा अपदस्थ और पराजित-सा हो गया तथा गंभीरतापूर्वक सोचने लगा कि मैं धन एकत्र करने का भार बडी पर ही छोड़ दूँ और स्वयं पृथक् रहूँ। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि विभेद की भित्ति मेरी अपेक्षा उसके लिए अधिक सुकरता से गिर रही थी।

सेनोन्नायक के रूप में श्रीमती युस्टिस ने रेलगाड़ियों में हमारे कुत्तों के प्रवेश पाने के लिए छेड़े हुए महासमर में विजय पाने के लिए अत्यन्त श्लाघनीय योजना बनाई। उन्होंने महीनों अथक परिश्रम कर एक ऐसे प्रीतिभोज की व्यवस्था की जिसमें पेनसिलवेनिया रेलरोड के अध्यक्ष जेन-

रल एटरबरी भी संमिलित हो सकें, क्योंकि उस समय संयोगात् वे उधर आ रहे थे। स्वभावतः उस भोज में जीवन-ज्योति के बारे में अतिथियों ने पर्याप्त बातचीत की। उसमें उक्त जेनरल ने भी बड़े उत्साहवर्द्धक रूप से पर्याप्त अभिरुचि ली।

भोजन के पश्चात् जब वे बडी को थपथपा रहे थे, जो कहवा पर से जाते समय उनके मार्ग में खड़ी थी, तो श्रीमती युस्टिस भी उसमें संमिलित हो गईं।

श्रीमती युस्टिस ने कहा, "जेनरल! आप जानते हैं कि इन विचित्र कार्य संपादित करनेवाले कुत्तों को अपने स्वामी की पूरी-पूरी सेवा करने के लिए चौबीसों घण्टे उनके साथ रहना अत्यावश्यक है।"

कथा के प्रवाह में यहाँ मैं एक बात का उल्लेख कर देना आवश्यक समझता हूँ कि हमारी अध्यक्षा बहुत चतुर महिला थीं। इतनी तेज थीं कि १६२६ के आपत्काल के ठीक पूर्व, जिस समय वाल स्ट्रीट के पूँजीपति मूल भंडारों (Stockes) को खरीद रहे थे, वे उन्हें बेच रही थीं और उसमें मिले हुए रुपये को सरकारी ऋणपत्रों में लगा रही थीं। परन्तु अवसर आने पर वे अपनी भावभंगिमा ऐसी बना लेतीं कि असहाय अबलापन की प्रतिमूर्ति सी दीखने लगतीं। जब वे अपनी समस्याएँ किसी महान् शक्तिशाली उद्योग-पति के पास ले जातीं तो कदाचित् ही कोई ऐसा उद्योगपति रहा हो जो उनकी बात टाल सका हो और अपना दृष्टिकोण ऊपर रख सका हो।

भोले-भाले मन की प्रतिमूर्ति बनी हुई वे कहती गईं, "रेलवालों के कारण हमारा नाकोंदम है, वे हमारे कुत्तों को सामानवाले डब्बे में फेंक देते हैं।"

बडी ने भी इसका पूर्ण समर्थन करते हुए "सामानवाले डब्बों का" नाम सुनते ही अपना सिर ऊपर उठा दिया और धीरे से गुर्राई।

निष्कर्ष में उन्होंने कहा, "मेरी समझ में ही नहीं आता कि इस संबंध में रेल-अधिकारियों का सहयोग प्राप्त करने के लिए क्या किया जाय जिससे नेत्रहीन रेल-यात्रियों के नितांत आवश्यक सहायक और सद्व्यवहार-पटु साथी सामानों के गट्ठर की नाईं नहीं प्रत्युत, यात्रियों की भाँति चल सकें। क्या आप इस संबंध में हमारी कुछ सहायता कर सकते हैं?"

पाँच दिनों के पश्चात् उनके इस प्रश्न का उत्तर मिला। उन्होंने फोन पर मुझे आह्लादकर संवाद सुनाया, "मारिस! अब तुम पेनसिलवेनिया

की रेलों पर बडी के साथ एक मनुष्य की भाँति यात्रा कर सकते हो; तुम्हें अब चोर की भाँति चलने की आवश्यकता नहीं।"

जेनरल एटरबरी ने फोन द्वारा सूचित किया था कि उन्होंने एक आदेश निकाल दिया है कि पेनसिलवेनिया की समस्त रेलों पर जीवन-ज्योति के कुत्तों को निर्विघ्न यात्रा करने दिया जाय। यह पहली रेल थी जिसने अधिकृत रूप से हमारे कुत्तों को यात्रा करने की अनुमति प्रदान की थी।

इसके ठीक दूसरे दिन बडी और मैं न्यूयार्क जाने के लिए बड़े गर्व तथा उल्लास के साथ पेनसिलवेनिया रेल पर सवार हो गये। जैसे ही मैं बैठ गया तथा बडी निश्चिततापूर्वक पथ से हटकर मेरे बैठने के स्थान के नीचे सुस्थ हुई, वैसे ही प्रचालक आकर बोला, "आप लोगों को उतरना पड़ेगा। मुझे खेद है कि यहाँ कुत्तों के लिए प्रवेश निषिद्ध है।"

"किन्तु क्या आपको इसको वितथा करनेवाला आदेश विदित नहीं?"

"तनिक भी नहीं। मैं स्वयं आपकी कुछ सहायता करना चाहता हूँ, किन्तु मेरे हाथ बँधे हुए हैं।"

"क्या आप कृपाकर अपने हाथों को पर्याप्त काल के लिए बंधन-विनिर्मुक्त कर इस पर प्रतिबंध रक्खेंगे?"

"अच्छी बात। हो सकता है, आपकी बात ठीक निकले।" उसने बड़े मृदुल ढंग से कहा।

वह स्टेशन-मास्टर के पास गया। उसने कदाचित् जेनरल के कार्यालय से कुछ पूछा। जैसे ही गाड़ी स्टेशन से चलने को हुई, वैसे ही वह बड़े उल्लास में लौट पड़ा और मेरी पीठ थपथपाता हुआ बोला, "बेटा! दूसरी बार यदि तुम्हारी इच्छा हो तो यहाँ घोड़ा लेकर आना।"

पेनसिलवेनिया की रेलों पर मार्ग प्रशस्त होते ही, अन्य पूर्वी रेलों के अधिकारी भी हमारी बात सुनने लगे। हम इतना ही तो चाहते थे। शेष स्वयं बडी कर ले सकती थी।

वंडरबिल्ट परिवारवालों की सहायता से बडी को और मुझे न्यूयार्क सेंट्रल रेल के प्रबन्धकर्त्ताओं से उनके २३० पार्क एवेन्यू के कार्यालय में मिलने की अनुमति प्राप्त हो गई। जब मैं वहाँ पहुँचा तो मुझे यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि उन्होंने मुझसे यह न कहा कि आप गाड़ी पर चढ़कर दिखायें कि आपके जीवन-ज्योति के कुत्ते से अन्य यात्रियों को कष्ट नहीं होता। मैं बडी के साथ होटल से उतना लम्बा मार्ग तय कर उनके

कार्यालय में पहुँचा था। इसी से वे पूर्ण आश्वस्त हो चुके थे। वे अब केवल इतना ही देखना चाहते थे कि न्यूयार्क की भीड़-भाड़ में बडी कैसे काम करती है।

एक ने कहा, "मैं केवल इतना ही देखना चाहूँगा कि वह उस जन-संकुल स्थान में सचमुच आपका सफल पथ-प्रदर्शन कर लेती है और आपके प्राणों पर कोई आँच नहीं आने पाती।"

उनके कहने पर मैं एलीवेटर से नीचे उतरा, बयालीसवीं सड़क पार की, फिफ्थ एवेन्यू पहुँचा, वहाँ से लेक्सिंगटन एवेन्यू गया और तदनंतर उनके कार्यालय में लौट आया। वे कुछ दूर पीछे से मेरा अनुसरण करते थे।

इसमें केवल एक अप्रिय घटना अवश्य हो गई। हमारे साथ चलनेवाला इस रेल का एक उपाध्यक्ष यह देखने में कि बडी उमड़ती हुई पटरी की भीड़-भाड़ में कितनी बुद्धिमत्तापूर्वक मेरा उन्नयन कर रही है और किस प्रकार मोड़ों पर रुक कर तब तक प्रतीक्षा करती है जब तक कि उसे यह नहीं विदित हो जाता कि अब कारों से भरी सड़क को पार करना निरापद हो गया है, इतना दत्त-चित्त हो गया कि वह एक मोटर को दाहिनी ओर मुड़ती हुई न देख सका और इस कारण टकरा जाने से उसकी पीठ में कुछ चोट आ गई। इस पार्ष्णिभाग के आक्रमण के होते हुए भी हमें वह अनुमति मिल ही गई जिसकी हमने न्यूयार्क सेंट्रल रेलवे स्टेशन से आशा की थी।

इतनी सफलता मिलने के पश्चात् भी हमें मध्य पश्चिमी रेल के एक उच्चाधिकारी से मिलने की व्यवस्था करने में महीनों लग गये। तब हम क्लीवलैंड के वान स्वीरिंजेन के बंधुओं में से एक से मले। वह बडी पर इतना रीझ गया कि उसने उसके कार्यों को देखने के लिए अपनी कंपनी से सम्बन्ध रखनेवाली आठ रेलवे लाइनों के अध्यक्षों और उपाध्यक्षों को आमंत्रित किया। बडी को जैसे पता चल गया था कि उसके इस कार्य-प्रदर्शन का बहुत महत्त्व होगा, अतएव उसने अभूतपूर्व कुशलता दिखलाई। हमारा तीर ठीक बैठा। कार्यालय छोड़ते के पहले हमें यह अनुमति मिल गई कि पथ-प्रदर्शक कुत्ते अपने स्वामी के साथ उन सभी आठ रेलों पर बेखटके यात्रा कर सकते हैं। बडी अपने से तथा विभेदकर नियम को वितथा करनेवाले व्यक्तियों से बड़ी प्रसन्न थी। उनके संबन्ध में कोई भी यह सोच सकता था कि वे चतुर उच्च पदस्थ व्यक्ति केवल छोटे बच्चे थे। जब बडी

ने सब के पास घूमकर उनके प्रति सम्मान प्रकट किया तो वे सभी अत्यधिक प्रसन्न हुये।

बडी के कारण ही पहले-पहल एक रेल पर निर्विघ्न यात्रा करने का मार्ग प्रशस्त हुआ था। अन्त में भी उसी की सहायता से न्यूयार्क, न्यूहैवेन तथा हार्टफर्ड में भी बेखटके यात्रा करने का मार्ग खुल गया। हमें कनेक्टीकट के एक मोहक परिवार के यहाँ धन्यवादाशंसा के लिए आयोजित एक प्रीतिभोज में उपस्थित होने का निमंत्रण मिला था। मेरी दाहिनी ओर एक अत्यन्त प्रभविष्णु युवती बैठी हुई थी। उसने जीवन-ज्योति की कहानी में अत्यधिक अभिरुचि दिखाई और भोजन के पश्चात् बडी पर एकदम मुमंत्रग्ध-सी हो गई।

मैंने उससे अपने संघर्ष की कुछ चर्चा की और यह बताया कि बडी और एतादृश प्राणियों के रेलों पर यात्रा करने के लिए अनुमति लेने में हमें बड़ा परिश्रम करना पड़ा था। जब उसे यह विदित हुआ कि उपर्युक्त रेल अब भी इन विस्मयावह जीवों का बहिष्कार कर रही थी तो वह बहुत कुपित हो उठी।

उसने क्रोध और घृणा भरे शब्दों में कहा, "आपके कहने का तात्पर्य यह है कि बडी आपके साथ नहीं यात्रा कर सकती! उसे आपसे सात-आठ डब्बे दूर बाँधकर रक्खा जाता है, जैसे उससे किसी को छूत लग जाने का भय हो!"

मैंने उसको विश्वास दिलाते हुए उत्तर दिया, "इससे भी अधिक कष्टकर बात है। हम नेत्रहीन व्यक्ति स्थानीय और बदलनेवाली गाड़ियों का प्रयोग भी नहीं कर पाते, यद्यपि उनसे हमें बड़ा लाभ हो सकता है। इसका कारण यह है कि छोटी-छोटी दूरियों को मिलानेवाली इन गाड़ियों पर सामान वाला डिब्बा होता ही नहीं जहाँ हमारे कुत्ते रक्खे जा सकें।"

पहली जनवरी को हमें एक ऐसी सूचना प्राप्त हुई जिससे सचमुच नववर्षारंभ हुआ। हमें बताया गया था कि न्यूयार्क, न्यूहैवेन तथा हार्टफर्ड की रेलों में हमारे प्रति करुणा दिखाते हुए पथप्रदर्शक कुत्तों को अपने मार्ग पर बेखटके यात्रा करने के लिए अनुमति दे दी। मैंने इन रेलों के अपने एक मित्र सार्वजनिक संपर्काधिकारी से पूछा कि अन्ततः यह हुआ कैसे।

उसने उत्तर दिया, "तुम्हें उस धन्यवादाशंसा के प्रीतिभोज में जो एक बड़ी अच्छी युवती मिली थी उसकी स्मृति है? वह इन रेलों के एक प्रमुख कार्यकारी की लड़की है। मुझे विदित नहीं कि वह बडी से इतनी अधिक

प्रभावित हो गई थी या तुमसे, किन्तु उसने दिसम्बर भर अपने पिता को चैन न लेने दिया। वह पचीस दिसम्बर तक उन्हें तंग करती रही और अन्त में कहा, "मैं इस घर में क्रिसमस के भोज में एक ग्रास भी न खाऊँगी, यदि आप मुझे यह वचन नहीं दे देते कि उन आश्चर्यकर कुत्तों के साथ मनुष्य का सा बर्ताव किया जायगा, जैसा कि वे सचमुच मनुष्य जैसे हैं भी !"

१९३५ में छः वर्ष के कठिन परिश्रम के पश्चात् उन्नायक बडी ने अपने प्रधान कार्य का एक महत्त्वपूर्ण भाग पूरा कर लिया था। जो अपना संघर्ष स्वयं नहीं चला सकते थे उनके लिए उसने विभेदकर भावनाओं तथा अनुचित प्रतिबन्धों को दूर कर नया मार्ग प्रशस्त कर दिया था। अधिकांशतः बडी को धन्यवाद है, उसके कारण अब आत्म-निर्भर नेत्रहीन व्यक्ति समस्त अमरीका में रेलों पर चाहे जहाँ यात्रा कर सकते थे।

अध्याय ९

हमारे कार्यालय में आवेदन-पत्रों की संख्या उत्तरोत्तर बढ़ती जा रही थी, किन्तु कुत्तों की बड़ी कमी थी। श्रीमती युस्टिस, हम्फ्री, कुमारी हचिंसन तथा मैं यह मानते थे कि प्रत्येक नेत्रहीन व्यक्ति को कुत्ता नहीं दिया जा सकता। कुछ व्यक्ति उनके प्रयोग से लाभ उठा सकते हैं और कुछ ऐसे भी होते हैं जो उनसे लाभ नहीं उठा सकते। हम यह चाहते थे कि ये दुर्लभ और अनर्घ्य पथ-प्रदर्शक उन स्त्री-पुरुषों को दिये जायँ जो उनकी सहायता से शारीरिक, मानसिक तथा आर्थिक रूप से आत्म-निर्भर हो सकें। जैक के ये वाक्य हमारे विचारों को बिलकुल ठीक ठीक अभिव्यक्त करते थे, "प्रशिक्षकों और कुत्तों को चुनने की इस सारी प्रक्रिया में हमें इतना व्यय उठाना पड़ता है तथा उसे कार्यान्वित करने में इतनी सावधानी बरतनी पड़ती है कि यदि हमारा प्रशिक्षित कुत्ता किसी के पास जाकर केवल पालतू जीव का काम करने लगे तो हमें समझना चाहिए कि हमारा सारा कार्य व्यर्थ गया।"

"या यदि वह किसी कृशगात भिक्षुक का केवल सहारा रह जाय, तो भी" मैंने उसमें और जोड़ दिया।

हमारी अध्यक्षा ने कहा, "मारिस ! उचित चुनाव करना बडी का और तुम्हारा काम है।" अतएव हमारा कार्य पुनः पूर्ववत् आरंभ हो गया और हम आवेदकों की खूब जाँच-पड़ताल करने लगे।

इसमें हम सबसे पहले एक विक्रेता का कार्य करनेवाले व्यक्ति से मिले। वह एक स्थानीय समाचार-पत्र के विज्ञापन विभाग में काम करता था और वह अपने कार्य में आगे भी लगा रह सकता था यदि उसमें एक बात न होती—वह अपनी नेत्रहीनता का आनंद ले रहा था ! दूसरे

उसकी परिचर्या करते, वह बाहर काम करने भी न जाता था, बैठे, बैठे केवल रेडियो सुना करता और उसके लड़के सदैव उसकी सेवा में लगे रहते।

इस व्यक्ति के संबंध में बहुत सोच-विचारकर कार्य करने की आवश्यकता थी। यद्यपि यह व्यक्ति पथ-प्रदर्शक कुत्ते से लाभ उठा सकता था और उसे एक कुत्ता दिया भी जा सकता था, किन्तु इसके पहले यह अत्यन्त आवश्यक था कि वह अपना दृष्टिकोण बदल दे।

जब मैंने उससे पूछा कि आप क्या करना चाहते हैं, तो उसने बड़े अस्पष्ट ढंग से कहा, "मैं अपने परिवार के लिए जीविकोपर्जन करूँगा तथा अंधों की सहायता के लिए अपना जीवन समर्पित कर दूँगा।" परन्तु इस बात का ढंग हमें कुछ प्रभावित न कर सका।

यद्यपि उसके उत्तर में बहुत उच्च विचार सन्निहित थे, परन्तु उसकी इच्छा-शक्ति की दुर्बलता का हमें पर्याप्त प्रमाण मिल चुका था। अतएव उसकी उपर्युक्त बात से मुझे कुछ क्रोध आ गया।

मैंने पूछा, "आपने कभी कोई ऐसा कार्य किया भी है जिससे रंच-मात्र भी यह प्रकट हो सके कि आप सचमुच किसी काम के लिए अपना जीवन समर्पित कर सकते हैं ? आप अपने विक्रयकार्य में लगे रह सकते थे और उससे आपको प्रति सप्ताह आय भी होती रहती। इस प्रयत्न के कारण आप अपने वर्ग में एक विशिष्ट व्यक्ति समझे जाते। इस प्रकार आत्म-मर्यादा की रक्षा करते हुए आप अंधों की सबसे अधिक सहायता करते। परन्तु आप इस प्रकार अकर्मण्य हो गये हैं जैसे आपको पक्षाघात हो गया हो। आप प्रायः सर्वथा परावलंबी हो गये हैं, अपनी बेचारी पत्नी से जीविकोपार्जन करवाते हैं जिसे वैसे ही घर पर बहुत काम रहता है।"

वह भी क्रुद्ध हो गया; परन्तु समय ने यह सिद्ध कर दिया कि मेरी बातों की इस चोट ने उसके लिए उपचार का काम किया जिसकी उसे बड़ी आवश्यकता थी।

कुछ सप्ताह के पश्चात् प्रशिक्षण के लिए मारिस टाउन में उसकी भर्ती हो गई। अपनी शिक्षा समाप्त करने के अनंतर उसने मुझसे एक बात कही जिसे मैं जीवन-पर्यन्त कभी न भूलूँगा। उसने कहा, "आप जानते हैं, जब आप मेरे घर से चले आये तो पाँच दिनों तक मैं ईश्वर से यही प्रार्थना करता रहा कि आपका कभी भला न हो क्योंकि आप मुझे महा नीच और अति साधारण, सर्वथा निरर्थक व्यक्ति प्रतीत हुए

थे। छठें दिनकी-रात को अत्यन्त गहरी नींद सोने के पश्चात् मैं उठा और अपनी पत्नी को कुछ गुदगुदाकर बोला, "अरे! आज मुझे प्रतीत हुआ है कि उस व्यक्ति ने जो कुछ कहा था वह यथार्थ है।"

उपर्युक्त व्यक्ति को अपने कुत्ते के विषय में, अपने पारिवारिक जीवन में और अपनी जीवन-वृत्ति में पर्याप्त सफलता मिली और वह जीवन भर सुखी रहा। उसके मर्यादापूर्ण स्वावलंवन के दृष्टान्त से उस क्षेत्र के अन्य अंधों को प्रचुर प्रेरणा मिलती रही, यद्यपि उसने अंधों की सहायता के लिए विशेष रूप से अपना जीवन समर्पित किया था।

बडी और मैं फिर एक दूसरे व्यक्ति से मिले। यह अपने विद्यालय में बड़ा गंभीर तथा दार्शनिक विचार का व्यक्ति था, किन्तु जीवन में पूर्ण असफल था। वह अपनी कुर्सी पर बैठा बैठा अपने लिए सदैव बहुत दुःखी रहता। इस प्रकार वह स्थूलकाय और आलसी हो गया। वह सदैव अपने को "दुःखी" कहा करता। मुझसे जहाँ तक हो सका, उसकी ये बातें सुनता रहा; किन्तु जब न रहा गया तो मैं भी फूट पड़ा।

मैं बोला, "जब मुझसे कोई यह कहता है कि मैं 'दुःखी' हूँ तो मुझे लगता है कि यह उसकी केवल 'मानसिक विकृति है।' नेत्रहीनता केवल एक कमी है। प्रत्येक अच्छे दौड़नेवाले घोड़े में कोई न कोई कमी अवश्य होती है, किन्तु यदि उसमें शक्ति होती है तो वह अवश्य जीत जाता है।"

मैंने प्रश्न किया, "संसार में कौन ऐसा व्यक्ति है जिसमें कोई न कोई कमी न हो? कुछ लोग नेत्रों से रहित होते हैं और कुछ लोग उत्साह और साहस से। परन्तु उत्साह और साहस का अभाव नेत्राभाव से कहीं अधिक शोचनीय होता है।"

तब मैंने उसका हाथ लेकर बडी की लगाम पर रख दिया और उसे उसका अनुभव करवाने के लिए बडी को उसका थोड़ी दूर तक उन्नयन करने दिया।

वहाँ से चलते समय मैं सोच रहा था कि वह अपनी सहायता करने के लिए कुछ न करेगा, किन्तु कुछ सप्ताह पश्चात् वह मारिस टाउन पहुँचा। यद्यपि उसकी कार्यारंभ करने की इच्छा-शक्ति समाप्त-सी हो चुकी थी, परन्तु मुझे विदित हुआ था कि उसकी माँ बड़ी दृढ़ इच्छा-शक्तिवाली महिला थी और वही उसकी आँखों का कार्य करती थी। उसने अपने उन्मीलित नयनों से देखा था कि मैं किस प्रकार अपना हैट लगाकर तथा कोट पहनकर

अपनी सहायता स्वयं करता हुआ एकदम निरापद रूप से उसके यहाँ से चला आया।

बड़ी और मैंने देखा कि जिन आवेदकों के यहाँ हम गये उनमें बहु-संख्यक अपने नेत्र तो खो ही चुके थे, साथ ही अपनी कार्यारम्भ करने की इच्छा-शक्ति भी खो दी थी। ऐसे सभी व्यक्तियों की भर्त्सना न की जा सकती थी, क्योंकि उनमें बहुतों को और भी बहुसंख्यक कष्ट थे जिन्हें असह्य भी कहा जा सकता है। अतएव उनका कष्ट समझाने से कुछ कम हो सकता था और मैं यही बहुधा करता भी था। मैं उनसे कहता, "आपका अंधापन आपके हाथ में दिये हुए ताश के पत्तों के सदृश है। आपको वे दे दिये गये हैं; आपको उनसे खेलना पड़ेगा। आप उन्हें लौटा नहीं सकते; आप उन्हें ठीक से लगाकर, अपना चित्त समाहित कर उनसे अधिक से अधिक लाभ उठाने की चेष्टा कर सकते हैं।"

एक युवती माँ जिस प्रकार अपनी परिस्थितियों का सामना कर रही थी उसे देखकर मेरा हृदय उसके प्रति प्रशंसा की भावना से भर उठा। उसकी परिस्थितियाँ सचमुच नितान्त कष्टकर और करुण थीं।

वह विधवा थी। उसके छः वर्ष का एक पुत्र था। अपने पुत्र के साथ उसे वस्तुतः बड़ी जटिल समस्या का सामना करना पड़ता था। बालक अपने मित्रों के साथ खेलना-कूदना चाहता, कभी तैरने जाना चाहता। परन्तु उसे अपनी माँ का उन्नयन करने के लिए बंधन में रहना पड़ता।

वह अपने भोले-भाले स्वर में माँ से पूछता, "माँ! तुम अंधी क्यों हो जिससे मुझे सदैव तुम्हारा पथ-प्रदर्शन करना पड़ता है?" उसके ये शब्द माँ के हृदय में तीर-से चुभते।

यह एक ऐसा दृष्टान्त था जिसे हमारी सहायता की वस्तुतः महती अपेक्षा थी। वह हमारे यहाँ चार सप्ताह के प्रशिक्षण के लिए आई और अपना पाठ्यक्रम समाप्त कर एक सुन्दर शुभ्र 'लोटी' नाम की कुतिया के साथ घर लौट गई।

एक वर्ष पश्चात् मैं पुनः उससे मिला और देखा कि उसके घर में प्रसन्नता बरस-सी रही थी। उसमें और उसके पुत्र में अब आशातीत प्रेम था।

जानी के विद्यालय के खुलने के एक दिन पूर्व प्रातःकाल वह उसे भर्ती के लिए वहाँ लिवा गई। तब उसने अपने पुत्र से कहा कि "चलो, आज की छुट्टी को नगर में बिताया जाय। वहाँ कहीं खाना खाया जाय और चलचित्र देखा जाय।"

अलबिना मर्फी के सौजन्य से

नेत्रवान् और नेत्रहीन दोनों समान रूप से दैनिक जीवन के कार्यों में भाग ले रहे हैं—यहाँ ये लोग क्रिसमस के अवसर पर प्रवेश-द्वार के लिए मालाएँ मोल ले रहे हैं।

अलबिना मर्फी के सौजन्य से

मॉरिस बहुधा गृहस्थी के लिए सामान भी मोल लेने जाते हैं।

आयरिश वीट के सौजन्य से

बडी तृतीय मॉरिस के परिवार का अभिन्न अंग बन गई है। वे और उनकी पत्नी लुई दोनों ही उसे बहुत प्यार करते हैं।

बडी तृतीय की कर्त्तव्यनिष्ठा, बुद्धिमत्ता तथा आज्ञाकारिता ऐसी है कि उसे मुक्तकंठ से दृष्टिदात्री संस्था का वास्तविक प्रतिनिधि कहा जा सकता है।

आयरिश वीट के सौजन्य से

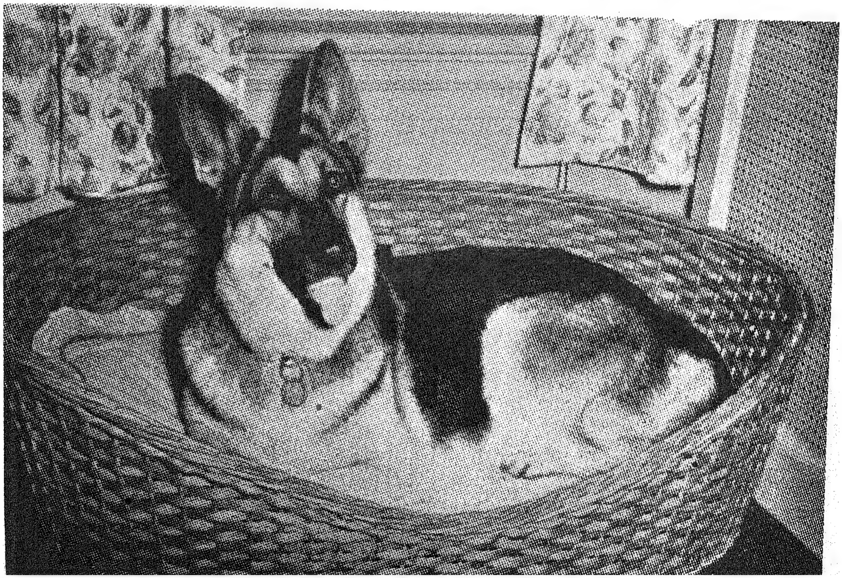

जब वे बस पर चढ़ने लगे तो बालक ने कहा, "माँ! अब तुम एकदम अन्य बालकों की माताओं की भाँति हो। अब मैं तुम्हें नहीं ले चल रहा हूँ, तुम मुझे ले चल रही हो। क्या तुम्हें स्मरण है कि इधर बहुत दिनों से तुमने कभी मुझे अपना पथ-प्रदर्शन करने के लिए नहीं कहा।"

उसने गर्व से फूलते हुए फिर कहा, "और माँ! अन्य लड़के भी चाहते हैं कि उनके भी लोटी की भाँति कोई कुतिया होती।"

परन्तु हमारे सभी आवेदक इस युवती माँ की भाँति हमारी सहायता के पूर्ण योग्य न थे। उत्तरी कैरोलिना के नेत्रहीनों के आयुक्तक ने मुझसे एक पर्वतारोही से मिलने के लिए कहा। गोली लगने के कारण उसकी आँखें जाती रही थीं। वह ऐशविले से लगभग पचास मील दूर रहता था। हम लोग कार से, जितनी दूर हो सका, गये। तब मेरा मोटर-चालक एक अत्यन्त ढालू पर्वत पर आधा चढ़कर रुक गया और बोला, "वह एक घर दिखाई पड़ रहा है; किन्तु मैं कह नहीं सकता कि आपकी कुतिया उस ढाल पर उन झाड़ियों से होकर वहाँ तक आपको पहुँचा पायेगी अथवा नहीं।"

"यदि आखोंवाले व्यक्ति वहाँ पहुँच सकते हैं, तो बडी भी मुझे वहाँ अवश्य पहुँचा देगी" मैंने कहा, और उसने पहुँचा भी दिया।

वहाँ एक कमरे में एक चूल्हा जल रहा था और उसके चारों ओर पाँच-छः व्यक्ति तथा वह अंधा बैठा हुआ था। वहाँ प्रच्छदहीन एक मेज भी रक्खी हुई थी। मैंने कुछ काल बड़ी उमंग में अन्धे से और उन व्यक्तियों से बातचीत की। फिर घर की स्वामिनी मुझसे बोली, "आप दक्षिण के रहनेवाले हैं?"

मैंने उत्तर दिया, "जी हाँ, मैं नैशविले का रहनेवाला हूँ।"

"यदि हम लोग जानते होते, तो हाथ दिखाकर हमने आपको यहाँ आने का एक इससे अत्यधिक सरल मार्ग बताया होता, किन्तु हमने सोचा कि कोई अमेरिकन ढंग से आवश्यकता से अधिक स्वतंत्रता का प्रयोग कर रहा है।" उसने कुछ कुतूहलपूर्वक कहा।

उसके कथन का अनुमोदन करते हुए हम सब हँस पड़े।

तदनन्तर एक बड़े बर्तन में भरकर ग्राम्य-मदिरा लाई गई और चारों ओर से हमारी कुतिया को देखने के लिए पड़ोसियों की भीड़ एकत्र होने लगी, क्योंकि वे सोचते थे कि नगर की जिन जन-संकुल सड़कों पर चलने में हम इतना डरते हैं उन पर यह कुतिया किसी अंधे व्यक्ति का पथ-प्रदर्शन कैसे करती है।

मैंने अपने विद्यालय को जो परिवृति (Report) दी वह इस प्रकार थी, "मेरी सम्मति यह है कि इस व्यक्ति को भर्ती न किया जाय। किसी झगड़े में गोली लग जाने के कारण आँखें जाती रहीं। वह घोड़ों और पशुओं का व्यापार कर जीविकोपार्जन करता है। उसे अपनी जीवन-वृत्ति बदलने के लिए कोई महत्त्वाकांक्षा नहीं है। यदि पथ-प्रदर्शक कुत्ते के लिए कोई पर्याप्त मूल्य देगा तो वह उसे भी बेच दे सकता है। वस्तुतः उसे कुत्ते की आवश्यकता नहीं है। उसे तो पहाड़ी बकरा चाहिए!"

कभी-कभी हमें यह संवाद मिल रहा था कि हम लोगों के विद्यालय का एक प्रशिक्षित व्यक्ति अपनी कुतिया के प्रति दुर्व्यवहार कर रहा था। वह उसकी उपेक्षा कर रहा था। परन्तु हम ऐसे कुत्सित कार्य को आगे न होने देना चाहते थे। अमानुषिक होने के अतिरिक्त उससे हमारे विद्यालय तथा पथ-प्रदर्शक कुत्तों के स्वामियों पर धब्बा लगने की संभावना थी। अतएव बडी और मैंने इन सभी परिवृतियों का पर्यन्वेषण करना आरम्भ किया।

इनमें से एक सूचना एक तगड़े अधेड़ व्यक्ति के सम्बन्ध में मिली थी। वह पश्चिमी वर्जिनिया के एक खनिज नगर का निवासी था। वह पूरा देव-जैसा छः फुट चार इंच लम्बा था, उसकी तौल लगभग २६० पौण्ड थी। उसकी बौनी पत्नी केवल पाँच फुट लम्बी थी। परन्तु इसमें चरबी एक छटाँक भी न थी। अब जो शिकायत मिली थी उसका कारण हमारी समझ में आ गया। वह इतनी तेजी से 'घाँव घाँव' बोलता था कि लोग समझते थे कि वह अपनी कुतिया सैण्डी को क्रोध में बिगड़ रहा है। उसने छोटे जीवों के प्रति अपने देव-जैसे दृष्टिकोण में परिवर्तन करने की कभी आवश्यकता न समझी थी। वह अपने भारी भरकमपन का अपने आस-पास प्रभाव डालना चाहता, किन्तु इससे वह अपने को दूसरों की आँखों में केवल मूर्ख ही सिद्ध करता। यह दर्शकों और आस-पासवालों को कुछ अप्रिय अवश्य लगता था, किन्तु सैंडी पर उसका कोई प्रभाव न पड़ता था। वह उसके भौंडे आचार-व्यवहार की अभ्यस्त हो गई थी और जान गई थी कि उसके साथ कैसे रहना चाहिए था।

मैंने इस सम्बन्ध में उससे बातें कीं और उसे यह जताने की चेष्टा की कि वह कभी कोई ऐसा कार्य न करे जिससे किसी को इस बात की तनिक भी आशंका होने की सम्भावना हो कि वह अपनी कुतिया के साथ दुर्व्यवहार करता है।

यह बात उसके लिए एकदम नई थी, और वह इस पर कुछ गरमा-सा रहा था, तब तक उसकी हाव-भाववाली नाटी पत्नी आ पहुँची और मुझे द्वार के पास ले गई। फिर वह अत्यन्त नम्र और मृदुल स्वर में बोली, "फ्रैंक महोदय, आप किसी बात की तनिक भी चिन्ता न कीजिए। यदि वे कभी कुत्ते के साथ कोई दुर्व्यवहार करेंगे, तो मैं उसके लिए तहलका मचा दूँगी!"

फिर मुझे कुत्ते के सम्बन्ध में कोई चिन्ता न रह गई और मैं लौट पड़ा। मुझे उस शक्ति की छोटी प्रतिमा के कथन से विदित हो गया था कि वह अपने वचनों का अवश्य पालन करेगी।

दुर्व्यवहार संबंधी किंवदन्तियों के फैलने का एक कारण था। जब कोई अंधा अपने पथ-प्रदर्शक कुत्ते को कुछ सिखाने की चेष्टा करता होता तो देखनेवाले यह समझते कि वह उसके साथ दुर्व्यवहार कर रहा है। प्रत्येक बुद्धिमान् कुत्ते को एक मेधावी बालक की भाँति अनुशासन सिखाने की आवश्यकता पड़ती ही है। जैसे कोई काम ठीक करने पर तुरन्त उसकी प्रशंसा द्वारा उसे प्रोत्साहन देने की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार जब वह जान-बूझकर आज्ञोल्लंघन करता है तो उसे तत्क्षण डाँटने-फटकारने वा कभी कभी लगाम कसने की भी आवश्यकता पड़ती है। जब कोई प्रशिक्षार्थी अपने कुत्ते को लेकर घर लौटता है तो उसे अपने कुत्ते को पूर्णतया अपने अनुरूप बनाने में छः सप्ताह से कई महीने तक लग जाते हैं। यह एक विवाह की भाँति होता है; नये दंपति को एक दूसरे को समझने की आवश्यकता पड़ती है।

हमें कुत्तों के प्रति दुर्व्यवहार के दृष्टान्त बहुत कम मिले। ऐसा केवल दो बार हुआ। किन्तु इन दृष्टान्तों में भी हमने देखा कि कुत्तों के स्वामी, करुणा की अपेक्षा करनेवाले दुष्ट व्यक्ति, अपनी मानसिक शक्ति ही खो बैठे थे और उस अवस्था में जैसा प्रायः होता है, वे अपनी प्रिय वस्तुओं से ही विद्वेष करने लगे थे।

हमें बहुसंख्यक ऐसे व्यक्ति मिले जो अपने पथ-प्रदर्शक चौपाये से उतना लाभ न उठा रहे थे जितनी उसमें क्षमता थी। एक व्यक्ति अपने कुत्ते के साथ प्रतिदिन प्रातःकाल तीन मील दूर अपने पशुओं के चारे के केन्द्र पर जाता था और वहाँ काम करता था। पथ-प्रदर्शक कुतिया उसे एक राजपथ से वहाँ ले जाती थी; परन्तु मार्ग में कई बड़े जोखिम के चतुष्पथ पड़ते थे। किन्तु वहाँ पहुँचते ही वह उसकी मेज के नीचे जा

बैठती थी और उसके पश्चात् उसे केवल संध्या समय घर लिवा जाने के समय वहाँ से निकलती। यदि उसे बाल कटवाने को किसी नाई के पास जाना होता या रुपया जमा करने के लिए बैंक जाने की आवश्यकता पड़ती तो वह किसी आँखोंवाले व्यक्ति को अपने साथ लिवा जाता।

मैंने उससे पूछा, "आप इन स्थानों में अपनी कुतिया पेगी को साथ क्यों नहीं ले जाते ?"

"पुलिस का अध्यक्ष कहता है कि इसमें जोखिम है।" उसने उत्तर दिया। मारिस टाउन में उसमें जो आत्म-विश्वास भरा गया था, वह उसकी विधान-भीरुता के कारण जाता रहा था। अब वह अपनी कुतिया से जितना लाभ उठाना चाहिए था उसका केवल दस प्रतिशत लाभ पा रहा था।

मैंने पुलिस के अध्यक्ष से बातचीत की तथा बडी और मैंने उसके सामने अपने कार्यों का प्रदर्शन भी किया। तदनंतर पेगी के स्वामी ने मुझे लिखा, "पुलिस का अध्यक्ष मुझसे कहता है कि अब मुझे नगर में इधर-उधर जाने के लिए अपने मित्रों से सहायता लेने की आवश्यकता नहीं। वह कहता है कि बडी के कार्यों को देखकर उसे विश्वास हो गया है कि दो पाओं-वाले की अपेक्षा एक चौपाया मेरे लिए अधिक उत्तम रहेगा।"

इण्डियाना प्रदेश में हमने देखा कि एक पत्नी अपने अंधे पति की कुतिया की कार्य-क्षमता का विनाश कर रही थी, केवल इस कारण कि वह उससे जलती थी। अपनी कुतिया डाना के आने के प्रथम, उसे छुट्टी रहा करती थी; परन्तु उसके मिल जाने से वह गंजी-मोजा आदि का विक्रय-कर्त्ता बन गया था और काफी रुपया पैदा कर रहा था। जब उसने विवाह किया था, तो वह अंधा ही था। उसकी पत्नी उसे उसी रूप में बहुत चाहती थी। वह उसे सदैव अपना दास रखना चाहती थी। वह पति के जीवन में सदैव सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण बनी रहना चाहती थी।

यह स्त्री डाना को अपने घर में न घुसने देती। "मैं उस कुतिया को अपने घर का फर्श कदापि नहीं गंदा करने दे सकती।" इस प्रकार अपने स्वामी से पृथक् हो जाने के कारण कुतिया यह समझने लगी थी कि उसका स्वामी अब उसे प्यार नहीं करता। अपने स्वामी के प्रति उसका भी प्रेम घट गया, और उसकी सेवा करने की उमंग भी कम हो गई।

मुझे यह बताते हुए बड़ा खेद होता है कि मैं इस परिस्थिति में कुछ न कर सका। इस त्रयी में ऐसी भयंकर भावनात्मक गड़बड़ी आ गई थी

कि मैं सर्वथा निरुपाय हो गया। मेरे लौटने के समय तीनों की समस्या ज्यों की त्यों बनी हुई थी। अंधे व्यक्ति की पत्नी "अन्य स्त्री" की आलोचना किये बिना चूकती न थी। वह डाना का इतना तिरस्कार करने लगी कि उसके पति को विवश होकर अपनी कुतिया को जीवन-ज्योति में भेज देना पड़ा। इस अंतरा में एक मनोवैज्ञानिक उसकी पत्नी के भावनात्मक संतुलन को ठीक करने में लगा रहा।

बडी और मैं अपने केवल उन्हीं स्नातकों के पास न जाते जिन्हें कोई कठिनाई थी। जिस किसी नगर में हम भाषण के लिए जाते तो उस भाग के अपने पुराने विद्यार्थियों से भी मिलते। इन भेंटों से मुझे आश्चर्यजनक रूप से प्रेरणा मिलती, तथा जीवन-ज्योति के कार्यों में मेरा विश्वास द्विगुणित हो उठता। मैं अपने प्रत्येक स्नातक से भली भाँति परिचित था। उनमें से अधिकांश से मैं अपने विद्यालय में भर्ती के पहले ही मिला होता तथा जब वे कुत्ते लेकर अपने घर लौटते तो उसके पश्चात् भी मिलता। उनके प्रशिक्षण के द्वारा उनमें हमें जो परिवर्तन दिखाई पड़ता उससे मेरे हर्ष की सीमा न रहती। उनमें से प्रत्येक व्यक्ति का कष्ट और निरुपायावस्था से प्रच्छन्न व्यक्तित्व आत्मनिर्भरता पा जाने के कारण ऐसा फूट पड़ा था जैसे कोई नया कुसुम विकच हो गया हो।

मध्य पश्चिमी भाग के एक नगर में बडी और मैं एनी से मिला। वह तीन वर्ष से लेडी नामक कुतिया का उपयोग कर रही थी। हम उसके यहाँ घण्टों रहे। जब मैं चलने लगा तो मैंने उससे अपने इस संलाप के कुछ वृत्तान्त को अपने पास लिख भेजने के लिए कहा। पथ-प्रदर्शक कुतिया के कारण उसके जीवन में जो महान् परिवर्तन हो गया था, उसके बारे में उसने जो कुछ लिखा था वह नीचे दिया जा रहा है।

"जब मेरे पिता का देहान्त हो गया तो परिवार का व्यय सँभालने के लिए मेरी माता और बड़ी बहन को काम करने जाना पड़ा। मेरा अल्पवयस्क भाई और मैं एक विशिष्ट विद्यालय में पढ़ने के लिए भेजी गई। सभी लोग मेरा बड़ा ध्यान रखते, किन्तु जब कोई मुझे 'अंधी लड़की' कहकर संबोधित करता तो यह बात मेरे हृदय में तीर-सी चुभती। ऐसा बहुधा हुआ ही करता। जब मुझे गलबंद वा पैसोंवाली थैली की आवश्यकता पड़ती और मैं उसे दूकान पर खरीदने जाती, तो वहाँ का अधिलेखक (क्लार्क) मेरे साथी से बात करता और कहता, "क्या

आप सोचते हैं कि यह इन्हें पसंद होगा ? क्या इनके मस्तिष्क में जो वस्तु है वह यही है ? लोग मेरे साथ ऐसा व्यवहार करते जैसे मैं अंधी होने के साथ साथ मूक होऊँ और मेरा मस्तिष्क भी दुर्बल हो। मैं सदैव यही सोचती थी कि मेरा पूर्ण अस्तित्व है ही नहीं, क्योंकि अन्य व्यक्तियों के साथ मेरा जो कुछ संलाप या संपर्क होता उसका माध्यम एक तीसरा व्यक्ति होता।

"जब आप बडी के साथ हमारे विद्यालय में आये थे तभी से मैं जीवन-ज्योति से एक कुत्ता प्राप्त करने की इच्छुक हो गई थी। मैंने उसके कौशेय केशों पर अपना हाथ फेरा था और यह स्वप्न देखने लगी थी कि जब अंत में मुझे भी बडी की भाँति कोई सुन्दर प्राणी मेरा उन्नयन करने के लिए मिल जायगा तो मैं भी बहुत-से काम करूँगी और मनमाना इधर-उधर घूमूँगी।

"लेडी के पाने के अनंतर मुझे विदित हुआ कि जितना मैंने स्वप्न देखा था मुझे उससे कहीं अधिक लाभ हुआ। मैं कल्पना ही न कर सकी थी कि वह मेरे लिए क्या क्या कर सकती है।

"एक व्यक्ति के रूप में अपने नये स्वरूप का भान मुझे सर्वप्रथम तब हुआ जब एक महिला ने मुझे फोन किया। एक दिन प्रातःकाल एक स्थानीय दूकान की एक विक्रयकर्त्री ने मुझे मेरा नाम लेकर अभिहित किया। उसने कहा, 'कुमारी एनी, हमारे यहाँ अभी अभी वस्त्रों से लदा एक जलयान पहुँचा है। उनमें से एक पहनावा हलके बादामी रंग का अत्यन्त भड़कीला है और मैं सोचती हूँ वह लेडी को बहुत अच्छा लगेगा!'

"बिना किसी माध्यम के दूसरों के साथ मेरे संलाप और संपर्क का यही प्रारम्भ था। अब मोटरों पर यात्रा करते समय लोग मुझसे मेरी कुतिया का नाम, अवस्था, मैंने उसे कैसे पाया तथा बहुसंख्यक बातें पूछते और इससे मुझे उस खलनेवाली शान्ति का सामना न करना पड़ता जो पहले मुझे कारावास की नाईं लगती। भोजन के समय परिवार के अन्य व्यक्तियों की भाँति मैं भी बातचीत करती और लोगों को अपना दिन भर का वृत्तान्त बताती। मैं यह वृत्तान्त अपने ढंग से बताती, क्योंकि सभी बातें केवल मेरे साथ हुई रहतीं—उसमें मेरे साथ साथ रहनेवाले किसी व्यक्ति की व्यर्थ चर्चा न होती।

"मैंने एक वाणिज्य-विद्यालय में टाइप तथा आलेख वाणी (Dicta-

phone) सीखने के लिए अपनी भर्ती करवा ली। मैंने यह कार्य करने का स्वयं निश्चय किया था और आवश्यक व्यवस्था करने के लिए लेडी के साथ अकेली गई। जब मैंने अपनी यह शिक्षा समाप्त कर ली तो मैं उसको साथ लेकर काम ढूँढ़ने लगी। किसी मालिक को पहले यह समझाने में कठिनाई पड़ती थी कि मैं कोई काम कर भी सकती हूँ। अन्त में श्री रोगर्स नामक एक छोटे उद्योगपति से मैंने कहा, 'यदि आप मुझे काम करने का अवसर दें तो मैं एक मास तक बिना वेतन काम करूँगी। उसके पश्चात् यदि मेरा काम संतोषजनक न पाया जायगा तो मैं चली जाऊँगी।'

"वह महीना बीतने के अनन्तर यदि मैंने चाहा भी होता तो काम न छोड़ पाती। श्री रोगर्स प्रतिदिन मेरी मेज के पास आते, मुझसे बात करने के लिए नहीं, अपितु लेडी से कुशल-मंगल करने के लिए। वह सचमुच बहुत अच्छी थी। वह सदैव मेरी मेज के नीचे पड़ी रहती और किसी के मार्ग में न पड़ती। किन्तु वह श्री रोगर्स के लिए बाहर निकलती, अपनी पूँछ हिलाती तथा 'नमस्कार' करने के लिए अपना पंजा निकाल देती।

"इससे मुझे पहली बार वास्तविक सुस्थता प्राप्त हुई। क्या आप समझ सकते हैं कि किसी लड़की के लिए इसका क्या अर्थ होता है—बेखटके अपनी इच्छानुसार चाहे जहाँ जाना, चाहे जहाँ आना, चुपचाप अपना जीविकोपार्जन करना तथा परिवार के व्यय सँभालने में हाथ बटाना। अब मैं परिवार की विकलांग तथा परमुखापेक्षी सदस्या न रह गई थी। अब मैं आदान-प्रदान दोनों कर रही थी।

"मैंने पहली बार अपने उपार्जित रुपये से क्रिसमस मनाया तथा नर-नारियों से खचाखच भरी दूकानों में घूमने का आनन्द लिया। लेडी बड़े ढंग से इधर-उधर कतराकर मुझे बाजार करनेवालों की भीड़ से होकर चारों ओर ले जाती। बहुधा वह क्या करती कि अपनी नाक से लोगों के पावों को छू देती और वे स्वयं उसके लिए मार्ग दे देते। एक बाजार करनेवाली महिला ने अपने साथी से जो कुछ कहा उसे सुनकर मुझे बड़ा आनन्द आया। उसने कहा, 'उस कुत्तेवाली सुकेशी महिला के पीछे-पीछे चलो। उन्हें मार्ग मिलता जाता है। इसी रीति से आज दिन में मैंने इतना काम कर लिया है। यह देखो मेरी तालिका, इसमें प्रायः सभी कार्य समाप्त हो चुके हैं!'

"मैंने अपने परिवार के सभी सदस्यों के लिए, अपनी शक्ति के अनुसार बहुत अच्छे-अच्छे उपहार मोल लिये। उन्हें देखकर लोगों के आश्चर्य का ठिकाना न रहा, क्योंकि इस वर्ष मेरे भाई और बहन के लिए उपहारों का चुनाव करने के निमित्त मेरी माँ नहीं गई थी और न माँ के लिए उपहार चुनने में मुझे बहन से ही सहायता लेनी पड़ी थी। मैंने सारी वस्तुएँ स्वयं मोल ली थीं। मैंने सर्वोत्तम उपहार लेडी को दिये, क्योंकि उसने मेरा अत्यधिक उपकार किया था और उसी के कारण मेरे जीवन में आकाश-पाताल का अन्तर हो गया था।

"मेरे कार्यालय के एक तरुण व्यक्ति ने मुझसे विवाह का प्रस्ताव भी कर दिया। जब मैंने उससे पूछा कि वह एक अंधी लड़की से क्यों विवाह करना चाहता है तो उसने उत्तर दिया, 'तुम में और किसी अन्य व्यक्ति में क्या अन्तर है? तुम सब कहीं जा सकती हो और सब कार्य कर सकती हो। इसके अतिरिक्त मैं लेडी को भी अपनी बनाना चाहता हूँ और यह तभी हो सकता है जब मैं तुम दोनों को ही अपनी बना लूँ!' इस प्रकार अब मैं भी एक अन्य लड़की की भाँति विवाहित हूँ और मेरे जीवन का एक नया अध्याय आरम्भ हो चुका है।"

जब मैं उसका पत्र समाप्त कर चुका तो अपने हृदय में सोचने लगा, "यह है जीवन-ज्योति के विचारों की सजीव प्रतिमा। एक एनी ही मानव का वह दृष्टान्त है जिसमें आत्म-मर्यादा और आत्म-निर्भरता है तथा जिसमें जीवन के संघर्षों का साहसपूर्वक एवं उससे भी बढ़कर प्रसन्नतापूर्वक सामना करने की क्षमता है।"

सबसे खेदजनक बात तो यह है कि जब नेत्रहीनता आती है तो बहु-संख्यक परिपक्व और बुद्धिमान् स्त्री-पुरुष अपने कार्यों को जारी नहीं रख पाते जिससे संसार को उस ज्ञान का लाभ नहीं हो पाता जिसकी उसे महती आवश्यकता होती है। नेत्रों के चले जाने का अर्थ यह नहीं होता कि किसी व्यक्ति की मानसिक शक्ति भी नष्ट हो गई।

हेनरी सैंडर्स ने इस तथ्य का पता लगाया था। वह बड़े प्रतिभाशाली विद्युत्-मयशास्त्री (इञ्जीनियर) हैं। चौवन वर्ष की अवस्था में उनकी आँखें जाती रही थीं। तब उन्होंने यह समझ लिया था कि जिस कम्पनी में वह काम करते थे उसमें उनका अब कोई उपयोग नहीं रह गया है और वह अपना सब कामधाम छोड़कर जीवन से विरक्त होकर एकदम अकर्मण्य हो बैठे। दो वर्ष तक उन्होंने कुछ न किया; किन्तु अकर्मण्यता,

असमर्थता और सबसे दूर रहने के कारण वे इतना खिन्न रहने लगे कि अन्त में उन्हें अपने को भयंकर अधोगति से बचाने के लिए कुछ करने का निश्चय करना पड़ा।

उन्होंने कुछ हिचकते हुए जीवन-ज्योति में आवेदन-पत्र भेजा, क्योंकि पचपन वर्ष की अवस्था के पश्चात् केवल बहुत थोड़े-से व्यक्तियों में इतनी शक्ति रह जाती है कि वे वहाँ के प्रशिक्षण के कठिन श्रम के कष्ट को सह सकें। सौभाग्यवश उनका स्वास्थ्य बहुत अच्छा था और वे अपने उद्देश्य की प्राप्ति में सफल हुए। वे नया साहस लेकर अपने कुत्ते पाल के साथ घर लौटे।

सैण्डर्स और उनकी पत्नी ने एक सुविख्यात विश्वविद्यालय के पास अपना घर बनाया। उनमें उत्साह और उमंग थी ही, अपने कुत्ते के साथ घोर परिश्रम करते हुए वे शीघ्र ही सुविख्यात हो गये। वे मयशास्त्र विभाग के अध्यापकों से मिले। उन्होंने उनकी योग्यता से प्रभावित होकर उन्हें विद्युत्-मयशास्त्र के विद्यार्थियों के अध्यापन के लिए आमंत्रित किया। इस कार्य के पा जाने के अनन्तर वे वहाँ के एक बाँध के निर्माण में परामर्शदाता मयशास्त्री नियुक्त हो गये। यह बाँध पश्चिम के बहुत बड़े बाँधों में से है।

अपने कुत्ते के कारण यह मेधावी व्यक्ति पुनः मानसिक कार्य करने लगा। पाल के कारण उसके स्वामी को अपना सारा जीवन लगाकर प्राप्त किये विशिष्ट ज्ञान का उपयोग करने का पुनः सुअवसर मिल गया और वह अपनी वृत्ति के अन्य व्यक्तियों की भाँति हो गया। जब मैंने पिछली बार विश्वविद्यालय क्लब के भोजन-गृह में हेनरी सैण्डर्स से उनके विश्वविद्यालय के बारे में बातचीत की तो उन्होंने अपने कुत्ते को थपथपाते हुए कहा, "पाल के कारण मेरे जीवन के ये वर्ष सबसे अधिक आह्लाद-कर रहे हैं।"

जब मैं अल साइमंस के यहाँ, उनका और उनके कुत्ते जिम का कुशल-क्षेम लेने गया तो मुझे यह देखकर असीम हर्ष हुआ कि किस प्रकार कुछ साहसी पुरुष अपने को कुछ मोड़कर अपनी परिस्थितियों के पूर्ण स्वामी बन बैठते हैं जिनमें बहुसंख्यक व्यक्ति एकदम नैराश्य-नद में बह जाते हैं।

जिम के बिना अल का जीवन नितान्त करुण रहा होता। वे कोयले के थोक-विक्रय की एक संस्था के प्रबन्धक थे। बावन वर्ष की अवस्था में

एक दुर्घटना में वे नेत्रहीन हो गये थे। श्रीमती साइमंस भी एक रुग्ण महिला थीं। बाजार के कार्य, घर की सफाई और भोजन बनाने का कार्य भी अल को ही करना पड़ता था।

इतनी विपत्ति में दूसरे बहुत से दूसरे लोग अपने जीवन का अंत ही समझ लेते और प्राय: सर्वथा अकर्मण्य हो जाते। फिर किसी संबंधी के यहाँ अथवा दातव्य के सहारे किसी भाँति दिन काटते; या यदि आर्थिक स्थिति अच्छी होती तो अपने अन्तिम दिनों में परिचर्या के लिए किसी को नौकर रख लेते।

परन्तु अल ने ऐसा न किया। उन्होंने जिम को प्राप्त किया और पुन: काम पर जुट गये। नागरिक कार्यों में उन्हें विशेष अभिरुचि थी। उन्होंने कई समितियों में सक्रिय भाग लिया और सालवेशन आरमी तथा रेडक्रास का बड़े तन मन से काम करने लगे। अन्त में वे नगर के मेयर चुने गये और छ: वर्ष तक उक्त पद पर रहे।

अल कदापि इतना कार्य न कर पाये होते यदि उनमें कार्य-शक्ति, आदर्श-प्रेम तथा निष्ठा न रही होती। परन्तु अपने सहायक पथ-प्रदर्शक कुत्ते के बिना भी उन्हें सफलता न मिली होती और उसी के कारण उनका जीवन इतना कर्मठ हो सका।

बहुसंख्यक स्नातक नि:संदेह अपने कुत्तों से मुग्ध हो जाते हैं और अत्यन्त आरम्भिक अवस्था में ही उनमें प्रेम की नींव पड़ जाती है। जीवन, ज्योति की एक परिचारिका ने एक बार सूचना दी कि एक विद्यार्थी अपने बिस्तर पर नहीं सोता। एक दिन काफी रात गये मैं ऊपर गया और सोचा कि उस विद्यार्थी के साथ सिगरेट पीऊँगा और उससे उसकी अभिरुचि की कुछ इधर-उधर की बात-चीत करूँगा तथा पता लगाऊँगा कि बात क्या है।

जब मैंने द्वार खटखटाया और भीतर आने की अनुमति माँगी, तो उसके उत्तर के स्वर से मुझे विदित हुआ कि वह फर्श पर है।

"अरे! तुम फर्श पर क्या कर रहे हो?" मैंने पूछा।

उसने कहा, "मुझे यह आदेश दिया गया था कि सिलवर को बिस्तर पर न सुलाया जाय, अतएव मैं उसके साथ फर्श पर ही सो रहा हूँ।"

दक्षिणी कैरोलिना के एक लड़के की आँखें आखेट में जाती रही थीं। वह अपनी कुतिया से इतना प्रेम करने लगा था कि वह सोचने लगा था कि अंधा होने से कुछ लाभ भी है। जब मैं कोलंबिया में गया तो उससे भी मिलने का प्रयत्न किया। जब मैंने फोन किया तो उसकी माँ ने कहा कि

वह अपने विद्यालय में है और मुझे वहाँ के फोन की संख्या बता दी। मुझे कुछ तमाशा-सा लगा कि वह अपने विद्यालय में न था जहाँ उसकी माँ ने मुझे बताया था। दूसरे दिन प्रातःकाल उससे फोन पर मेरी जो बातचीत हुई वह और भी मजेदार थी।

उसने कहा, "अच्छा मैं आपको सारी बातें बताता हूँ। कल का दिन इतना सुहावना था कि मेरी इच्छा मछली मारने जाने की हुई। तब मैंने बरी को लगाम लगाई और वहाँ चल पड़ा जैसे मैं पहले किया करता था जब मेरी आँखें थीं। मारिस ! आप इस बात का अनुमान नहीं लगा सकते कि बरी के साथ मछली मारने में कितना आनन्द आता है। वह जब मुझे नहीं मिली थी, उस समय मैं अपने कुछ साथियों को लेकर नदी में मछली मारने जाता तो लगभग छः बजते ही वे चिल्लाने लगते, 'अरे घर चलने के लिए तैयार हो जाओ; देखो अँधेरा हो रहा है।'

"परन्तु अब हमारे लिए ऐसी कोई बात नहीं है। बरी अपने घर का मार्ग जानती है। उसके लिए अँधेरे अथवा प्रकाश का कोई महत्त्व नहीं। मछलियों की भी मुझे चिंता नहीं रहती। जब सूर्य अस्ताचल की ओर जाता है, तो बरी मेरी ओर मुँहकर घुरघुराने लगती है मानो कह रही हो, 'क्या यह जीवन का क्रम नहीं है !' यदि हम चाहें तो आधी रात तक इसी भाँति मछली मारते रह सकते हैं।"

अधिकांश पति वा पत्नियाँ, जैसी आशा की ही जा सकती है, अपने जीवन-संगी की पुनः प्राप्त आत्म-निर्भरता के लिए कुत्ते के बड़े आभारी होते हैं और उसे बहुत प्यार करते हैं, क्योंकि इसका निमित्त वही कुत्ता होता है।

मैं एक दिन अपने एक अंधे मित्र की दूकान में रुक गया। वे सिगार बेचने का कारबार करते हैं। उन्होंने मुझे बताया कि अब मेरा पता बदल गया है।

उन्होंने कहा, "पाल के कारण हमें पुराना घर छोड़ देना पड़ा।"

मैंने आश्चर्य से पूछा, "क्यों, उससे पड़ोसियों को कुछ कष्ट हो रहा था ?"

उन्होंने उत्तर दिया, "नहीं। वह मेरे और मेरी पत्नी के बीच बिस्तर पर आकर सो जाती और उसका ढंग कुछ ऐसा था कि हम उसे इस कार्य से रोक न सके।"

तब तक उन्होंने एक ग्राहक का काम किया और फिर बोलें, "हमारे

बिस्तर पर तीन लोगों के कारण बड़ी भीड़ हो जाती थी और हमारे कमरे में दूसरी चारपाई आ न सकती थी इसलिए......।" फिर उन्होंने सिगरेटों का बंडल अपने ग्राहक को देकर मुझसे कहा,......"हमने एक बड़ा कमरा लिया। अब पाल और मैं प्रमुख शयनकक्ष में सोते हैं तथा मेरी पत्नी पार्श्वस्थ कमरे में। हम तीनों को यह व्यवस्था बहुत पसंद है।"

मैं वर्जिनिया में एक व्यक्ति से मिलने गया। मैंने देखा, उसका कुत्ता एक सामंत की भाँति रह रहा था। उसका चीफ नामक कुत्ता कालीन या परदों का कुछ भी ध्यान न रखता। जब मैंने बिस्तर पर बैठने का प्रयत्न किया तो उसने सारी शय्या रौंद डाली, मेरा कान चबाने लगा और सारे कार्य ऐसे किये जिससे उसे देखकर मुझे घृणा होने लगी। हम जितने कुत्ते देखते उनमें वह सबसे अधिक बिगड़ा हुआ था। मैंने उस कुत्ते को बिगाड़ डालने के लिए उसके स्वामी को बहुत डाट बताई।

उसने कहा, "फ्रैंक महोदय! यहाँ से लगभग २०० गज की दूरी पर एक छोटी नदी है। चीफ के मेरे घर आने के पश्चात् मेरा द्विवर्षीय प्रपौत्र बाबी मेरे यहाँ आया। जब उसकी माँ ऊपर थी तो वह अकस्मात् नदी में जा गिरा। गिरते समय उसका मुँह नीचे की ओर था। चीफ नदी में कूद पड़ा और छोटे बच्चे की पतलून पकड़कर उसे किनारे खींच लाया। इस प्रकार इस कुत्ते ने मेरे प्रपौत्र के प्राण बचाये।"

अपनी बात पर और जोर देने के लिए वह कुछ क्षण रुका रहा और फिर उपसंहार में बोला, "फ्रैंक महोदय! यह कुत्ता क्या करता है क्या नहीं, आपको इसकी चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं।"

अब उसकी बात मेरी समझ में पूरी पूरी आ गई थी। वस्तुतः मुझे अपनी यात्राओं में ऐसे कुत्ते मिले जिन्होंने बड़े श्लाघनीय कार्य किये थे। उनके विषय में मैं कभी कभी सोचता कि जब वे जीवन-ज्योति से स्नातक होकर निकलते हैं तो क्यों न उनमें से प्रत्येक को जीवन-रक्षा-कार्य-पटुता के लिए एक पदक प्रदान किया जाय।

एक कुत्ते का सबसे अधिक कितना सम्मान किया जा सकता है, इसका एक बड़ा मर्मस्पर्शी दृष्टान्त मुझे तब मिला था जब मैं फास्टर नामक एक व्यक्ति से मिलने गया। मैं इसके संबंध में यही कह सकता हूँ कि वह बहुत उन्नति कर रहा था। छः वर्ष पहले मैं मारिस टाउन में उसकी भर्ती के लिए, उसके आवेदन के संबंध में, उसके घर गया था तो जब मैं बरसाती के फर्श पर चलने लगा था तो उसमें विशृंखल ढंग से लगे हुए

लकड़ी के पल्ले चरमरा रहे थे, घर अत्यन्त पुराना हो चुका था और उसकी भीतरी फर्श बिलकुल ऊबड़-खाबड़ था।

किन्तु आज जब हम उसके घर की ओर बढ़ रहे थे तो मेरे मोटर-चालक ने मुझे बताया कि प्राचीर और बँगले पर रँगाई हो चुकी है और बरसाती की भी भली भाँति मरम्मत कर दी गई है। हाँ, घर के भीतर के संबंध में मैं यह कह सकता हूँ कि वह पर्वतीय ढंग का था। उनके रहनेवाले कमरे में एक शीतक (Refrigrator) था तथा रसोई में एक बिस्तर लगा हुआ था। किन्तु सर्वत्र नये नये विद्युत् के सामान लगाये जा चुके थे तथा घर से स्वच्छता और टटकेपन की गंध आ रही थी।

फास्टर बाहर गया हुआ था, किन्तु उसकी माँ ने मुझे अग्र-लिखित कथा सुनाई : "जब पति के साथ मेरा विवाह हुआ तो मेरी एक संपन्न भाभी ने मुझे एक अत्यन्त सुन्दर रजत कटोरा प्रदान किया। परन्तु हम लोगों की आय तथा जीवनस्तर इतना साधारण था कि हमारे लिए वह प्रायः निरर्थक था। किन्तु चाँदी का वह कटोरा था बहुत सुन्दर। मैंने उसे सावधानी से लपेटकर अपने कमरे के सबसे ऊपरी ताख पर रख दिया। जब जीवन में कठिनाइयाँ उपस्थित होने पर मुझे आत्मिक शान्ति के लिए सौन्दर्य की आवश्यकता होती तो मैं उसे निकालती, बड़े प्रेम से उस पर पालिश करती और फिर उसे रख देती।"

तदनंतर उसके पुत्र की आँखें जाती रहीं। दिन भर वह अपने कमरे में कुर्सी पर बैठा बैठा इधर से उधर झूला झूलता रहता। दो वर्ष तक घर में एकदम अँधेरा-सा छाया रहा। तब कहीं फास्टर को अपना कुत्ता मिला। इस कुत्ते के कारण उसके पुत्र की अकर्मण्यता जाती रही। अब उसके जीवन में नये उल्लास और नई उमंग का संचार हो गया था। वह प्रति-दिन प्रातःकाल काम करने जाता और परिवार के भरण-पोषण के लिए अच्छी आय कर रहा था। उसके हृदय में प्रसन्नता का नया साम्राज्य हो गया था। अन्त में फास्टर की माँ ने मुझसे बताया कि उसने उस बहुमूल्य रजत कटोरे का उपयोग भी ढूँढ़ लिया। अब उसमें फास्टर का कुत्ता पानी पीता था।

———

अध्याय १०

बडी के और मेरे संबंधों में एक दु:ख की करुण बात यह थी कि अंधा होने के कारण मैं उसके किए हुए उपकारों का कभी पूरा पूरा अनुमान न लगा पाता था। वह प्रतिदिन बड़े विचित्र ढंग से मेरी सहायता करती, किन्तु जब तक कोई नेत्रवान व्यक्ति उसके उन श्लाघनीय कार्यों का वृत्तान्त मुझे न बताता, तब तक उनके संबंध में मुझे कुछ न विदित हो पाता। वह प्रतिदिन मुझे बड़े बड़े गह्वरों, घेरों तथा व्यवधानों के पास से बड़े सुकर और प्रशंसनीय ढंग से ले जाती, किन्तु मुझे उनके संबंध में तनिक भी पता न चल पाता था।

हाँ, कभी कभी मेरे हृदय को उसकी महती सेवाओं की झलक मिल जाती, और उसी से मैं उनके बारे में कुछ अनुमान लगा पाता, जैसे पानी पर तैरते हुए हिम-पर्वत के ऊपरी भाग को देखकर उसके कई गुना बड़े पानी में छिपे भागों का अनुमान कर लिया जाता है।

एक दिन प्रातःकाल परीक्षा के लिए मैंने बडी को बिना अपने साथ लिये अपना बेंत उठाया और एक परिचित भवन-पंक्ति की दूरी तय कर कोनेवाले औषधालय तक पहुँचने के लिए घर से निकल पड़ा। यद्यपि मैं उस मार्ग से प्रायः प्रतिदिन जाता था किन्तु उस दिन मुझे पथ में इतने खंभे और ऊपर लटकती हुई वृक्षों की शाखाएँ मिलीं जिनकी मैंने कभी कल्पना भी न की थी।

एक दूसरे अवसर की बात है। बस से उतर कर घर की ओर आते समय मैं एक मोड़ के पास पहुँचा और बडी को "बायें चलो" का आदेश दिया; परन्तु मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ, वह न मुड़ी। वह सीधे सड़क के पार जाना चाहती थी। कुत्तों का भूँकना तथा खेलनेवाले बालकों का

शब्द सुनकर मैंने अनुमान लगाया कि वह उनके पास से होकर जाना चाहती थी और अपने मित्रों को यह सूचित करना चाहती थी कि वह अपने काम पर से लौट आई है और शीघ्र ही आमोद कार्य में उनका साथ देगी।

परन्तु मैंने सोचा कि उसे मनमाना काम नहीं करने देना चाहिए, अतएव मैंने उसका अनुसरण करना अस्वीकार कर दिया और अनुशासन की कठोरता में उसे डालते हुए पुनः आदेश दिया "बायें चलो।" पुनः उसने आदेश का पालन न किया। इससे अत्यन्त विक्षुब्ध होकर मैंने उसे डाँटा। तब तक वह मेरे आदेश का पालन करती हुई एक झटके से बाईं ओर मुड़ी और मैं एक सड़क पर चलनेवाले वाष्प-शकट से टकरा गया। वह किसी एक्सप्रेस ट्रक की प्रतीक्षा में पटरी के मध्य में रुका हुआ था—और मैं भी उसी ओर चला था। बडी की बात इससे अधिक स्पष्ट न रही होती, यदि उसने कहा होता, "अच्छी बात! लो बहुत बुद्धिमान् बनते हो। तुम्हींने मुझे वैसा आदेश दिया। अब उसका फल भुगतो।"

एक दिन की बात है। संध्या होनेवाली थी। मैं काम पर से लौटते समय नैशविले में वेस्ट एंड एवेन्यू को पार कर रहा था। तब तक बडी ने अपनी गति बहुत धीमी कर दी और बहुत सँभाल-सँभालकर चलने लगी। मैं भी बहुत सोच-सोचकर उसका अनुसरण करने लगा, जैसे दिन में अनेक बार उसके इंगितों को समझ-समझकर काम करता थी। दूसरी ओर पहुँचकर मैंने सुना, कोई माँ सड़क के दूसरे किनारे पर अपने छोटे बच्चे को बता रही थी, "देखो डानी! वह कितनी चतुर कुतिया है। तुमने देखा, वह कितनी सावधानी से अपने स्वामी को उस खुली खाई तथा पानीवाली ट्रक के बीच से एक अत्यन्त संकीर्ण पथ से लिवा गई।"

"हाँ माँ! मैंने देखा। उनका वह कार्य उसे मुझे सरकस के काम जैसा लग रहा था। वे मुझे रस्सी पर चलनेवाले नट सरीखे लग रहे थे।"

वाशिंगटन की रहनेवाली लड़की ने अपनी कुतिया जून की प्रत्युत्पन्न-मति का एक बड़ा ही विस्मयकर वृत्तान्त बताया। वह ड्यूपाण्ट सरकिल के पास से होकर जा रही थी, अकस्मात् उसकी कुतिया जून, बिना कोई सूचना दिये, अपने पिछले पावों पर खड़ी हो गई तथा द्रुतगति से घूमकर धक्का देकर उसे गिरा दिया।

कुछ श्रमिक उसकी सहायता के लिए दौड़े और उसे बताया कि बात क्या थी। नगर से उस समय कोई क्रेन जा रहा था और उसकी कोई रस्सी टूट गई। उससे एक विशाल लौह हुक भूमि पर आ गिरा। वह लड़की उस प्राणान्तकारी हुक के एकदम मार्ग में पड़ गई थी। एक भी क्षण का विलम्ब होने पर उससे उसका सिर फट गया होता। यदि उसकी कुतिया ने अपनी सद्यःबुद्धि का प्रयोग कर बिजली सा काम न किया होता तो उस लड़की के घूमने का बड़े करुण रूप से अन्त हुआ होता।

यह बताने की आवश्यकता नहीं कि ऐसी असाधारण परिस्थितियों को सँभालने की किसी कुत्ते को किसी प्रशिक्षण-विद्यालय में शिक्षा नहीं दी जाती। मैं सोचता हूँ, इस बुद्धि का समुद्भव कुत्ते की अपने स्वामी की सहायता और रक्षा करने की भावना से होता है जिसका मूलाधार उनका पारस्परिक प्रेम होता है।

अरकनसास में मेरे दो अच्छे मित्र हैं—"पिंकसी" पिंकटरन तथा उनकी पत्नी नान्सी। मेरी आँखों में उनका दाम्पत्य-प्रेम सदैव आदर्श रहा था। अतएव एक दिन नान्सी के मुँह से यह सुनकर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ जब उसने अपने पति के सामने मुझसे कहा, "मारिस! आज हम लोगों का विवाह हुए लगभग पन्द्रह वर्ष हो गये किन्तु पिंकसी मेरे सम्मुख कभी इतने जोर से न बोले थे जितने जोर से कि आज!"

मैंने कहा, "अरे भाई! हो क्या गया?"

"मैंने रहनेवाले कमरे के फर्श पर तुरन्त मोम लगाई थी। वह, अभी सूख भी न पाई थी कि मुझे सामनेवाले द्वार के खुलने का शब्द सुनाई पड़ा। पिंकसी तथा जेरी घर लौट रहे थे। जेरी एकदम नये मोमोंवाले फर्श पर कूद पड़ा! मैं चिल्ला उठी, 'जेरी फर्श से दूर रह'।"

"इस पर पिंकसी तड़क उठे सावधान! उस कुत्ते को मत डाटो! उसने आज मेरे प्राण बचाए हैं!"

तब पिंकसी अपनी कहानी बताने लगे। "मैं कुछ मिनट पहले एक हिमाच्छादित चतुष्पथ को पार कर रहा था। अकस्मात् पाँव फिसल जाने के कारण भूमि पर गिर गया उस समय सामने से एक कार आ रही थी। पिच्छल पटरी पर उसके ब्रेक काम न दे रहे थे। अंधा होने के कारण मैं यह सब कुछ न देख पा रहा था। किन्तु जेरी भयावह परिस्थिति को भली भाँति देख रहा था। वह लगाम के सहारे मुझे मोटर के मार्ग से दूर घसीट ले गया।"

मैंने कहा, "पिंकसी, यह सुनकर तुम्हारी पत्नी ने क्या किया ?"

"वह तुरन्त मोम लगाये हुए फर्श पर बैठ गई और जेरी को अपने पास बुलाकर प्यार करते हुए रो पड़ी।"

प्राणान्तकारी एलीवेटर के खंभे, सड़कों पर दौड़नेवाले क्रेन तथा भयंकर जोखिमवाली हिमाच्छादित सड़कें कुछ ऐसे विचित्र दृष्टान्त हैं जहाँ हमारे कुत्ते हमारे प्राणों की रक्षा में महती सहायता करते हैं। उपवनों सरीखे जन-संकुल स्थान में तथा सड़क की भीड़-भाड़ में हमारे कुत्ते प्रतिदिन चमत्कार के अनेक कार्य दिखाते हैं। संगणना करने से विदित होता है कि युद्ध में जितने अमेरिकन नहीं मरते उससे अधिक मोटर-दुर्घटनाओं में अकाल काल-कवलित हो जाते हैं। यदि आँखोंवाले व्यक्ति यांत्रिक हत्यारों से अपने प्राण नहीं बचा सकते तो फिर अंधों के लिए तो उनसे आत्म-रक्षा करना और भी दुष्कर है। परन्तु जीवन-ज्योति के कुत्ते के कारण पासा पलट जाता है और हम दुर्घटनाओं में अपने प्राण गँवाने से बच जाते हैं।

न्यूयार्क की तेंतालीसवीं सड़क से मैं भली भाँति परिचित हूँ। पतझड़ की ऋतु का एक बार का वृत्तान्त है। मैं इस बात से एकदम आश्वस्त था कि मुझे इस सड़क का नितान्त अनुभव है ही। जैसे ही मार्ग के साफ होने का संकेत मिला, हम आगे बढ़ गये। परन्तु मुझे यह विदित न था कि समीपवर्ती सड़कों पर घूमकर आनेवाली गाड़ियों आदि के कारण आज तेंतालीसवीं सड़क पर अभूतपूर्व भीड़ थी।

हम आधी ही सड़क पार कर पाये होंगे कि हमें पता चला कि कारों की खचाखच भीड़ मोड़ का चक्कर चलाकर बिलकुल हमारे सामने से जा रही है। हमारा मार्ग एकदम अवरुद्ध था। तब तक संकेत बदल गया। मैं उस अभूतपूर्व भीड़ के ठीक मध्य में बुरी तरह फंस गया। मैं भयार्त हो उठा, किन्तु बडी नहीं घबराई। वह बड़े पटु ढँग से आगे बढ़ी और एक गाड़ी उसने निकल जाने दी तब वह थोड़ा पीछे हटी जिससे एक और कार निकल जाय। इस भय की अवस्था में मेरे मस्तिष्क में प्रशिक्षण-काल की आरम्भिक बातें चित्रवत् घूम गईं और मुझे "आपत्काल के लिए दी हुई शिक्षाएँ" स्मरण आने लगीं; "अपने कंधों को सीधा रक्खो, बाँहें ढीली रक्खो, चुपचाप कुत्ते का अनुसरण करो और उसे सड़क पार करने का अवसर दो।"

जब मैं सड़क पार कर चुका, तो मैंने घुटने टेककर बडी का खूब आलिंगन किया और जहाँ का तहाँ पड़ा रहा, क्योंकि मुझे तुरन्त चलने में दुर्बलता लग रही थी। तभी मोड़वाल पुलिस-कर्मचारी मेरे पास आकर बोला, "अरे भाई! मैं नहीं जानता था कि आप अंधे हैं। मैं सोच रहा था कि आप कुछ सनकी हैं!"

मैंने सोचा, चाहे किसी सनक की बात हो या न हो, बडी और मैंने उस भयंकर परिस्थिति में केवल अपने बाहु-बल से विजय पाई है। इससे मुझे एक सीख मिल गई। आपद्स्थलों में एकदम अपने कुत्ते का अनुसरण करना चाहिए। मैं जानता हूँ कि मैं बडी पर भरोसा कर सकता हूँ—आदमियों के बारे में मैं कुछ नहीं कह सकता।

तेईसवीं सड़क और थर्ड एवेन्यू को पार करते समय भी मुझे एक बार ऐसी ही परिस्थिति का सामना करना पड़ा था। उस समय ऊँची गाड़ियाँ और स्ट्रीट कारें भी वहाँ से जाती थीं। उनका समवेत तुमुल रव मोड़ पर ऐसा कोलाहल उत्पन्न कर देता था जिसे सुनकर ही पैदल चलनेवालों का हृदय काँप उठता था। मैंने पटरी से जैसे ही पाँव बढ़ाया होगा कि कोलाहल में एक कार के ब्रेक के भयंकर शब्द से मेरे कान के परदे फट-से गये। मैं सोचने लगा, "यह देखो!" काली-काली मोटी पंक्तियाँ मेरी आँखों के सामने से घूम गई! भाग्य ने मारिस फ्रैंक का पीछा किया!

मैं अचेत सा हो रहा था कि इसी बीच मुझे किसी का क्रोधावेश में तड़कना सुनाई पड़ा, "अरे मूर्ख मोटर-चालक! तुमने अभी उस महिला को दबा ही दिया था।"

वे भयंकर शब्द करनेवाले ब्रेक मेरे प्राण बचाने के लिए नहीं लगाए गये थे। तब मैंने देखा कि भाग्य मेरे पीछे नहीं पड़ा था, प्रत्युत मेरे साथ था और दूसरी श्लाघनीय बात यह थी कि बडी भी मेरे साथ थी।

लोगों ने मुझे बताया कि मेरे प्राण जाते-जाते बचे और मैं दबकर मरते मरते बचा; किन्तु बडी के साथ रहने से मुझे जीवन में एक खरोंच भी नहीं लगी।

एक बार मैं पीट्सबर्ग में था जब चाचा विली ने फोन पर संलाप आरम्भ करते हुए मुझसे सबसे पहले शब्द कहे, "ईश्वर को धन्यवाद दो।" उन्हें एक संवाद मिला था कि मैं एक पृष्ठगामी गाड़ी से टकरा गया और बीस गज तक घसिटने के कारण मुझे गहरी चोट आ गई।

कई बार मुझे अपनी मृत्यु का भी संवाद मिला। कभी-कभी मैं अपना

मार्ग भी भूल गया, मेरे कंधे में धक्का लगा, अँगूठा दब गया; किन्तु मैं भूमि पर कभी नहीं गिरा और न टकराया ही तथा मुझे अपनी कुतिया के पथ-प्रदर्शन के संबंध में कभी कोई शिकायत न रही। इस संबंध में बडी के आदर्श क्रिया-कलाप जीवन-ज्योति के भविष्य के लिए अत्यंत लाभकर रहे। यदि बडी के पथ-प्रदर्शन में मेरी मृत्यु हो गई होती, तो उससे मेरा तो अन्त हो ही गया होता, साथ ही अन्य अंधों के लिए भी आत्मनिभरता का द्वार सदा के लिए बंद हो जाता; क्योंकि बडी के प्रशस्त किये मार्ग का फिर कोई मोल न रह जाता और फिर उसके पश्चात् अन्य आश्चर्यजनक कुत्तों की पद्धति ही समाप्त हो जाती।

अध्याय ११

बडी की कीर्ति चतुर्दिक् फैल गई थी और वह एक प्रसिद्ध व्यक्ति बन गई थी। अब देश में यदि किसी व्यक्ति से हम मिलना चाहते तो वह हमारी प्रार्थना अस्वीकार न करता। कुछ विशिष्ट व्यक्तियों ने तो प्रयत्न कर हमसे परिचय करना चाहा। एक बार हम डेट्रायट में ठहरे हुए थे। उस समय अपराह्न के वहाँ के समाचारपत्र में हमारा एक बहुत बढ़िया छायाचित्र छपा और उसके साथ हमारा कुछ इतिवृत्त भी दिया गया था। दूसरे दिन हमें हेनरी फोर्ड का एक बहुत सुन्दर पत्र प्राप्त हुआ, "मैंने बडी के बारे में बहुधा पढ़ा है। यदि आप अपना कुछ समय दे सकें तो मुझे उससे मिलने में बड़ी प्रसन्नता होगी। क्या कल तीन बजे आना आपके लिए सुविधाजनक हो सकेगा? यदि यह संभव हो तो मैं अपनी कार कल आपको लिवाने के लिए आपके होटल पर भेजा दूँ?"

इस बड़े उद्योगपति ने हमारा हार्दिक स्वागत किया। वह हमें स्वयं अपने कार्यालय में लिवा गये। उन्होंने बडी से हाथ मिलाया और उसके कार्यों को बड़ी अभिरुचि से देखा। बडी ने भी सदैव की भाँति अपनी परिस्थितियों को पूरा-पूरा समझते हुए, अपने कार्य की आवश्यकता के अनुसार अपना रूप बना लिया। वह सीधे तनकर बैठ गई। उसने अपनी पीठ भी जर्मन सिपाही की भाँति सीधी कर ली। अपने सिर को भी सुस्त तथा सतर्क कर लिया। श्री फोर्ड ने हँसते हुए कहा, "वह ठीक हमारे एक उपाध्यक्ष की भाँति दिखाई पड़ रही है।"

तदनंतर उन्होंने हमें डीयरबार्न नामक अपना पुराना सुप्रसिद्ध ग्राम देखने चलने के लिए आमंत्रित किया। बडी की सहायता से मैंने सभी बातों का पूरा पूरा आनन्द लिया। जब हम किसी वास्तविक आवास के पास पहुँचते, तो वह मुझे द्वार पर ले जाती और सिटकिनी के पास अपनी

नाक कर देती जिससे मैं उसे सरलतापूर्वक ढूँढ़ लेता। एक पुराने वाद्य यंत्र की मधुर ध्वनि वायुमंडल में लहरा रही थी। बडी उसको सुन-सुनकर मुग्ध हो रही थी। वह अपना सिर घुमा-घुमाकर बड़े ध्यानपूर्वक उसका रसास्वादन कर रही थी, जैसे करुणा भरा यह श्रुति-सुखद स्वर उसे अपने पुराने दूर-स्थित स्विट्ज़रलैंड के वेवी नगर की स्मृति दिला रहा हो। श्री फोर्ड के यहाँ से विदा होने के पहले बडी का चित्र लिया गया। चित्र लेते समय वह बड़ी शान्ति से बैठी रही, मानो वह समझ रही थी कि तनिक भी हिलने-डुलने से चित्र बिगड़ जायगा।

एक अत्यन्त संभ्रान्त टिनेसीवासी व्यक्ति जोसेफ बर्न्स की सहायता से हम राष्ट्रपति कुलिज तथा उसके पश्चात् राष्ट्रपति हूवर से भी मिले। बर्न महोदय विधान-सभा के अध्यक्ष भी हो गए थे। राष्ट्रपति कुलिज तथा हूवर दोनों ही बडी के कार्यों से अत्यधिक प्रभावित हुए थे। प्रत्येक ने उसकी लगाम अपने हाथ में लेकर तथा उसे आदेश देकर व्हाइट हाउस के बरामदे में उसका परीक्षण किया था।

इन दोनों महान् व्यक्तियों ने अपने रूमाल भूमि पर गिरा दिये थे और तदनन्तर उन्हें उठा लाने के लिए बडी को आदेश दिया था। इस कार्य से उसने अवश्य सोचा होगा कि राष्ट्रपति के कार्य-भार में कुछ ऐसी बात होती है जिससे उस पद पर आसीन व्यक्ति कुछ असावधान-प्रवृत्ति के हो जाते हैं। जब मुझे यह स्मृति आई कि मेरे पिछली बार इस कार्य के विनि-दर्शन के समय बडी ने किस प्रकार का व्यवहार किया था, तो मुझे उसके उपर्युक्त आदेशों के पालन के संबंध में कुछ घबड़ाहट सी होने लगी। सौभाग्यवश राष्ट्रपतियों ने ऐसी भावभंगिमा अवश्य बनाने की चेष्टा की जिससे यह प्रकट हो कि रूमाल का गिरना सचमुच संयोगात् हुआ था, जान-बूझकर वैसा नहीं किया गया। परन्तु बडी से कोई कुशीलव कुत्ते का कार्य कदापि न ले सकता था। वह संयुक्त राष्ट्र के राष्ट्रपति को भी प्रसन्न करने के लिए वह कार्य न कर सकती थी।

एक बार हम इतनी शीघ्रता में वाशिंगटन गये और लौट आये कि प्रवक्ताध्यक्ष बर्न्स से न मिल पाये। उन्होंने मेरे ऊपर बिगड़ते हुए मारिस टाउन में मेरे पास एक पत्र भेजा, "मैं तुमसे न मिलने का कष्ट सह सकता हूँ, मारिस, किन्तु कम से कम इतना करो कि बडी को यहाँ भेज दो।"

भूतपूर्व सेक्रेटरी आव स्टेट न्यूटन डी० बेकर से हम क्लीवलैंड में

मिले। बडी उनसे एकदम मंत्रमुग्ध हो गई थी। वह अपना सिर उनकी गोदी में रक्खे खड़ी रही और वे उसका कान खुजलाते रहे। वे उसे अतिशय प्यार करने लगे थे, इससे विदा होने से दोनों को महान् हार्दिक कष्ट हुआ।

बडी बूथ टार्किंगटन से भी मिलकर बहुत प्रभावित हुई थी; परन्तु वह जैसे अन्य महान् व्यक्तियों से बड़े ठाट से मिलती थी वैसे ही उनसे भी पूर्ण निर्भीकता से मिली। उसने अपने व्यक्तित्व को तनिक भी धूमिल न होने दिया। वह इस लब्ध-प्रतिष्ठ लेखक को बहुत प्यार करने लगी थी, मेन के उनके नौकागृह में बहुधा पहुँच जाती तथा उनके घुटने पर अपना सिर रखकर उनकी ओर निहारती, मानो उनसे पूछ रही हो, "क्या आप ही वह महान् लेखक हैं जिनका साहित्य बहुसंख्यक व्यक्तियों को अत्यन्त आह्लादकर लगता है?" और जब वे चाय पीते समय उसकी ओर न देखते होते तो वह भी उनके हाथों से ग्राहम बिस्कुट ले-लेकर खाती होती।

एक दिन पतझड़ की ऋतु में अपराह्न के समय टार्किगन के निवास-स्थान पर सुखद रूप से आग तापते समय मेरी दियासलाई गिर पड़ी। बडी कहीं बैठी झपकी ले रही थी, वह अपने स्थान से उठी और धीरे से आगे बढ़कर सलाई उठाकर मुझे दे गई। जब मैं थपकी देते हुए उसे धन्यवाद दे रहा था, तो हमारे आतिथेयी ने कहा, "मैं जानता हूँ कि यह सर्वथा हास्यास्पद लगता है; किन्तु आपको सलाई देते समय बडी जिस प्रकार आपकी ओर देख रही थी उससे मैं सोच रहा था, 'वह कुतिया जानती है कि उसका स्वामी अंधा है।'

यह बात देखकर वे आश्चर्य में पड़ गये थे और अन्य लोग भी आश्चर्य में पड़ जाते हैं; परन्तु जीवन-ज्योति के हम सब व्यक्ति भली भाँति जानते हैं कि यह यथार्थ है। मैंने उन्हें बताया कि हमारे प्रशिक्षक बहुधा कहते हैं कि हमारे कुत्ते जब किसी श्वान-गृह के नेत्रवाले व्यक्ति को अपने पास से जाता हुआ देखते हैं तो चुपचाप फर्श पर पड़े रहते हैं, किन्तु किसी नेत्रहीन विद्यार्थी को पास देखकर उठ खड़े होते हैं। बडी के बहुसंख्यक कार्यों को देखकर मुझे भी बहुत कुछ विश्वास हो गया था कि वह भली भाँति जानती है कि वह मेरे साथ क्यों रहती है।

आकाशवाणी का कथा-श्रावक अलक उलकाट भी बडी का बड़ा प्रेमी था। उसकी रेडियो की कहानियों में वह बहुधा प्रधान-पात्री होती। जीवन-ज्योति के कार्यों का एक वृत्तान्त प्रसारित करते समय संयोग से एक

बड़ी अद्भुत बात हो गई, यद्यपि वह सर्वथा उलकाट पद्धति का दृष्टान्त थी।

बरमा से काम करनेवाला एक मोटिया व्यक्ति, जिसके आठ बच्चे थे, एक कारखाने में विस्फोट का शिकार हो गया। उसकी आँखें सदा के लिए जाती रहीं। जब उसे सर्वप्रथम यह बताया गया कि वह अब जीवन में कभी न देख पायेगा तो उसके पश्चात् छत्तीस घंटे तक वह अपने चिकित्सालय के बिस्तर पर पाषाणवत् पड़ा रहा। अब ज्योति खोकर मैं जीवन में कैसे रहूँगा? आत्म-विनाश की नाना प्रकार की भयावह कल्पनाओं से उसका मस्तिष्क चक्कर खाने लगा। उसके मस्तिष्क में हूक उठानेवाला यह विचार भी घूम गया कि नेत्रहीन व्यक्ति आत्म-हत्या भी तो नहीं कर सकता। वह कैसे ऐसा कर सकता है? विष खाकर? पर वह विष पाएगा कहाँ से? तब क्या वह किसी भवन की छत से कूदकर प्राणान्त कर सकता है? परन्तु नेत्रहीन छत पर पहुँच भी कैसे सकेगा? किन्तु कुछ भी हो, उसे अपना जीवन समाप्त कर देना चाहिए। वह अपनी पत्नी पर भार-भूत होकर जीवन घसीटना न चाहता था।

परन्तु रात को आकाश-वाणी की एक बात सुनकर वह जैसे जाग उठा। उलकाट ने जीवन-ज्योति के संबंध में कोई कथा सुनाई थी।

जो रोगी व्यर्थ रेडियो की सूई घुमा रहा था उसकी ओर लक्ष्य कर वह चिल्ला उठा, "कृपया सूई उस कथा वाले स्थान पर ही लगी रहने दीजिए।"

आकाश-वाणी के इन शब्दों ने निराशा में आकण्ठ डूबे हुए व्यक्ति को जीवन का नवीन संदेश दिया। कई सप्ताहों के अनंतर वह अपना पथ-प्रदर्शक कुत्ता लेकर मारिसटाउन से अपने घर लौट गया। उसमें नई उमंग आ गई थी और ईश्वर में विश्वास और दृढ़ हो गया था। उसके पुराने कारखाने में ही उसके लिए एक काम खाली रक्खा हुआ था। उसके बच्चे और पत्नी पितृस्नेह तथा पतिप्रेम से भरे हुए उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे जिसे वे सदा के लिए बेकार समझ चुके थे।

उसने मुझसे कहा, "मुझे विश्वास नहीं होता कि वह आकाश-वाणी की बात थी। मैं यही सोचता हूँ कि वह मेरे लिए ईश्वर की वाणी थी!"

संवाद-पत्र-जगत् के बडी के बहुसंख्यक महान् साथियों तथा महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों में बडी की गणना की जाती थी। कई संपादक भी उससे बहुत

प्रभावित थे। वे इस चौपाये को मानवता की पर्याप्त श्लाघनीय प्रतिकृति मानते थे।

जनता में जीवन-ज्योति के आदर पाने के लिए संवाद-पत्रों तथा आकाश-वाणी की सद्भावना अत्यावश्यक थी। बडी ने इसमें भी अपने कार्य का बड़ा अच्छा निर्वहण किया तथा सर्वदा शत-प्रतिशत सहयोग प्रदान किया। उसे भीड़-भाड़वाले चतुष्पथों पर पथ-प्रदर्शन का विनिदर्शन करने में बड़ा आनंद आता था और जब उसका वह कार्य समाप्त हो जाता तो वह लोगों से प्रशंसा की आशा करती हुई चारों ओर फुदकती फिरती; क्योंकि वह जैसे सोचती होती कि उसका कार्य सचमुच उत्कृष्ट कोटि का था। छायाचित्र लेनेवालों और संवाददाताओं को भी उसकी यह प्रवृत्ति अच्छी लगती थी।

जब उसका चित्र लिया जाता तो उससे वह बड़ी प्रसन्न होती और एतदर्थ सदैव कायदे से खड़ी होती या बैठती। चित्र ले लिये जाने के अनंतर वह कूदने लगती तथा छायाचित्र लेनेवाले को चूमती भी। हालीउड के बहु-संख्यक नवसिखिए वा छोटे अभिनेताओं ने भी कदाचित् बडी का अनुकरण कर अपनी चलचित्र-वृत्ति में उन्नति की होगी (और संभवतया वे करते भी हैं)। प्रेस की सभा-समितियों की बात-चीत में यदि बहुत काल तक बडी का नाम न लिया जाता तो वह कुछ कराहती-सी, धीरे से भूँकती, जँभाई लेती या ध्यान आकृष्ट करने के लिए कोई दूसरा काम करती। उसका तात्पर्य होता, "मुझे न भूलिए। आप जानते हैं, जब मैं उपस्थित होती हूँ तो प्रत्येक व्यक्ति 'बडी के बारे' में कुछ न कुछ बात करता है।"

संवादपत्रों की कतरनवाली हमारी पुस्तिका का एक कतरन बडी को बहुत प्रिय था। यह दिसंबर के महीने में एक स्थानीय संवाद-पत्र में छपा था। उस समय क्रिसमस की छुट्टियों में हम घर गये हुए थे। वह एक कथा-वृत्तांत था जिसका शीर्षक था "नैशविले में बडी का आगमन।" यह इतिवृत्त कुछ लंबा सा था। उसकी अन्तिम पंक्ति थी, "और उसके स्वामी मारिस फ्रैंक उसके साथ हैं।"

अध्याय १२

बडी के और मेरे लगभग आठ वर्ष साथ रहने के अनंतर उसके पेट के निचले भाग की ओर एक अर्बुद सा हो गया। जब हम १९३६ में क्रिसमस की छुट्टियों में नैशविले गये तो वह काफी गर्म और लाल रहने लगा था। उससे स्पष्ट हो रहा था कि उसे किसी विशेषज्ञ चिकित्सक को दिखाने की महती आवश्यकता है।

वह मेरे जीवन का ऐसा अभिन्न अंग बन गई थी कि मैंने सोचा कि केवल किसी पशु-चिकित्सक के ही परामर्श पर निर्भर रहना ठीक नहीं। उस समय मेरी प्रसन्नता का ठिकाना न रहा जब वंडरबिल्ट चिकित्सालय में उसे एक रोगी की भाँति भर्ती कर लिया गया। हमारे अपने नगर में उसकी ऐसी थी कीर्ति। वहाँ दक्षिण के अत्यंत चोटी के विशेषज्ञों ने भी उसकी जाँच करने में तनिक हिचकिचाहट न की। अन्त में सब लोगों ने यह कहा कि उसे कुलीर व्याधि (Cancer) हो गई है और शल्य-प्रयोग द्वारा उसे काटकर निकाल देना चाहिए।

मैंने इस संबंध में कई बार मारिसटाउन के लोगों से बातचीत की और परामर्श लिया तथा अंत में यही निर्णय रहा कि शल्योपचार के अतिरिक्त कोई चारा नहीं है। इस समय बडी दस वर्ष की थी। अब हम लोग सोचने लगे कि यदि कुलीर तुरन्त काटकर न निकाल दिया जायगा तो हो सकता है, कुछ ही महीनों में उसका प्राणान्त हो जाय।

इस समय डा० एल्फ्रेड ब्लैलाक अपने कुलीर के शल्योपचार के लिए बहुत प्रसिद्ध हो रहे थे। उन्होंने ही सल्यकार्य किया। उसमें डा० अर्नेस्ट गुडपास्चर आदि कई अन्य प्राथित चिकित्सक भी उनकी सहायता के लिए उपस्थित थे।

यह शल्यकार्य (operation) दिसंबर १९३६ में किया गया। जिस

समय मैं बडी के शल्यगृह से निकलने की प्रतीक्षा कर रहा था, उस समय मेरा हृदय उसके संबंध में एकदम भयार्त कर देनेवाली शंकाओं से भरा हुआ था। चिकित्सकों ने मुझे यह न बताया था कि जिस समय अहिफेन-सार (morfhine) का प्रभाव उस पर से हटेगा, उस समय वह अपना सिर धुनेगी और बावली की नाईं चिल्लायेगी! अतएव जब वह सचमुच सिर धुनने और चिल्लाने लगी तो मेरे हृदय को ऐसा आघात पहुँचा कि मैं विक्षिप्त हो गया जैसे मेरे सिर पर घन की चोट लगी हो। उसके अनंतर जब मुझे चेत हुआ तो मेरे अधरों पर एक गिलास था और एक परिचारिका कह रही थी "फ्रैंक महोदय, इसे पी लीजिए और फिर आप एकदम ठीक हो जायँगे।"

मैं बडी को घर ले गया, क्योंकि मेरे परिवार के लोग उस पर अत्यधिक प्रेम रखते थे। किसी रुग्ण मानव की कदाचित् ही उतनी हार्दिक परिचर्या हुई हो। वे लोग उसे अपनी आँख की पुतली समझते थे। वह उनके पुत्र की वास्तविक आँख थी। सभी लोगों में इस बात की प्रतिस्पर्द्धा-सी चलती रही कि कौन उसकी शुश्रूषा अधिक करता है। इन सब बातों का आश्चर्यजनक प्रभाव हुआ। अत्यल्प काल में उसे आरोग्य-लाभ हो गया और वह पूर्ववत् हो गई। वह अब प्रसन्न दिखाई पड़ती थी और ऐसा लगता था कि उसके लिए जो कुछ किया गया था उससे वह फूली न समाती थी। जब लोग आते, वह लेटकर और उलटकर अपनी टाँगें दिखाती। रमणी की भाँति वह जैसे उनसे कहती, "क्या मैंने आप लोगों को अपने शल्योपचार के बारे में बताया! देखो तो, कितना लंबा घाव हुआ था।"

इसके पश्चात् दो वर्ष तक बडी पूर्ण शक्ति और उत्साह के साथ अपना काम करती रही और मेरे लिए नितान्त उपादेय बनी रही। हम अपना सारा समय अमेरिका के कोने-कोने में दृष्टिदात्री संस्था का प्रचार करने में लगाते रहे।

अक्टूबर १९३६ में जब वह दस वर्ष की थी तो उस समय उसके सहस्रों मित्र और परिचित थे। इस दिन दृष्टिदात्री संस्था में एक विशेष समारोह किया गया जिसमें सहस्रों व्यक्तियों ने उसे अपनी शुभ कामनाएँ प्रदान कीं। उसके जन्म-दिवस वाली केक अत्यन्त सुस्वादु बनाई गई थी और उसके साथ कुत्तों के खस्ता बिस्कुट भी थे। इन सबके ऊपर शुद्ध मक्खन की दस गोलियाँ भी थीं। उसे मक्खन बहुत प्रिय था, अतएव उसने

सर्वप्रथम एक-एक कर मक्खन की गोलियाँ खाईं और तब अपनी क्रेक पर मुँह लगाया।

तदनंतर अपराह्न में उसने न्यूयार्क के जार्ज वाशिंगटन होटल में संवाददाताओं एवं छायाचित्र लेने वालों के लिए एक सभा भी की। उसे अपने प्रेस के अधिवेशन में अत्यधिक सफलता मिली। दूसरे दिन सभी संवाद-पत्रों के मुखपृष्ठ पर उसका इतिवृत्त छपा।

उस दिन, रात को, एब्लिंग-दम्पति ने एक प्रीतिभोज किया जिसमें वही संमान्य अतिथि रही। इसमें उसे सबसे अधिक आनंद आया। इस भोज में उसके बहु-संख्यक श्वान सुहृद् उपस्थित थे—आतिथेयी का पज, विली चाचा का बेठ, हचिसन की डेगी तथा एलेन और लव।

श्रीमती युस्टिस, ग्रेचेन ग्रीन, एलेक उलकाट तथा अन्य बहुत से उसके श्वानेतर मित्र भी आये थे। रूमानिया की ग्रैंड डचेज़ मेरी ने उसका उस दिन की संध्या को एक अतिशय मनोरम छायाचित्र भी लिया। वे उससे पहले भी उसके कई छायाचित्र ले चुकी थीं। उस दिन की संध्या का छायाचित्र आज भी मेरी मेज पर लगा हुआ है।

भोज के अंत में श्रीमती एब्लिंग ने जर्मन प्रहरी कुत्तों के रूप में मलाई की कुल्फी परोसी। अलेक के विचार से ये बातें सुरुचि के सर्वथा विपरीत थीं, फिर भी उन्हें भी मेज के नीचे दुबककर "जन्म-दिवसवाली बाला" के साथ उसे खाना ही पड़ा। इसमें सारे श्वान मनुष्यों जैसे लग रहे थे तथा सारी मानव-मंडली श्वान-यूथ जैसी लग रही थी। इस प्रकार यह समारोह बड़ा मनोरंजक रहा।

यद्यपि इस समय बडी अपने घर के नगर नैशविले से बहुत दूर थी, किन्तु वहाँ भी उसकी पर्याप्त चर्चा रही। मेयर हिलैरी हाउस ने बडी के जीवन-वृत्त के बारे में एक घोषणा-पत्र निकाला। उसके अंत में नगर-वासियों से निवेदन किया गया था कि आप सभी, "एक क्षण रुककर 'सुनागरिकता की' सभी बातों का प्रतिनिधित्व करनेवाली कुतिया को संमानाञ्जलि प्रदान करें।"

एक वर्ष और बीत गया। बडी अब भी अपके काम में अदम्य उत्साह दिखाती थी किन्तु उसकी शारीरिक शक्ति उत्तरोत्तर घटती जा रही थी। शल्योपचार का प्रभाव उसके ऊपर अच्छा न हुआ था; वह कुछ श्लथ-सी होती जा रही थी और अब उसके वार्द्धक्य का आगमन स्पष्ट परिलक्षित हो रहा था।

इस समय जब हम एक बार नैशविले में गये तो मेरी माँ के एक मित्र ने उससे कहा कि अब तो बडी वृद्धा होती जा रही है और पूछा, "आप कैसे जानती हैं कि वह बहिरी भी नहीं होती जा रही है ? या उसकी आँखें जवाब नहीं दे रही हैं ? वह मारिस के लिए अब आपद्जनक हो सकती है। अब उसे एक तगड़ा तरुण कुत्ता मँगाना चाहिए अन्यथा, आप मेरी बात पर ध्यान रखिए, कभी न कभी कोई दुर्घटना हो जायगी।"

मेरी माँ ने कुछ असहमति प्रकट करते हुए उत्तर दिया, "आपको कुछ स्मरण है, बडी के आने के पहले मारिस की दशा कैसी थी ? क्या आपको कभी उसकी उस समय की विवशता भूल सकती है ? उसे उस समय परमुखापेक्षी रहने में कितना कष्ट होता था ? बडी के कारण मारिस के दस वर्ष अत्यन्त प्रसन्नता से बीते हैं। मैं सोचती हूँ कि वह दुर्घटना होने का जोखिम मोल ले सकता है किन्तु उसके सामने दूसरे कुत्ते को अपने साथ रखना न चाहेगा, क्योंकि उससे बडी के हृदय को आघात पहुँचेगा।"

इस समय बडी मेरे साथ एक पार्श्ववर्ती कमरे में थी। उसने वे सभी बातें सुनीं। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि समझी भी। वह उठकर धीरे से माँ के कमरे में जा पहुँची और उसकी गोदी में सिर रखकर उसके हाथ चाटने लगी, मानों कह रही हो, "आप समझती हैं न।"

जब बडी साढ़े बारह वर्ष की हुई, जिस समय कुत्ते अस्सी वर्ष के मनुष्य से अधिक वृद्ध और जीर्ण हो जाते हैं, तो उसे चलने में कठिनाई पड़ने लगी। वह मार्ग में हाँफने लगती तथा उसे बहुधा रुकना पड़ता। मेरे एक पशु-चिकित्सक मित्र ने मुझे परामर्श दिया कि आप इसे शिकागो के अमुक डाक्टर को दिखायें। हमने उससे मिलने के लिए समय निर्धारित कर लिया।

इस चिकित्सक का कार्यालय इलीनोइस प्रदेश के इवान्स्टन नगर की चर्च स्ट्रीट पर था। थोड़ा-बहुत भटकने के अनन्तर उसे हमने ढूँढ़ लिया। उसने मेरी सहायता से बडी को उठाकर परीक्षण-मेज पर रक्खा। उसने पाँच मिनट तक कुतिया की देखभाल की और तब एकदम निरपेक्ष भाव से बोल उठा, "तीन मास के भीतर इस कुतिया की मृत्यु हो जायगी।"

उसने पीछे से मुझे बताया था कि उस समय मैं अपनी कृत्रिम आँखों से उसे छूने लगा था, तथा कुछ बुरा-भला भी कहा था और तदनन्तर मूर्छित हो गया था। जब मुझे संज्ञा आई तो मैं उठा और कुतिया को अपनी गोद में लेकर बाहर निकल गया। मुझे द्वार, सीढ़ियों और जहाँ

मेरा मोटर-चालक मेरी प्रतीक्षा कर रहा था उस स्थान की स्थिति भली भाँति स्मरण थी। इस समय जैसे मेरे अचेतन मस्तिष्क ने मेरी सहायता की और मेरा मार्ग-प्रदर्शन किया।

घर पहुँचने के प्रथम हमें शिकागो में एक और सभा में भाषण देना था। यद्यपि बडी रुग्ण और परिश्रान्त थी, किन्तु जब श्रोताओं के सम्मुख हमारे जाने का समय आया तो वह उठ खड़ी हुई और मुझे रंग-मंच पर लिवा गई। उसने सभी उचित अवसरों पर भूँका भी। हाँ, एक-आध बार वह अनुचित रूप से भूँक गई।

तदनन्तर वह शान्त खड़ी रही जिससे उसके प्रशंसक उसे थपथपायें भी। दर्शक के अपने स्थान से चले जाने के पश्चात् मेरी सेनानी अपने अगले पंजों पर झुक गई। वह क्लान्त हो चुकी थी। वार्द्धक्य और जीर्णता का उसपर एकदम अधिकार हो रहा था। उस रात को वह बिस्तर पर न चढ़ सकी, अतएव उसके साथ मैं भी फर्श पर ही सोया।

नगर से विदा होने के प्रथम बडी की रुग्णावस्था में ही हम श्रीमती पैट्रिक वैलेण्टाइन से फील्ड बिल्डिंग में उनके कार्यालय में मिलने गये। वे जीवन-ज्योति की पुरानी हितचिन्तक थीं। मैंने उन्हें स्मरण दिलाया कि किस प्रकार बडी ने मैन से लेकर कैलीफोर्निया तक के सभी प्रदेशों में कारों, मोटरों, ट्रामों तथा रेलों को पथ-प्रदर्शक कुत्तों के लिए यात्रा करने के लिए उन्मुक्त करने में अपना सारा जीवन उत्सर्ग कर दिया था।

मैंने उन्हें बताया कि यद्यपि हम अब विमानों पर भी यात्रा कर सकते हैं किन्तु हमें उसके लिए विशिष्ट अग्रिम अनुमति लेनी पड़ती है। बडी के अपने उन्नयनकार्य से अवकाश ग्रहण करने के प्रथम मैं यह बता देना चाहूँगा कि उसी के कार्यों के कारण अब समग्र पथ-प्रदर्शक कुत्तों के लिए देश के कोने-कोने में चाहे जहाँ आवश्यकता हो अथवा इच्छा हो स्थलमार्ग से, जलमार्ग से या वायुमार्ग से यात्रा करना सँभव हो गया था।

श्रीमती वैलेण्टाइन चुपचाप बड़े ध्यान से मेरी बातें सुनती रहीं। जब मैंने अपनी बातें समाप्त कीं, तो वे एक क्षण चुप रहीं और फिर बोलीं, "क्या आप दोनों मेरे पुत्र लेस्टर के कार्यालय में चलने का कष्ट करेंगे?"

हम उनके पीछे-पीछे कार्यालय में गये और देखा कि तरुण व्यक्ति हाथ में फोन लिये हुए था। वह यूनाइटेड एयर लाइन्स के सर्वोच्च व्यक्ति से बातचीत कर रहा था। हमने उसके मुख से अग्रलिखित वाक्य सुने,

"मुझे बहुत खेद के साथ कहना पड़ता है, किन्तु बात कुछ ऐसी ही है। माताजी कहती हैं कि जब तक उसके लिए व्यवस्था न हो जायगी तब तक तुम्हें मैं घर में न घुसने दूँगी।"

तदनन्तर बडी और मैं मारिसटाउन के लिए चल पड़ा। यह इस गौरवशालिनी महिला की अन्तिम यान-यात्रा थी। हमें एतदर्थ विशिष्ट अनुमति के लिए करुणापूर्ण ढंग से याचना न करनी पड़ी, प्रत्युत हमने एक टिकट लेकर अन्य सौभाग्यशाली यात्रियों की भाँति यात्रा की। अपने महाभिनिष्क्रमण के प्रथम बडी ने अपने जीवन का उद्देश्य पूरा कर लिया।

यूनाइटेड एयर लाइन्स वालों ने संवादपत्रों तथा तार भेजनेवाले विभाग को सूचित कर दिया था कि जीवन-ज्योति का एक कुत्ता पहली बार अधिकृत रूप से वायु-यात्रा कर रहा था। जब हम क्लीवलैण्ड में थोड़े समय के लिए उतरे, तो संवाददाताओं और छाया चित्र लेनेवालों ने चित्र लेने के लिए हमें घेर लिया।

बडी ने विमान से नीचे उतरते समय अपनी रुग्णता को प्रकट न होने दिया। वह लगाम में आगे झुकी रही और मैं उसे सहारा दिये रहा। मैं यह सर्वविदित न करना चाहता था कि अब उसके महाप्रयाण का समय समीप है। जब अपने स्थान पर हमारे लौटने का समय हुआ तो मैं पीछे रुका रहा कि संवाददाता चले जायँ तो मैं चलूँ, क्योंकि मैं जानता था कि बडी स्वयं ढालू सीढ़ियों पर न चढ़ पायेगी, मुझे उसे चढ़ाना होगा और मैं इस प्रकार उसकी आत्म-प्रतिष्ठा को ठेस न पहुँचाना चाहता था।

मैं जितना हो सका, रुका रहा; किन्तु इसी बीच एक छाया चित्र लेने वाले ने कहा, "यदि आपको कोई आपत्ति न हो तो मैं उसका, आपको विमान-कक्ष में लिवा जाते समय का चित्र लेना चाहता हूँ।"

फिर तो मैं उलझन में पड़ गया। मुझे यह सबके संमुख स्वीकार करना पड़ा कि बडी रुग्ण है और वृद्धावस्था के कारण दुर्बल हो रही है तथा विमान पर उसे हमें सहारा देकर चढ़ाना होगा। यह बात सुनते ही कई संवाददाता आगे आ गये और उन्होंने उसे विमान पर चढ़ाने में मेरी सहायता भी की।

यद्यपि इस समय का उसका चित्र एक बड़ी सनसनीदार बात हुई होती जिसमें लोगों को बड़ी अभिरुचि होती और उससे संवाददाताओं को

बड़ी कीर्ति भी मिली होती, किन्तु उन कठोर-हृदय व्यक्तियों में से किसी ने बडी के कष्टमय क्षणों का एक भी चित्र नहीं लिया।

उस रात को हम ओपेनका में चुपचाप एब्लिंग दंपती के यहाँ ठहरे और भोजन भी वहीं किया। सदैव उल्लास और उत्साह में इधर-उधर घूमने वाली बडी आज हमारे वहाँ पहुँचने पर रहनेवाले कमरे के फर्श पर ढुलमुला गई। वह मानों कह रही थी, "मैंने इन्हें निरापद घर पहुँचा दिया। अब मेरी यात्रा का पर्यवसान है। मैं विदा लेनेवाली हूँ।" वह सारी संध्या भर वहाँ निश्चेष्ट पड़ी रही।

हम उसे खिलाने के लिए उसके पास कुछ वस्तुएँ ले गये। वह उससे प्रसन्न हुई, किन्तु दुर्बलता के कारण उसमें अधिक अभिरुचि न ले सकी। हमें स्पष्ट दिखाई पड़ रहा था कि वह एकदम परिश्रान्त है—सर्वथा जीर्ण। उसके अन्तिम क्षण बहुत दूर न थे।

जब हम अपने कमरे में पहुँचे तो वह घर लौटकर प्रसन्न-सी लगती थी। उसके लिए हमने जो बिस्तर तैयार किया, वह उस पर जा लेटी क्योंकि अब वह मेरे विस्तर पर न चढ़ सकती थी। अब वह अपने भरोसे बाहर न जा सकती थी। हाँ, यदि मैं लगाम लगा देता तो बात दूसरी थी। मुझे जैसे कर्णगोचर हो रहा था कि वह कह रही है, "यदि तुम्हें कोई आवश्यकता न हो तो मैं इतनी दुर्बल हो रही हूँ कि बाहर नहीं जाना चाहती"।

मैं एक बार अपने कमरे में बैठा रेडियो की सुई घुमा रहा था। मैंने उसकी रुग्णता का संवाद प्रसारित किये जाते हुए सुना। रेडियो में जब उसका नाम लिया जाता तो वह अत्यन्त क्षीण ढंग से अपनी पूँछ हिलाती। एक कार्यक्रम में उसके गृह-निवर्तन को एक नाटक के रूप में सुनाया गया। परन्तु वह विवरण भ्रामक था, क्योंकि उसमें कहा गया था कि उसे श्वान-गृह में रख दिया गया है और वहीं वह मृत्यु की प्रतीक्षा कर रही है। इससे मेरे हृदय को कुछ आघात पहुँचा। उसने जैसे उसे भाँप लिया, क्योंकि वह मेरे पास आ गई और उसने अपना सिर मेरे घुटनों पर रख दिया जैसे कह रही हो, "असलियत तो हम जानते ही हैं, फिर चिन्ता करने की बात क्या है?"

उसको अधिक से अधिक दिन जीवित तथा सुखपूर्वक रखने के लिए हमने पूरी-पूरी चेष्टा की। हमारे पशु-चिकित्सक तथा एक विशेषज्ञ ने प्रातःकाल और अपराह्न में भी डेढ़ घंटे तक उसका उत्ताप देखा और

नील-लोहित किरण से उपचार किया। मैं उसे अकेला कदापि न छोड़ सकता था और आग्रहपूर्वक उसे अपने साथ अपने कार्यालय लिवा जाता। परन्तु मेरा चित्त इतना उद्विग्न रहता कि मैं कोई काम न कर पाता। हाँ, कार्यालय में विस्तर पर पहुँचकर उसका मन अवश्य कुछ बहल जाता था। वहाँ लेटकर वह काँच की भीति के पार होनेवाली सभी बातें करती। जब कोई उसे अपनी सम्मानाञ्जलि प्रदान करने आता तो वह भी प्रसन्नतापूर्वक उसका स्वागत करती।

अपने जीवन के अंतिम दिन वह प्रातःकाल मुझे मेरे कमरे से कार तक लिवा गई। मैं उसे लगाम के साथ चलने में सहारा दिये रहा, क्योंकि वह इतनी दुर्बल हो गई थी कि स्वयं खड़ी न हो सकती थी। कार्यालय में पहुँचने पर वह अपने स्थान पर न रहती किन्तु बारबार मेरे पास आती रही। वह अब प्रतिक्षण मेरे साथ रहना चाहती थी, अतएव अब मैं उसके बिस्तर के पास बैठ गया और धीरे-धीरे उसके सुन्दर सिर को ठोकता रहा।

खिड़की से आने वाले सूर्य के प्रकाश में वीरागंना का शरीर शीत के कारण काँप रहा था। हमने उसे एक कम्बल ओढ़ा दिया और थपकी देते रहे। अंत में वह मेरे पास पहुँची और अत्यन्त प्रेम-विह्वल होकर आँसुओं से आर्द्र मेरा चेहरा चाटने लगी। तदनंतर सदैव के लिए महानिद्रा में धरणी के अंक में सो गई।

बडी की मृत्यु के अनंतर उसे श्रद्धाञ्जलि समर्पित करते हुए संसार के सभी भागों से मेरे पास सत्ताइस सौ से अधिक पत्र तथा सात सौ तार आये।

जीवन-ज्योति के प्रवेश द्वार के पासवाली शाद्वलभूमि में, तीन चीड़ के वृक्षों की छाया में हमने उसे चिर-विश्राम के लिए उसकी लगाम सहित धरती के क्रोड़ में समाधिस्थ कर दिया। अन्तिम बार जब मैंने उससे कहा था कि "तू बडी अच्छी लड़की है।" तो उसी समय जाकर मुझे इस बात का पूर्णानुभव हुआ था कि बडी का मेरे ऊपर जितना आधार है उसे शब्दों द्वारा नहीं व्यक्तः किया जा सकता। उसके कारण मुझे जीवन में वह साहस प्राप्त हुआ था जिसके कारण मैंने ऐसे-ऐसे कार्य कर डाले जिन्हें मैं उसके बिना कभी न कर पाता।

इसका एक दृष्टान्त है मेरा विवाह। यदि बडी मेरे साथ न होती तो अपनी असहायावस्था में मैं किसी लड़की से अपने साथ विवाह करने का

प्रस्ताव करने का साहस कदापि न कर सकता था। और सम्भव था कि यदि कोई लड़की मेरे साथ विवाह करने को तैयार भो हो जाती तो मैं उसे न चाहता। वह कदाचित् मातृवत् मेरी देख-रेख करनेवाली होती और यह मैं सहन न कर सकता था।

मैं बडी का अत्यन्त ऋणी हूँ कि उसके साथ मेरे जोवन के अविवाहित दस वर्ष अत्यन्त सुकरता से बीते। इसमें मैं पूर्ण आत्म-निर्भर रहा, प्रचुर यात्रा की तथा संसार की बहुत-सी बातों का अनुभव प्राप्त किया। इन सबने मेरा यह विचार एकदम दृढ़ कर दिया कि मैं उसी लड़की को प्यार कर सकता हूँ जो इस बात को भली भाँति समझे कि मुझमें इतनी क्षमता है कि मैं आत्म-निर्भर रह सकता हूँ।

एक दिन की शिकागो की बात है। मैं रात को एक तरुण दंपति के साथ बाहर कहीं जा रहा था। मैंने कहा, "अच्छा हो, यदि हम दो व्यक्ति मिलकर एक साथिन का उपक्रम करें। मुझे किससे यह कहना चाहिए, यह मैं भली भाँति जानता हूँ।" यह लुई सेलमर कौलमैन नामक बड़ी मोहिनी शुभ्रवर्णावाली तरुणी थी। मेरे मित्र आडरी हैडेन ने उससे मेरा परिचय कराया था। उसने मेरे प्रति मेरे रक्षण की कोई भावना न दिखाई; प्रत्युत उसने मेरे साथ वैसे ही परिहास-पूर्वक बात-चीत की जैसे मैंने उसके साथ की।

सात बजे हम भोजन और नृत्य के लिए पामर हाउस पहुँचे। शीघ्र ही मैं अन्य सभी युग्मों को सर्वथा भूल गया; मुझे केवल लंबी मधुराकृति लुई का ही ध्यान रह गया। उसके साथ मुझे कितना अनिर्वचनीय सुख मिल रहा था! जितनी बार वह हँसती उतनी बार मेरे हृदय में सुख की बाढ़-सी आ जाती।

हम इतनी अधिक रात तक नाचते रहे कि ग्लेन इलिन जानेवाली आधी रातवाली गाड़ी ही छूट गई। अतएव दूधवाली गाड़ी की प्रतीक्षा करने के लिए हम जलपानगृह में बैठ गये और केक खाते तथा कहवा पीते समय इतने उल्लासपूर्वक घुल मिलकर बातचीत करते रहे जैसे सारे जीवन की हमारी गाढ़ी मैत्री हो।

मारिसटाउन लौटकर मैंने अपने कार्यालय में घोषित कर दिया "भाइयो! मैंने अपनी पसंद की लड़की ढूँढ़ ली है और अब उससे विवाह करने जा रहा हूँ।" परन्तु लुई को इस निर्णय के संबंध में कुछ भी न विदित था।

मेरा निमंत्रण पाकर वह और उसकी चचेरी बहन पाला जुलाई में मारिसटाउन आई। उन्होंने अपना अवकाश वहीं बिताया। मुझे स्मरण है कि यदि उसने और मेरे मित्रों ने बात न उभाड़ी होती, तो मैं विवाह का प्रस्ताव भूल गया ही होता, क्योंकि मेरे लिए जीवन-ज्योति ही मेरा परिवार था। सब लोग जब लुई को जान गये तो सभी ने एक स्वर से मुझसे कहा, "मारिस! उस लड़की को पाकर तुम बड़े सुखी रहोगे।"

लुई के घर लौट जाने के पश्चात् मध्य पश्चिमी भाग से जीवन-ज्योति को जितने आवेदन-पत्र आते उनके, तथा इस संस्था से उस क्षेत्र के जितने स्नातकों तथा उससे तनिक भी संबंध रखने वाले जिन व्यक्तियों के जितने भी काम होते उन्हें बड़े ध्यान से किया जाता। शिकागो से लेकर सौ मील की परिधि के भीतर तक के जितने कार्य होते वे पत्र, तार या फोन से न किये जाते। उन पर मेरे व्यक्तिगत ध्यान की अपेक्षा होती। जब ऐसा कोई कार्य न होता तो मैं सप्ताहान्त में दिन की गाड़ी से अपनी प्रेयसी से मिलने के लिए शिकागो स्वयं पहुँच जाता। उसे प्राप्त करने में मुझे दो वर्ष लग गये।

अपने विवाह के कुछ मास पश्चात् मुझे स्पष्ट रूप से विदित हो गया कि लुई ठीक वैसी ही लड़की थी जैसी मैं ढूँढ़ रहा था। वह मेरी नेत्रहीनता के लिए व्यर्थ करुणा न दिखाती। एक दिन जब वह सामान लाने के लिए बाजार जा रही थी तो उसने मुझसे कहा, "मारिस! मैं जा रही हूँ। तुम बृहत्कक्ष तथा रसोई के फर्श को रगड़ कर धो डालो। मैंने बाल्टी में साबुन तथा कपड़ा रख दिया है; तुम पानी स्वयं छोड़ लेना।"

"प्रिये! तुम्हारा क्या तात्पर्य है?" मैंने अविश्वास-भरे शब्दों में पूछा "मैं फर्श नहीं साफ कर सकता। मैंने अभी तक यह काम कभी नहीं किया है। मुझे कैसे विदित होगा कि वह मुझसे साफ हो रहा है या नहीं?"

"सुनो मारिस! तुम देश के कोने कोने में कहते फिरते हो कि किसी अंधे व्यक्ति को केवल एक कुत्ता दे दिया जाय, फिर वह नेत्रवानों द्वारा किये जानेवाले सभी कार्य कर सकता है; तो आज अपनी इस बात को स्वयं कार्यान्वित कर देखो।"

यह कहकर वह चली गई।

अब मेरे हृदय में नाना प्रकार के संदेह उठने लगे कि कहीं घर के स्वामी के रूप में मेरी स्वतंत्रता न छिन जाय। अतएव एक व्यक्ति के

रूप में आत्म-निर्भरता सिद्ध करने के लिए मैं अखाड़े में उतर ही गया और काम में हाथ लगा दिया। मैंने रसोई की दूरवाली भीत से कार्य आरंभ किया और फिर आगे बढ़ता हुआ झुककर सफाई करता हुआ द्वार से निकल गया। तत्पश्चात् मैंने उसी भाँति प्रवेश-कक्ष को साफ किया।

लुई ने लौटकर बृहत्कक्ष को देखा और फिर सीधे रसोई में गई। मैंने अपनी कल्पना में देख लिया कि वह किस प्रकार खड़ी होकर मेरे कार्य का निरीक्षण कर रही थी।

उसने आश्चर्य और गर्व भरे शब्दों में जोर से कहा, "मारिस! फर्श पर एक भी धब्बा नहीं है!"

मैं ऐसा प्रसन्न हो रहा था जैसे किसी नौसिखिए ने कोई कबूतर मार गिराया हो।

अब मैं बर्तन धो लेता हूँ, खिड़कियाँ साफ कर लेता हूँ तथा बिस्तर भी लगा लेता हूँ। मैं इस कार्य में किसी सुदक्ष "गृहिणी" की तुलना कर सकता हूँ। जब गृह-कार्य करने में मुझे पतलून छोड़कर वेशाच्छादन पहनना पड़ता है तो उसे मैं तनिक भी बुरा नहीं मानता। कभी-कभी मैं किसी गृह-कार्य को करना एकदम अस्वीकार भी कर देता हूँ किन्तु लुई के कारण मैं अपनी किसी अकर्मण्यता का दोष अपनी नेत्रहीनता पर नहीं डाल पाता।

मैं पूरी सच्चाई से कह सकता हूँ कि बडी के मिलने के पश्चात्, अपने अंधा होने के कारण, मैं केवल एक कार्य न कर पाया यद्यपि उसकी मुझे बड़ी इच्छा थी। मैं द्वितीय महायुद्ध-काल में संयुक्त राष्ट्र की नौसेना में भर्ती होना चाहता था। यद्यपि मुझे नौसेना की वेशभूषा नहीं मिल पाई, फिर भी मैंने उसमें बहुत से कार्य किये ही।

जीवन-ज्योति के संचालक-मंडल ने युद्ध में नेत्रहीन हुए व्यक्तियों की सेवा में हाथ बँटाया और इसके लिए उसने सरकार से कुछ नहीं लिया। वाशिंगटन में संयुक्तराष्ट्र की नौसेना के सर्जन-जेनरल ऐडमिरल रास मैकिंटेरी ने मुझसे नौसेना के सभी चिकित्सालयों में पर्यटन कर वहाँ के चिकित्सकों, परिचारकों एवं सेना के व्यक्तियों को यह बताने के लिए कहा कि नये-नये अंधे रोगियों की अधिक से अधिक सेवा किस प्रकार की जा सकती है। संयुक्त राष्ट्र के सैन्य-चिकित्सालयों के सर्जन-जेनरल कर्क तथा सेना-नायकों के चिकित्सालयों के अध्यक्ष जेनरल हाइन्स ने भी मुझे ऐसे ही कार्य-भार सौंपे।

अक्टूबर १६४२ में लुई और मैं एक कार से इस कार्य के लिए प्रस्थित हुए। अब मेरे साथ एक दूसरा कुत्ता था और वही मेरी 'आँखों' का काम कर रहा था। मैं यह नहीं कह सकता कि उसने बडी का स्थान ग्रहण कर लिया था, क्योंकि अब दूसरा कोई कुत्ता बडी की तुलना न कर सकता था। वह नर कुत्ता था। प्रमुख उन्नायक की स्मृति में उसका नाम बडी द्वितीय रक्खा गया था। मैं सोचता हूँ कि बडी की आत्मा उससे प्रसन्न होगी। बडी नाम केवल मैं ही रख सकता हूँ। जीवन-ज्योति के किसी दूसरे व्यक्ति के कुत्ते का यह सम्मानित नाम नहीं रक्खा जा सकता।

हमने सीआटिल के चिकित्सालय से अपना कार्यारंभ किया। इसमें दक्षिणी प्रशान्त महासागर के प्रदेशों से आये हुए तरुण भर्ती थे। अंधे किस प्रकार अपने को अपनी परिस्थितियों के अनुसार बना सकते हैं, इस संबंध में उनकी सहायता करने का हमें पर्याप्त अनुभव था। हमने जाते ही चिकित्सालय के कर्मचारियों की कार्य-पद्धति में अपने दीर्घकालिक अनुभव के आधार पर बहुत से परिवर्तन किये यद्यपि कर्मचारीगण उसके पहले भी अपने रोगियों की परिचर्या में प्राणपण से जुटे हुए थे। इस परिचर्या के मूल में भावना तो अच्छी थी, किन्तु प्रथा रूप में वह अच्छी न थी।

हमने परिचारकों को इस संबंध में कई बातें बताईं कि नेत्रहीन तरुणों में आत्म-विश्वास किस प्रकार भरना चाहिए, क्योंकि नेत्रहीन होते ही वे यह सोचने लगते हैं कि हमें जीवन में जो कुछ करना था, हम कर चुके—अब हम आत्मनिर्भर कभी नहीं हो सकते। हमने यहाँ के तरुणों की, मारिसटाउन की पद्धति के द्वारा, पर्याप्त सहायता की। अब वे स्वयं कपड़ा पहनने लगे, अपने बाल बनाने लगे और अपनी छोटी-मोटी आवश्यकताओं के लिए परमुखापेक्षी न रह गये।

चिकित्सालय के कर्मचारियों ने अपने दृष्टिकोणों तथा पद्धतियों में पर्याप्त परिवर्तन कर लिया। अब उनके नेत्रहीन रोगी लड़खड़ाते हुए पाँवों से न चलते और न हाथ से इधर-उधर टटोलते फिरते।

रोगियों का उत्साह भी कुछ अद्भुत था। जब हम उनकी सहायता के लिए कोई कार्य करते तो वे उसमें पूरा पूरा सहयोग करते। वे सभी आश्चर्य-जनक रूप से हँसमुख भी थे। मैंने वायुसेना से संबद्ध एक तरुण नौकर्मचारी को यह बताया कि वह किस प्रकार ध्यानपूर्वक बातों को सुनने से अपनी नेत्र-हीनता की कमी पूरी कर सकता है। मैंने कहा, स्वरों को

ध्यान से सुनकर तुम आस-पास के व्यक्तियों को पहचान सकते हो। तुम ज्यूकेवक्स की ध्वनि का अनुसरण करते हुए पोत के भण्डार का मार्ग ढूँढ़ ले सकते हो।"

"मुझे केवल रुककर सुनने की ही आवश्यकता है, बस ?"

उसने विचारपूर्वक उसे समझने की चेष्टा करते हुए कहा, "फ्रैंक महोदय ! मैं चमगादड़ की भाँति एकदम अंधा हो सकता हूँ किन्तु, आपने मुझे यह बता दिया कि चमगादड़ के पास संसार का सर्वोत्तम राडार होता है।"

चिकित्सालयों में इस प्रकार की बातें सिखाते हुए हमने समस्त पश्चिमी तट का पर्यटन किया। हम जहाँ भी गये वहाँ हमारा हार्दिक स्वागत किया गया।

कैलीफोर्निया के एक बृहत् सामुद्रिक वायु-संस्थान-चिकित्सालय की बात है कि मैं वहाँ बडी को "सुविधाओं के उपयोग" करने का एक अवसर देने के लिए निकला। नाविक और सैनिक मुझसे कुत्तों और नेत्रहीनता के बारे में नाना प्रकार के प्रश्न करते। मैं इस बात का पूर्ण अभ्यस्त हो गया था। अब की बार एक व्यक्ति मेरे साथ हो गया और उसने मुझसे प्रश्न करते-करते मुझे थका डाला। पूरे पैंतालिस मिनट तक उसने मेरा पीछा न छोड़ा। जब अंत में हम लौटने को हुए तो मैंने उससे कहा, "भाई नाविक ! मैं सोचता हूँ कि तुम्हारे नन्हें हृदय की सारी जिज्ञासाएँ अब शान्त हो गई होंगी और तुम्हें सारी बातें ज्ञात हो गई होंगी।"

जब मैं प्रमुख बरामदे में प्रविष्ट हुआ तो कार्यकारी अधिकारी ने उल्लास में कहा, "एडमिरल के साथ आप खूब घूमे !"

आप सोचेंगे, इससे मुझे सीख ले लेनी चाहिए थी; किन्तु मैं सीखता कुछ धीरे-धीरे हूँ। कुछ सप्ताह पश्चात् का वृत्तान्त है। हम आधा देश पार कर पूर्व की ओर एक बृहत् सैन्य-पीठ में पहुँचे। वहाँ मुझे पीठ के व्यक्तियों में एक वक्तृता देनी थी। उसके विनिदर्शन और विशदीकरण के लिए मैं अपनी घण्टी तथा होवेल-क्षेपक स्थापित करने लगा। मैं इसमें इस व्यक्ति से सदैव टकराता। अंत में उसके पृष्ठ-भाग में अपनी उँगली गोदते हुए मैंने कहा, "मित्र ! मार्ग में से तो हट जाओ। आदेशाधिकारी आता ही होगा और उसके लिए मुझे पहले से तैयार रहना है।"

जब मैंने अपनी मशीनों को ठीक कर लिया, तो कार्यकारी अधिकारी

ने मुझसे फुसफसाकर कहा, "कुशल है कि आप एक पौर व्यक्ति हैं। यदि कोई सैनिक किसी सेनापति को इस प्रकार अँगुली गोदता तो उसे सैन्य-विचारालय द्वारा दंड दिया जाता।"

इन चिकित्सालयों में मुझे राष्ट्र के कुछ चोटी के नेत्रविशेषज्ञों से मिलने का अवसर प्राप्त हुआ। ये सचमुच बड़ा उत्कृष्ट कार्य कर रहे थे। एक ने मुझे सारा चिकित्सालय दिखाते समय कहा, "फ्रैंक महोदय! यदि मैं बडी से दूर रहना चाहूँ तो आप बुरा न मानियेगा। मैं कुत्तों से कुछ डरता हूँ।"

मैंने चुपचाप उत्तर दिया, "आप ठीक कहते हैं। मैं नेत्र-विशेषज्ञों से डरता हूँ।"

इस पर उसने तत्क्षण बड़ा सुन्दर उत्तर दिया, "किन्तु फ्रैंक महोदय! मुझे कोई काट न सका।"

जब हम अपना पर्यटन समाप्त कर रहे थे तो एक ऐसी घटना घटी जिसने मेरी आत्मनिर्भरता में सचमुच अत्यधिक परिवर्तन कर दिया। हम धीरे-धीरे मोटर से जा रहे थे। पानी बरस रहा था। तब तक हमारी मोटर में वर्स्ट हो गया। मैंने कई बार टायर लगाना सीखने की सोची थी, परन्तु उसके लिए मुझे कभी समय ही न मिला था। अब आप समझ सकते हैं कि उस समय हम कितनी कठिनाई में पड़ गये।

मैं कार से बाहर निकला। बरसाती न होने के कारण क्षण भर में पानी से लथपथ हो गया। फिर भी पौन घंटे तक मैं पहिये की टोपी (hub cap) से उलझता रहा। अन्त में मैंने उसे निकाल तो लिया किन्तु मुझे बड़ा क्रोध आ रहा था। पीछे मुझे विदित हुआ कि मैंने भी उसे औरों की ही भाँति निकाला था।

बहुत समय तक उलझते रहने के पश्चात् मैंने नया टायर चढ़ा लिया और फिर हम चल पड़े। तेल के पहले ही स्टेशन पर पहुँचकर मैंने वहाँ के भृत्य से कहा कि वह तनिक उस टायर की जाँच कर ले। उसने कहा, "यह पाचास मील चल चुका है और अभी काम देगा।"

"बहुत बहुत धन्यवाद! तेल भर दो।" तब मैंने एक दूसरे भृत्य से कहा, "और देखो, मैं नेत्रहीन हूँ। मुझे विश्रामालय में पहुँचा दो।"

उसने विस्मय से कहा, "आप अंधे हैं और आपने टायर बदल लिया?" दोनों भृत्य मेरे ऊपर प्रशंसा की बौछार सी करने लगे। इस पर मैं सोच रहा था कि यदि मेरे पूँछ होती तो मैं उसे भयंकर रूप से हिलाता। उन दोनों

ने कार के भीतर और बाहर बहुत अच्छी पालिश कर दी। लुई ने उसे देख कर कहा कि ऐसा लगता है इसका यांत्रिक नवीकरण (autowork) किया गया है।

हमें अपने पर्यटन में नव मास लगे। हमने उनचास सहस्र मील की यात्रा की और इसमें संयुक्तराष्ट्र के सभी छानबे सैनिक और नौ-सैन्य तथा सारे सेनानायकों के चिकित्सालय घूम डाले। परन्तु यदि विगत वर्षों में बडी की सहायता से मुझमें पूर्ण आत्म-विश्वास न आ गया होता तो मैं इतने भारी पर्यटनकार्य के लिए कभी प्रयत्न भी न कर सका होता।

१६३८ में जिस समय बडी की मृत्यु हुई, उस समय तीन सौ पचास कुत्ते पत्तनों में, नगरों में, खेतों पर तथा शिलपशालाओं में अर्थात् सभी परिस्थितियों में नेत्रहीन स्त्री-पुरुषों के पथ-प्रदर्शन का कार्य कर रहे थे। पश्चिमी तट पर कोलेरेडो में रफी पर्वतों पर, टेक्सास के बड़े मैदानों में, मिसीसिपी के सुदूर दक्षिणी प्रदेशों में, अलाबामा तथा फ्लोरिडा में, न्यू इँग-लैंड; मैरीलैंड तथा मिशेगन में समग्र अमेरिका के सभी भागों में वे बिखरे हुए थे। कहने का तात्पर्य यह कि नेत्रहीनता से संघर्ष लेनेवाले साहसी व्यक्ति जहाँ भी थे वहाँ सर्वत्र वे मानव-सेवा के कार्य में लगे हुए थे।

संप्रति पथ-प्रदर्शक कुत्ते रखनेवाले व्यक्तियों की संख्या बढ़कर लगभग चौबीस सौ हो गई है। इनमें से कुछ व्यक्ति तो दूसरा, तीसरा और चौथा कुत्ता ले गये हैं। कुछ व्यक्ति तो हवाई, अलास्का, पोर्टोरीको तथा कैनाडा जैसे सुदूर भागों से अपने श्वान सहचर को लेने आये थे। इनमें समाज के सभी वर्गों के लगभग सौ वृत्तियों के लोग थे दृष्टान्त-स्वरूप संवाद-दाता, अध्यापक, वकील, बीमाकंपनियों के प्रतिनिधि, अस्थि-चिकित्सक, गायक, कारखानों के श्रमिक, पियानो की मरम्मत करनेवाले, टाइप करनेवाले, संवादपत्र-विक्रेता, पादरी तथा सामाजिक कार्य करने वाले व्यक्ति। बडी ने जिस जीवन-ज्योति की नींव डाली थी उसके क्रियाकलापों ने स्त्री-पुरुषों के जीवन और कार्यों में महान् परिवर्तन कर दिया था।

मैं कह नहीं सकता कि किसी कुत्ते या किसी अन्य चौपाये ने एतदर्थ अपने मानव-सहचर के लिए इतना अधिक काम किया होगा जितना मेरे दस वर्ष की आठोंयाम की प्रिय जीवन-साथी ने किया। अन्य कुत्तों ने पुलिस में तथा आग बुझानेवाले विभाग में अत्यन्त साहसपूर्ण और उपादेय कार्य किये हैं। सेन्ट बर्नार्ड श्वानों के भी कार्य श्लाघनीय हैं; परन्तु बडी के जीवन ने सहस्रों व्यक्तियों की एकदम काया ही पलट दी।

वह सचमुच महान् उन्नायक थी। देशों और भूभागों का अन्वेषण करनेवाले तथा महान् तथ्यों का रहस्योद्घाटन करनेवाले संसार के अग्रणी उन्नायकों से उसकी तुलना भली भाँति की जा सकती है। अमेरिका के नेत्रहीनों के लिए उसने जैसे संसार का पुनरन्वेषण कर दिया।